सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर : समूह या सेल अगुवा

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 4

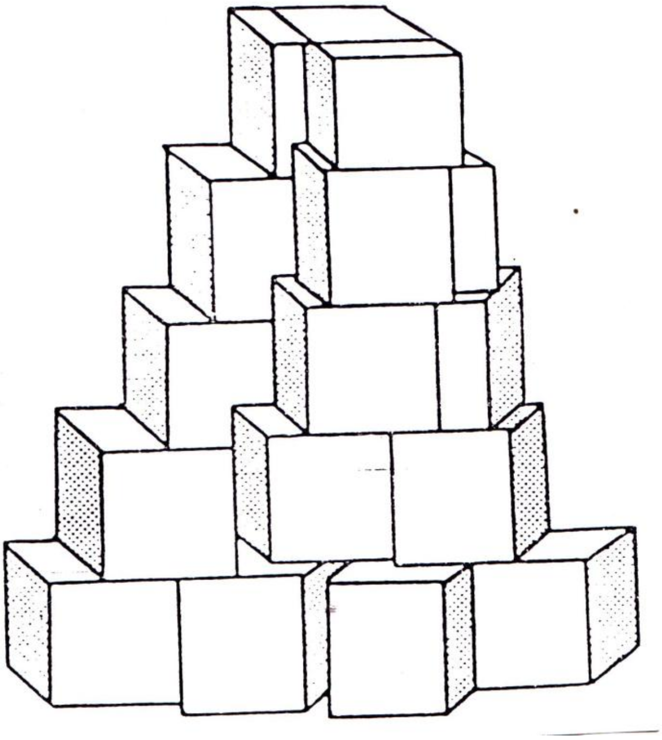

स्तरः

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

उद्देश्य:

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

(विकसित होना / परिपक्व होना)

- यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

- 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

- 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

- कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

(गुणा / पुनरुत्पादन)

- 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

- 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

- इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

- 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 4

क्रमाँक | पृष्ठ

- अगुआई पाठ्यक्रमः अगुआई की भूमिका (6 पाठ) 438
  (परमेश्वर का बुलावा, अगुआई की योग्यताएँ, तैयारियाँ और परीक्षाएँ, स्वतःमूल्याँकन और विकास के कारक, एक अगुए की विशेषताएँ, महान चरवाहे के पीछे-पीछे चलना)
- सेवा के लिए बुलावा (सेवकपन और इसका तात्पर्य) 452
- यीशु के समान सेवा कैसे करें ? 458
- आत्मिक अधिकार को समझना 463
- आपको जो चाहिए उसकी तैयारी करो 466
- परमेश्वर की बाट जोहना – प्रभावशाली होने की कुँजी 468
- परमेश्वर के हम से बात करने के तरीके 482
- आत्मिक अगुआई और सामान्य गलतियों से कैसे बचें 486
- होम सेल / छोटे समूहों की शक्ति / सेल अगुआई 493
- कारक जो सहभागिता प्रोत्साहित करते हैं 505
- ग्रह कलीसियाएँ और उन्हें कैसे स्थापित करें 516
- कलीसिया के अस्तित्व का उद्देश्य 519
- घर भेंट करने कैसे जाएँ पर एक संक्षिप्त अध्ययन 526
- प्रोत्साहन की सेवकाई 530
- मसीहियों पर दुख आने के कारण 537
- एक मसीही जीवन-शैली विकसित करना 539
- पवित्रता - कुँजी आत्मसमर्पण है! 542
- गप-शप – इसका विनाश और इस पर जय कैसे पाएँ 550
- वचन से प्रार्थना निदेशक (प्रभावशाली, बच्चों, प्रवेशद्वार शहरों के लिए) 556
- प्रार्थना और मनन के लिए परमेश्वर के वचन से व्यक्तिगत प्रार्थनाएँ 557
- उपवास - बाइबल का एक जीने का तरीका 593
- बाइबल और परिवार / सेक्स सम्बंधित पापों के फन्दों से बचना 605
- एकताः कार्यों द्वारा प्रेम! 614

गुआई पाठ्यक्रमः अगुआई की भूमिका

पाठ 1 अगुआई – परमेश्वर का बुलावा

<u>परिचयः</u>

यह सब परमेश्वर की ओर से एक बुलावे के साथ शुरू होता है! परमेश्वर कलीसिया के द्वारा अपना उद्देश्य पूरा करना चाहता है और मूल रूप से इसीलिए सब विश्वासियों ने परमेश्वर की ओर से एक बुलावे को उत्तर दिया है, जो उसके उद्देश्य के अनुसार है (2 थिस्स. 2:13-14)। हमें परमेश्वर ने अन्धकार में से एक उद्देश्य के लिए बुलाया है (1 पतरस 2:9)। परमेश्वर ने हर एक विश्वासी के लिए एक काम तैयार किया है जो केवल वही पूरा कर सकता है (इफि. 2:10)। हमें अपने बुलाए जाने और चुने जाने को भक्तिपूर्ण आचरण द्वारा और ज्यादा सिद्ध करने के लिए उत्साही होने की जरूरत है (2 पतरस 2:10) (जैसे, लिफाफे पर टिकट चिपकाना) और जैसे हम उस में बने रहेंगे तो हम अपने मालिक के लिए फल लाएँगे, क्योंकि उसने हमें इसी कारण से चुना है (यूहन्ना 15:16)।

<u>अगुआई / सेवकाई के लिए बुलावा</u>

इस सामान्य बुलावे से ऊपर और परे, यह प्रभु यीशु मसीह की सेवकाई में एक सबसे बड़ा बुलावा है। यह एक भिन्न सेवकाई और / या अगुआई की भूमिका के लिए एक ईश्वरीय बुलावा है। यह एक बहुत बड़ा विशेषाधिकार है, लेकिन एक बड़ी जिम्मेवारी भी है।

एक प्रभावी अगुआ / सेवक बनने के लिए, एक व्यक्ति को विश्वास द्वारा इस काम के लिए बुलाया गया होना चाहिए। परमेश्वर का एक सच्चा बुलावा बड़ा भरोसा लाता है, और पता होता है कि परमेश्वर ने इसे शुरू किया है और जब यह कठिन भी होने लगे, तो वह आपको सँभालने वाला है। इसलिए, एक सच्चा बुलावा ही अपने साथ जारी रखने की शक्ति और विजयी और सफल होने के लिए अनुग्रह लाता है!

परमेश्वर की इच्छा को पहचानना?

आपको कैसे पता है कि आप अगुआई / सेवकाई के लिए बुलाये गए हैं ?

सब अगुओं को परमेश्वर बुलाता है। वह शायद बहुत होनहार या गुणी व्यक्ति को न बुलाए, क्योंकि उसके मार्ग हमारे मार्गों से ऊँचे हैं (1 कुरिं. 1:26-27; यशा. 55:8-9)। केवल परमेश्वर ही जानता है कि वह एक व्यक्ति के द्वारा कितना काम कर सकता है, इसी लिए अगुओं को परमेश्वर पर सम्पूर्ण रूप से निर्भर होना चाहिए और केवल स्वाभाविक गुणों पर निर्भर नहीं होना चाहिए।

सेवकाई या अगुआई के लिए परमेश्वर द्वारा दिये बुलावे में विचारशील कारकः

1. <u>क्या परमेश्वर के बुलावे का एक स्पष्ट बोध है ?</u>

   अभिलाषा अच्छी है (2 तीमु. 1:9) लेकिन काफी नहीं। हमें जानने की जरूरत है कि परमेश्वर ने हमें बुलाया है! संभव है प्रेरित पौलुस के समान इतने नाटकीय तरीके से नहीं, लेकिन अपने हृदय/जीवन में हम जानते हैं कि उसने बुलाया है (इब्रा. 5:4; भजन 75:6-7)। परमेश्वर का असली बुलावा खेत में बोए एक बीज के समान है जो थोड़ा अवसर मिलने पर भी विकसित हो सकता है। एक सच्चा बुलावा उत्पादक होगा और कार्य करेगा।

2. <u>कार्य के लिए हृदय</u>

   क्या प्रभु की सेवा करने के लिए उत्सुकता है ? क्या बुलावे से सम्बंधित परमेश्वर द्वारा दी गई इच्छाएँ हैं ? लोगों की आत्माओं के लिए एक गहरी रुचि होनी चाहिए। बलिदान और प्रेम करने की तत्परता, लोगों के लिए जैसे वे हैं फिक्र और परवाह। बुलावा पूरा करना हमारी हड्डियों में आग के समान है (यिर्म. 20:9)। बुलावे को अपना बनाने की सम्पूर्ण हृदय की उत्सुकता (मत्ती 16:24)। खुद का इन्कार करने को तत्पर (आत्मानुशासन), क्रूस उठाने को तत्पर (वचन या सेवकाई के लिए आक्रमण सहना) और उसके पीछे चलना (शत प्रतिशत वचनबद्धता)!

3. <u>वरदान का प्रयोग</u>

एक व्यक्ति का वरदान/सेवकाई अपना मार्ग खुद बनाती है, लेकिन उसका चरित्र ही उसे वहाँ बनाए रखेगा! (नीतिवचन 18:16)। क्या बुलावा आगे बढ़ने, अपने वरदान को प्रयोग में लाने और परमेश्वर में अपनी क्षमता में से पाने की इच्छा के लिए एक भीतरी आत्मिक प्रेरणा (संघर्ष नहीं!) में परिणामी हो रहा है? (1 पतरस 3:10)। अपने गुणों और साधनों को अपने बुलावे को पूरा करने का एक सच्चा प्रयास। बुलावा हमें नियंत्रित कर लेना चाहिए ताकि यह अर्थपूर्ण कार्य उत्पन्न कर सके। उन्नति करने और परिपक्व होने के लिए प्रार्थना और वचन के अध्ययन में ज्यादा समय व्यतीत करने को उत्सुक (2 तीमु. 2:5)।

4. लाभदायकता

जैसे आप अपने बुलावे और अपने वरदान प्रयोग में लाने में आगे बढ़ते हो, तो क्या लाभदायकता के चिन्ह दिखाई देते हैं? क्या दूसरे आपकी सेवकाई में अभिषेक को पहचानते हैं? (2 तीमु. 1:6; 1 पतरस 4:10)। परमेश्वर का बुलावा हमेशा प्रभावी होता है और यह हम में और उन में जिनकी हम सेवा करते हैं फल लाता है (1 कुरिं. 15:10-11)। प्रभावकारिता वास्तविक गवाह है कि व्यक्ति सच में परमेश्वर द्वारा बुलाया और वरदान पाया है।

परमेश्वर का बुलावा पहचानने के दूसरे कारक:

- अक्सर स्वाभाविक ज्ञान व्यक्ति के बुलावे से जुड़ा होता है।
- देह के वरदानों (1 कुरिं. 12:7-11) को बुलावे के साथ उलझाओ मत।
- क्या हम अपने जीवन में परमेश्वर की "लाल डोरी" देख सकते हैं?

इसलिए, सब अगुए और सेवक परमेश्वर द्वारा बुलाए गए हैं। वह उन्हें नियुक्त करता और पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त करता है (देखो उदाहरणा के लिए, पौलुस, गला. 1:1)। वह उन्हें जो भूमिका या कार्य उन्हें निभाना है के लिए आवश्यक वरदान भी देता है। फिर भी एक व्यक्तिगत बुलावा काफी नहीं है। हम सब खुद धोखा खा सकते हैं, इसीलिए एक व्यक्तिगत बुलावे को कलीसिया द्वारा पुष्टि करना और अनुसमर्थन करना जरूरी है (उदाहरणार्थ, पौलुस अपनी सेवकाई को दूसरे प्रेरितों के अधीन करता है, गला. 2:2)। कलीसिया जिन्हें बुलाया गया है उन्हें पहचानती है जो उनके आत्मा के वरदानों को पाए हैं और प्रयोग में ला रहे हैं और इस प्रकार उनकी पुष्टि करती है जिन्हें परमेश्वर ने खुद पहले बुलाया और अभिषेक दिया है।

विचार के लिए दूसरे विषय:-

- सब अनिवार्य रूप से पूर्णकालिक सेवा के लिए न बुलाए गए हों
- परमेश्वर के समय को पहचानो: परमेश्वर से आगे मत दौड़ो
- तैयारी और प्रशिक्षण की जरूरत हो सकती है
- व्यक्ति के बुलावे की पुष्टि:
    - परमेश्वर का द्वार खोलना
    - जहाँ वह ले जाता है, वहाँ वह खिलाता है!

परमेश्वर के बुलावे के लिए योग्य बनना और पूरा करना:

* बुद्धि के साथ चुनाव और वचनबद्धता करो
* क्षमता में बढ़ने के लिए खुले और शिक्षणीय बने रहो
* अपने बुलावे के प्रति सच्चे बनो और सब जगह हाथ मत डालो
* अपने बुलावे में रहो, क्योंकि उसका अभिषेक आपको योग्य बनाएगा

नोट: हम कभी भी परमेश्वर की ओर फिर सकते हैं और हमारे जीवनों के लिए उसके बुलावे में समर्पित हो सकते हैं! (रोमियों 11:29)

पाठ 2 अगुआई की योग्यताएँ

परिचय:

बाइबल में हम परमेश्वर को उसका ईश्वरीय उद्देश्य पूरा करने के लिए एक खास मनुष्य, एक व्यक्ति को खोजते हुए पाते हैं (उदाहरणार्थ, 1 शमू. 13:14; यहेजकेल 22:30)। वैसे ही कलीसिया में भी मसीह इच्छा रखता है कि सयाने विश्वासी हों जो उदाहरण से अगुआई करने और सेवा करने के लिए भक्तिपूर्ण रवैये और कार्यो का नमूना बनें और सेवा का कार्य करें। उद्धार पाते समय सम्भव है एक व्यक्ति सेवकाई के लिए बुलाया जाए, फिर भी इस बुलावे की पुष्टि एक स्थानीय कलीसिया द्वारा होने के लिए, बाइबल की कुछ शर्तो को पूरा करना जरूरी है।

आत्मिक अगुआई के लिए मूल पूर्व-शर्तें:

1. उद्धार	-	वचन और आत्मा से नए जन्म द्वारा उद्धार पाया होना चाहिए और पवित्र आत्मा की गवाही द्वारा इसका आश्वासन होना चाहिए
2. पानी का बपतिस्मा	-	मसीह की मृत्यु के साथ एक प्रकट एकीकरण और उसके वचन के आज्ञापालन का प्रदर्शित करता है (प्रेरितों 2:38)
3. पवित्र आत्मा का बपतिस्मा	-	सेवकाई के लिए पवित्र आत्मा की पूर्णता होना एक अत्यावश्यक अनुभव है (प्रेरितों 1:8); पवित्र आत्मा से भरा होना, आत्मा द्वारा नियंत्रित और चलाए चलना।

नए नियम में हम देखते हैं कि कलीसिया के प्रारंभिक दिनों में, जैसे जैसे काम बढ़ता गया. नए अगुए ध्यानपूर्वक चुने गए थे। यह प्रेरितों द्वारा दिए गए विनिर्देशों के आधार पर किया गया था (प्रेरितों 6:3)। बाद में हम देखते हैं कि पौलुस इनको बढ़ाता है और तीमुथियुस को और ज्यादा विस्तृत निर्देश देता है, क्योंकि उसे कलीसिया में नए अगुओं को चुनना और नियुक्त करना था। 1 तीमु. 3:1-2 पर आधारित, नीचे दी गई आत्मिक अगुओं की सात योग्यताएं श्रेणीबद्ध की जा सकती हैं।

अगुआई की योग्यताएँ:

1. **निर्दोष**

1 तीमु. 3:2 कहता है कि एक अगुए का जीवन और आचरण "आदर के योग्य" और "निर्दोष" होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि एक व्यक्ति को एक कलीसिया का अगुआ होने के लिए सिद्ध होना है लेकिन कि उसके जीवन में ऐसा कुछ नहीं है जिसमें लोग साधारणतः दोष पा सकें। उसका जीवन बाइबल के आदर्शो के अनुसार बना होगा। (याद रहे - एक जंजीर अपनी सबसे कमजोर कड़ी जितनी ही मजबूत है।)
अगुए का चरित्र बाहरवालों के सम्मान के योग्य होना चाहिए और जिनकी अगुआई करने के लिए वह बुलाया गया है उनमें आत्मविश्वास प्रेरित करना चाहिए।

2. **संयमी**

एक अगुए को एक अनुशासित जीवन प्रदर्शित करना है। एक दैनिक आत्मानुशासन संयम का भीतरी चरित्र बनाएगा जो कि पवित्र आत्मा का एक फल है। वह अपनी लालसाओं और अभिलाषाओं के नियंत्रण में रहेगा (गला. 5:24) क्योंकि वे पवित्र आत्मा द्वारा नियंत्रित हैं। ऐसा व्यक्ति एक छोर से दूसरी छोर को नहीं भागता रहेगा और न ही आकस्मिक आवेशों से प्रभावित होता रहेगा। दूसरे शब्दों में रोष के आकस्मिक विस्फोट, उदासी के अनियंत्रित दौरे, अनियंत्रित गहरी लालसा या शारीरिक इच्छा के लिए कोई जगह नहीं है।

3 क. भक्तिपूर्ण नैतिक मूल्य

आय. 3 "न धन का लोभी हो" के बारे में बात करती है। एक अगुए के लिए अपने अभिप्रायों को जाँचने की जरूरत है। यह लोगों की सेवा करने की, न कि रुपये-पैसे की सेवा करने की इच्छा होनी चाहिए, क्योंकि रुपये-पैसे का प्रेम व्यक्ति को विश्वास से दूर ले जा सकता है (1 तीमु. 6:10)।

ख. सही रवैया

सेवा करने का - क्योंकि स्वार्थी अभिलाषा झगड़ा पैदा करती है (गला. 5:20), जो एक घातक पाप है। किसी भी प्रकार की प्रतियोगी आत्मा, सत्ता की इच्छा नहीं होनी चाहिए, जो राजनीति और विभाजन की ओर ले जाती है।

4. एक प्रेमी हृदय

सेवकाई मन से नहीं निकलती है, लेकिन यह एक प्रेम के हृदय से निकलती है। इसमें नम्र, अनुग्रहकारी, दयालु, धैर्य, विचारशील होना शामिल है। और साथ में एक सही हृदय के रवैये के लिए अखंडता का व्यक्ति; सच्चा, ईमानदार, निष्कपट, वगैरा होना।

5. एक नीरोग घर

एक अगुए को जो वह प्रचार करता है का अभ्यास करना जरूरी है और इसलिए वह उनके लिए एक अच्छा उदाहरण होना चाहिए जिनका वह मार्गदर्शन करता है और सेवा करता है। उसका परिवारिक जीवन उसका असली चरित्र और अगुआई योग्यता प्रकट करेगा। 1 तीमु. 3:4-5 इस बारे में बहुत स्पष्ट है, कि राज्य के सिद्धान्त उसके या हमारे परिवार में पहले विद्यमान होने चाहिए; बाइबल का नौतिक आचरण। भक्तिपूर्ण पारस्पारिक परिवार के सम्बंध, अपने परिवार की देखभाल और जरूरतें मुहैया करना (इब्रा. 11:7)।

6. एक परिपक्व विश्वास

एक परिपक्व विश्वास एक नया विश्वासी नहीं होना चाहिए बल्कि जिसका प्रमाणित और स्थिर विश्वास है - एक विश्वास जो अनुभवी और पक्का है। शैतान के घमण्ड के फन्दे से बचने के लिए (1 तीमु. 3:6), उसे टूटा हुआ होने की जरूरत है, ऐसा जो स्पष्ट रूप से स्वयं के लिए मरा हुआ है (गला. 2:20)।
क्या वह परीक्षाओं और परीक्षणों में से गुज़रा है, और क्या उसका विश्वास अटल, अनुकूल और स्थिर बना रहा है ?

7. सत्य की ओर विश्वासयोग्य

खरी शिक्षा में एक दृढ़ आधार की जरूरत है, वचन के प्रकटित सत्य के
आज्ञापालन में इसकी सत्यनिष्ठा और प्रक्रिया के बारे में निश्चित है। वचन अगुए में जीवित होना चाहिए, जो सिखाने में निपुण होना चाहिए (1 तीमु. 3:2)। इसके लिए सत्य पर एक दृढ़ पकड़ की जरूरत होती है और हमारे जीवनों में वचन के दावों को समझाने योग्य होना है (2 तीमु. 2:15)।

सम्भावित अगुओं का पता लगाने के लिए लेख (अगुआई के लिए अभिषेक का पता लगाना)। देखो कि क्या:

- कोई जिसके पीछे लोग चल रहे हैं। (क्या भेड़ें चरवाहे के पीछे चल रही हैं ?)
- कोई जो नाम या अधिकार में रुचिहीन है। (पद के लिए झगड़ा नहीं)
- कोई जो जिनकी वह अगुआई करता है खुद से उनकी ज्यादा परवाह करता है। (एक सच्चा सेवक हृदय)
- कोई जिसका घर व्यवस्थित है। (एक तेजस्वी पत्नी और आज्ञाकारी बच्चों की तलाश में रहो)

पाठ 3 तैयारियाँ और परीक्षाएँ

<u>परिचय</u>: यशायाह 49:1-3

प्रभु ने यशायाह को अपने इस्तेमाल के लिए एक चमकीला तीर बनाया था। तीर पर काफी काम किया जाता है इससे पहले कि वह एक सीधा चमकीला औजार बनता है जो जब ठीक ठीक निशाना साधकर छोड़ा जाए तो निशाने पर लगेगा। उसी प्रकार, परमेश्वर आपके जीवन में कुछ तैयारी का काम करने का प्रयास करेगा ताकि आप भी निशाने पर जा लगोगे जो परमेश्वर ने आपके जीवन में पूर्वनिर्धारित कर रखा है।

कुछ बनाने का अर्थ है इसे तैयार रखना ताकि यह ठीक तरीके से इस्तेमाल योग्य हो और काम करे। यशा. 64:8 में, कुम्हार का अपने मिट्टी के साथ काम करने का हम सादृश्य पाते हैं। इससे पहले कि एक सुन्दर, उपयोगी परिणाम हासिल किया जाए, मिट्टी को तैयार किये जाने, पर काम किया जाने, सुखाने और आग में पकाने की जरूरत होती है। उसी प्रकार अगुओं को भी इससे पहले कि वे अगुए के अपने कार्य को कर सकें, तैयारी की एक प्रक्रिया में से गुज़रना होता है। इस प्रक्रिया में परमेश्वर उनके आत्मनिर्भरता तक उन्हें वंचित होने देगा और जो वह चाहता है वे बनें उसमें उन्हें गढ़ने देगा।

परीक्षण और परीक्षाएँ हमें अगुआई के लिए तैयार करने का परमेश्वर का तरीका है। हमारा परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है (इब्रा. 12:29), जो जिसे हिलाया जा सकता है हिलाता है ताकि जो हिलाया नहीं जा सकता रह जाएँ। हमारे जीवनों में परमेश्वर की परीक्षाओं के फलस्वरूप हम या तो विश्वास में उन्नति कर सकते हैं और दृढ़ रह सकते हैं या अविश्वास और निराशा में लौट सकते हैं (याकूब 1:2-4)। अगुओं को परमेश्वर के वचन पर खड़ा रहना और चलते रहना जब तक वे इसे पूरा होता देख न लें, सीखने की जरूरत है। परमेश्वर में अपने विश्वास को प्रयोग में लाने और प्रमाणित करने के द्वारा आत्मिक परिपक्वता और विकास का यह मार्ग है।

<u>हमारी परीक्षा और परीक्षण कौन लेता है?</u>

भजन 11:5 से हम सीखने हैं कि प्रभु धर्मियों को परखता है। इस बात को ध्यान में रखना अच्छा होगा ताकि हमें पता हो कि सही तरीकों से प्रतिक्रिया कैसे दिखाई जाए। कभी-कभार हम अपनी ही गलतियों के कारण समस्याओं का सामना करते हैं और कभी हम सचमुच शैतान को तकलीफ देते हुए पाते हैं। अपने परीक्षण के कारण को पहचानना महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि:

क. अगर यह परमेश्वर का बर्ताव है: तो हमें अधीन होना है (याकूब 4:7), और परीक्षा में से गुज़रने और विजयी होने के लिए उसके अनुग्रह पर निर्भर होना है (1 कुरिं. 10:13)।

ख. अगर यह हमारी अपनी गलती है: तो इससे सीखना है।

ग. अगर यह शैतान का हमला है: तो विजयी होने के लिए इसका विरोध करना और लड़कर भगाना है (याकूब 4:7।

<u>परमेश्वर हमारी परीक्षा और परीक्षण क्यों लेता है उसके कारण:</u>

1. हमें आज्ञापालन सिखाना

हम यह पुराने नियम के सन्तों के जीवन में देखते हैं, उदाहरनार्थ, अब्राहम जिसकी इसहाक को अर्पित करने की परीक्षा हुई और क्योंकि उसने आज्ञा मानी उसने एक बड़ी आशीष पाई (उत्प. 22:15-18)। आज्ञापालन परमेश्वर का सम्मान करता और उसे प्रसन्न करता है; यह बलिदान से बेहतर है (1 शमु. 15:22)। फिर भी हर एक इसे दुख उठाकर और ताड़ना द्वारा ही सीखता है (इब्रा. 12:6-8)। यीशु को भी सिद्ध होने के लिए दर्दभरे दुख से गुज़रना पड़ा था, तो हमें पक्के करने के लिए परमेश्वर हमारे जीवनों में समस्याओं को और ज्यादा इस्तेमाल क्यों नहीं करेगा! (इब्रा. 5:8)।

2. हमारे अभिप्रायों और भीतरी रवैयों को परखने के लिए

परमेश्वर देखना चाहता है कि हमारे हृदय असली में किस पर टिके हैं। केवल परीक्षा ही व्यक्ति के सच्चे और गहरे अभिप्रायों को दिखाएगा: क्या यह परमेश्वर के राज्य या स्वार्थी लाभ के लिए हैं, उदाहरनार्थ, बिलाम का जीवन (गिनती अध्याय 22-24)। नबी बिलाम स्वार्थी लालच के द्वारा प्रेरित हुआ था। उसे पता था कि वह प्रभु का वचन ही बोल सकता था, हालाँकि शुरू में उसने

इस्राएल को शाप देने के लिए घूस का इन्कार किया लेकिन ऐसा लगता है कि उसने आखिरकार दुष्ट सलाह दी। उसके अभिप्राय शुद्ध नहीं थे। (2 पतरस 2:15; यहूदा 11)।

3. परीक्षाएँ धीरज और परिपक्वता पैदा करती हैं

याकूब 1:2-4 में वचन हमें सिखाता है कि कोई सरल उपाय, कोई बचाव का मार्ग, या कोई प्रचण्ड कठिन परीक्षाएं तात्कालिक परिणाम नहीं लाती हैं। लेकिन जब वे आती हैं तो हमें आनन्द के साथ उन्हें गले लगा लेना चाहिए और झेलना चाहिए और उनमें बने रहना चाहिए। एक सिद्ध उदाहरण कोया और तितली का है। कोया में से एक तितली निकल रही थी और 45 मिनट के बाद भी केवल सर और एक पंख का एक हिस्सा ही बाहर निकला था। एक देखनेवाले को लगा कि संघर्ष कर रही तितली की मदद करनी चाहिए ताकि प्रक्रिया की गति बढ़ाई जाए और उसने एक चाकू लिया और इल्ली को छुड़ाने के लिए कोया को काटकर खोल दिया। आश्चर्य से उसने पाया कि जो भाग बड़े प्रयास और संघर्ष से बाहर निकला था विकसित हुआ था। जिस भाग को उसने काटकर बाहर निकाला था अभी भी अवव्यक्तिकृत था और कोया के बाहर तत्त्वों में आने के लिए तैयार नहीं था। तो इल्ली को तितली बनने में मदद करने के बजाय, उसने प्रक्रिया को व्यर्थ कर दिया। आधी-विकसित तितली जल्दी ही मर गई। उसी प्रकार, हम दूसरों की उनकी कठिनाइयों में मदद करने की कोशिश करते हैं, और पता चलता है कि वे थोड़ी ही देर बाद उसी समस्या में वापिस गिर पड़ते हैं। अगर हमने उन्हें कुछ समय के लिए दुख उठाने दिया होता और जो सबक परमेश्वर उन्हें सिखाने की कोशिश कर रहा था सीखने दिया होता तो यह उनके लिए और कलीसिया के लिए अच्छा होता।

4. परीक्षाएँ उन्हें छाँटने के लिए जो असल में परमेश्वर द्वारा बुलाए हुए हैं

हम शायद लोगों को धोखे से अपने पीछे कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर को कभी धोखा नहीं दिया जा सकता है। केवल वही जो परमेश्वर द्वारा बुलाए और अभिषिक्त हैं लम्बे समय तक एक अगुए के समान जीवन जीने के दबाव को सह सकते हैं। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को निराशाजनक परिस्थियों में डालता है, जो अपने जीवनों पर परमेश्वर से एक असली बुलावा महसूस नहीं करते हैं, तैयारी की प्रक्रिया से अलग हो जाएँगे, जो उनके और कलीसिया के लिए बेहतर है। यशा. 48:10 में लिखा है, मैं ने दुख, परीक्षाओं की भट्टी में परखकर तुझे चुन लिया है। वह प्रतिकूल और कठिन परिस्थियों की ओर हमारी प्रतिक्रिया को देखेगा और उसके अनुग्रह के द्वारा हम सीख और बढ़ पाएँगे।

फिर भी सब परीक्षा पास नहीं कर पाएँगे (मत्ती 20:16)। प्रकाशितवाक्य 17:14, बुलाए और चुने हुओं में एक और गुण जोड़ता है और वह विश्वासयोग्यता है। वे अपने जीवनों की बाजी लगाकर भी प्रभु की ओर विश्वासयोग्य रहे।

5. परमेश्वर के वचन में हमारे विश्वास को परखने के लिए (नीतिवचन 30:5; भजन 12:6)

चाहे परमेश्वर ने आपको एक वचन या प्रतिज्ञा दी हो, फिर भी वह आपको इससे परखेगा। आप ऐसी परिस्थियाँ अनुभव करेंगे जो परमेश्वर के लिखित या जीवित वचन को रद्द करती नज़र आएँगी और आपको शायद लगेगा कि वह अपनी प्रतिज्ञा भूल गया है। परमेश्वर आपके जीवन में एक अगुए के रूप में आपको दिए अपने वचन को परखेगा, जिससे आपके अपने साधनों को निकाल दे और अपने वचन को पूरा करने के लिए आप केवल परमेश्वर पर निर्भर हों। यह इतना आसान नहीं होगा, खासकर तब जब व्यक्ति के अनेक गुण और योग्यताएँ हैं।

उदाहरणार्थ, यूसुफ का जीवन (उत्प. 37:45)। जब वह नौजवान ही था तब प्रभु ने उसे दो सपने दिए थे कि वह अपने परिवार का भी अगुआ होगा। फिर भी उसे एक गुलाम के रूप में बेच दिया गया और अन्त में वह एक जेल में पहुँच जाता है। भजन 105:17-19। परमेश्वर के वचन ने उसे परखा (शुद्ध किया), लेकिन जैसे वह स्थिर रहा, उसने आखिरकार उसे दिए परमेश्वर के वचन को पूरा होते हुए देखा। इस परीक्षा के समय के दौरान, परमेश्वर ने उसके जीवन में चरित्र, बुद्धि और दीनता का विकास किया।

6. परीक्षाओं के द्वारा परमेश्वर अगुओं को सज्जित करता है

परीक्षाओं के द्वारा परमेश्वर अगुओं को आत्मिक समझ और जीवन के आवश्यक अनुभवों से जिनकी उन्हें जरूरत है सज्जित करता है ताकि जिन लोगों की वे सेवा करते हैं उनकी मदद कर सकें और उन्हें समझ सकें। सब विश्वासी विविध प्रकार की परीक्षाएँ और परीक्षण अनुभव करते हैं। केवल वही अगुए जिन्होंने खुद के लिए परमेश्वर की परीक्षाओं पर सफलतापूर्वख विजय पा ली है वैसी ही परीक्षाओं में दूसरे विश्वासियों की मदद कर पाएँगे।

परीक्षाओं औप परीक्षण के समयों के दौरान एक सही और सकारात्मक रवैया बनाए रखना जरूरी है।

इसलिए:

- हर परीक्षण में परमेश्वर का हाथ देखो
- परमेश्वर के अधीन हो जाओ और कुड़कुड़ाओ मत या कटु मत हो जाओ
- जान लो कि सब चीजें भलाई उत्पन्न करती हैं, परीक्षण और कठिन समय भी (2 कुरिं. 4:17)

पाठ 4 स्वत:मूल्याँकन और विकास के कारक

क) स्वत:मूल्याँकन – 1 शमू. 16:7

विश्वासियों के रूप में हमें खुद से असली होना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर हमें पूर्णतया जानता है और वह धोखा नहीं खाता है। अगुओं के लिए और भी ज्यादा जरूरी है कि वे खुद के साथ अपने व्यक्तिगत विकास के लिए ईमानदार हों। उन्नति करने के लिए एक अगुए को अपना मूल्य लगाना चाहिए और एक स्वत:ज्ञान व्यक्ति होना चाहिए। एक अगुए को अपनी ताकतें और कमज़ोरियाँ जानने की जरूरत है।

आत्मिक परीक्षण के क्षेत्र

अगर हम परमेश्वर के लिए प्रभावशाली होना चाहते हैं तो हमें नीचे दिए पाँच क्षेत्रों में बढ़ने की आवश्यकता है:-

1) **आत्म-ज्ञान** – 1 थिस्स. 5:23-24
परमेश्वर चाहता है कि हम असली लोग हों। हमें जानकारी हो कि हम कैसे काम करते हैं और दूसरों के सामने खुद को कैसे प्रस्तुत करते हैं। अगर हम ध्यान न दें, तो हम एक कल्पित (अवास्तविक) कोश (दिखावा) बना लेंगे जिसमें हम जीएँगे और अपने आस-पास की असलीयत से संपर्क खो देंगे। उसका परिणाम यह होता है कि हम बहाने के नकाब के साथ जीते हैं।
परमेश्वर चाहता है कि हम खुद से और उसके साथ ईमानदार हों। वह चाहता है कि हम सब अपने बारे में वैसा ही सोचें जैसा वह सोचता है; जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर नहीं (रोमि. 12:3), लेकिन सुबुद्धि के साथ।
अपूर्णताओं के साथ जीना सीखो, और जैसे आप सिद्धता की ओर बढ़ते जाते हो, उसके सामर्थ और अनुग्रह पर निर्भर पर होते हुए (2 कुरिं. 12:9), परमेश्वर को अपनी मदद और उन्नति करने दो (फिलि. 3:12-14)।
स्वकेन्द्रित बने बिना, यह जरूरी है कि हम, कुछ इस प्रकार के प्रश्न पूछते हुए, समय-समय पर अपना मूल्याँकन करें:-
   - मैं कार्य कैसे करता हूँ ?
   - मेरी क्षमताएँ और कमज़ोरियाँ क्या हैं ?
   - लोगों या क्रियाओं की ओर मेरा रवैया क्या है ?

2) **आत्मानुशासन** – 2 तीमु. 1:7
परमेश्वर में अपनी अन्त:शक्ति तक पहुँचने के लिए, हमें एक अनुशासित जीवन विकसित करने की जरूरत है, यह पवित्र आत्मा के सामर्थ में हासिल किया जा सकता है। संयम आत्मा के फल का भाग है (गला. 5:23। परमेश्वर जो चाहता है हम उसके लिए प्राप्त करें, केवल जीवन के अनुशासन के द्वारा ही हम प्राप्त कर सकते हैं। हमारे जीवनों की तुलना कार की बैटरी से की जा सकती है। एक कार की बैटरी में बहुत से छोटे छोटे सेल होते हैं जिनमें सारा तेजाब रखा होता है। अगर इनमें से एक सेल भी बिगड़ जाता है तो बैटरी कमजोर पड़ जाती है, अगर उनमें से कुछ सेल बिगड़ जाएं तो बैटरी बेकार हो जाएगी। बैटरी की सारी विद्युत-शक्ति उत्पादन हर एक सेल के एक दूसरे के साथ मिलकर काम करने पर निर्भर करती है। हमारे जीवनों में भी ऐसा ही है; हम अपने जीवनों के बारे में ऐसा सोच सकते हैं जैसे कि हमारे वित्त, परिवारिक जीवन, सम्बंध, समय, नौकरी, वरदान, भावनाएँ, विद्या, आदतें, वगैरा जैसे छोटे छोटे कक्ष होते हैं। हमारे जीवनों को इन सारे क्षेत्रों में

इकट्ठे होने की जरूरत है ताकि वे प्रभावशाली तरीके से कार्य कर सकें। अगर हमारे जीवनों के ये अंश वैसे कार्य नहीं करते जैसे करने चाहिए और वैसे सम्बंध में नहीं रहते जैसे रहने चाहिए, तो उनका प्रभाव खत्म हो जाएगा। कुछ अंश अच्छे हो सकते हैं, लेकिन खराब अंश सबको खराब कर देगें। उदाहरणार्थ, अगर हमारी भावनाएँ नियंत्रण में नहीं हैं और अनुशासन की कमी है तो हम दूसरे लोगों की कभी भी प्रभावी तरीके से सेवा नहीं कर पाएँगे।

3) **आत्मिक परिपक्वता** – इफि. 4:11-16

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसमें परिपक्व होते जाएँ और ज्यादा-ज्यादा मसीह समान होते जाएँ। फिर भी, यह एक प्रक्रिया है और इसमें समय लगता है (2 कुरिं. 3:18)। अपने आत्मिक विकास का मूल्याँकन करने के लिए नीचे दिए प्रश्न पूछो।

क्या मैं बढ़ा हूँ:

- ☐ बाइबल के अपने ज्ञान में ?
- ☐ अपनी आत्मिक समझ में ?
- ☐ वरदानों के विकास में ?
- ☐ दूसरों की नज़रों में ?
- ☐ कठिनायों पर विजयी होने में ?
- ☐ परिस्थियों को ठीक से सम्भालने में ?
- ☐ दबाव का सामना करने में ?
- ☐ दूसरों से सम्बंध में ?

4) **उपलब्धि** – फिलि. 3:13-14

उपलब्धि प्रेरणा का एक अच्छा स्रोत है। फिर भी प्रभु चाहता है कि हम उसके लिए प्रेम से और उसकी इच्छा का पालन करने की उत्सुकता से प्रेरित हों। बढ़ने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने (क) सम्बंधों, और (आ) सेवकाई में उपलब्धि के स्तर का मूल्याँकन करें।

इसलिए हमें खुद से पूछना चाहिए:-

- ➢ क्या मैं पूरा कर लेता हूँ जो मैं पूरा करने निकलता हूँ ?
- ➢ अगर परमेश्वर आपको कुछ करने को देता है, तो क्या आप उसे समाप्त कर लेते हो ?

आपकी प्राप्ती में क्या रुकावट डालता है:

क) प्रेरणा; ख) स्पष्ट लक्ष्य; ग) अवसर; घ) प्रशिक्षण; च) सहायता की कमी ?

5) **छाप/प्रस्तुतीकरण** – इब्रा. 13:21-21

हम जिस प्रकार खुद को प्रस्तुत करते हैं उसके द्वारा दूसरे लोगों के मनों/आँखों में एक तस्वीर बनाते हैं। हमें पहचानने की जरूरत है कि हम जिस प्रकार खुद को प्रस्तुत करते हैं उससे हम दूसरे लोगों से कितनी अच्छी तरह सम्बंध बनाते हैं। हमें आँकने की जरूरत है कि उनका हम पर और हमारा उन पर क्या प्रभाव पड़ता है और उसके अनुसार हम दूसरे लोगों से कैसे सम्बंध बनाते हैं। ऐसा करने में नीचे दिए प्रश्न हमारी मदद करेंगे:

- ⇒ क्या दूसरों के लिए आपकी तस्वीर सकारात्मक है ? क्या इससे परमेश्वर के लिए आपके काम में मदद मिलती है ?
- ⇒ क्या आपने कभी विचार किया है कि आप दूसरों पर क्या तस्वीर डालते हो और आप क्या डालना चाहते हो ?
- ⇒ क्या आपका आचरण, स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य परमेश्वर को महिमा लाता है ?
- ⇒ आप अपनी शारीरिक शैली से लोगों को क्या बताते हो ? आत्मविश्वास/संकोच, वगैरा ?
- ⇒ आपके सम्बंध आपके बारे में क्या बताते हैं ? किस किस्म के लोग आपके आस-पास होते हैं ? क्या आप उन पर छाप छोड़ते हो या वे आप पर ?

ख) <u>विकास के कारक</u>:-

अपना मूल्याँकन करने और अवलोकन करने पर हमें और ज्यादा बढ़ने की जरूरत का एहसास होता है! 2 पतरस 3:18। विशेष रूप से एक मसीही अगुए के लिए, परमेश्वर के लिए फलवन्त होने में और खासकर नीचे दिए क्षेत्रों में, आत्मिक विकास परम महत्त्व का है:

- क) चरित्र – मैं कौन हूँ ?
  इसमें व्यक्तित्व, पहचान, अखंडता, और नैतिकता का विकास शामिल है।
- ख) योग्यता – मैं क्या कर सकता हूँ ?
  वरदान और निपुणताओं का विकास शामिल है।
- ग) समझ – मैं क्या जानता हूँ ?
  यह बौद्धिक योग्यता, अन्तर्दृष्टि, अतिसंवेदनशीलता और प्रत्यक्षज्ञान का विकास है।
- घ) सम्बंध – मैं कैसे सम्बंध बनाता हूँ ?
  दूसरे लोगों के साथ औपचारिक और व्यक्तिगत स्तर पर संघटित होने की योग्यता के बारे में।

ध्यान दो कि ये चार प्रश्न कैसे एक दूसरे से सम्बंधित हैं। आप कौन हैं निर्धारित करेगा कि आप क्या कर सकते हैं, आप क्या जान सकते हैं और आप किससे सम्बंध रखते हैं।
परमेश्वर में परिपक्वता का अर्थ है जब उपद्रव या कठिनाई आए तब भी अपने जीवनों को संतुलित स्तर पर रखना। हमें किसी भी परिस्थिति में संतुलित और स्थिर खड़े रहने और कठिनाई का सामना करने की, अपने जीवनों को उचित तरीके से अनुकूल बनाकर विजयी होने की योग्यता की जरूरत है।

<u>हमारे विकास और वृद्धि की प्रक्रिया नीचे दिए वृद्धि के कारकों द्वारा सहायता पा सकती है:</u>

1) **शिक्षा** – नीतिवचन 22:6
यह परम महत्त्व का है कि हम परमेश्वर के वचन को खुद पर लगाएँ ताकि परमेश्वर को जान सकें और उसके मार्गों की शिक्षा पाएँ। 2 तीमु. 2:15। किसी भी अगुए को अपने मन को उसके लिए तेज, सक्रिय और उपयोगी रखने के लिए परमेश्वर और उसके वचन के पास निरन्तर आते रहने की जरूरत है।

2) **प्रेरणा** – 1 कुरिं. 4:15-16
दूसरे व्यक्ति की हूबहू नकल किए बिना, आत्मिक विकास के लिए महान उत्तेजन एक ऐसे व्यक्ति में है जो मसीह में एक जीवन जीने का उदाहरण प्रस्तुत करता है जो नकल करने योग्य है।

3) **विपत्ति** – 1 थिस्स. 5:18
परमेश्वर को नियंत्रण में जानो और इसलिए परिस्थियों को इसका सबक हमें सिखाने दो। सबसे महत्त्वपूर्ण उनकी ओर हमारी प्रतिक्रिया और सही रवैया बनाए रखना है।
दबाव एक व्यक्ति के चरित्र की क्षमताओं और कमजोरियों को प्रमाणित करेगा।
इसके अतिरिक्त, यह हर परिस्थिति में विश्वास से बने रहने की हमारी योग्यता को विकसित करेगा।

4) **अनुभव** – फिलि. 4:12-13
घटना या परिस्थिति कैसी भी क्यों न हो, हमें संतुष्ट होना, अपना भरोसा परमेश्वर में डालना और उसमें विश्वास रखना चाहिए। अनुभव एक महान शिक्षक है, बशर्ते कि हम इसकी सीख के लिए खुले हैं। यह व्यावहारिक बुद्धि विकसित करेगा। यह हमारे चरित्र को सँवारेगा और हमें बदलेगा।

5) **चुनौती** – फिलि. 3:13-14
चुनौती और परिवर्तन हमारे लिए कभी खतरा नहीं बनने चाहिए, और न ही इन्हें हमारी सुरक्षा में विध्न डालना चाहिए। जैसे हम परमेश्वर की गति उसके आत्मा के द्वारा पहचानते हैं, हमें उन परिवर्तनों के विषय में खुले रहना चाहिए जो वह लाना चाहता है। वह हमारी सच्ची सुरक्षा है और इसलिए, परिवर्तन और चुनौती के मध्य में भी, जब हम नई चुनौतियों की ओर

आत्मा द्वारा प्रतिक्रिया दिखाते हैं, हम उसमें भरोसा कर सकते हैं। चुनौतियाँ हमारा परमेश्वर के लिए रचनात्मक, चुस्त और ज्यादा फलवन्त बनने का कारण बननी चाहिए।

6) **सम्बंध** – 1 यूहन्ना 4:19-20
हम विश्वासियों को अकेले चलने के लिए नहीं बुलाया गया है, लेकिन हमें दूसरों के साथ सम्बंध में रहना सीखना है। आप सब प्रकार के लोगों से मिलोगे, और यह आपको उनके साथ बर्ताव करना सिखाएगा, यह सब प्रकार के रवैयों की ओर आपकी प्रतिक्रियाओं को परखेगा, और यह आपके अपने भीतरी रवैयों को भी प्रकट करेगा।

पाठ 5 एक अगुए की विशेषताएँ

परिचयः

<u>मसीही अगुआई में, केवल वरदान, निपुणताएँ और योग्यताएं ही एक अगुए को नहीं बनाती हैं। जरूरत पड़ती है मसीह-समान चरित्र की।</u> अगुओं को विविध प्रकार के परीक्षणों, सतावों और परीक्षाओं को, जो अनिवार्य है उनके मार्ग में आएँगे, सहन करने के लिए मजबूत, भक्तिपूर्ण चरित्रों की जरूरत पड़ती है। यीशु का चरित्र पाना अपने आप से नहीं होता है। परमेश्वर इसे हमारे जीवनों में बनाना चाहता है। अपने वचन, अपने पवित्र आत्मा, लोगों और परिस्थियों के द्वारा, परमेश्वर हम में अगुआई के गुण और चरित्र विकसित करना चाहता है। रोमियों 5:3-5.

<u>चरित्र बताता है हम कौन हैं, जैसे कि, हमारे मानसिक, भावात्मक और नैतिक गुण। चरित्र में एक व्यक्ति के जीवन के सारे नकारात्मक और सकारात्मक गुण शामिल होते हैं, जैसे कि, हमारे विचार, नैतिक-मूल्य, रवैये, भावनाएँ, अभिप्राय, नैतिक और जो बाहर आता है जब हम दबाव में होते हैं।</u>

क्योंकि चरित्र बनाया और विकसित किया जाता है, हमें उसकी जानकारी होनी चाहिए जो हम अपने जीवनों में निवेश के रूप में पाते हैं। अगुओं को केवल सही चीजों का पोषण करना चाहिए (फिलि. 4:8-9), जीवन की जिन परिस्थियों का वे सामना करते हैं उनकी ओर उन्हें केवल भक्तिपूर्ण तरीके से कार्य करना चाहिए।

आत्मा का फल

पवित्र आत्मा हमारे जीवनों में जो विकसित करना चाहता है वह है आत्मा के फल के द्वारा यीशु का चरित्र (गला. 5:22-23)। यीशु ने आत्मा का सारा फल प्रदर्शित किया था और जैसे हम उसकी नकल करते हैं, हमें उसके आत्मा के कार्य में अपने जीवन समर्पित करने की जरूरत है। (2 कुरिं. 3:18; रोमियों 8:29)।

<u>एक अच्छा मसीही अगुआ, इसलिए:</u>

1. प्रेम से प्रेरित होकर, परमेश्वर और लोगों से प्रेम करेगा (मत्ती 22:37-39; 1 कुरिं. 13)
2. आनन्द से भर जाएगा जो परमेश्वर के साथ आपके सम्बंध से उत्पन्न होता है (यूहन्ना 15:10-11)
3. परमेश्वर की शान्ति को अपने हृदय में राज्य करने देगा, क्योंकि वह हमेशा प्रभु के पीछे चलता है और आज्ञापालन करता है (कुलु. 3:15; यशा. 48:18)
4. धीरजवन्त, परमेश्वर के समय का इन्तज़ार करेगा, स्थिर और दूसरों के साथ सहनशील होगा (1 तीमु. 1:16)
5. दूसरों का सम्मान करने और समझने में दयालु होगा (रोमियों 2:4)
6. दूसरों की ओर शुभचिंता और उदारता के द्वारा भलाई प्रस्तुत करेगा (गला. 6:9-10)
7. परमेश्वर में विश्वास होगा, और विश्वासयोग्य, वफादार, भरोसेमंद और विश्वसनीय होगा (लूका 19:17)
8. दीनता में परमेश्वर पर निर्भर होगा और नम्र, दूसरों की ओर विचारशील, प्रेम में धैर्यशील होगा (इफि. 4:2)
9. संयमी, आत्मनियंत्रित, अनुशासित, शारीरिक आवेशों को नियंत्रण में रखनेवाला होगा (नीतिवचन. 25:28)

एक अगुए के चरित्र के दूसरे महत्त्वपूर्ण के गुण:
(नोट: एक चरवाहा और एक सेवक बनने के गुण अगले अध्यायों में विचार किए जाएँगे)

- अगुओं को टिकाऊ, दृढ़, विश्वसनीय होना चाहिए। उन्हें एक स्तम्भ, मजबूत होना है - आत्मिक, मानसिक, भावात्मिक और शारीरिक तौर पर – मजबूत गहरी और अच्छी तरह बिछाई हुई आत्मिक बुनियादें होनी हैं जो परमेश्वर के वचन और यीशु पर आधारित हैं, और इसलिए हिलाई नहीं जा सकती हैं। अगुए ऐसे लोग हैं जिनके उदाहरण दूसरे अनुकरण कर सकते हैं।

- अगुओं को अच्छे सुननेवाले होने की जरूरत है, दोनों परमेश्वर और दूसरों को। सुनना केवल कानों से सुनना ही नहीं है, लेकिन जो बताया गया है उसे समझना।

- अगुओं को हमेशा क्षमा करना है! जो कुछ भी लोग कहें, या कैसे भी वे आपको चोट पहुँचाएँ, बिना मन-मुटाव या चोटें मन में रखे अपने दिल से क्षमा करो। (इफि. 4:31-32)

- अगुओं को ईमानदार, सच्चे और विश्वसनीय होना चाहिए। सबकी ओर एक प्रकार का जीवन और व्यवहार। जो आप प्रचार करते हो उस पर आचरण करके पाखण्ड से घ्रणा करना। दूसरों के सामने अपने बारे में खुले रहना, कभी भी ढोंग नहीं रचना, अन्त में यह परमेश्वर का अनुग्रह है जो किसी को अगुआ बनाता है।

- अगुओं को निडर, मजबूत और साहसी होना चाहिए और जिनकी अगुआई वे करते हैं उनमें ये गुण प्रेरित करना। (यहोशू 1:9; नीति. 28:1)। एक अगुए को पहले जाना चाहिए और अपने लोगों के आगे जाना चाहिए, गति निर्धारित करना, ताकि वे पीछे चल सकें।

- अगुओं को जिम्मेवार होने की जरूरत है। उन्हें पता होना चाहिए कि आखिरकार जिम्मेवार वे हैं।

- अगुओं को जिनकी वे अगुआई करते हैं उनके लिए सम्बद्ध और दयालु होना चाहिए। जिनकी वे सेवा करते हैं उनके साथ सहानुभूति दिखाने योग्य।

- अगुओं को एक शिक्षणीय दिल बनाये रखना चाहिए। एक अगुआ सबकुछ नहीं जानता है, इसलिए उसे सीखने के लिए खुला, लचीला और परिवर्तन के लिए उत्सुक होना चाहिए।

- अगुओं को परिश्रमी और उत्साही होना चाहिए। मेहनती, परमेश्वर और उसके राज्य के लिए तीव्र उत्साह। फैसलों को पूरा करने योग्य।

- अगुओं को बलिदान करने के लिए तत्पर होना चाहिए। दूसरों के हित खुद से पहले रखने का इच्छुक। किसी भी कीमत पर अपने लोगों से वचनबद्ध, उनकी सेवा करने की इच्छा रखना।

- अगुओं में एकता का हृदय होना चाहिए, यह परमेश्वर की आशीष लाएगा (भजन 133), जैसे लोग एक हृदय और एक मन के होंगे, एकता द्वारा महान कार्य हासिल किए जा सकते हैं।

- अगुओं को शुद्ध और पवित्र होना जरूरी है।

- अगुओं को शिष्ट, स्नेही और मिलनसार होना चाहिए। दूसरों के कल्याण में एक सच्ची रुचि होनी चाहिए।

- अगुओं में एक स्पष्ट फोकस या दर्शन होना चाहिए, फोकस और रणनीति के सात जीना और काम करना, आत्मिक चीजों में अन्तर्दृष्टि होना, परमेश्वर की आवाज सुनना और परमेश्वर की इच्छा जानना, समय से पहले चीजों को देख लेना – दूरदर्शिता और अन्तर्दृष्टि, उसके द्वारा उचित कार्य करो। आशा और आशावाद से भरा होना।

- अगुओं को बुद्धिमान होना चाहिए, सही और गलत, अच्छे और बुरे के बीच न्याय करने योग्य।

- अगुओं को अनुशासित जीवन जीने चाहिए। बाइबल की प्राथमिकताओं के अनुसार (पहले परमेश्वर, फिर परिवार, उसके बाद सेवकाई और नौकरी और अन्त में समाज) जीवन जीना। उचित खाना और नींद की आदतें। समय का सफल उपयोग, पाबन्द। अपने रुपये-पैसे का अच्छा प्रबन्ध (ज्यादा खर्च या उधार नहीं!) – दशमाँश और देने में उदाहरण। भक्तिपूर्ण जीवन, प्रार्थना, आराधना और वचन में उदाहरण।

- अगुओं को जिनकी वे अगुआई करते हैं उन्हें सिखाने योग्य होना चाहिए, परमेश्वर के मार्गों और सिद्धान्तों में उनको शिक्षा देना। (1 तीमु. 2:15)

- अगुओं को परमेश्वर के और जो उनके ऊपर हैं उनके आज्ञाकारी होना चाहिए।

- अगुओं को अनुभवी होना चाहिए, सामान्य रूप से जीवन में और मसीह में दोनों में।

पाठ 6 महान चरवाहे के पीछे चलना

विचारः जैसा चरवाहा, वैसी भेड़!
यीशु हमारा सिद्ध उदाहरण है।
बाइबल यीशु को बुलाती हैः - अच्छा चरवाहा (यूहन्ना 10:11, 14)
- महान रखवाला (इब्रा. 13:20)
- प्रधान रखवाला (1 पतरस 5:4)

हमारा प्रभु यीशु मसीह एक सच्चे चरवाहे का सिद्ध उदाहरण है। वह आने और बलिदान का मेमना बनने के लिए तैयार था, कि हम परमेश्वर द्वारा स्वीकार कि जाएँ (यूहन्ना 1:29)। यह हमें उसके अभिप्रायों की शुद्धता दिखाता है जो हमारे लिए उदाहरण होना चाहिए! यीशु अपनी भेड़ों (सब नया जन्म पाए विश्वासी) का मालिक है, उनकी अगुआई करता है और उनकी देखभाल करता है (प्रकाशित. 7:17; 1 पतरस 2:25)। प्रभु अपनी लोगों की जरूरतें सीधे खुद और अपने चुने हुए अगुओं के द्वारा भी पूरी करता है। इसलिए आत्मिक अगुए सौंपा हुआ अधिकार पाए अधीन-चरवाहे हैं, जो प्रधान चरवाहे को उत्तरदायी हैं (इब्रा. 13:17)। उसी रूप में अगुओं को उनके जीवन यीशु मसीह के चरित्र और समानता के अनुसार बनाने चाहिए। उसी कारण से प्रभु अगुओं/चरवाहों को नियुक्त करता है, उन्हें अपने पिता के हृदय के अनुसार चुनता है (प्रेरितों 20:28)। यह इसलिए है कि वे सताए और निस्सहाय भीड़/भेड़ों को जो संकट में हैं उनकी देखभाल करें (मत्ती 9:35-38)। हमारी लोगों की देखभाल में हमें अच्छे चरवाहे की नकल करना और उसके जैसा होना चाहिए।

एक चरवाहा क्या है?
पुराने नियम में, 'raah' (इब्रानी) शब्द इस्तेमाल किया गया है। अर्थ हैः खिलाना (भेड़), पास्टर. चरवाहा (भजन 23:1)।
नए नियम में 'poimen' (यूनानी) शब्द इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ है नेतृत्व करना, मार्गदर्शन करना, एक चरवाहे के समान रखवाली करना (शासन करना, पोषण देना)। (यूहन्ना 10:11-16; यूहन्ना 21:16; 1 पतरस 5:2)।

एक चरवाहा एक आत्मिक मार्गदर्शक है, जो परमेश्वर के लोगों की देखभाल, मागदर्शन, रक्षा करता और उन्हें चारा देता है। दूसरे शब्दों में चरवाहे का काम परमेश्वर के लोगों को प्रभु के मार्ग में ले चलना है।

असल में, चरवाहे की सेवकाई के दो पहलू हैं:
क) चारा देना, रखवाली, देखभाल का पहलू
ख) अगुआई और शासन पहलू
सच्चे चरवाहे के काम में इन दो पहलुओं का संतुलन और भेड़ों के साथ अधीन-चरवाहे के बर्ताव में संयुक्त रवैये शामिल हैं।

एक चरवाहे के रूप में कार्य करना (1 **पतरस** 5:2-4)

अपनी भेड़ों को प्रेरित करने और उनकी उन्नति करने के लिए, एक चरवाहे/अगुए को:

1. **भेड़ों को जानना और भेड़ों द्वारा जानना** (यूहन्ना 10:3,14,27)
"वह उन्हें नाम से जानता है" व्यक्तिगत सम्बंध, सम्बंध बनाने की योग्यता, अपने लोगों में दिलचस्पी, उनकी जरूरतों को जानना, उनकी आत्मिक दशा की जानकारी, परमेश्वर उनके जीवनों में क्या कर रहा है की बात करता है। भेड़ों को एक भीड़ के रूप में ही मत देखो, लेकिन हर व्यक्ति के सिए समय निकालो। भेड़ों द्वारा जानना उसमें उनके भरोसे और विश्वास को, और फिर उसके पीछे चलने की उनकी इच्छा बताता है, क्योंकि वे उसमें मसीह का चरित्र और परमेश्वर की बुद्धि देखते हैं।

2. **भेड़ों की अगुआई करो (उदाहरण द्वारा)** (यूहन्ना 10:3-4; 1 पतरस 5:3)
एक सच्चा चरवाहा भेड़ों को हाँकता नहीं है, बल्कि वह उनके आगे-आगे जाता है और फिर भेड़ें उसके पीछे चलती हैं। वह उदाहरण द्वारा ले चलता है। परमेश्वर के साथ हमारे जीवन से सम्बंधित सब पहलुओं में, अच्छा चरवाहा पहले उन्हें अपने जीवन में लगाएगा और उनका अभ्यास खुद करेगा, और उसके बाद भेड़ों को पीछे आने के लिए कहेगा (1 कुरिं. 11:1)। उसी रूप में उसे हमेशा निर्देश देते रहना चाहिए। (इब्रा. 13:7)। उदाहरणार्थ, अगर वह चाहता है कि उसके लोग प्रार्थना करें, उपवास करें, दशमाँश दें, वगैरा, तब उसे खुद पहले प्रार्थना करनी, उपवास करना और अपना दशमाँश देना चाहिए। इस प्रकार, चरवाहा अपने लोगों का उदाहरण द्वारा मार्गदर्शन करता और निरीक्षण देता है।

3. **भेड़ों को चारा दो** (यूहन्ना 21:15-17)
जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों की जरूरतों को पूरा करना है, उसी प्रकार एक अगुए को परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का वचन खिलाना चाहिए। उसे उन्हें परमेश्वर के मार्गों की शिक्षा देनी चाहिए और परमेश्वर के वचन से सेवा करनी चाहिए ताकि लोग पोषण पाएँ, शक्ति पाएँ और उन्नति करें। उसे लोगों को परमेश्वर का वचन पढ़ने और पालन करने के लिए, पहले खुद करके, प्रोत्साहन देना चाहिए। अगुए को अपने लोगों से ऐसा करके परमेश्वर के वचन का निरन्तर अध्ययन और भोजन करने के द्वारा आगे रहना चाहिए। जब भेड़ों को परमेश्वर के वचन का सही चारा दिया जाता है तो वे परिपक्व होंगी, और ज्यादा यीशु के समान बनेंगी, और परमेश्वर के लिए फलवन्त होंगी।

   इसके अतिरिक्त, अगुए को पहचानने की जरूरत है कि लोगों को शिक्षा के कैसे प्रतिभोजन की आवश्यकता है, उनकी वृद्धि के स्तर को पहचानना है और उचित रूप से उन्हें चारा देना है। पता होना चाहिए कि किसे दूध देना है और किसे माँस (1 पतरस 2:2; इब्रा. 5:13-14)। नए विश्वासियों को सबसे महत्त्वपूर्ण और बुनियादी सिद्धान्तों में स्थापित करने की जरूरत होती है, उनके लिए परमेश्वर के वचन को छोटे छोटे टुकड़ों में बाँटना ताकि वे इसे समझ सकें। उन्हें माँस ज्यादा न खिला दें (यूहन्ना 16:12), जो सयानों के लिए है। इसलिए उचित वृद्धि होने के लिए लोगों को व्यावहारिक, भक्तिपूर्ण, प्रेरणात्मक और शिक्षा रूपी संतुलित चारा देना चाहिए।

4. **भेड़ों पर ध्यान दो** (इब्रा. 13:17; यूहन्ना 10:10)
अगुओं को समय के चिन्हों को पहचानना और शत्रु के हमलों के लिए हमेशा चौकन्ना रहना चाहिए। शैतान अभी भी एक शेर के समान गरजता है (1 पतरस 5:8), और इसी लिए अगुओं को उनके झुंड के लिए एक आत्मिक आवरक होने की

जरूरत है, और जिन्हें खुद अपनी रक्षा करनी नहीं आती है उनके लिए प्रार्थना और मध्यस्थता करके उनकी रक्षा करना। (प्रेरितों 20:28)। इसी कारण से अगुओं को उनके लोगों के लिए सदा प्रार्थना करनी चाहिए, झुँड की बाहरी हमलों से रखवाली करना और उनकी रक्षा करना (जैसे कि परीक्षाएँ, गलत शिक्षाएँ, प्रलोभन)। फिर भी चरवाहों को भीतरी बीमारियों पर भी ध्यान देना जरूरी है, जैसे कि आत्मिक सुस्ती, आनन्द की कमी, गलत रवैये, चिराभ्यस्त पाप, अविश्वास, नाराजगी, पतित होना, वगैरा के चिन्हों पर ध्यान देना। प्रेम और परवाह, बुद्धि और धीरज के साथ, परन्तु भी साहस और अधिकार के साथ, परमेश्वर का वचन उपदेश, समझाने, सुधारने और धर्म की शिक्षा देने के लिए उनके पास लाना जरूरी है (2 तीमु. 3:16)।

चरवाहे के काम में विचार के लिए दूसरे पहलू:

- अपना जीवन दे देने की उत्सुकता (यूहन्ना 10:15)
  एक चरवाहे की उसकी भेड़ों के साथ एक गहरी वचनबद्धता और वफादारी होनी चाहिए। जरूरत के समयों में उनकी देखभाल करना (यूहन्ना 10:13)। अपना जीवन और शक्ति उँडेल देना (यूहन्ना 10:11; मरकुस 10:45)। उनके घर मिलने जाना, उनके कल्याण के लिए परवाह दिखाते हुए उनकी सेवा करना। बलिदान देने को इच्छुक (1 यूहन्ना 3:16)।

- पवित्र आत्मा के सामर्थ में विविध प्रकार की जरूरतों की सेवा करो: (यहेजकेल 34:11-16)
  क) खोए हुओं को खोजो और लौटा लाओ - कोमल सुधार और प्रार्थना द्वारा (गला. 6:1; रोमि. 15:1)
  ख) अपंगों/टूटे दिलवालों/चोट खाए हुओं को मरहम लगाना – प्रेमभरी सलाह और पवित्र आत्मा की सेवकाई के द्वारा (यशा. 61:1)
  ग) बीमारों को चंगा करना – प्रार्थना और प्रेमभरी परवाह द्वारा (याकूब 5:14-15)
  घ) आत्मा में कमजोरों को शक्ति प्रदान करना – प्रोत्साहन और संगति द्वारा (1 थिस्स. 5:14)

सेवा के लिए बुलावा: सेवकपन और इसका तात्पर्य

विचार: अगुआई सेवकपन का अन्त नहीं है – यह और बड़े सेवकपन की शुरूआत है।

परिचय

एक सेवक एक व्यक्ति है जो खुद अपना मालिक नहीं है – वह दूसरे मालिक की सेवा करता है। दूसरे तरीके से कहें तो, एक सेवक एक व्यक्ति है जो अपनी व्यक्तिगत इच्छा पूरी करने के अधिकार के बिना जीवन जीता है; वह अपने मालिक की इच्छा पूरी करता है। वास्तव में, एक सच्चे सेवक का अपना कोई अधिकार नहीं होता है जिसकी वह माँग कर सकता है।

परमेश्वर के सेवक वे हैं जिन्होंने उनके जीवन और अनुभव में से खुद को और अन्य सब-कुछ को उतार दिया है, और यीशु को बैठाया है और उनके सारे जीवन का उसे प्रभु बनाया है (गला. 2:20)। इसका अर्थ है कि वे हर बात में यीशु को पहला स्थान देते हैं और वे धन, अधिकार, सम्पत्ति, या अन्य कुछ भी जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत है की सेवा नहीं करते हैं (मत्ती 6:24)। सबकुछ में परमेश्वर को पहला स्थान देने के बजाय, अधिकाँश मसीही कुछ रोक रखते हैं। वे शायद अपने होठों से कहेंगे 'यीशु प्रभु है', लेकिन वे जीवन के अनेक क्षेत्रों में वही करते हैं जो वे चाहते हैं। जब यीशु वास्तव में हमारे जीवनों का प्रभु है, तो जब वह हमसे उसके लिए कुछ करने के लिए कहता है तो हम उसे 'नहीं' कभी नहीं कहेंगे चाहे कितनी भी कीमत क्यों न हो।

"मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें। फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।" (1 कुरिं. 4:1-2).

परमेश्वर के राज्य में, अगुए उन पर जो उनके पीछे आते हैं प्रभुत्व नहीं जमा सकते हैं, क्योंकि उस राज्य में सब का केवल एक ही प्रभु है: यीशु मसीह (1 कुरिं. 8:6)। परमेश्वर के राज्य में, जो दूसरों की अगुआई करते हैं वे उन लोगों के सवक हैं। वास्तव में, मसीही अगुओं को परमेश्वर के सेवक होने का उसकी और लोगों की जिनके लिए वे जिम्मेवार हैं सम्पूर्ण हृदय से सेवा करके उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। परमेश्वर के अगुओं को जो उनके पीछे आते हैं उनसे कह सकने योग्य होना चाहिए, "मेरा अनुकरण करो", क्योंकि वे मसीह का अनुकरण कर रहे हैं और वैसे ही चलते हैं जैसा वह चला था (1 कुरिं. 11:1; 1 यूहन्ना 2:6)।

यीशु ने कहा, "जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान है, वह सेवक के समान बने।" (लूका 22:26)

हम किसकी सेवा करते हैं ?

सच्चाई यह है कि हर कोई एक मालिक की सेवा करता है, या तो शैतान की या परमेश्वर की)मत्ती 6:24; यूहन्ना 8:34-36; यूहन्ना 15:19; रोमियों 6:6-22; याकूब 4:4; 1 यूहन्ना 2:15-17; 1 यूहन्ना 4:4-6); कोई मध्य क्षेत्र नहीं है। हम या तो पाप और शैतान के प्रभुत्व में हैं, या हम यीशु मसीह द्वारा मोल देकर छुड़ाए गए हैं और अब उसके सेवक हैं (गला. 1:10)। जो प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए किया उसे चुकाने का हमारे पास कोई मुमकिन तरीका नहीं है, इसलिए, अब हम अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर की सेवा करें यही हमारी एक मात्र सही प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

आज के समाज में हम बिरले ही किसी दूसरे की सेवा करने के बारे में सोचते हैं। फिर भी अधिकाँश लोग जो वे करते हैं उसमें अधिकतर, अगर सबकुछ में नहीं तो, खुद को पहला स्थान देते हैं। इसलिए वे उनकी अपनी स्वार्थी लालसाओं की सेवा करने के भारी खतरे में हैं।

जो कुछ हमारा अधिकाँश समय और शक्ति लेता है और जिसके लिए हमने अपना हृदय दिया है – ये ही वे चीजें हैं जिनकी हम सेवा करते हैं। यदि ये चीजें परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हैं, तब तो ठीक है, लेकिन अगर नहीं हैं तो हम दूसरी चीजों या लोगों को, कम से कम अपने जीवनों के एक क्षेत्र में, प्रभु बनने दे रहे हैं। हमें सबकुछ में परमेश्वर को पहला स्थान देने की और हमारे जीवनों की पहले स्थान की प्राथमिकता के रूप में उसकी इच्छा पूरी करने की आवश्यकता है (1 पतरस 2:21; फिलि. 2:5-8)।

अगुओं के रूप में, हमें परमेश्वर के सेवक होना है; हमें अपने मालिक, यीशु मसीह की इच्छा पूरी करनी है; और हमें खुद को दीनता में दूसरों की जरूरतों की सेवा में देने की जरूरत है। जब हम खुद को और कुछ नहीं बल्कि परमेश्वर के सेवकों के रूप में देखते हैं, तब हमारा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और पवित्र आत्मा का माध्यम बनने के मार्ग में बहुत कम ही कुछ आड़े आएगा। जब हम अपनी नज़रों में कुछ बनते हैं तब हम केवल परमेश्वर की इच्छा के सेवक होना बंद कर देते हैं और वह करना शुरू करते हैं जो हमें सही लगता है। जो चीजें करने का हम फैसला करते हैं अच्छे विचार हो सकते हैं, लेकिन पवित्र आत्मा सा सामर्थ प्रवाहित नहीं होगा और इन चीजों को नहीं करेगा, क्योंकि वे परमेश्वर की इच्छा नहीं हैं। पवित्र आत्मा तब ही सामर्थ से कार्य करता है जब परमेश्वर की इच्छा पूरी की जा रही होती है (गला. 2:20)।

“इसलिए अब यहोवा का भय मानकर उसकी सेवा खराई और सच्चाई से करो; और जिन देवताओं की सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार और मिस्र में करते थे, उन्हें दूर करके यहोवा की सेवा करो। और यदि यहोवा की सेवा करना तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे, और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा।” (यहोशू 24:14-15)

यीशु सेवकपन का हमारा आदर्श

यीशु के समय में शासकीय रोमन समाज के लिए गुलामी मूल आधार थी। सामान्य रूप से गुलामों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाता था, लेकिन वे अस्विकार्य-व्यक्ति थे। यूनानी और यहूदी अधिकारी गुलामी को अप्रतिष्ठित और शर्मनाक मानते थे। यूनानियों को लगता था कि उनकी अन्तःशक्ति को हासिल करना उनके जीवन का लक्ष्य था। उनकी इच्छा को अधीन करने के लिए विवश करना या दूसरे के लिए अपना समय और मेहनत त्यागना कल्पनातीत था। यहूदी अधिकारी अपने बारे में सोचते थे कि वे शासन के लिए परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं। इसलिए उन्हें दूसरे लोगों की सेवा नहीं करनी थी, बल्कि जैसे वे परमेश्वर की सेवा करते थे उनकी सेवा की जानी थी। इस संदर्भ में यीशु ने सेवकपन के अपने वचन कहे थे।

यीशु ने कहा, “क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपना प्राण दे।” (मरकुस 10:45)

हम यीशु से और उसके आदर्श पर चलकर सेवकपन और दीनता वास्तव में क्या हैं सीख सकते हैं (यूहन्ना 13:1-17; फिलि. 2:5-11)। यीशु के लिए, खुद को कुछ नहीं समझना जीने का एक तरीका था। क्रूस को देखने के बहुत पहले सेवकपन उसके लिए एक जीने का तरीका बन चुका था। वह वास्तव में कुछ था लेकिन उसने खुद को कुछ नहीं बनाया था। यीशु ने खुद को सबका सेवक बनाया और फिर भी वह सब नामों में श्रेष्ठ नाम था और है, जो परमेश्वर के सामर्थ को निकटतम और व्यक्तिगत भाव से जानता था। अपनी सांसारिक सेवकाई में अनेक बार वह मृत्यु में से जीवन लाया; जब उसने मनुष्यों को छूआ वे स्वस्थ हो गए; जब वह बोला तो दुष्टात्माएँ थरथराईं और भाग गईं।

“जैसा मसीह का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी हो; जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।” (फिलि. 2:5-8)।

सच्चा सेवकपन शक्तिशाली है

यीशु दीनता और सेवकपन का परम आदर्श था और फिर भी वह एक सबसे शक्तिशाली पुरुष जो कोई आज तक हुआ है था। हालाँकि सच्चाई यह है कि यीशु के लिए भी वही सामर्थ उपलब्ध था जो हमारे लिए है – पवित्र आत्मा। यीशु समझ गया था कि पवित्र आत्मा तब ही सामर्थ में कार्य करता था जब पिता परमेश्वर उसे ऐसा करने के लिए देता था। इसलिए, यीशु ने अपने जीवन को पिता परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया था और उसने और कुछ नहीं केवल परमेश्वर की इच्छा पूरी की। यह सच्चा सेवकपन है (यूहन्ना 5:19)। इससे यीशु को उसका अधिकार और सामर्थ मिला, क्योंकि वह जानता था कि जब उसने वह किया जो पिता चाहता था, तो पवित्र आत्मा उसकी ओर से सामर्थ के साथ कार्य करेगा। इसलिए यीशु परमेश्वर की इच्छा के पूरे किए जाने का एक माध्यम बन गया। जब कभी भी उसने पिता को कुछ करते हुए देखा, तो वह जानता था कि वह वैसा ही पृथ्वी पर पवित्र आत्मा के सामर्थ में कर सकता था। जब यीशु बोला, तो यह ऐसा था जैसा कि पिता बोल रहा था और जब उसने कार्य किया, तो ऐसा था जैसा कि पिता कार्य कर रहा था।

हम उसी तरीके से जी सकते हैं

हमें यीशु के आदर्श का अनुकरण करने को कहा गया है (1 कुरिं. 11:1; 1 पतरस 221; 1 यूहन्ना 2:6)। अगर हम, नया जन्म पाए, आत्मा से भरे मसीहियों के रूप में, परमेश्वर की इच्छा का पता लगाएँ और इसके सेवक बन जाएँ, तो परमेश्वर उसकी इच्छा को पूरा होने के लिए उसके पवित्र आत्मा के सामर्थ को छोड़ेगा। कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है (लूका 1:37; लूका 18:27)। ऐसा करने के लिए, हमें ऐसे जीवन जीने हैं जो सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित हैं; तब हम भी माध्यम होंगे जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी कर सकता है। अगर हम परमेश्वर के लिए खुद को उपलब्ध करेंगे तो वह हमें बताएगा कि क्या करना है।

हम परमेश्वर के सामर्थ के रहस्य यीशु के अनुभव में देख सकते हैं। हम परमेश्वर का आत्मा परिमाण के अनुसार ही पाते हैं: पिता हमें आत्मा देने के लिए उतना ही इच्छुक है, लेकिन हमारे हृदयों के सीमाबन्धन हम में पवित्र आत्मा के परिमाण को निर्धारित करते हैं। हम कचड़े और चिन्ताओं से इतना भरे हुए हैं कि बड़े परिमाण में आत्मा को होने के लिए जगह नहीं होती। चोटें, घमण्ड, स्वार्थीपन और विद्रोह हमारे हृदयों को निषेध करते हैं और हम में कार्य करने से पवित्र आत्मा को रोकते हैं। सच्चाई यह है कि यीशु के हृदय में अँधेरे के कोई निवासी नहीं थे। पिता के लिए पवित्र आत्मा को बिना परिमाण उँडेलने के लिए जगह थी (यूहन्ना 3:34)।

अधिकाँश मसीही उनके जीवनों में परमेश्वर को पर्याप्त जगह नहीं देते हैं और वे परमेश्वर की इच्छा के सेवक नहीं हैं। ये दो पहलू आज कलीसिया में समार्थ की कमी के मुख्य कारण हैं। हम परमेश्वर की सेवा जिस प्रकार वह कहता है हम करें अपनी शक्ति में नहीं कर सकते हैं – हमें परमेश्वर की इच्छा का पता लगाना है और फिर विश्वास में निकल पड़ना है, यह जानते हुए कि परमेश्वर का सामर्थ उसकी इच्छा पूरी होने के लिए योग्यता देगा।

हमें कुछ इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करना उस समय सही लग रहा था। हमें खुद को और कुछ नहीं केवल परमेश्वर के सेवक समझना चाहिए, जिनके कोई अधिकारी नहीं हैं और कोई माँग नहीं करते हैं। अगर हम ऐसा करते हैं तो परमेश्वर की इच्छा पूरी होने के लिए परमेश्वर के सामर्थ के कार्य करने के मार्ग में कुछ नहीं आएगा।

संघर्ष नहीं

जब आप परमेश्वर के सेवक के रूप में जी रहे होते हैं तो कोई संघर्ष नहीं होता है। अगर आपको पता हो कि जैसे आप उसकी इच्छा पर चलते हो तो वह आपके जीवन की सब बातों का ध्यान रखेगा, तब आप परमेश्वर में विश्राम कर सकते हो (मत्ती 6:25-34); इब्रा. 4:1-11; 2 पतरस 1:3)। जीवन सरल बन जाता है; परमेश्वर बात करता है, हम कहना मानते हैं, काम होता है। बेशक, ऐसे जीवन के लिए एक कीमत है जैसे हम यीशु के जीवन से प्रमाण पा सकते हैं, लेकिन अगर हम परमेश्वर के लिए वास्तव में प्रभावी होना चाहते हैं तो मसीही के लिए जीने का और कोई तरीका नहीं है। हमारा शरीर (यानी, देह और प्राण) भी ऐसे जीवन के तरीके से युद्ध करता है, क्योंकि यह खुद से विश्वास का जीवन जीने में असमर्थ है। परमेश्वर के साथ इस दरजे का जीवन पाने के लिए, हमें अपने जीवनों को अनुशासित करने की जरूरत है और परमेश्वर को अपने मन नये करने देना है।

यीशु ने कहा, "मेरा जूआ अपने ऊपर लो, और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ : और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती 11:29-30)

चिन्ह कि हम परमेश्वर के सेवक के रूप में कार्य कर रहे हैं

एक इब्री गुलाम को 6 वर्ष के बाद छोड़ देना होता था, यदि उस समय वह अपने मालिक के परिवार के साथ रहने का फैसला करता था। यदि वह रहने का फैसला करता था, तो नगर के न्यायियों के सामने उसका कान एक चिन्ह के रूप में सुतारी से छेदा जाता था कि वह जीवन भर के लिए दास है (निर्गमन 21:2-6; व्यवस्था. 15:12-18)। मसीहियों के रूप में, हमारे जीवन भी दूसरों के लिए चिन्ह होने चाहिए कि हम यीशु मसीह के सेवक हैं।

कुछ चिन्ह कि हम सेवकों के रूप में कार्य करते हैं:

- हम सबसे पहले परमेश्वर के राज्य की खोज करेंगे (मत्ती 6:33)
- हम सबके सेवक होंगे (मत्ती 20:26-28)
- हम इनाम पाने के लिए अपने मालिक की ओर देखेंगे (मत्ती 25:21)
- हम दूसरों की सेवा कर रहे होंगे और ऐसा करने में हम प्रभु यीशु की सेवा कर रहे होंगे (मत्ती 25:31-40)
- हम अपने आपसे इन्कार करेंगे, प्रतिदिन अपना क्रूस उठाएँगे और अपने मालिक, यीशु के पीछे चलेंगे (लूका 9:23)
- हम यीशु के आदर्श पर चलेंगे और इस प्रकार एक निस्वार्थ जीवन जीएँगे, सेवा करेंगे न कि सेवा करवाएंगे (लूका 22:27)
- हम उदारता से देंगे क्योंकि हम जानते हैं कि लेने से देना धन्य है (प्रेरितों 20:35)
- जब हमें कुछ सौंपा जाता है हम उसमें विश्वासयोग्य होंगे (1 कुरिन्थियों 4:2)
- हम दूसरों के बोझ उठाएँगे (गलातियों 6:2)
- हम दीन, नम्र, धीरजवन्त होंगे और हम प्रेम से दूसरे लोगों की सह लेंगे (इफि. 4:2; 1 यूहन्ना 3:11-24)
- हम सबकुछ सम्पूर्ण हृदय से करेंगे, क्योंकि हम हमेशा प्रभु के लिए न मनुष्यों के लिए काम करते हैं (कुलु. 3:22-24; इफि. 6:6-8)
- हम अपने ही हित के बारे में ही नहीं, दूसरों के हित के बारे में भी सोचेंगे (फिलि. 2:4)
- हम जो कुछ भी करते हैं उसमें अपने प्रभु को प्रसन्न करना चाहेंगे (2 तीमु. 2:4)

एक सेवक उपलब्ध होता है

अगुओं के रूप में हमें परमेश्वर ने जिनकी हम अगुआई करते हैं उनके लिए जिम्मेवार बनाया है। इसका तात्पर्य यह है कि हमें उन लोगों के लिए सब समय उपलब्ध रहना है – तब भी जब यह असुविधाजनक है! जो कुछ भी हम करें प्रभु के लिए सेवा हो (इफि. 6:6-8) और इसलिए हमें सेवा के हर अवसर का जो हमारे पास आता है लाभ उठाने के लिए हमेशा तैयार रहने की जरूरत है (लूका 12:35-48; मत्ती 24:45-51; मत्ती 25:31-46)।

हमें जो दूसरे लोगों को कहना है बिना पूर्वकल्पित विचारों या पक्षपात, निष्पक्ष दृष्टि से सुनने के लिए उपलब्ध रहना है। यह हमेशा आसान नहीं होगा, लेकिन जो दूसरे लोग कह रहे हैं उसे सुविचारित ध्यान देना और उन्हें सुनना कितना महत्त्वपूर्ण है। एक बार जब हमने व्यक्ति को सुन लिया है तो उनसे पीछा छुड़ाने के लिए हमें उन्हें कोई भी पुराना उत्तर नहीं देना है; हमें परिस्थिति में परमेश्वर को लाना है और उन्हें उसका उत्तर देना है।

हमारा लोगों की ओर जो हमें बीच में रोकते हैं सही रवैया होना चाहिए। हम किसी काम के मध्य में हो सकते हैं और फिर भी, अगर पूरी करने के लिए एक जरूरत है और आप जानते हैं कि जरूरत पूरी करने का यह परमेश्वर का समय है, तो रुको और जरूरत पूरी करो। यीशु ने ऐसा बार-बार किया (मरकुस 5:21-43; लूका 13:10-16; मत्ती 15:21-28)। वह एक काम कर रहा होता था और लोग उसे जो वह कर रहा होता था उसके बीच कुछ अन्य करने को कहते थे। उसने इन लोगों को डाँटा नहीं, लेकिन जैसा उन्होंने कहा था किया और फिर जो काम वह कर रहा था करना जारी रखा। अकसर जिसे हम हस्तक्षेप समझते हैं, वास्तव में समय होते हैं जब परमेश्वर चाहता है हम अपने नित्यक्रमों पर रोक लगाएँ, ताकि हम किसी की जरूरतें पूरी कर सकें। हमें परमेश्वर के लिए सौ प्रतिशत समय उपलब्ध रहने की जरूरत है और हमें चाजों को अपने नहीं बल्कि उसके तरीके से और उसके समय में करने की जरूरत है – वह सबसे अच्छा जानता है!

हमें उन्हें जिनकी हम अगुओं के रूप में सेवा करते हैं आश्वासन देने के लिए उपलब्ध होना है। सान्त्वना और आश्वासन के हमारे शब्द उनके लिए जिनकी हम अगुआई करते हैं बहुत मायने रखते हैं। असलीयत में, जब लोग हतोत्साहित या भ्रम में होते हैं तब प्रोत्साहन के ऐसे शब्द अक्सर साधन होते हैं जिसके द्वारा लोग परमेश्वर की उसकी सेवा में बने रहते हैं।

<u>अगुओं को एक दूरी से या केवल निदेशकों द्वारा ही हमेशा अगुआई नहीं करनी चाहिए; उन्हें अपने लोगों के लिए उपलब्ध रहना है। अगुओं को कभी-कभी उनके लोगों के साथ होना चाहिए।</u> उन्हें अपने लोगों और उनकी जरूरतों को समझने की जरूरत है और वे ऐसा अपने एकान्त में से नहीं कर सकते हैं जहाँ किसी को भी आने की अनुमति नहीं है।

इस क्षेत्र में आपकी सहायता के लिए कुछ सुझाव हैं:

- पास्टरों को अपनी सभा के बाद लोगों से बातें करते रुकना चाहिए, और उन पर नज़र रखनी चाहिए जो बात करना चाहते हैं, लेकिन आगे आने से शर्माते हैं।
- जिनकी हम अगुआई करते हैं उन्हें पता होना चाहिए कि हमारी हर किसी के लिए जिसकी एक असली जरूरत है खुला द्वार नीति है (बशर्ते कि यह हमारे निपटने के लिए उचित है)। प्रकट है कि अगर हमने उस क्षेत्र में जिम्मेवारी दूसरे व्यक्ति को सौंपी है तो लोगों की समस्याओं का अपने ऊपर अधिक बोझ ले लेना गलत होगा।
- अगुओं को जिनकी वे अगुआई करते हैं नियमित मिलने जाते रहना चाहिए, उनके काम-धन्धे की जगह पर जाना चाहिए, या उनके घरों में जा कर मिलना चाहिए, ताकि उनके साथ जिनकी वे अगआई करते हैं एक अधिक हलका वातावरण मिल सके।
- अगर आपको किसी जरूरत का पता चलता है और उस समय आप उससे निपटने के लिए बहुत व्यस्त हैं तो उसे ध्यान में रखो और निश्चय करो कि आप उसके बारे में कुछ करना भूलोगे नहीं।
- अगुओं को जिनकी वे अगुआई करते हैं उन्हें हमेशा प्रोत्साहन का एक शब्द या मौके पर एक वचन देने के अवसर की तलाश में रहना चाहिए (नीतिवचन 15:23)।

अगुए ऐसे लोग होने चाहिए जो उनके साथ जिन्हें जरूरत है अतिरिक्त हाथ बटाएँगे। उन्हें उनके लिए जिनकी वे अगुआई करते हैं और दूसरे जो उनके पास आते हैं, समय और शक्ति बलिदान करने के लिए इच्छुक रहना चाहिए। वास्तव में, अगुओं को जितनी उनसे उम्मीद की जाती है से ज्यादा करने का आदर्श पेश करना चाहिए (मत्ती 5:40-42)।

अगुआई में, हम अक्सर चुन नहीं सकते हैं कि हम किसकी सेवा करेंगे। हमें यीशु के समान उन सब की जरूरतें पूरी करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो हमारे पास आते हैं। अगुओं को केवल उन्हीं के लिए ही उपलब्ध नहीं होना चाहिए जो उनके कृपापात्र हैं। खुद को ऐसे लोगों से घेरे रखना जिनके साथ होना सहज है और जो हमारी सेवकाई का समर्थन करते हैं, आसान है। यीशु ने ऐसा नहीं किया और हमें भी नहीं करना चाहिए। यीशु के समान, हमें केवल परमेश्वर की इच्छा करने की खोज में रहना चाहिए।

इसका तात्पर्य हो सकता है कि हम अनाकर्षक और दुखी लोगों की लम्बे समय सेवा करते करते थक जाएँ, लेकिन परमेश्वर के सेवक को ऐसा करने में बुरा नहीं लगेगा। हमें अपने जीवन यीशु के नमूने के अनुसार बनाने चाहिए।

दूसरों की जरूरतें जहाँ पर वे हैं वहीं पर पूरी करना

अच्छे सेवक जानते हैं कि जिनकी वे सेवा करते हैं उनकी जरूरतों क्या हैं और उन जरूरतों को कैसे पूरा करना है; वे उनकी जरूरतों का जिनकी वे सेवा करते हैं पुर्वानुमान लगाने का प्रयास करते हैं, ताकि वे उन जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार और तत्पर रहें। मसीही अगुओं को सीखने की जरूरत है कि एक परिस्थिति की ओर उचित प्रतिक्रिया क्या है और सीखना है कि उस प्रतिक्रिया के अनुसार सेवा कब करनी है। इसका अभिप्राय हो सकता है जिनके लिए उचित हो उनको छूना ; गले लगाना, दूसरे के साथ रोना या हँसना; या सिर पर हाथ रख कर दूसरे की सेवा करना, वगैरा।

नौकर का काम करने की उत्सुकता

अगुओं को कभी भी इतने धमण्डी नहीं होना है कि वे छोटे छोटे काम करने में जिनको करने की जरूरत है अटक जाएँ। बेशक, अगुओं को इस प्रकार के काम हर समय करने की जरूरत नहीं होनी चाहिए (अगर जरूरत है तो उन्हें प्रतिनिधान की कला को सीखना चाहिए), लेकिन जरूरत पड़ने पर उन्हें करने के इच्छुक होना चाहिए। अगर अगुए (और खासकर वे जो अगुआई की अभिलाषा रखते हैं) ये छोटे छोटे काम कर सकें, तो वे पाएँगे कि दूसरे लोग जीवन में आगे चलकर यह सेवकाई करना चाहेंगे। अगर अगुए परमेश्वर के सच्चे सेवक हैं तो उन्हें कोई भी काम इतना छोटा नहीं लगना चाहिए कि उन्हें लगे कि उन्हें खुद को नीचा करना पड़ रहा है।

जो हमारे ऊपर हैं उनकी सेवा करना

हर मसीही को यीशु मसीह की जो अपनी देह का सर है, सेवा करने के लिए बुलाया गया है (इफि. 5:23)। मसीही अगुओं को इस बात में आदर्श पेश करना चाहिए। उन्हें उनकी सेवा करने में वचनबद्ध होना चाहिए जो अगुआई में उनके ऊपर हैं। यीशु मसीह अपनी कलीसिया का अधिकारी है; उसे जैसा ठीक लगता है वैसा वह घटाता और बढ़ाता है (भजन 75:6-7)। अगुओं को परमेश्वर और उसके सौंपे गए अधिकार के अधीन होनो की जरूरत है। लोगों को हमारी अगुआई को प्रतिक्रिया दिखाने को कहने का कोई लाभ न होगा, अगर बदले में हम उनकी ओर प्रतिक्रिया नहीं दिखा रहे हैं जो हमारे ऊपर अगुआई में हैं। अगुओं को अगुआई के पीछे चलने के आदर्श को रखना जरूरी है।

सही प्रेरणा से सेवा करना

सबसे ज्यादा प्रभावशाली मसीही अगुए वे हैं जो परमेश्वर की सेवा इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि वे उसे जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं। ऐसे अगुए पैसे, पदवी, प्रतिष्ठा, अधिकार, नाम या किसी दूसरे स्वार्थी अभिप्राय के लिए सेवा नहीं करते हैं। ये अगुए उनकी तुलना में जो परमेश्वर की कलीसिया में किसी दूसरे कारण से सेवा करते हैं, कहीं अधिक प्रयास कर पाते हैं, कहीं अधिक दबाव ले पाते हैं, और कहीं अधिक बलिदान कर पाते हैं। ये अगुए खुद को प्रमाणित करने के चक्कर में नहीं रहते हैं और, इसलिए, वे परमेश्वर के साथ उनके सम्बंध में विश्राम पाते हुए, सुरक्षित हैं।

आनन्द के साथ सेवा करना

हमें आनन्द के साथ सेवा करने के लिए बुलाया गया है, क्योंकि परमेश्वर को अनिच्छा से दी गई सेवा नहीं चाहिए। वह चाहता है कि हम उसकी सेवा सम्पूर्ण हृदय से करें। अगर हम परमेश्वर की सेवा आनन्द के साथ कर पाएँ, तो यह हमें सन्तुलित रहने, हमारी प्रेरणाएँ सही रखने, परमेश्वर की शान्ति जैसे इसे होना चाहिए हमारे हृदयों में बनाए रखने में मदद करता है (फिलि. 4:4-7; कुलु. 3:15-17); और जैसे हम सेवा करते हैं यह हमें हृदय में सही रवैया बनाए रखने में मदद करता है। परमेश्वर के सच्चे सेवक जान जाते हैं कि उनके आनन्द का स्रोत परमेश्वर और दूसरे लोगों की सेवा करना है, न कि खुद की और उनकी अपनी स्वार्थी इच्छाओं की सेवा करना है। अपना आनन्द या सुख प्राप्त करने के बारे में अधिकतर चिन्ता करना एक सेवक का हृदय होने के विपरीत है। "प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद से भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो।" (रोमियों 12:11)

सेवा के वरदान

आत्मा के वरदान मसीह की देह में सेवा के वरदान हैं (1 कुरिन्थियों 12:4-11)। ये वरदान किसी को ऊँचा करने या हमारी अपनी खातिर अधिकार देने के लिए नहीं दिए गए हैं; वे इसलिए दिए गए हैं कि हम जो परमेश्वर के सेवक हैं, मसीह की देह की सेवा

करने के लिए जैसा भी आवश्यकता हो, समर्थ हों। असलीयत में, अगुओं की विशेष रूप से इन वरदानों को विश्वासयोग्यता से लागू करने की जिम्मेवारी है, ताकि मसीह की देह उन्नति करे और परमेश्वर का राज्य का विस्तार हो।

"जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए। यदि कोई बोले, तो ऐसा बोले मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा, परमेश्वर की महिमा प्रगट हो। महिमा और साम्राज्य युगानुयुग उसी का है। आमीन।" (1 पतरस 4:10-11)।

सेवकों को परमेश्वर उठाता है

अगर हम आखिरी स्थान लें और पहले परमेश्वर और दूसरों की सेवा करें, और अगर हमारे कोई अधिकार नहीं हों जिनकी हम माँग करें, तो परमेश्वर ने हमें सबसे ज्यादा संभव जगह पर उठाने की प्रतिज्ञा की है (मत्ती 20:25-28; मत्ती 23:11-12; मरकुस 9:35; मरकुस 10:43-44)। हमें परमेश्वर के हाथ के नीचे दीनता से रहने की जरूरत है (1 पतरस 5:6)। दीनता का अर्थ धूल में मूँह के बल पड़े रहना नहीं है। यह यीशु के समान जीना है, जो सेवक बना, परमेश्वर की इच्छा के अधीन रहा और केवल इसे किया है (लूका 14:11)। यीशु कोई कमज़ोर कीड़ा नहीं था, वह सबसे शक्तिशाली व्यक्ति था जो कभी जीवन जीया है।

अनेक अगुए उनकी सेवकाई में असफलता अनुभव करते हैं, क्योंकि वे चीजों को उनके अपने तरीके से और उनकी अपनी शक्ति में करने की कोशिश करते हैं। परमेश्वर को ऐसी आत्मनिर्भरता और और स्वाधीनता को तोड़ना पड़ता है ताकि वह एक ऐसा अगुआ पाए जो उसकी इच्छा की सेवा करता है और इसलिए पवित्र आत्मा के सामर्थ में कार्य करता है। दीनता की इस प्रक्रिया से परमेश्वर को उचित रूप से उस सफलता की महिमा मिलती है जो एक अगुआ अपनी सेवकाई में पाता है। आत्मनिर्भरता वास्तव में धमण्ड, स्वार्थीपन और आत्म-विश्वास है और जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहता ये उसके विरोधी हैं। असलीयत में, परमेश्वर अभिमान और धमण्ड से घ्रणा करता है (नीतिवचन 8:13) और वह अभिमानियों का विरोध करता है (1 पतरस 5:5)। वह चाहता है कि हम उसके साथ नम्रता से चलें (मीका 6:8)।

हमें खुद को उसी प्रकार देखने की जरूरत है जैसे परमेश्वर हमें देखता है – एक ही समय में दोनों सेवक और बेटे। हम खुद में तो कुछ भी नहीं हैं, लेकिन केवल परमेश्वर के अनुग्रह के कारण, हम अभी भी कुछ भी नहीं होते। हम जो कुछ भी हैं और हमारे पास है हम उसके आभारी हैं। हमें अपने जीवन अपने विश्वासयोग्य परमेश्वर के हाथ सौंपने की जरूरत है।

यीशु ने कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहाँ मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।" (यूहन्ना 12:24-26)

यीशु के समान सेवा कैसे करें ?

"देखो! मेरा सेवक!"

परमेश्वर पिता यीशु मसीह को इस प्रकार अनेक बार भविष्यवाणी के शास्त्रों में प्रस्तुत करता है (यशा. 42:1; 52:13; यकर्याह 3:8)। यीशु हमारे सेवकाई के लिए परमेश्वर का सिद्ध आदर्श है। उसके समान बनना पिता की हम सब के बारे में सबसे बड़ी इच्छा है।

परमेश्वर सब चीजों को मिलाकर हमें उसके पुत्र के स्वरूप के अनुसार बनाने के उस अच्छे उद्देश्य की ओर लगाता है (रोमियों 8:28-29)। पवित्र आत्मा की सेवकाई हमें उस स्वरूप में बदलना है (2 कुरिं. 3:18)। प्रेरित पौलुस की चुनौती थी, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसे मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ।" (1 कुरिं. 11:1)। कलीसिया में पँच-गुणा सेवकाई का उद्देश्य है कि सब मसीही "मसीह के पूरे डील-डौल तक बढ़ जाएँ।" (इफि. 411-13)। हम उस नमूने से कम जो मसीह ने प्रस्तुत किया है बैठ जाने का साहस न करें। उसने कहा, "मेरे पीछे आओ!" जैसे हम उसके पीछे चलते हैं, वह हमें परमेश्वर के हृदय, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवक बनाता और गढ़ता है।

हमें चारों सुसमाचारों का बारंबार अध्ययन करना और मनन करना चाहिए। उन्हीं में हम मालिक के पदचिन्हों को खोज कर चलते हैं। उसने "एक सेवक का स्वरूप" लिया और लोगों की सेवा कैसे करनी है करके दिखाया। यह तो जीवन भर का अध्ययन है लेकिन हम यहाँ पर उसके पाँच श्रेष्ठ विशेषताओं पर विचार करेंगे।

1. व्यक्तियों के लिए उसका प्रेम

अपने समय में यीशु से अधिक व्यस्त व्यक्ति शायद ही कोई होगा। उसका कार्यक्रम बिलकुल भरा होता था और समय बहुत कम। उसकी चर्चा तुरन्त फैल गई और भीड़ की भीड़ उसके पीछे थी। लेकिन व्यक्तियों के लिए उसका प्रेम वैसा ही रहा। हर पुरुष और हर स्त्री की कीमत का एहसास करने में वह असफल न रहा। उदाहरण के लिए यूहन्ना का सुसमाचार देखो। पहले अध्याय में हम उसे पतरस, फिलिप्पुस और नतनएल के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क बनाते हुए पाते हैं। वह नतनएल से विशेष प्रतिज्ञा करता है। अध्याय दो में प्रभु एक विवाह में सेवकों के साथ समय व्यतीत करता है। अध्याय तीन में हम उसे नीकुदेमुस के साथ एक धीरजवन्त और लम्बी बातचीत करते हुए पाते हैं, हालाँकि यह रात का, विश्राम का समय था। अध्याय चार में, बिना खाना खाए और सफर की थकान के मध्य वह उस सामरी स्त्री के प्राण को जीतने में लगा हुआ था। अगले अध्याय के शुरू में प्रभु एक बेसहारा लकवे के मारे हुए की सेवा करता पाया जाता है। दूसरे अध्यायों का आप खुद अध्ययन करो। क्रूस पर भी वह स्वर्ग के लिए एक व्यक्ति को जीत रहा था।

हर व्यक्ति के महत्त्व और कीमत पर जोर देने के लिए, यीशु एक के बाद एक तीन दृष्टान्त कहता है (लूका 15)। चरवाहा सौ में से एक भेड़ खो बैठता है। वह यह कहते हुए घर नहीं बैठा रहता है कि यह तो एक ही है जो खोई है। जब वह खोई हुई को खोज लेता है तो वह सबको उसके साथ आनन्द मनाने के लिए "विध्न डालता है।" स्त्री अपने दस सिक्कों में से एक को खो देती है। वह इसे खोजने के लिए सारे घर को झाड़ती है। जब वह इसे पा लेती है तो अपनी उत्तेजना और आनन्द में भागी होने के लिए अपनी सहेलियों को बुलाती है। फिर पिता आता है जिसका छोटा बेटा खो जाता है। कितनी खुशी होती है जब बेटा लौट आता है। हालाँकि बड़ा बेटा अन्दर आने से इन्कार करता है, उत्सव जारी रहता है। हर खोए हुए प्राण का मूल्य! चरवाहे के लिए हानि का प्रतिशत एक था, स्त्री के लिए दस था और पिता के लिए पच्चास था। उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हर व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है। 99 भेड़ें हमें संतुष्ट न करें और एक खोई हुई के पीछे जाने से रोके नहीं। हम अपनी सेवकाई में बहुत कम हासिल कर पाएँगे जब तक हम एक-एक व्यक्तियों की कीमत को न समझें। एक पापी के मन फिराने की खबर से स्वर्गदूत नाचने लगते हैं! क्या हम इतने उत्तेजित हैं ?

यीशु जब यरीहो में से गुज़र रहा था तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे थी (लूका 19)। उस नगर में एक खोजी था। उसके पास उसकी चाह के अनुसार पैसा था लेकिन शान्ति और खुशी नहीं थी। चुंगी लेनेवालों के सरदान की अपनी पदवी को भूलकर, वह यीशु को देखने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया। इससे पहले वह यीशु को देखता, यीशु ने उसे देख लिया। वह तो केवल यीशु को देखना चाहता था लेकिन यीशु उसके साथ ठहरना चाहता था। सबसे बड़ा ताज्जुब! खचाखच भरे कार्यक्रम के बीच यीशु ने जक्कई के साथ ठहरने के लिए समय निकाला। खोजियों के लिए कैसा प्रेम! यहाँ एक सेवक की परिभाषा है। एक व्यक्ति जो खोए हुओं को ढूँढने और उनका उद्धार करने जाता है! (लूका 19:10)

खोजी हमारे आस-पास सब जगह और सब प्रकार के हैं। मनुष्य एक निरन्तर खोज में है, उसे पता नहीं कि परमेश्वर ने खुद को पहले ही प्रकट कर दिया है। आओ हम यह शुभ संदेश सबको जिसे हम मिलते हैं बताएँ। समाज में लोगों की हैसियत सच्ची

शान्ति और आनन्द के लिए उनकी खोज को न बदलती है न कम करती है। फिलिप्पी का जेलर कैदियों को सजा देने और बदलने के लिए वहाँ था। लेकिन वह स्वयं बदला हुआ नहीं था। वह प्रचारक कैदियों के पैरों पर पुकारते हुए गिर पड़ा, "हे सज्जनो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ ?" (प्रेरितों 16:30)। उसी अध्याय में हम एक व्यवसायी स्त्री से मिलते हैं। नदी के किनारे बैठे हुए वह प्रचारकों को सुनती है और उद्धार पाती है। जरा सोचो, वह यूरोप की पहली विश्वासी थी।
आओ हम हर व्यक्ति से प्रेम करना और उसकी कीमत जानना सीखें। एक मसीह-समान सेवक बनने में यह पहला कदम है।

2. अप्राप्त के लिए उसकी परवाह

"मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं। मुझे उनका भी लाना अवश्य है। वे मेरा शब्द सुनेंगी" (यूहन्ना 10:16)। "और भेड़ों" के लिए इस परवाह ने हमारे प्रभु को निरन्तर कार्यशील रखा। उसने एक जगह पर ठहरने से इन्कार किया। एक स्थान में सेवकाई में सफलता के बावजूद भी दूर के क्षेत्रों के लिए उसका दर्शन कम नहीं हुआ। जब कफरनहूम के लोगों ने चँगाई और दुष्टात्माओं से छुटकारे के बड़े बड़े चमत्कार देखे, तो भीड़ "उसे रोकने लगी कि वह उनके पास से न जाए।" परन्तु उसने उनसे कहा, "मुझे अन्य नगरों में भी परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है, क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ।" (लूका 4:42-43)।
जबकि उसके चेले भोजन खरीदने गए हुए थे, यीशु समारिया की एक स्त्री के साथ अनन्त जीवन के बारे में बातचीत कर रहा था। जोश और उत्साह के साथ वह अपने नगर के बहुत से लोगों को यीशु की बातें सुनने के लिए ले आई। लगभग हर महिने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक नई पुस्तक मुद्रणालय में से निकलती है। लेकिन अध्याय सात के आयत नौ पर बहुत कम टीका किया गया है। हमें *आज* क्या करना होगा ताकि "हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा" की एक बड़ी भीड़ अनन्तकाल में मेमने के सामने आराधना करती हुई खड़ी होगी ? बाइबल की आखिरी पुस्तक की यह आयत हमारा सबसे गम्भीर ध्यान और कार्य पाने के योग्य है। आओ हम 2000 भाषाओं को न भूलें जो बाइबल के बिना हैं। यीशु ने दूर ईलाकों में सुसमाचार ले जाना शुरू किया और प्रारंभिक कलीसिया ने उसके पदचिन्हों पर चल कर विश्वासयोग्यता से इसे जारी रखा (प्रेरितों 1:1-2)। क्या हमें भी अपनी सेवकाइयाँ उसी नमूने पर बनानी और हर मनुष्य तक जो अभी तक पहुँचा नहीं गया है पहुँचने के उसे महिमामय कार्य को समाप्त करना चाहिए ?

3. बलिदान का उसका हृदय

यीशु के लिए सेवा और बलिदान समानार्थक थे। वह एक के बारे में दूसरे के बिना नहीं सोच सकता था। क्या हम में साहस है ? "अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:11)। भेड़ों की सेवा करने और उद्धार करने का कोई दूसरा तरीका नहीं हैं। मसीही सेवकाई कोई बेगार नहीं हैं बल्कि मैत्रीपूर्ण सेवा है जिसमें बलिदान शामिल है। यीशु ने कहा, "इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे" (यूहन्ना 15:13)। जिस सेवकाई में कोई कीमत नहीं लगती कुछ हासिल भी नहीं करती है।

अगर हमें ऐसी सेवा करनी है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता और लोगों को आशीष मिलती है तो हमें कम से कम तीन चीजों का बलिदान करना चाहिए

1) हमारी प्रतिष्ठा. "जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया" (फिलि. 2:6-7)। हम लोगों की सेवा तब तक नहीं कर सकते जब तक हम अपने तथाकथित प्रतिष्ठा और ऊँचे स्थान से नीचे नहीं आ जाते ताकि उनसे घनिष्ठ सम्बंध स्थापित कर सकें और मिल सकें। निष्पाप उद्धारकर्त्ता पापियों का मित्र बन गया। हर मसीही को इस उपनाम के योग्य होना चाहिए। मंच पर खड़ा होकर प्रचार करना सड़क के किनारे खड़े होकर पर्चे बाँटने से उत्तम नहीं है। पुस्तकें लिखना घर-घर जाकर प्रचार करने से उत्तम नहीं है। यीशु ने अपने चेलों से कहा, "देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं" (यूहन्ना 4:35)। इस दल को वहाँ उनके दो दिन के ठहराव के दौरान अच्छी फसल मिली (आय. 39-41)। हमें परे देखना सीखना है। हमें सुसमाचार पाए हुओं को ही सुसमाचार नहीं सुनाते रहना है। करोड़ों लोग अँधकार और मध्यरात्री की उदासी में बैठे हुए हैं। वे सुसमाचार सुनने के उनके पहले अवसर का इन्तज़ार कर रहे हैं।
शिशु यीशु को अपनी बाहों में लेकर, शमौन ने यह कहते हुए परमेश्वर को धन्यवाद दिया, "मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है, जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है, कि वह अन्यजातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति हो" (लूका 2:30-31)। ध्यान दो प्रेरितों ने किस प्रकार मसीहा से सम्बंधित एक प्रतिज्ञा को अपने ऊपर लगाया: "प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है,

'मैं ने तुझे अन्यजातियों के लिए ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो'" (प्रेरितों 13:47; यशा. 49:6)। असंख्य करोड़ों अभी भी अकथित हैं और असंख्य करोड़ों बाड़े से बाहर हैं। क्या हमें परवाह है? पौलुस यीशु का प्रेमी था। उसने उसकी अतिसावधानी से नकल की। वह उद्धारहीनों, अलभ्यों, सुसमाचार-रहितों, कलीसियाहीनों के बारे में अपने प्रभु की परवाह को बाँटा। उसने रोम के विश्वासियों को लिखा, "मेरे मन की उमंग यह है कि जहाँ जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया, वहीं सुसमाचार सुनाऊँ ... परन्तु जैसा लिखा है वैसा ही हो, 'जिन्हें उसका सुसमाचार नहीं पहुँचा, वे ही देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना वे ही सुनेंगे'" (रोमियों 15:20-21)।

सेवक पूछता है, "क्या तुम यीशु को जानते हो?" आदिवासी जवाब देता है, "वह यहाँ नहीं रहता, अगले गाँव में देखो।" प्रिय भाइयो और बहनों, अफ्रीका और एशिया में गाँवों के जनसमूह के इस सम्पूर्ण अज्ञान के लिए कौन जिम्मेवार है? "प्रचारक बिना कैसे सुनें? और यदि भेजे न जाएँ, तो कैसे प्रचार करें?" (रोमियों 10:14-15)। आओ हम जाएँ। आओ हम भेजें।

एक व्यक्ति के सर पर हाथ रखना उसके पाँव धोने से अधिक सम्मानित नहीं है। हम आज मसीहियत में विकृत हुई कीमतों से पीड़ित हैं। किसी भी किस्म की मसीही सेवा सबसे ऊँचे सम्मान के योग्य है। हमें केवल पाप करने से शर्म आनी चाहिए।

2) हमारा भोग-विलास. उस दिन यीशु कितना थका-माँदा और भूखा था। लेकिन वह मनुष्यों को जीत रहा था। उसकी भूख भोजन से अधिक लोगों के लिए थी। उसने अपने चेलों से कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते? ... मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ" (यूहन्ना 4:32-34)।

भविष्यद्वक्ता आमोस ने सिय्योन के रहनेवालों पर हाय घोषित की थी। वे हाथी दाँत के पलंगों पर लेटते, अपने बिछौनों पर पाँव फैलाए सोते, भेड़-बकरियों में से मेम्ने और गौशालाओं में से बछड़े खाते, सारंगी के साथ गीत गाते, दाऊद के समान भाँति भाँति के बाजे बुद्धि से निकालते, कटोरों में से दाखमधु पीते और उत्तम उत्तम तेल लगाते, लेकिन!, "परन्तु यूसुफ पर आनेवाली विपत्ति का हाल सुनकर शोकित नहीं होते!" (आमोस 6:1, 4-6)। यूसुफ उनका प्रतीक है जो बन्धन और गुलामी में हैं। इन लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम से विवश होकर हमें उनके उद्धार के लिए अपनी ऐयाशी की कुर्सियों और भोग-विलास के कक्षों में से निकलना है।

जब हर मिनट 90 लोग मर जाते हैं और उनमें से अधिकाँश मसीह-रहित अनन्तकाल या नरक में फिसल जाते हैं, तो हमारे लिए अपने कुछ न्यायोचित भोग-विलासों को बलिदान करना कुछ अधिन न होगा। "हे भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि समय कम किया गया है, इसलिए चाहिए कि जिन के पत्नि हों, वे ऐसे हों मानो उन के पत्नी नहीं...इस संसार के साथ व्यवहार करनेवाले ऐसे हों, कि संसार ही के न हों" (1 कुरिं. 7:29-31)।

3) हमारी धन-सम्पत्ति. यीशु अमीर था लेकिन वह हमें अमीर बनाने के लिए गरीब बन गया। इसलिए हमें भी अपने बटुए खोलने चाहिए और अपने रुपये-पैसे को उदारता से दे देना चाहिए ताकि गरीबों तक सुसमाचार पहुँच सके। यीशु ने विधवा की दो दमिड़यों और मरियम के इत्र की उदारता से प्रशंसा की, क्योंकि दोनों का तात्पर्य बलिदान था। हमें तब तक देना चाहिए जब तक यह हमें चुभे नहीं। जैसे कहा है, "हम पूछते हैं एक मनुष्य कितना देता है; मसीह पूछता है वह कितना पास रखता है!"

क्रूस इतिहास में सबसे बड़े बलिदान का प्रतीक है। हम इसे अपने गले में लटकाते हैं या इसे टाई-पिन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। आओ हम इसका असली अर्थ न भूलें।

4. पवित्र आत्मा पर उसकी निर्भरता

इन दिनों में जब अधिकाँश मसीह कार्यवाही मात्र मानवीय शक्ति और निपुणता द्वारा कार्यन्वित की जाती है, हमें यीशु पर एक ताज़ा नज़र डालनी चाहिए यह सीखने के लिए कि वह सेवा कैसे करता था। लूका जो एक डॉक्टर और एक इतिहासकार था, मसीह की सेवकाई के रहस्य को समझाता है, "परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया; वह भलाई करता..फिरा" (प्रेरितों 10:38)। यीशु ने स्वयं को अपने सारे अधिकार और शक्ति से खाली कर दिया और आत्मा की शक्ति पाई, और इस प्रकार हमें एक आदर्श दिया। "न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है" (जकर्याह 4:6)। जितनी जल्दी हम यह सच्चाई सीख लें उतना ही अच्छा है।

मसीह की आत्मा पर निर्भरता इस तथ्य से दिखती है कि प्रार्थना उसकी सर्वोत्तम प्राथमिकता थी। उसने अपनी 40 महिनों की सार्वजनिक सेवकाई के लिए 40 दिन उपवास और प्रार्थना में बिताए। वह जंगल से "आत्मा के सामर्थ से भरा हुआ" लौटा (लूका 4:14)। आज यह जंगल का अनुभव अनेकों ने एक शैक्षिक उपाधि से बदल दिया है। कोई अचरज नहीं हम कम ही हासिल करते हैं। तब भी जब वह बहुत लोकप्रिय हो गया और भीड़ की भीड़ उसे सुनने और उससे चँगाई पाने आती थी, यीशु "जंगलों में

अलग जाकर प्रार्थना किया करता था" (लूका 5:15-16)। जब बैटरी कमजोर पड़ जाती है तो कार धकेलने वाली हो जाती है। परमेश्वर के साथ एक दिन में एक घंटा तो कम से कम है (मत्ती 26:40)
यीशु ने अपनी सेवा प्रार्थना में शुरू की। वह इसे प्रार्थना से करता रहा। उसने इसे प्रार्थना में समाप्त किया (गतसमनी में और गुलगुता पर)। वह अब प्रार्थना कर रहा है "वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है" – इब्रा, 7:25)। क्या हम अपनी सेवकाई किसी दूसरे तरीके से करने की कोशिश करते हैं ? प्रार्थना हमारी अप्रर्याप्तता की स्वीकृति है। प्रार्थना परमेश्वर को बताती है कि हमें उसकी और उसके आत्मा की जरूरत है। जैसे किसी ने लिखा है, "आत्मनिर्भर प्रार्थना नहीं करते हैं, आत्मसंतुष्ट प्रार्थना नहीं करेंगे, दंभी प्रार्थना नहीं कर सकते हैं।"

5. अत्यावश्यकता की उसकी चेतना

"जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है; वह रात आनेवाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता" (यूहन्ना 9:4)। हमें भी यीशु के इस आत्मा द्वारा नियंत्रित और अधिकृत होना है। उसके पास गवाँने के लिए समय नहीं था। कितने कम समय में कितना अधिक पूरा करना था। अपनी सार्वजनिक सेवकाई के लिए उसके पास मात्र तीन वर्ष से थोड़ा ही अधिक समय था। उसकी मृत्यु पर कोई आतंक नहीं हुआ। दूसरी ओर उसने विजयोल्लास के साथ घोषणा की, "पूरा हुआ!" क्या आदर्श है!
हमें विश्राम की जरूरत है लेकिन हम ढीले नहीं पड़ सकते। 150,000 से अधिक ही लोग हर दिन मरते हैं!! बाढ़, भूकम्प और दूसरी विपत्तियाँ हजारों जीवन ले लेते हैं। कुछ देश सुसमाचार के लिए द्वार बंद कर रहे हैं लेकिन कई दूसरे द्वार खोल रहे हैं। यह अवसर का दिन है। खेत का स्वामी शायद कलीसिया को फसल इकट्ठी करने का आखिरी मौका दे रहा है। अगर हम देर करेंगे तो फसल नष्ट हो जाएगी। आओ हम जल्दी करें! मसीह के पुनरागमन में देरी का कारण है कि प्रभु "नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। यीशु ने कहा, "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा...तब अन्त आ जाएगा" (मत्ती 24:14)।
आओ हम जो आज कर सकते हैं कल तक स्थगित न करें। कल हमारे हाथ में नहीं है। हम नहीं जानते कल क्या होगा (नीतिवचन 24:1)। "देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरिं. 6:2)। अभी सब जगह सुसमाचार प्रचार करना है, कलीसियाएँ स्थापित करनी हैं। प्रभु के लिए तैयार लोग बनाने हैं।
कफरनहूम में प्रभु का भव्य स्वागत् किया गया। लेकिन नासरत में लोगों ने उसे ठुकराया। कुछ भी उसे हतोत्साहित नहीं करता था। वह चलते रहा। वह प्रचार करता रहा। वह राज्य का संदेश फैलाता रहा। वैसे ही हमें भी। "सात वरन् आठ जनों को भी भाग दे, क्योंकि तू नहीं जानता कि पृथ्वी पर क्या विपत्ति आ पड़ेगी...भोर को अपना बीज बो, और साँझ को भी अपना हाथ न रोक; क्योंकि तू नहीं जानता कि कौन सफल होगा, यह या वह, या दोनों के दोनों अच्छे निकलेंगे" (सभोपदेशक 11:2, 6)।
आओ हम खुद को जब तक आखिरी व्यक्ति तक पहुँचा नहीं जाता, अविराम सुसमाचार प्रचार में दे दें। हमें अपना काम तब तक समाप्त नहीं करना है जब तक पृथ्वी की छोर तक गवाही नहीं दे देते या हमारा जीवन समाप्त नहीं हो जाता है, जो भी पहले होता है! यीशु तभी "बैठ गया" जब उसने अपना काम समाप्त कर दिया था। आओ हम तब तक बैठे नहीं जब तक काम हो नहीं जाता!

<u>इससे पहले आप प्रभु यीशु मसीह के सचमुच एक उग्र, ईमानदार, वफादार और विश्वासयोग्य चेला बनने का फैसला करें, नीचे दिए वचनों पर विचार करो:</u>

- दाऊद ने विचार किया:
  "यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं, उनका बदला मैं उसको क्या दूँ ?" (भजन 116:12)
- यीशु ने अपने चेलों से कहा:
  "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे (और मेरा चेला बनना चाहे), वह अपने आप से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।" (मरकुस 8:34-35)
  "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने (तात्पर्य, कम प्रेम करे और द्वितीय महत्त्व दे), तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता; और जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।" (लूका 14:26-27)
- यीशु ने पतरस को चुनौती दी:

"क्या तू इन से बढ़कर मुझ से प्रेम करता है।" (यूहन्ना 21:15)

- पौलुस निम्नलिखित परिणाम निकालता है:
  "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ तो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।" (गलातियों 2:20)
  "और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएँ परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा।" (2 कुरिं. 5:15)

इसलिए, ऊपर दिए वचनों के प्रकाश में:

= आपका सच्चा उत्तर क्या है ?

= प्रभु यीशु मसीह को जानने, प्रेम करने, के पीछे चलने और सेवा करने का आपका सबसे अत्यधिक प्रेरक क्या है ?

आत्मिक अधिकार को समझना

यह सब क्या है ?

'आवरक एक सुरक्षा है जो उन्हें दी जाती है जो परमेश्वर का उपयुक्त अधिकार स्वीकार करते हैं।'

प्रवर्तक:

1) परमेश्वर जिसके पास सारा अधिकार है, अधिकतम आवरक देता है (भजन 23:1)
   उदाहरणार्थ: उसका बादल – निर्गमन 13:21; भजन 105:39; गिनती 12:15
   उसके पंख – भजन 91:4; मत्ती 23:37
   उसके स्वर्गदूत – भजन 91:11; मत्ती 18:10; 1 कुरिं. 11:10

2) उसके शासन का आधार आज्ञापालन है (1 शमूएल 15:22) और अव्यवस्था इसका विरोधी है - उदाहरणार्थ, 'जिसको जो जान पड़ता था वही वह करता था।' (न्यायियों 21:25; मत्ती 7:23; 24:12; 1 यूहन्ना 3:4)

3) परमेश्वर अपना अधिकार मनुष्यों और संस्थाओं को सौंपता है लेकिन अन्त में यह सब उसी से आता है। (रोमियों 13:1-4; यूहन्ना 19:11, वगैरा)

परमेश्वर के शासन में अधिकार का विस्तार इन तीन क्षेत्रों में है:

(क) **स्वर्गदूत-तुल्य**

विद्रोह	-	यशायाह 14
आदर	-	यहूदा 9
(स्वर्गदूतों का आवरक)	-	भजन 91:11 और 1 कुरिं. 11:10

(ख) **सम्बंध** - इफि. 5:21

1. कलीसिया

चरवाहे	-	इब्रा. 13:17
ऐल्डर	-	1 तीमु. 5:17
पुरुष/स्त्रियाँ	-	1 कुरिं. 11:1

2. परिवार

पति	-	इफि. 5:22
पत्नियाँ	-	1 पतरस 3:1
बच्चे	-	इफि. 6:1

(ग) **संस्थाएँ**

1. राष्ट्र - रोमियों 13:11; 1 पतरस 2:13; तीतुस 3:1
   (सीमाएँ: मत्ती 22:21 और प्रेरितों 5:28-29)

2. नौकरी-धन्धा

मालिक	-	इफि. 6:5
कर्मचारी	-	1 पतरस 2:18

निरादर और विद्रोह के उदाहरण: उत्पत्ति 9:20-27; 2 शमू. 6; गिनती 12-16

सौंपे हुए अधिकार के लिए आदर के उदाहरण: 1 शमू. 24:1; 26:9-11
और वे <u>प्रेरितों</u> से शिक्षा पाने में लौलीन रहे..... (प्रेरितों 2:42)

यहाँ हम उन अगुओं पर ध्यान देंगे जिन्हें यीशु ने कलीसिया को दिया है।
नोट: अगुआई हमारी आशीष के लिए एक दान है। (रोमियों 12:8)

<u>आओ हम इफिसियों 4:11 को देखें</u>

यीशु कलीसिया को अगुए उसका जीवन व्यक्ति करने, उसके अधिकार का प्रतिनिधित्व करने और उसकी सेवकाई जारी रखने के लिए देता है।

'उसने कुछ को <u>प्रेरित</u> नियुक्त करके, और कुछ को <u>भविष्यद्वक्ता</u> नियुक्त करके, और कुछ को <u>सुसमाचार सुनानेवाले</u> नियुक्त करके, और कुछ को <u>रखवाले</u> और <u>उपदेशक</u> नियुक्त करके दे दिया' (इफि. 4:11)

<u>यीशु</u>

इब्रा. 3:1	लूका 24:19	मत्ती 4:23	यूहन्ना 10	मत्ती 7:28
प्रेरित	भविष्यद्वक्ता	सुसमाचार सुनानेवाले	पास्टर	उपदेशक
एक "भेजा-गया" जो कलीसिया में एक आत्मिक पिता के रूप में नींव रखता है (1 कुरिं. 3:10)	परमेश्वर की योजना "देखता" है; परमेश्वर का वचन बोलता है; दर्शन देता है	सुसमाचार सुनाता है, खोए हुओं को खोजता है, बीमारों को चँगा करता है	लोगों की रखवाली करता, अगुआई करता, चारा देता	शिक्षा जीवन में लगाता; देखता है कि आज्ञापालन हो रहा है

नोट: ये सब अगुए "यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं।" (2 कुरिं. 4:5)
वे कलीसिया और संसार में प्रभु की सेवा करने के लिए आपको सज्जित करते और प्रशिक्षण देते हैं। (इफि. 4:12)
ये कलीसिया में "विभिन्न प्रकार के वरदान" हैं और किसी एक के पास सब वरदान नहीं हैं।

<u>आत्मिक अधिकार और अधीनता</u>

क) यीशु प्रभु है और वह अपनी कलीसिया में <u>आध्यात्मिक तौर पर योग्य</u> अगुओं को <u>अपना अधिकार सौंपता</u> है।
ख) वह चाहता है कि आप उनका आज्ञापालन करो जो आपके ऊपर हैं, और अधीन रहो (इब्रा. 13:17)।
ग) अधीनता <u>हृदय का रवैया</u> है; अधीन होना खुद को स्वेच्छा से अपने अगुओं की देखभाल, सुरक्षा और मार्गदर्शन में रखना है।

नोट: आत्मिक अधिकार की ओर स्वैच्छिक अधीनता बहुत आशीष लाता है क्योंकि जो "अधीनता में हैं पाते हैं कि उनके पास <u>अधिकार</u> है" (मत्ती 8:9)।

<u>आपको अपने अगुओं से क्या अपेक्षा करनी चाहिए और उनके साथ आपके सम्बंध में यीशु आपसे क्या अपेक्षा करता है?</u>

आओ हम इब्रानियों 13:7, 17-18, 24 देखें।

> "जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो; और ध्यान से उनके चाल-चलन का अन्त देखकर उनके विश्वास का अनुकरण करो" (आय. 7)। "अपने अगुवों की आज्ञा मानो और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा; वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी साँस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं" (आय. 17-18)। "अपने सब अगुवों को नमस्कार करो" (आय. 24)।

इससे हम देखते हैं:

(क) आप अपने अगुओं से क्या बनने की अपेक्षा कर सकते हो

1. ऐसे पुरुष जो 'परमेश्वर के वचन से जीवित रहते हैं और आपको सिखाते' हैं।
   आखिरकार एक अगुए के जीवन और सेवकाई में उसका अधिकार परमेश्वर के वचन का अधिकार ही है।

2. ऐसे पुरुष जिनका 'व्यवहार' धार्मिक और सफल है।
3. 'विश्वास' के पुरुष - ऐसा विश्वास जो नकल करने योग्य है और उन पर भरोसा करने और पीछे चलने के लिए आपको आकर्षित करता है।
4. ऐसे पुरुष जो 'आपके प्राणों के लिए जागते रहते हैं' और खुद को आपके कल्याण और उन्नति के लिए परमेश्वर को लेखा देनेवाले समझते हैं।

(ख) यीशु आपसे आपके अगुओं से सम्बंधित क्या अपेक्षा करता है

1. उनसे 'परमेश्वर का वचन' सुनो और खुद पर लागू करो।
2. उनके आदर्श का और 'विश्वास' द्वारा जीवित रहने में जो अगुआई वे देते हैं का अनुकरण करो।
3. उनकी 'आज्ञाओं का पालन करो' और अधीन रहो।
   उनके अधिकार को स्वीकार करके आपके लिए उनकी जिम्मेवारी को बोझ नहीं बल्कि आनन्द की बात बनाओ। यह आपके लाभ के लिए होता है।
4. उनके, उनकी सेवकाइयों और उनके परिवारों के लिए 'प्रार्थना' करो।
5. अपने अगुओं का स्नेह से नमस्कार करो जिससे उन्हें लगे कि आप उनसे प्रेम करते और उनका स्वागत करते हैं।
   उनकी प्रशंसा करो और उन्हें उचित आदर और सम्मान दो। (1 थिस्स. 5:12-13)

आपको जो चाहिए उसकी तैयारी करो

आपको जो चाहिए उसके लिए आपको तैयारी करनी है। यह आपके साथ होता नहीं है।

तैयारी अपने आप में विश्वास के लिए बुनियाद है। जीवन में सबकुछ, आप इसके लिए कैसे तैयारी करते हो, पर निर्भर करता है। आप एक व्यक्ति या अस्तित्व की सफलता के बारे में वह तैयारी कैसे करता है से बता सकते हो। अगर आज आप तैयारी नहीं करते हो तो कल आप गम्भीर समस्या में पड़ सकते हो।
एक सबसे महान काम जो हम कर सकते हैं वह है अनन्तकाल के लिए तैयारी करना। यह अचरज की बात है कि हमने स्वर्ग को अपना घर बनाने का फैसला किया, लेकिन फिर हम दैनिक जय के जीवन के लिए तैयारी नहीं करते हैं। हम आनेवाले वर्षों के लिए तैयारी नहीं करते हैं।
तैयार शब्द का अक्षरक्षः अर्थ हैः स्थापित करना, निश्चय, विश्वासयोग्यता के साथ प्रयोग में लाना, अटल रहना, प्रबन्ध करना, तैयार करना, स्थिर रहना, या खड़े रहना।

आओ मैं आप से कुछ प्रश्न पूछूँ जिससे आपको पता चले कि क्या आप सफलता के लिए तैयारी कर रहे हैं।

प्रश्न # 1. आपको कहाँ जाने की जरूरत है?
आपके पास एक लक्ष्य होना चाहिए। आपके पास कुछ होना चाहिए जिसके लिए आप प्रयत्न कर रहे हों। जीवन में अपने उद्देश्य को जानना सफलता है। आप किसी चीज का उपाय निकाल रहे, विकसित कर रहे या खोज निकाल रहे हों, लेकिन आपको अपने उद्देश्य को खोज निकालने के सफर में होना चाहिए।

प्रश्न # 2. क्या आप परमेश्वर की इच्छा खोजने वाले हैं ?
अब यह तो एक साधारण प्रश्न जैसा लगता है। "ओह, भाई, मैं प्रभु की इच्छा पता लगाने वाला हूँ।" आपको रोजाना परमेश्वर के साथ एक एकान्त जगह में जाना होगा और आपको अपना मन यहाँ तक खाली करना होता कि आप जो करना चाहते हो वह परमेश्वर को बताना छोड़ दो। उस कमरे में परमेश्वर के साथ तब तक रहो जब तक काम हो न जाता।

प्रश्न # 3. आपका हृदय क्या करना चाहता है? आपको क्या खुशी देता है? आपको क्या आनन्द देता है? आपको क्या परितोष लाता है? पता लगाओ आपके हृदय में क्या है। आपको किस में संतोष मिलता है पर चिन्तन करो। अपने वरदान और निपुणताओं का पता लगाओ। उन्हें इस्तेमाल करने पर ध्यान केन्द्रित करो।

प्रश्न # 4. जहाँ जाने की आपको जरूरत है वहाँ आप कैसे पहुँचते हो? आपको कैसे पता है आपको कहाँ जाने की जरूरत है? उन वरदानों पर नज़र डालो और अपने करीबी मित्रों से पूछो, "तुम मुझ में क्या देखते हो?" और फिर अवसरों पर नज़र डालो। मैं एक पास्टर बनने की खोज में नहीं था। मैं तो केवल सेवा करने के अवसर की तलाश में था। मैं ने अपने हृदय की सुनी। अगर आप अपने हृदय की सुनोगे तो यह आपको उस जगह ले जाएगा जहाँ परमेश्वर चाहता है आप हों।

उसके बाद, महत्त्व का अनुमान लगाने या निर्धारित करने के लिए, आप कहाँ हैं का एक अनुमान लगाओ। खुद से पूछो, "मेरा लक्ष्य कितनी दूर है?" जहाँ हो वहीं से शुरू करो। जो करना जानते हो, करो। जो करना है, करो।
परिस्थिति हमेशा नीति निर्धारित करती है। आपको पता होना ही चाहिए कि आप क्या करने वाले हो। जब मैं ने पास्टर का काम करना शुरू किया तब मुझे कुछ भी पता नहीं था कि मैं क्या करने जा रहा हूँ, लेकिन जहाँ तक मेरी योग्यता थी मैं ने कीमत पता लगाने की कोशिश की थी।

क्या आप कार्रवाही के लिए तैयार हो? क्या आप परिवर्तन के लिए तैयार हो? क्या आप आगे बढ़ने के लिए तैयार हो? आपका उद्देश्य क्या है? आपकी योजना क्या है? जहाँ आपको विश्वास है आप जा रहे हो वहाँ पहुँचने के लिए, आपको क्या तैयारी करनी पड़ेगी?

तीन चीजें

1) तैयारी। सबसे बड़ी तैयारी अपने अन्दर शुरू होती है।
2) प्रक्रिया। आपकी नीति क्या है ? आप वहाँ कैसे पहुँचने वाले हैं ? आपकी क्रिया-विधि की योजना क्या है ?
3) लोग। जहाँ आपको जाने की जरूरत है वहाँ पहुँचने के लिए लोगों की जरूरत पड़ती है। आपको कुछ ऊकाबों को खोजना होगा जो आपके साथ उड़ सकते हैं।

आप या तो सफलता या असफलता, दोनों में से एक की तैयारी कर रहे हो। तैयारी नहीं करके, आप अपनी नियति को ठुकरा रहे हो। सफलता रोज की बात है, यह लक्ष्य पर पहुँच कर सोचने की चीज नहीं है। मैं सोचा करता था, बस जीवन में मैं यह हासिल कर लूँ, तो मैं सफल हो जाऊँगा। सफलता कल नहीं शुरू होती है, यह आज शुरू होती है।

परमेश्वर जो कर रहा है उसमें कूद पड़ो। आप जो हैं, पहले से ही स्वर्ग में निर्धारित किया जा चुका है, आपको केवल उसमें आगे बढ़ना है। परमेश्वर के पास जो आपके लिए है उसमें बढ़े चलो। आज में बैठ मत जाओ, लेकिन कल की विजयों के लिए आज तैयारी करो।

आज तैयारी हमेशा कल सफलता देती है। किसी भी अद्यम के लिए सफल तैयारी तब शुरू होती है जब आपको पता हो आपको क्या चाहिए। आपको क्या चाहिए ? बैठो और इसके बारे में सोचो। अपने भविष्य की ओर लापरवाही मत दिखाओ। आप जो कल चाहते हो उसके लिए आज तैयारी करो। अपनी परमेश्वर द्वारा दी गई नियति को पूरा करो!

परमेश्वर की बाट जोहना – प्रभावशाली होने की कुँजी

परमेश्वर के राज्य में कोई भी अगुआ परमेश्वर के साथ उसके सम्बंध के गुण जितना ही प्रभावकारी होगा।

परिचय

आत्मिक अगुआई परमेश्वर पर एक सम्पूर्ण निर्भरता से आरंभ और समाप्त होती है। वास्तव में, हर मसीही को परमेश्वर का कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा का उसमें और उसके द्वारा निरन्तर कार्य करते रहने की जरूरत है। हमें हमेशा अपने जीवनों में परमेश्वर के लिए गुंजाइश बनाते रहने की जरूरत है और हमें निरन्तर उसकी बाट जोहते रहने की जरूरत है।

बहुत से मसीही परमेश्वर की बाट जोहना दबाव और कठिनाई के समयों की स्थिति पर ठकेल देते हैं। दूसरे जीवन में पूर्ति पाने के लिए परमेश्वर की बाट जोहने के अतिरिक्त सब कुछ प्रयास करते हैं। ये लोग मसीहियों के रूप में प्रेरित बने रहने का प्रयास करते हैं और उनके जीवनों में रिक्ति को सही क्रियाओं को करके भरने की कोशिश करते हैं, लेकिन पाते हैं कि यह काम नहीं करता और इसलिए वे परमेश्वर की ओर उनकी वचनबद्धता को छोड़ देने के लिए उकसाए जाते हैं। परमेश्वर हमारी योग्यता या उसके लिए हमारे काम से अधिक उसके लिए हमारी प्राप्यता के बारे में अधिक सम्बद्ध है। परमेश्वर बिना हम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते जिसकी अनन्तकाल में कोई कीमत होगी।

परमेश्वर के सारे अगुए ऐसे लोग होने चाहिए जो परमेश्वर से नियमित रूप से मिलते हैं। यह उन्हें यीशु को उनके सारे जीवनों का प्रभु बनाए रखने में मदद करेगा; उन्हें उनके सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने जिसे वे उत्तरोत्तर जान रहे हैं, दीनता से जीवन जीने में मदद करेगा; उसकी आराधना करने में उन्हें समर्थ करेगा जिसके सबकुछ जो वे हैं और उनका है के लिए ऋृणी हैं; और पवित्र जीवन जीने में उनकी मदद करेगा जो परमेश्वर को बदनाम नहीं करेंगे, और इस प्रकार उन्हें शुद्ध पात्रों के रूप में बने रहने में समर्थ करेगा जिन्हें परमेश्वर जब कभी आवश्यकता हो इस्तेमाल कर सकता है।

परमेश्वर की बाट जोहने की आवश्यकता

बाइबल बताती है कि मसीही जीवन जीना कोई आसान नहीं होने वाला है। वास्तव में, यह सुझाव देती है कि आरंभ करने से पहले हम कीमत का विचार कर लें (लूका 14:25-35), क्योंकि हम परीक्षाओं, सतावों, दुखों और कठिनाएयों में से गुज़रने वाले हैं। एक प्रकार के जीवन को जीने का एक मात्र तरीका है कि हम परमेश्वर के साधनों को इस्तेमाल करें। वे सब के लिए जिनको उनकी आवश्यकता है उपलब्ध हैं, लेकिन उन्हें पाने के लिए हमें अक्सर परमेश्वर की बाट जोहने की जरूरत होती है।

परमेश्वर की बाट जोहना कोई कभी-कभार की चीज नहीं है – इसे एक दैनिक अनुशासन बनने की आवश्यकता है जो हमारे जीवन-काल तक बना रहे। इसे कुछ ऐसा बनने की आवश्यकता है जिसे हम अपनी जीवन-शैली में मिला सकें, क्योंकि नहीं तो हम एक मसीही के रूप में सामान्य जीवन ही नहीं जी पाएँगे, कठिन समयों की तो बात ही कुछ और होगी। अनेक मसीहियों को लगता है कि वे इतने व्यस्त हैं कि इस कार्य के लिए उनके पास आवश्यक समय ही नहीं है, इसलिए वे बिरले ही इसे करने की कोशिश करते हैं। विशेष रूप से अगुओं को इस क्षेत्र में समस्या है। क्योंकि उनके जीवन इतने प्रकट होते हैं कि वे अक्सर उनके चेहरों पर एक मुस्कान लिए लगे रहने का प्रयास करते हैं, हालाँकि उनके आत्मिक जीवन टूट रहे होते हैं। कोई भी मसीही ऐसा होने नहीं दे सकता है। विपत्ति तो निश्चय आनी ही है। अगर परमेश्वर के पुत्र, यीशु मसीह को भी पृथ्वी पर अपने काम को करने के लिए परमेश्वर के साथ समय बिताने की आवश्यकता होती थी, तो उसके अनुयायियों के रूप में हमें कितना अधिक वैसा ही करने की आवश्यकता है। परमेश्वर ने हमें उसकी उपस्थिति में यीशु के द्वारा आने का मार्ग बनाया है और वह चाहता है कि हम इस अत्यधिक विशेषाधिकार का अपने लिए लाभ उठाएँ (इफि. 2:18; इफि. 3:12; इब्रा. 4:16; इब्रा. 10:19-22; 1 यूहन्ना 3:21-22)। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके पास आएँ और उसके साथ अपने सम्बंध को बढ़ाएँ।

"परमेश्वर के निकट आओ तो वह भी तुम्हारे निकट आएगा" (याकूब 4:8)।

कई मसीही जानते हैं कि उन्हें कैसा जीवन जीना चाहिए, लेकिन जैसे वे खुद को देखते हैं तो पाते हैं कि सबकुछ अच्छी हालत में नहीं है। वे आदर्शों को जानते हैं, लेकिन वे उनके अनुसार आचरण करते नज़र नहीं आते हैं। यह तब होता है जब हम खुद को वैसे देखते हैं जैसे परमेश्वर हमें देखता है और हम अपने जीवन दोबारा परमेश्वर को सौंप देते हैं, तब कुछ अच्छा होने लगता है। हमें उसे समस्याओं को बताने देना, जीवन जीने के लिए उसकी नीति देने, हमें उसका हृदय और उसका प्रेम देने, और उसका काम करने के लिए सामर्थ से हमें भरने देना चाहिए। यह यूँ ही नहीं हो जाता है। परमेश्वर ने ऐसा प्रबन्ध उनके लिए रख छोड़ा है जो उसकी बाट जोहते हैं (मत्ती 6:25-34)।

हमारे जीवनों की प्राथमिकताएँ क्या हैं ?

मसीही तब तक परमेश्वर के लिए प्रभावशाली तरीके से कार्य नहीं कर सकते हैं जब तक उनके जीवन उसके साथ सही नहीं हो जाते। असल में, मसीहियत काम करती नज़र नहीं आएगी जब तक हमारे भीतरी जीवन अच्छी हालत में नहीं हैं। इसलिए, एक मसीही के रूप में परमेश्वर की बाट जोहना हमारे जीवन की पहले स्थान की प्राथमिकता होनी चाहिए। अधिकतर लोग उनका अधिकाँश समय और शक्ति धन-दौलत, प्रतिष्ठा, उपलब्धियाँ, मित्र या एक अच्छा पारिवारिक जीवन, वगैरा प्राप्त करने में व्यतीत करते हैं। बेशक, हमारे समय के ये सब इस्तेमाल उचित हैं, लेकिन हम मसीहियों के लिए वे हमारे पहली प्राथमिकता नहीं होने चाहिए। यीशु ने कहा कि सबसे महान आज्ञा प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय, प्राण, शक्ति और मन प्रेम करना है (लूका 10:27) और आप यह तब ही कर सकते हैं जब आप पहले परमेश्वर को जानते हैं। जब हम अपने व्यस्त जीवनों में उससे मिलने के लिए जगह बनाएँगे, तो वह हमारे पास आने और खुद को हम पर प्रकट करने और हमसे मिलने को इच्छुक है। ये समय सरल या सस्ते नहीं हैं। वे ऐसे समय होने चाहिए जिन्हें हम बहुत कीमती मानते हैं और, असल में, हमें उन्हें अपने जीवनों में सबसे पहले स्थान में रखना चाहिगा।

अगर मसीही अपने समय के इस्तेमाल की प्राथमिकताओं को देख पाते, तो वे सम्भवतः चकित हो जाते। मार्था को कहे यीशु के शब्दों को याद कीजिए, जो उसकी सेवा करने में बहुत व्यस्त थी और शिकायत कर रही थी कि उसकी बहन मरियम उसकी सहायता नहीं कर रही थी; उसने कहा मरियम ने अच्छा भाग चुन लिया है क्योंकि वह उसके पैरों के पास बैठी उसकी बातें सुन रही थी (लूका 10:38-42)। अधिकतर मसीही आत्मिक तौर पर बहुत कमज़ोर हैं क्योंकि वे परमेश्वर की बाट जोहने के लिए समय जो उन्हें देना चाहिए नहीं देते हैं। हमें अपने समय को वैसे ही देखने की जरूरत है जैसे परमेश्वर इसे देखता है और इसे बुद्धिमानी से इस्तेमाल करना चाहिए, इसके इस्तेमाल के लिए उसकी प्राथमिकताओं को पाना चाहिए। आखिरकार, हम सब परमेश्वर के भण्डारी हैं और हमें इस अनावर्तक चीज के हमारे इस्तेमाल का उसे लेखा देना होगा।

इस आधुनिक संसार में, जहाँ प्रतियोगिता को बढ़ावा दिया जाता है और जहाँ उपलब्धि और पैसा बनाने को सफलता के प्रमाणक समझा जाता है, हम पाते हैं कि जिन चीजों को परमेश्वर हमसे करने को कहता है उन्हें अपने जीवनों में से निकाल देने को हम पर बहुत दबाव होता है। इन चीजों को महत्त्वहीन समझा जाता है और वे उतना हमारा ध्यान नहीं खींचतीं जितना हमारे परिवार, मित्र और जिनके साथ हम काम करते हैं। इन सब चीजों की आवाजें होती हैं जो हम पर चीखती हैं, जबकि परमेश्वर चाहता है कि हम उसके पास आना खुद चुनें।

मसीही अगुए भी आज इस दबाव से मुक्त नहीं हैं। उनकी आज पहले से कहीं अधिक माँग है और उनसे अधिक माँग भी की जाती है। दबाव बना हुआ है और अनेक अगुओं के पास वो नहीं है जो आत्मिक तौर पर सामना कर सकने के लिए उन्हें चाहिए। जिसके फलस्वरूप अनेक या तो पाप में गिर रहे हैं या अपने स्थानों से पदत्याग कर रहे हैं या मानसिक बीमारी या दूसरी किसी बीमारी से पीड़ित हैं। इसका कारण यह है कि वे न तो परमेश्वर के पास आ रहे हैं और न ही उससे सामर्थ पा रहे हैं जैसे उन्हें जरूरत है। वे परमेश्वर की सेवा उनकी अपनी शक्ति से, उनके अपने साधनों पर निर्भर होकर करने का प्रयास कर रहे हैं और यह काम नहीं करता है! और कड़ी या फुर्ती से मेहनत करना या और अच्छी प्रणालियाँ सीखने में समय बिताने से समस्या केवल बढ़ती ही है। मसीही अगुओं को अगर उन्हें एक ऐसी कलीसिया चाहिए जो प्रभावशाली तरीके से चलती है तो जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के पास कैसे आना है और उससे कैसे पाना है और अपने लोगों को भी ऐसा ही करना सिखाने की आवश्यकता है। अगर वे ऐसा नहीं करते तो वे दुर्घटनाओं की एक कभी न खत्म होने वाली सूची को उनके घर तक आते हुए या कलीसिया को छोड़ते हुए पाएँगे। इन फँदों से बचने का केवल एक ही सच्चा स्रोत है जिस तक हम मसीही जा सकते हैं और वो है परमेश्वर खुद।

परमेश्वर की क्रम

परमेश्वर ने हमें हमारी आत्मा और हृदय द्वारा काम करने के लिए बनाया है (यूहन्ना 7:37-39; लूका 6:43-45; मत्ती 15:18-19)। अगर हमारा हृदय (जिसे हम अपनी आत्मा के द्वार के रूप में देख सकते हैं) एक अस्त-वयस्त स्थिति में है तो हम और कुछ नहीं केवल अशांति के निकलने की ही अपेक्षा कर सकते हैं। अधिकाँश मसीहियों ने इसे बहुत अच्छी तरह से छिपाना सीख लिया है, लेकिन यह उन्हें अधिकतर परमेश्वर के लिए प्रभावहीन बनाता है। लेकिन जब हम अपने हृदय में परमेश्वर के साथ सही होते हैं तब ही परमेश्वर हमें अपने पवित्र आत्मा के द्वारा दूसरे लोगों के जीवनों को छूने के लिए इस्तेमाल करना शुरू करता है। हमारा हृदय परमेश्वर की बाट जोहने और जिस किसी बात की पवित्र आत्मा हम में दोषसिद्धि लाता है की ओर प्रतिक्रिया दिखाने से सही बनाया जाता है। एक बार जब हमने मन फिरा लिया है तो हम अपने पूरे जीवन का यीशु को एक बार दोबारा प्रभु बना सकते हैं। हम अपने हृदयों को उनमें परमेश्वर की शान्ति को राज्य करने देने के द्वारा (फिलि. 4:7; कुलु. 3:15), अपने विवेकों का कहना मानकर, अपने जीवनों को अनुशासित करके ताकि हम हर दिन परमेश्वर की बाट जोहने में बिताएँ, यह निश्चय करके कि जिन

बातों में हम भागी होना चाहते हैं उन्हें फिल्टर कर लें, और जो परमेश्वर चाहता है हम करें उसे करके सही रख सकते हैं (भजन 51:10-12; भजन 139:23-24)।

“सब से अधिक अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है।” (नीतिवचन 4:23)
मसीही अगुओं के रूप में, हम परमेश्वर को ऐसा जानें कि उसमें स्थिर खड़े रहने के लिए हमें और किसी चीज की आवश्यकता न हो। हमें परमेश्वर में चलते रहना चाहिए, चाहे हमारे आस-पास कुछ भी क्यों न हो रहा हो। कोई भी चीज हमें हिला न सके, न असफल होने या हार मानने का कारण बने। हम ऐसा खुद को परमेश्वर को अर्पित करके और उसे हमें बदलने देकर कर सकते हैं ताकि हम और अधिक मसीह समान बन सकें (रोमियों 12:1-2; इफि. 4:22-24; 2 कुरिं. 3:18; फिलि. 2:12-13)। हमें अपने जीवन पवित्र आत्मा के हवाले करने की जरूरत है जो हमें परमेश्वर दिखा सकता है और हमें उसके मार्गों में ले सकता है (1 कुरिं. 2:10-16)। अधिकाँश मसीहियों के लिए यह प्रक्रिया लगभग रुक सी गई है। कारण यह है कि वे उनके जीवनों के हर क्षेत्र को परमेश्वर के हवाले नहीं करते हैं और, इसलिए, इन क्षेत्रों में आगे नहीं बढ़ पाते हैं। ये चीजें इन लोगों के जीवनों को इतना अस्तव्यस्त किए हुए हैं कि पवित्र आत्मा उनमें से प्रवाहित होने में विघ्न अनुभव करता है। और यह इस हद तक होता है कि परमेश्वर उन्हें इस्तेमाल नहीं कर सकता है। मसीहियों के रूप में, हमें हमारे हृदयों में से जीवन जल बह निकलने के लिए बनाया गया है, और अगर यह हमारा सामान्य अनुभव नहीं है तो कुछ गड़बड़ है।

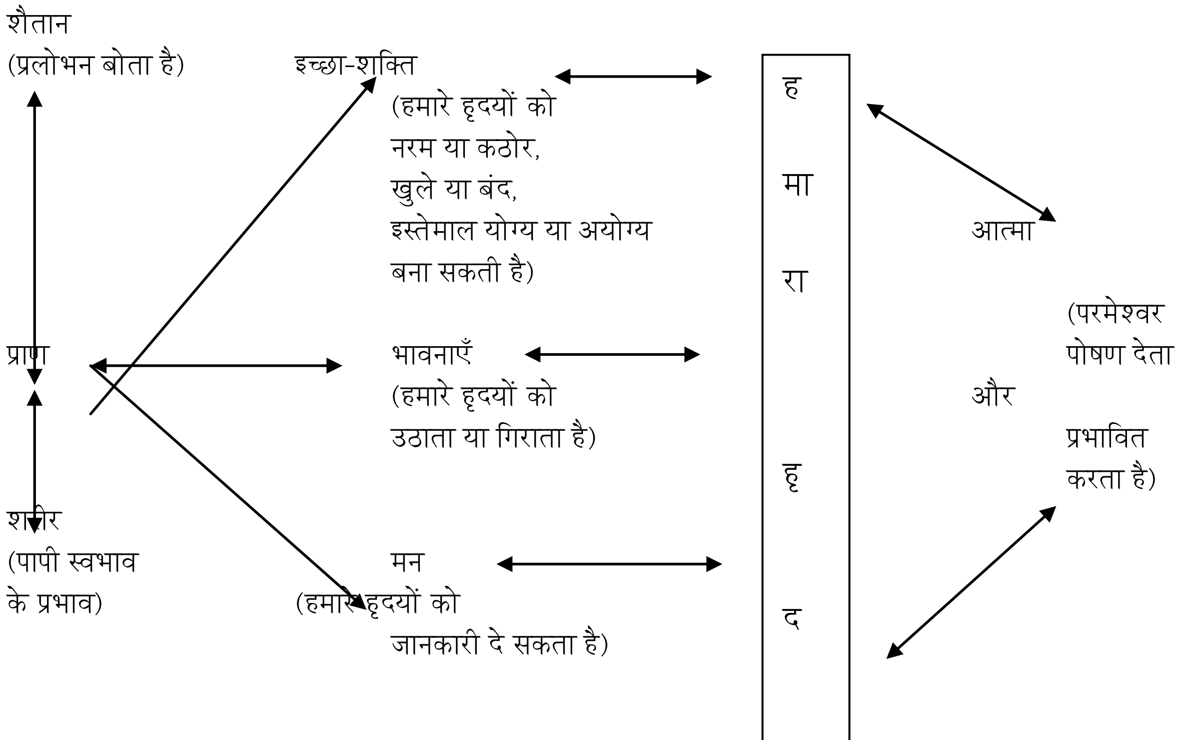

परमेश्वर की बाट जोहना कोई विकल्प नहीं है। यह केवल अधिक आत्मिक प्रवृत लोगों का ही अधिकार-क्षेत्र नहीं होना चाहिए। असल में, यह हर विश्वासी के जीवन का एक अत्यावश्यक भाग होना चाहिए। परमेश्वर को एकान्त और खामोशी में खोजना परमेश्वर के लिए कुछ अधिक फलदायक करने का आलसी विकल्प नहीं है, और न ही यह अनुत्पादक है, बल्कि बदले में यह बुनियाद है जिस पर हमें अपने जीवन और परमेश्वर के लिए अपनी सेवा बनानी चाहिए।
परमेश्वर के अगुओं को भी पहचानने की आवश्यकता है कि वे कमज़ोर लोग हैं जो अपने अस्तित्व के लिए परमेश्वर पर निर्भर हैं, उनका जीवन निर्वाह और सेवा करने की उनकी योग्यता तो है ही। जब हम परमेश्वर से मिलते हैं और अपने जीवनों में जो जगह उसे चाहिए देते हैं, तो वह सारी सामर्थ और शक्ति जिसकी हमें जरूरत है उँडेल देता है। हम सारी आवश्यक अन्तर्दृष्टि और बुद्धि पाएँगे, और विश्वास जो पहाड़ों को सरका सकता है पैदा होगा, और जैसे परमेश्वर हमें देखता है देखेंगे तो हमारी प्राथमिकताएँ व्यवस्थित हो जाएँगी, और परमेश्वर और दूसरे लोगों के लिए एक प्रेम विकसित होने लगेगा।

हमें परमेश्वर को नियंत्रण लेने देना है

दुर्भाग्यवश, अनेक मसीहियों के जीवनों में परमेश्वर के लिए उनकी सेवा में उन्हें सामर्थ देने के बदले, पवित्र आत्मा को अपना सारा समय उन्हें ठीक करने में ही खर्च करना पड़ता है। ये लोग अक्सर सोचते हैं कि वे परमेश्वर के लिए काफी आत्मिक नहीं हैं और इसलिए वे उसके साथ सही होने का कोई प्रयास नहीं करते हैं। वे केवल अपनी समस्याओं को सहते रहते हैं और दूसरों को सारा काम करने देते हैं। यह परमेश्वर का तरीका नहीं है। एक ऐसा जीवन होने के बजाय जिसमें परमेश्वर विराजमान है और सम्पूर्ण नियंत्रण में है, वे एक ऐसा जीवन जीते हैं जिसके कुछ अंश में परमेश्वर का नियंत्रण है, कुछ पर उनका खुद का और कुछ पर शत्रु का नियंत्रण है। यह एक काग का काम करता है और इन लोगों के जीवन परमेश्वर के लिए प्रभावहीन बनाता है। अगर ये लोग परमेश्वर की सेवा करने का फैसला करें भी, वे अक्सर शीघ्र ही पता लगा लेते हैं कि उनके पास वो नहीं है जो चाहिए या जो आदर्श और अपेक्षाएँ परमेश्वर की उनके लिए हैं (या उनकी अपने लिए हैं) उनसे वे मोल खाने में असफल होते हैं। इसलिए उनका उत्साह समाप्त हो जाता है और वे आशा छोड़ देते हैं। इन लोगों को सेवकाई, उपदेश, बाइबल अध्ययन, पुस्तकों की कोई भी मात्रा ठीक नहीं कर पाएगी; उन्हें परमेश्वर से खुद मिलने, उसके साथ अपने जीवन सही करने, और उसे उनकी गम्भीर जरूरतों को पूरा करने देने की आवश्यकता है। एक बार जब वे परमेश्वर के साथ सही हो जाते हैं तो वे उसकी प्रभावशाली सेवा शुरू कर सकते हैं।

परमेश्वर के हर एक अगुए को जब परमेश्वर उनसे बात करता है आज्ञापालन करना चाहिए, तब भी जब कभी-कभार यह चीजों के बारे उनके प्रत्यक्षज्ञान के विरुद्ध होता है। अगुओं को इस बात में मूर्ख नहीं होना है, लेकिन जब उन्हें पता है कि यह परमेश्वर है जो बात कर रहा है तब उन्हें उसका अक्षरशः आज्ञापालन करना चाहिए। जब परमेश्वर हमसे बात करता है तब उन शब्दों का क्या करना है और कब करना है, जानने के लिए हमें परमेश्वर की बुद्धि पाने की आवश्यकता है। कभी-कभी परमेश्वर से एक शब्द पाने पर जाकर हर कोई जो सुनेगा उन्हें सुनाने के बजाय इन्तज़ार करना उचित होगा, और दूसरे समयों में, शब्द को उसी समय बड़े साहस के साथ बोल देना उचित होगा, उदाहरणार्थ, एक सेवकाई की परिस्थिति में। परमेश्वर ने उन सबको जो विश्वास से बुद्धि की माँग करते हैं, देने की प्रतिज्ञा की है (याकूब 1:5-8)।

परमेश्वर के साथ अपने सम्बंध में से ही अगुए अपनी सेवकाई में बढ़ते हैं। परमेश्वर जानता है एक विशेष समय पर हम कहाँ हैं और हमें क्या जानने की आवश्यकता है। अगुओं को उनके जीवनों में जगह बनाने की आवश्यकता है ताकि परमेश्वर, जब जरूरत हो, तब उसके सत्य और इच्छा को प्रकट कर सके। परमेश्वर हमें उसके समीप आने के लिए प्रेरित करेगा लेकिन वह हमें विवश नहीं करेगा। हमें एक इच्छुक हृदय के साथ प्रतिक्रिया दिखाने और स्वयं को उसके लिए उपलब्ध करने की आवश्यकता है। हमें सीखने की आवश्यकता है कि जब परमेश्वर का आत्मा हम से बात करता है तब उसे उत्तर कैसे देना है और किसी भी समय उसे सुनने के लिए एकान्त में कैसे हो जाना है। प्रभु चाहता है कि उसके अगुए उस पर और उसके साधनों पर हमेशा निर्भर रहें और कभी भी केवल उनकी अपनी शक्ति और योग्यता पर निर्भर नहीं हों। अगर एक अगुआ परमेश्वर के साथ इस प्रकार का जीवन बनाए रख सकता है तो यह उसका बहुत सा समय व्यर्थ होने से बचा लेगा।

जल, जल को पुकारता है

"जैसे हरिणी नदी के जल के लिए हाँफती है, वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए हाँफता हूँ। जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा? मेरे आँसू दिन और रात मेरा आहार हुए हैं; और लोग दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? यह स्मरण करके मेरा प्राण शोकित हो जाता है कि मैं कैसे भीड़ के संग जाया करता था; मैं जयजयकार और धन्यवाद के साथ उत्सव करनेवाली भीड़ के बीच में परमेश्वर के भवन को धीरे धीरे जाया करता था। हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर आशा लगाए रह; क्योंकि मैं उसके दर्शन से उद्धार पाकर फिर उसका धन्यवाद करूँगा। हे मेरे परमेश्वर, मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है, इसलिए मैं यर्दन के पास के देश से और हर्मोन के पहाड़ों और मिसगार की पहाड़ी के ऊपर से तुझे स्मरण करता हूँ। तेरी जलधाराओं का शब्द सुनकर जल, जल को पुकारता है; तेरी सारी तरंगों और लहरों में मैं डूब गया हूँ। तौभी दिन को यहोवा अपनी शक्ति और करुणा प्रगट करेगा; और रात को भी मैं उसका गीत गाऊँगा, और अपने जीवनदाता ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। मैं ईश्वर से जो मेरी चट्टान है कहूँगा, "तू मुझे भूल गया? मैं शत्रु के अन्धेर के मारे क्यों शोक का पहिरावा पहिने हुए चलता फिरता हूँ?" मेरे सतानेवाले जो मेरी निन्दा करते हैं, मानो उससे मेरी हड्डियाँ चूर चूर होती हैं, मानो कटार से छिदी जाती हैं, क्योंकि वे दिन भर मुझसे कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है? हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है, मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।" (भजन 42:1-11)

यह भजन एक मनुष्य की नैराश्य प्रकट करता है जो परमेश्वर से मिलना चाहता है। उसने परमेश्वर के साथ आत्मिक गम्भीरता अनुभव की थी और वह परमेश्वर से एक नए सिरे से मिलना चाहता है। मसीहियों के रूप में, हम सबको सीखने की आवश्यकता है कि अपने अस्तित्व की गहराइयों में और परमेश्वर के हृदय की गहराइयों में कैसे पहुँचना है। इसी बात का वर्णन भजनकार

आयत 7 में करने की कोशिश कर रहा है जब वह "जल जल को पुकारता है" लिखता है। यह परम्परागत भाव में अपने बाइबल अध्ययन या प्रार्थना के समय में परमेश्वर की बाट जोहने के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह उससे गहरा है। यह आपका हृदय परमेश्वर के हृदय को छू रहा है। यह परमेश्वर की एक सीधी भावना पाना है। यह है जैसे कि हम परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हैं और उससे मिल रहे हैं जो सबका प्रभु है।

मसीही अगुए एक बड़े खतरे में हैं क्योंकि हम अपना प्रेरक अपनी सेवकाई से लेते हैं। हम सिद्धान्त, विचार, सच्चाई, और कैरिस्मैटिक अनुभव सम्मिलित करते हैं, लेकिन हम ऐसा परमेश्वर की वास्तविकता की गहराई में जाए बिना करते हैं। किसी चीज के लिए विश्वास में बने रहना या संकट के समयों में कार्य करते रहना अनेक मसीही अगुओं के लिए प्रेरक हैं, लेकिन एक भारी खतरा है कि हम इन बाहरी प्रेरकों को परमेश्वर से मिलने के बजाय अपनी सेवकाई की बुनियाद के रूप में ले लेंगे। हमें इन दो चीजों का अन्तर पता होना जरूरी है। बहुत सारे मसीहियों में परमेश्वर की एक सीधी अनुभूति की कमी है। वह हमारा स्रोत है – न कि सेवकाई और लोगों का माँगें और चुनौतियों जैसी बाहरी चीजें। इस प्रकार के बाहरी प्रेरक उचित हैं लेकिन हमें उनसे आगे बढ़ना है। अगर हम नही जाते हो हम पाएँगे कि जब कुछ गड़बड़ होती है या हमारी सेवकाई की क्रियाएं कम होने लगती हैं तो हम संघर्ष करेंगे। हमें इसके तात्पर्य को अनुभव से जानने की आवश्यकता है जिसे "बाइबल जल जल को पुकारता है" कहती है। परमेश्वर को जानने और उसकी बाट जोहने में एक गहराई है जिसे हमें समझने की आवश्यकता है। बेशक, एक मात्र तरीका जिसके द्वारा हम ऐसा कर सकते हैं वह है पवित्र आत्मा (1 कुरिं. 2:10-16)। केवल वह ही हमें अपनी आत्मा की गहराइयों में से परमेश्वर की गहराइयों को छूने की समर्थ दे सकता है।
परमेश्वर की बाट जोहना उन लोगों के समान है जो दूर भूमिगत गुफाओं में जाते हैं। ये लोग हैं जो वास्तव में जानते हैं वे क्या कर रहे हैं, जानते हैं कि जहाँ कोई भी पहले नहीं गया है वहाँ उन गरहाइयों में सुरक्षित कैसे पहुँचना है।
अधिकाँश लोगों का अपने विश्वास की ओर एक यन्त्रवादी पहुँच है। हम किसी दूसरे की पुस्तक पढ़ते हैं या हम किसी दूसरे के विचार लेते हैं और हम उन्हें अपने जीवनों में सम्मिलित करने का प्रयास करते हैं - और यह हमारा विश्वास है! जबकि सिद्धान्त, शिक्षा, व्यावहारिक और नीतिक चीजें महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प हैं, लेकिन अन्त में ये चीजें परमेश्वर में हमारे विश्वास की बुनियाद नहीं बनना चाहिए। परमेश्वर की वास्तविकता गहरी है – जिसको परिभाषा देना कठिन है। भजनकार एक हरिणी के समान जो पानी के लिए हाँफती है, इसकी तलाश कर रहा था। यह प्राण का परमेश्वर को खोजना है, हृदय का परमेश्वर के लिए खुला होना, हमारी आत्मा में परमेश्वर का एक ज्ञान है - अन्त में जिसके बारे में आप दूसरों को सिखा नहीं सकते हैं।
जब सबकुछ कहा जा चुका है, तो परमेश्वर की एकमात्र वास्तविकता ही है जो अनन्तकाल तक चलेगी। वह ही अन्तिम वास्तविकता है। हमारे अनुभव, सेवकाई, दर्शन, सिद्धान्त, वगैरा समाप्त हो जाएँगे, परन्तु परमेश्वर सदा के लिए चलता रहेगा। यहीं पर अदृश्य वास्तविकताएं दृश्य चीजों से अधिक महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली हैं। परमेश्वर की चेतना एक बहुत ही वास्तविक चीज है, हालाँकि यह अक्सर तत्काल स्पृश्य या प्रयोगात्मक नहीं होती। अपनी प्रार्थनाएँ कहना, शान्त बैठना, चीजें लिखना, मनन, वगैरा, यह सब कुछ गहरी चीजों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। बेशक, परमेश्वर की बाट जोहने का एक भाग शरीरिक तौर पर एकान्त में जाना और बाट जोहना है, लेकिन बाट जोहना तो जो कुछ हम बाहरी तौर पर करते हैं से कहीं गहरी बात होनी चाहिए। परमेश्वर की यह चेतना केवल मनुष्य की आत्मा को ही सूचनीय है क्योंकि परमेश्वर खुद इसे प्रकट करता है और हमारे हृदयों को नियंत्रित करता है।

बाट जोहने का स्थान

बाइबल परमेश्वर के ज्ञान के बारे में बात करती है। यह परमेश्वर के बारे में या विश्वास के बाह्य स्वरूप के बारे में जानना नहीं है: यह स्वयं परमेश्वर को जानना है! "मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं" (अय्यूब 42:5)।
बाइबल कहती है मनुष्य परमेश्वर का मुख देखकर जीवित नहीं रह सकता (निर्गमन 33:20), लेकिन यहाँ बाइबल के गवाहों का एक शक्तिशाली तांता है कि ऐसे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर को देखा और जिसके फलस्वरूप नाटकीय तरीके से परिवर्तित जीवन पाए। ये दो कथन परस्पर विरोधी नहीं हैं, क्योंकि पहला परमेश्वर को शरीरिक आँखों से देखने के बारे में बात कर रहा है। कोई भी मनुष्य परमेश्वर को इस प्रकार देखकर जीवित नहीं रह सकता। मूसा केवल परमेश्वर की पीठ देख पाया था, क्योंकि खाली आँखों से उसके चेहरे को देखना उसका अन्त कर देता। फिर भी, हम परमेश्वर को अपनी आत्मिक आँखों से देख सकते हैं। यशायाह, यहेजकेल और यूहन्ना जैसे कुछ लोगों ने इस प्रकार के अनुभव पाए थे। वे "आत्मा में" थे और उन्होंने परमेश्वर को देखा; फिर वे वैसे नहीं रहे। उन्होंने जीवित परमेश्वर की ऐसी चेतना, या समझ पाई कि जो वे थे बदल गया। इसने उनकी मानवता पर अपरिवर्तनीय तरीके से प्रभाव डाला जिससे परमेश्वर उनके सम्पूर्ण जीवन की प्रकृति का भाग बन गया। हम खुद भी कुछ ऐसा

अनुभव कर सकते हैं अगर हम अपना सबकुछ जो हम हैं परमेश्वर को दे दें और उससे मिलने के लिए अपने जीवनों में जगह बनाएँ। मसीहियत के अनेक भाग अक्सर इसे छोड़ देते हैं। बदले में, इसने जो दूसरे दर्जे का है उसका एक सुसमाचार बना लिया है। बालिग बपतिस्मा, खुला प्रचार, कैरिस्मैटिक आराधना, वगैरा सब महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन वे कभी भी प्रमुख चीजें नहीं बननी चाहिए। परमेश्वर की यह चेतना ही मायने रखती है। यह हमें मजबूत और अटल बनाता है। इसे सताव, निराशा या दुख-तकलीफ नष्ट नहीं कर सकती, जबकि आज अनेक मसीही हैं जिन्हें अगर मसीहियत का बाहरी साज-समान नहीं मिला तो वे टूट कर गिर जाएँगे। एक भाव से, उन्होंने अपने विश्वास को परमेश्वर से जोड़ने के बजाय, बाहरी चीजों से जोड़ लिया है।

"हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूँढूँगा; सूखी और निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। इस प्रकार से मैं ने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूँ। क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा करूँगा। इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा। मेरा जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होगा, और मैं जयजयकार करके तेरी स्तुति करूँगा। जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूँगा, तब रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूँगा; क्योंकि तू मेरा सहायक बना है, इसलिए मैं तेरे पंखों की छाया में जयजयकार करूँगा। मेरा मन तेरे पीछे पीछे लगा चलता है; और मुझे तो तू अपने दाहिए हाथ से थाम रखता है।" (भजन 63:1-8)। राजा दाऊद के समान, हमें जानने की आवश्यकता है कि हम अपनी धन-सम्पत्ति और अपनी स्थिति खो सकते हैं लेकिन परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ सम्बंध के बिना जी नहीं सकते हैं। चाहे यह कितना भी खराब क्यों न हो, दाऊद जानता था कि परमेश्वर के साथ सही सम्बंध रखना उसकी प्राथमिकता थी। हमारे समान दाऊद तब ही असली समस्या में पड़ता था जब परमेश्वर के साथ उसका सम्बंध डगमगाता था।

बाट जोहने की प्रक्रिया

परमेश्वर की बाट जोहना एक रहस्यवादी, कल्पित प्रकार की चीज नहीं होनी चाहिए। परमेश्वर बाइबल में एक दक्ष, शक्तिशाली, नास्तविक, सक्रिय, गतिशील व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया गया है। उससे मिलने से हमारे जीवन प्रभावित होने चाहिए। यह हमारे लिए प्रकाशन होना चाहिए; इसे हमें परमेश्वर और उसके मार्गों की जानकारी देना चाहिए; इसे हमें समझ और व्यावहारिक बुद्धि में बढ़ने में समर्थ करना चाहिए; और इसे हमारे हृदयों को बदलना चाहिए। यह हमें केवल कुछ पुस्तकें पढ़ने से कभी भी प्राप्त नहीं होगा, चाहे उनमें से एक बाइबल ही क्यों हो। अनेक लोग बाइबल पढ़ते, में जीते और उसकी भक्ति भी करते हैं, परन्तु वे मुश्किल से परमेश्वर को जानते हैं।

परमेश्वर की बाट जोहना दो ध्रुवीय अनुभवों से बढ़ता है, और फिर परमेश्वर के हृदय में वे संयोग पाते हैं। एक ध्रुव है परमेश्वर का खुद को हमारे लिए इतना वास्तविक बनाना कि उससे मिलने की इच्छा जाएगी नहीं (भजन 42:1)। दूसरा ध्रुव परमेश्वर से एक गहरे, जीवन-परिवर्तित करनेवाले तरीके से मिलने की हमारी भीषण भावना है।

क्या तुम वाकई समझते हो, परमेश्वर तुम्हारे जीवन में क्या कर रहा है? बहुत कम मसीही हैं जो जानते हैं। उदाहरणार्थ, हम में से कई हमेशा मुसीबत और नैराश्य से बचने की कोशिश कर रहे होते हैं, जबकि परमेश्वर उन्हें हम पर डालने की भरपूर कोशिश करता है। अक्सर हम परमेश्वर जो करने का प्रयास कर रहा होता है, उसका दोष शैतान पर लादते हैं। हमें जानने की आवश्यकता है कि परमेश्वर नियंत्रण में है। हमें परमेश्वर से पूछने की आवश्यकता है कि क्या हो रहा है और चीजों को निश्चित नहीं समझना है। हमें परमेश्वर के लिए निरोशोन्मत्त होने की आवश्यकता है और वह अक्सर ऐसा होने देने के लिए हमारी जरूरतों को इस्तेमाल करता है। जो लोग विश्वास के बारे में अधिक जानते हैं वही लोग हैं जो बड़ी से बड़ी कठिनाई में से गुज़रे हैं और परमेश्वर के करीब रहे हैं।

हमें परमेश्वर की बाट जोहने के योग्य बनाने में कुछ उपयोगी सुझावः

(1) - ध्यान भंग
- प्रलोभन
- चिन्ताएँ (1 पतरस 5:7)

किनारे रखना

हमें परमेश्वर को उसके लिए खोजना चाहिए। इसकी मदद में, परमेश्वर की बाट जोहने के लिए एक ऐसी जगह खोजना अच्छा होगा जो हस्तक्षेप और बाधाओं से स्वतन्त्र हो। इसलिए सबसे अच्छा होगा कि जहाँ तक मुमकिन हो अकेले रहो।

हमें यह भी निश्चित करना होगा कि हमारे जीवन परमेश्वर के साथ सही हैं। इसका पता लगाने के लिए हमें अपने अन्दर गहरा खोजना नहीं पड़ेगा, क्योंकि जब हम पहले परमेश्वर की बाट जोहने के लिए आएँगे तब पवित्र आत्मा हर उस बात के बारे में

बताएगा जिसे ठीक करने की आवश्यकता है। पाप हमारे अन्दर एक अन्धकार के समान है; जब हम परमेश्वर की पवित्रता में प्रवेश करते हैं, तो परमेश्वर की ज्योति में अन्धकार प्रकट हो जाता है। हमें प्रभु को देखने के लिए पवित्र होने की आवश्यकता है (इब्रा. 12:14) और हम इसे अपने पापों को स्वीकार करके – मन फिराने और यीशु मसीह के उद्धार के कार्य का अपने लिए लाभ उठाकर - ही हासिल कर सकते हैं (1 यूहन्ना 1:9)। प्रभु का भय इस बात में हमारी सहायता कर सकता है (भजन 25:14)। तब हम यीशु को अपने सारे जीवन के सिंहासन पर बैठा सकते हैं (विशेषकर अपने मन पर), यानि, परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शत्रु का सामना करके उसे दूर करो (याकूब 4:7)। जब हम अकेले हों, और शत्रु की आवाज को (उसका सामना करने के द्वारा) और अपने मन को (अनुशासित करने और इसे परमेश्वर के अधीन करने के द्वारा) चुप कराने के बाद, अब परमेश्वर ही है जो हमसे बात कर सकता है।

(2) **समय लगाओ (जल्दी मत करो)**

अपने कार्यक्रम में नियमित रूप से परमेश्वर की बाट जोहने के लिए समय निर्धारित करो। निष्ठुर हो जाओ और बहानो या व्यस्तता को फैसला मत बदलने दो। प्रभु की बाट जोहना कहीं भी और किसी भी समय किया जा सकता है, क्योंकि प्रभु को खोजने और उसे अपनी परिस्थियों में लाने के लिए, यह सिर्फ अपना समय और अपना हृदय अलग रखना है। जरूरत के अनुसार यह कुछ मिनटों के लिए किया जा सकता है या एक पूरे दिन भर या उससे भी लम्बे समय के लिए किया जा सकता है। कभी-कभार, प्रभु की बाट जोहने के लिए एक लम्बा समय अलग करने के लिए एक शान्त जगह में जाना भी उचित होगा। दिन के शुरू में सबसे पहला काम परमेश्वर की बाट जोहना अच्छा होगा। इससे हमें दिन भर परमेश्वर-बोध रहने में मदद मिलती है; इससे हमें इस महत्पूर्ण कार्य को पीछे धकेलने से रोकने में मदद मिलती है; यह हमें उसके साथ दिन सही शुरू कर में समर्थ देता है; यह हमारे दिन के लिए उसका आदेश और दिशा लाता है; यह उसे हमारे जीवनों के नियंत्रण में रहने के लिए आमंत्रित करता है; और यह हमें आश्वासन देता है कि वह हमारी देखभाल करेगा, वगैरा।

परमेश्वर के साथ अपने व्यक्तिगत समय के बाद, अपने परिवार के साथ प्रार्थना करना भी लाभदायक है। इससे प्रभु को अपने परिवार के मध्य में रखने में मदद मिलती है; यह परिवार में एकता और परमेश्वर की शान्ति की चेतना लाता है; और यह आपके परिवार में जहाँ और जब जरूरत हो उसे सेवा करने में अधिकार देता है। अगर एक अगुए का व्यक्तिगत या परिवारिक जीवन अच्छी हालत में नहीं है तो वह दूसरे लोगों की प्राभावशाली तरीके से सेवा नहीं कर पाएगा।

(3) **मन को प्रशिक्षण देनाः**

- एकाग्र करो
- मनन करो

जब हम शुरू में परमेश्वर की बाट जोहना आरंभ करते हैं तो हमारे मन सम्भव है विद्रोह करने की कोशिश करेंगे। हमें इसके लिए खुद को अनुशासित करना होगा और जैसे आदत पड़ती जाएगी, हमारे मन केन्द्रित होने लगेंगे और हम परिणाम देखने लगेंगे।

हमें अपने आस-पास के संसार में से अन्तर्वेधी शोर के विरुद्ध अपने हृदयों को ध्वनिरोधी करना सीखना है, जिनमें हमारे समय पर वो माँगें भी होती हैं जो हम पर नियमित रूप से चिल्लाती रहती हैं। अनेक लोग शोर के इतने आदी होते हैं कि उन्हें खामोशी शोर से अधिक कोलाहलपूर्ण लगती है और शान्त होने के प्रयास में बहुत असुविधा महसूस करते हैं। अगर हम कभी प्रभु की बाट जोहने के अपने समयों में कुछ प्राप्त करनेवाले हैं तो हमें इसे जीतना आवश्यक है।

परमेश्वर ने हमें कहे शब्दों को लिख लेना लाभदायक होगा ताकि हम उन्हें भूल न जाएँ। इस प्रकार हम अक्षरशः परमेश्वर की आज्ञा मान सकते हैं; हमारे पास एक विवरण रहेगा जिसे हम भविष्य में प्रोत्साहन और शक्ति पाने के लिए दोहरा सकते हैं; हम अपने जीवनों पर परमेश्वर के मार्गदर्शन का सहज से पता लगा सकते हैं (यानि, देख सकते हैं कि हम परमेश्वर में कैसे बढ़े हैं और बीते समय में वह कैसे विश्वासयोग्य रहा है); और जो हमारे भीतर हो रहा है उसे मूर्त रूप देने, परिभाषित करने और संगत होने में मदद मिलेगी।

(4) **उचित वातावरण की खोज करना**

परमेश्वर की बाट जोहना वातावरण पर निर्भर नहीं है, लेकिन प्रभु से मिलने के लिए अपने उपयुक्त समय का पता लगाना मन के सही मनोभाव में प्रवेश करने में हमारी मदद कर सकता है। एक ऐसी जगह या परिस्थिति ढूंढो जिसमें आपकी आत्मा निश्चिन्त हो सकती है। प्रभु की बाट जोहने के अपने समयों के लिए एक ही जगह में जाना और उन जगहों को उसके लिए

पवित्र करना अक्सर सहायक होता है। इन जगहों को किसी अधर्मी काम के लिए इस्तेमाल मत होने दो। इससे आपको शीघ्र शान्त होने और प्रभु को खोजने के हृदय के सही रवैये में आने में मदद मिलेगी।

(5) अपनी आत्मा को आगे बढ़ाना (अपनी आत्मा को क्रियाशील बनाना सीखना)

उपयोग करोः

- शान्त होना (खुद को स्थिर करो और हलके हो जाओ)
- स्तुति
- धन्यवाद
- परमेश्वर की पिछली विश्वासयोग्यता स्मरण करना
- आराधना
- अन्य भाषाओं में बोलना
- आत्मा के दूसरे वरदान
- परमेश्वर का वचन
- प्रार्थना
- वचनों को पढ़ना और मनन करना
- अच्छे भक्तिपूर्ण सहायकों को पढ़ना
- नित्यचर्या में बदलाव (सुस्ती से अपना पीछा छुड़ाना)

पहचानना सीखो कि आपके हृदय को क्या परमेश्वर की ओर प्रेरित करता है। फिर भी, उसके साथ समय व्यतीत करने के आवेग का इन्तज़ार मत करो। इसे अनुशासन के रूप में शुरू करो और फिर परमेश्वर को प्रेरित करने दो और आपका रवैया बदलने दो। अगर आपकी समस्या बनी रहती है तो दूसरे मसीहियों के साथ प्रार्थना करो। एक भावना होती है जिसमें व्यक्ति जो परमेश्वर से मिलता है कभी संतुष्ट नहीं होता है। उन्हें हमेशा और चाहिए, और वे हमेशा परमेश्वर के लिए हाँफते रहते हैं।

(6) परमेश्वर की बाट जोहने के असफल समयों के कारणों को जानना

- हम आत्मिक तौर पर कितने सूखे से हैं और परमेश्वर कितनी दूर लगता है कि हम परमेश्वर के साथ सही होने और दूसरों की सेवा कर सकने के लिए, उसके निवेश की आवश्यकता को पहचानते नहीं हैं।
- थकावट हमें ध्यान लगाने से रोकती है।
- व्यक्तिगत बोझ जो हमें अपनी समस्याओं में लवलीन रखता है कि हम परमेश्वर के पास जाते ही नहीं।
- अपने प्रार्थना के समयों को बाइबल अध्ययन के रूप में इस्तेमाल करना। इसलिए हम परमेश्वर से मिल नहीं पाते, उसकी सुन नहीं पाते, और अपने जीवनों में गुँजाइश नहीं बनाते कि परमेश्वर का एक खास वचन हम पर प्रभाव डाल सके, यानि, इसमें कोई जीवन नहीं होता।
- सोचना कि हमारे पास समय नहीं है या प्रभु की बाट जोहने के अपने समयों में जल्दबाजी करना।
- हम अपने प्रार्थना के समय से इतने ऊब गए हैं कि हमारा दिल इसमें है ही नहीं।
- अनुशासनहीनता
- निराशा, यानि, हम असफल हो रहे हैं और यह हमें परमेश्वर के पास जाने के बजाय दूर ले जाता है।
- गलत प्राथमिकताएँ।
- बहुत अधिक शोर या बहुत सा ध्यान भंग।
- जब परमेश्वर हम से बात करता है तो उसकी आज्ञापालन में असफलता। प्रभु की बाट जोहने के दौरान जो कुछ भी प्रभु हम से करने को कहता है, उसे करने की हमारे मन में गहरी लालसा होनी चाहिए। कई मसीही परमेश्वर को सुनने में असफल होते हैं क्योंकि वे उसके निदेशकों का पालन करने से बार बार इन्कार करते हैं।

(7) निष्क्रिय नहीं सक्रिय बनना

यदि हम परमेश्वर से उत्तर चाहते हैं तो हमें उसे प्रश्न पूछने होंगे, विशेष रूप से उन चीजों के बारे में जो उस दिन या उस समय हमारे जीवन से संबद्ध हैं। फिर हमें परमेश्वर को कुछ समय देना होगा ताकि वह उत्तर दे सके। याद रहे, परमेश्वर सही समय पर उत्तर देता है और अगर हम अपेक्षा करते हैं कि वह हमसे दोबारा बात करे तो हमें उसके वचन का पालन करना

चाहिए। परमेश्वर अवज्ञाकारी पर अपने शब्द गँवाता नहीं है। जिन चीजों को परमेश्वर बार-बार हम से कहता रहता है, वे या तो महत्त्वपूर्ण चीजें हैं या वे हैं जिनका हम पालन नहीं कर रहे हैं।
प्रभु की बाट जोहने के अपने समय को केवल उससे प्रश्न पूछने तक ही सीमित मत रखो। उसके सामने शान्ति से बैठने में कुछ समय बिताओ और पवित्र आत्मा को जैसा वह चाहता है करने दो। परमेश्वर को दिया समय कभी भी गँवाया हुआ समय नहीं है, चाहे यह दबाव का समय ही क्यों न हो। "यहोवा की खोज करो, तब जीवित रहोगे" (आमोस 5:6)।
परमेश्वर को खोजने में खुद को सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर और उसके उद्देश्यों के लिए दे देना होता है (व्यवस्थाविवरण 4:29; यशायाह 55:6)। "तुम मुझे ढूँढोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे" (यिर्मयाह 29:13)।

बोट जोहने का परिणाम

(1) धीरज

यह उस प्रकार का धीरज नहीं है जहाँ हम सब कुछ सह लेते हैं और कुछ नहीं करते; यह एक गतिशील, भक्तिपूर्ण धीरज है। नए नियम में धीरज के लिए दो शब्द हैं। एक का अर्थ है "स्थिरता या दृढ़ता" और दूसरे का अर्थ है "धीरज, दबाव बनाए रखने की तस्वीर के साथ"। परमेश्वर हमारे साथ दूसरे तरीके से धीरजवन्त है। वह हम पर झुका रहता है जब तक हम हार नहीं मानते और परमेश्वर को परमेश्वर नहीं होने देते।
"यहोवा के सामने चुपचाप रह, और धीरज से उसकी प्रतिक्षा कर; उस मनुष्य के कारण न कुढ़, जिसके काम सफल होते हैं, और वह बुरी युक्तियों को निकालता है। क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी। क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं; वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।" (भजन 37:7-9)
जब हम परमेश्वर का वचन सुनते हैं, उसका पालन करते हैं और धीरज से उसका इन्तज़ार करते हैं, तो यह हमारे जीवनों में बहुत फलवान् और उत्पादक होता है (लूका 8:15)। "मैं यहोवा की बाट जोहता हूँ, मैं जी से उसकी बाट जोहता हूँ, और मेरी आशा उसके वचन पर है" (भजन 130:5)।

(2) विश्राम

"अत: जान लो कि परमेश्वर के लोगों के लिए सब्त का विश्राम बाकी है; क्योंकि जिसने उसके विश्राम में प्रवेश किया है, उसने भी परमेश्वर के समान अपने कामों को पूरा करके विश्राम किया है।" (इब्रा. 4:9-10)।
परमेश्वर में विश्राम का अर्थ उससे मिलने को कुछ समय के लिए अलग होना है। परमेश्वर में विश्राम उस पर सम्पूर्ण निर्भरता को जानना है (भजन 62:1-5)। यह अपनी सारी चिन्ताएँ उस पर डालना है (1 पतरस 5:7)। यह अपने जीवनों और परिस्थियों को उस प्रकार देखना है जैसे वह देखता है और यह अपनी परेशानियों को लाकर उसके कदमों पर रखना है।
जब अगुए थके होते हैं और उनके आत्मिक साधन उतार पर होते हैं, तब उनका शरीर अक्सर तृप्त होने की माँग करता है, जैसे कि, टीवी देखना, खाना खाना, देर तक जागे रहना और सोना नहीं, ज्यादा सोना, वगैरा। आराम और विश्राम करना ठीक है, असल में, यह बहुत जरूरी भी है, लेकिन शत्रु को कोई भी विजय मत दो। केवल उन चीजों को करो जो परमेश्वर को महिमा लाती हैं।

(3) शिक्षा

"हे यहोवा, अपने मार्ग मुझ को दिखला; अपना पथ मुझे बता दे। मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ।" (भजन 25:4-5)
परमेश्वर का वचन परमेश्वर को जानने और बाट जोहने के परिणाम के रूप में आता है। परमेश्वर के अगुओं के रूप में हमें जो मार्गदर्शन, अन्तर्दृष्टि और स्पष्टीकरण चाहिए, यह देता है (यशायाह 55:8-11)। अगुओं को हर अवसर के लिए परमेश्वर की नीति को जानना आवश्यक है ताकि वे परमेश्वर के लिए विजयी और फलवान्त जीवन जी सकें (2 शमुएल 5:17-25)।
परमेश्वर की बाट जोहना हमें परमेश्वर को सुनने देता है। वह सेवक कितना बेकार है जो अपने मालिक की आवाज सुन नहीं सकता! परमेश्वर हम से विभिन्न प्रकार से बात करता है जैसे कि श्रव्य आवाज, दर्शन, स्वपन, शान्त धीमी आवाज, परिस्थियाँ, दूसरे लोग, वगैरा। अनेक मसीही परमेश्वर से बात करने में अच्छे हैं, लेकिन उसकी सुनने में बेकार हैं। परमेश्वर अक्सर हम से सचित्र रूप में बात करता है क्योंकि शब्दों के बदले इन्हें याद रखना सरल होता है। और, अगर हम जो सुन रहे हैं परमेश्वर से है तो दूसरे लोग भी अक्सर वही बात सुन रहे होंगे।

परमेश्वर की बाट जोहना:

- हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा पता लगाने में भी हमारी सहायता करता है।
- परमेश्वर जो कर रहा है क्यों कर रहा है जानने में भी हमारी सहायता करता है।
- हमारी आत्मिक प्राथमिकताओं और हमारी समय की प्राथमिकताओं को छाँटने में भी हमें समर्थ करता है।
- हमें परमेश्वर के हृदय में क्या है जानने में और हमेशा महसूस की गई जरूरतों या कुंठा में से प्रचार करने के बजाय, उसके अनुसार हमारे उपदेश बनाने में समर्थ करता है। अगर एक सभा की तैयारी करने से पहले एक अगुए के रूप में आप परमेश्वर की बाट नहीं जोहते हो तो आप यह कह रहे हो कि आप परमेश्वर से अच्छा काम खुद कर सकते हो और उस सभा के लिए बेहतर फैसले कर सकते हो।
- हमारे फैसले करने में भी हमारी सहायता करता है, क्योंकि हम मानवीय तर्क के बजाय परमेश्वर की बुद्धि और प्रकाशन के द्वारा फैसले कर सकते हैं।
- परमेश्वर जो अपेक्षा करता है वह ही नहीं, बल्कि परमेश्वर जो चाहता है जानने में भी हमें समर्थ करता है। राजा दाऊद के समान, हमें पता चलेगा कि बलिदान के नियम परमेश्वर की इच्छा के सम्पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं थे। परमेश्वर जो वास्तव में चाहता था और अब भी चाहता है, वह है आज्ञापालन।

(4) बल और विश्रान्ति

"परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उडेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।" (यशायाह 40:31)। "यहोवा की बाट जोहता रह; हियाब बाँध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हाँ, यहोवा ही की बाट जोहता रह!" (भजन 27:14)। "यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए।" (2 इतिहास 16:9)।

परमेश्वर की बाट जोहते रहने से उसकी सेवा करने की हमारी प्रेरणा बढ़ जाती है। जब हम उससे मिलते हैं और उसके शब्दों को सुनते हैं तो प्रभु की सेवा करने की प्रेरणा बहुत बड़ी होती है। ऐसा लगता है कि हम उसके लिए सबकुछ करने के लिए तैयार हैं और कुछ भी मुमकिन लगता है।

परमेश्वर की बाट जोहना:

- उसकी सेवा करने की हमारी प्रेरणा लौटा लाती है, क्योंकि हम परमेश्वर में पर्याप्त मात्रा में ठीक किए गए हैं।
- परमेश्वर में हमें जो विश्राम और आश्वासन की आवश्यकता है पाने में मदद करता है।
- हमें अपना विश्वास और बल, खुद में नहीं, बल्कि परमेश्वर में और हमें भी उसकी इच्छा पूरी करने और जयवन्त जीवन जीने के लिए इस्तेमाल करने की उसकी योग्यता दोबारा प्राप्त करने में समर्थ करता है।
- हमें पुन:शक्ति प्रदान करता है या हमारी आत्मिक शक्ति को दोबारा भरता है।
- प्रभु के लिए हमारी सेवकाई में आनेवाली चुनौतियों का सामना करते रहने के लिए हमें समर्थ देता है।
- जब कुछ गड़बड़ होती है तब निराशा को जीतने में मदद करता है – तब भी जब हमारी सेवकाई हम से छिन जाती है क्योंकि हमारी आशा प्रभु में है, उसमें नहीं जो हम उसके लिए करते हैं।
- प्रभु के लिए युद्ध में दोबारा लग जानें को, प्रभु में हमारा साहस, हमारी आशा और हमारी इच्छा को पुन:प्राप्त करने में मदद करता है।

(5) टूटा मन

"टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।" (भजन 51:17)। "यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है, और पिसे हुओं का उद्धार करता है।" (भजन 34:18)।

परमेश्वर ने उन चीजों को चुना है जो कुछ भी नहीं हैं ताकि वह उन्हें कुछ भी नहीं कर दे जो कुछ हैं (1 कुरिन्थियों 1:25-31)। जिस टूटेपन की हम यहाँ बात कर रहे हैं, वह कुचले जाने से नहीं आता है। उस टूटेपन से जो समतल या मानवीय स्तर पर आता है से अधिक गम्भीर एक टूटापन है। यह उस व्यक्ति का टूटा मन है जिसकी परमेश्वर की वास्तविकता से मुलाकात हुई है। हम में से कई परिस्थियों या सम्बंधों वगैरा से टूटे हुए हैं। परमेश्वर उन चीजों को इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन आखिरकार उन्हें चँगाई की आवश्यकता होती है। जो लोग परमेश्वर की वास्तविकता से मुलाकात करने पर टूटते हैं उन्हें चँगाई की आवश्यकता नहीं (उत्पत्ति 32:24-32)। यदि यह टूटापन चँगाई पाए तो वे वापस शरीर में आ जाएँगे।

(6) **परमेश्वर**

'पिता की असली जीवित उपस्थिति और सामर्थ्य आत्मा है जो हम में कार्य करता है।'

"क्योंकि प्राचीनकाल ही से तुझे छोड़ कोई और ऐसा परमेश्वर न तो कभी देखा गया और न कान से उसकी चर्चा सुनी गई जो अपनी बाट जोहनेवालों के लिए काम करे।" (यशायाह 64:4)।

जैसे हम परमेश्वर की बाट जोहते हैं वैसे परमेश्वर हमारे लिए बड़ा होते जाता है और उसका शासन हमारे जीवनों में अधिक दृढ़ता से स्थापित होता जाता है। जितना अधिक हम उसके लिए अपना प्रेम व्यक्त करेंगे, उतना अधिक हम पाएँगे कि हम उससे प्रेम करते हैं और हमारे जीवनों में प्रेम है; जितना अधिक हम उसकी आराधना करेंगे, उतनी अधिक हम उसकी आराधना करना चाहेंगे; जितना अधिक हम उसे उसकी विश्वासयोग्यता और प्रयोजनों के लिए धन्यवाद देंगे, उतने अधिक कृतज्ञ हम होंगे जिस प्रकार वह हमारे जीवन की हर बात में काम करता है।

आपके जीवन में किस चीज का महत्त्व है? हम शायद फुर्ती से आगे बढ़कर बड़े बड़े काम करना चाहेंगे, लेकिन इस सबके अन्त में, हमने क्या प्राप्त किया होगा। वास्तव में महत्त्व की बात यह है कि हम परमेश्वर को परमेश्वर होने दें। यदि परमेश्वर हमारे जीवन में सिर्फ एक ही बार बड़े सामर्थ्य के साथ प्रकट हो, और फिर हम अगले 40 वर्षों के लिए गुमनाम रहें – वह काफी होगा। यदि हमारे जीवन परमेश्वर को परमेश्वर होने दें, तो हमें संघर्ष या चालाकी से प्रभावित या चमत्कारी की जवाबी नकल करनी नहीं पड़ेगी; परमेश्वर परमेश्वर होगा!

परमेश्वर की बाट जोहना:

- परमेश्वर की अधीनता का रवैया विकसित करने में हमें मदद करता है।
- परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने में हमें समर्थ करता है (1 यूहन्ना 1:7-9)।
- हमारे हृदय परमेश्वर के हृदय से मिला देने के द्वारा, हमें वैसा ही महसूस करने में समर्थ करता है जैसे वह करता है।
- हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम (विलापगीत 3:22-23), हमारी सहायता करने की उसकी उत्सुकता (यहोशू 1:15; यशायाह 41:10), और हम, उसके बच्चों की रक्षा, पालन-पोषण और देखभाल करने की उसकी इच्छा (व्यवस्था. 32:10-13; भजन 57:1; भजन 91:4; मत्ती 23:37) को नए सिरे से पहचानने में हमारी मदद करता है।
- परमेश्वर के साथ एक उत्तम समय व्यतीत करने में हमें समर्थ करता है।
- परमेश्वर के हमारे ज्ञान को बढ़ाता है, हमारी देखने में सहायता करता है कि उसके लिए और हमारे लिए, यदि वह ऐसा चाहता है तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है।
- परमेश्वर की सामर्थ्य को जो संसार की किसी भी चीज से कहीं महान है, कुछ हद तक समझने में हमारी सहायता करता है और, इसलिए, हम में हमारे जीवन और हमारी परिस्थियों का सच्चा, भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण लाता है।
- परमेश्वर के प्रताप और महिमा को अनुभव करने में हमें समर्थ करता है।
- परमेश्वर से हमारा सम्बंध बनाता है।
- परमेश्वर जो है उसके लिए उसकी की आराधना करने में और जो उसने हमारे लिए किया है उसके लिए उसकी स्तुति और धन्यवाद करने में हमारी सहायता करता है।

(7) **परिवर्तित जीवन**

प्रभु की बाट जोहने से हम अपने आत्मकेन्द्र को परमेश्वर-केन्द्र में परिवर्तित कर सकते हैं, क्योंकि हम चीजों को अब वैसे देख पाते हैं जैसे परमेश्वर उन्हें देखता है। जब हम परमेश्वर से मिले हैं और उसके शब्दों को सुना है, तब हमें उन शब्दों को हम पर प्रभाव उत्पन्न करने देना है। हम ऐसा उन पर चल कर, उन्हें अपने जीवन का एक भाग बनने दे सकते हैं; और उन पर मनन करके उन्हें अपने जीवन में कार्य करने के लिए जगह दे सकते हैं। मनन करना अपने प्राणों को परमेश्वर और उसकी इच्छा से मिलाना है, और उसे उन चीजों में काम करने देना है जो उसने हमारे जीवन में प्रकट की हैं, जब हम उसकी बाट जोह रहे हैं। मनन हमें परमेश्वर के वचनों को अपना बनाने और उन्हें अपने अन्दर सम्मिलित कर लेने में सहायता करता है जिससे वे हमारे जीवनों में जीवित, सक्रिय और प्रभावशाली बन जाते हैं। याद रहे कि मनन के किसी भी समय पर पवित्र आत्मा का अधिकार रहे। अनेक मसीही परमेश्वर के शब्दों को सुनते हैं, लेकिन कभी भी उनका पालन नहीं करते और न ही उन्हें जीवन परिवर्तित करनेवाला प्रभाव जो परमेश्वर चाहता था हो, होने देते हैं।

(8) **दूसरे फल**

परमेश्वर की बाट जोहना:

- पवित्र आत्मा को हमें खोजने और हमारे जीवनों में कार्य करने की जगह देता है जैसा परमेश्वर जानता है उसे करना है।
- हमें अपनी जरूरतों को परमेश्वर के पास लाने देता है।
- हमें नए सिरे से पवित्र आत्मा से भरने देता है (इफि. 5:18) और जिससे हम परमेश्वर के सामर्थ्य और शक्ति से भर जाते हैं।
- हमें अपनी समस्याओं और परमेश्वर में अपनी परिस्थिति की वास्तविकता, महत्त्व और सही आकार को समझने देता है, यानि, परमेश्वर के दृष्टिकोण से चीजों को देखना।
- परमेश्वर और दूसरे लोगों के लिए बढ़ता हुआ प्रेम देता है।
- परमेश्वर से अन्तर्दृष्टि और बुद्धि पाने देता है।
- परमेश्वर की पिछली भलाई और विश्वासयोग्यता को याद करने और स्तुति करने देता है।
- पहाड़ों को सरकाने वाला विश्वास पैदा करता है।
- परमेश्वर की शान्ति को हमारे हृदयों में शासन करने देता है क्योंकि यह उस पर निर्भरता को प्रोत्साहन देता है। जब हम परमेश्वर की बाट जोहते हैं और शान्ति की जगह तक प्रार्थना करते हैं, तब हम रचनात्मक तरीके से उत्तर दे पाते हैं, न कि किसी समस्या या कठिनाई की ओर प्रतिक्रिया दिखाते हैं। हम परिस्थिति के लिए परमेश्वर का उत्तर सुनते हैं और विश्वास और आश्वासन से आगे बढ़ते हैं।
- परमेश्वर में एक बच्चे समान विश्वास हो - परमेश्वर की कलीसिया के अन्दर और बाहर, चाहे परिस्थिति कितनी भी अन्धकारमय क्यों न हो। भरोसे के इस सम्बंध में से, अगुए तारों के समान अन्धकारमय जगहों में चमक सकते हैं। यही बात है जिसे दूसरे देखेंगे और पीछे आएँगे।
- सेवकाई में जिस सामर्थ्य की हमें आवश्यकता है पाते है क्योंकि हम सामर्थ्य की अपनी कमी को दीन होकर स्वीकार करेंगे और उसे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा हमारे द्वारा कार्य करने को कहेंगे। यह हमें परमेश्वर का काम विश्वास से करने और अपने अविश्वास से उसमें बाधा नहीं डालने देता है।

हर मसीही की परमेश्वर में बहुत बड़ी सम्भावना है लेकिन यह तब ही साकार होगी जब हम परमेश्वर को अपने जीवनों में कार्य करने के लिए जगह देंगे। मसीहियों को परमेश्वर ने उनमें परमेश्वर के सामर्थ्य को धारण करने के लिए बनाया है। पवित्र आत्मा के इस सामर्थ्य के लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है और परमेश्वर के निर्देश के अनुसार मसीहियों को यह सामर्थ्य इस्तेमाल करना चाहिए। इसके बदले, अधिकाँश मसीही सूखे हैं और भीतर से खाली हैं या मात्र धार्मिक ज्ञान, आलोचना, निराशा या व्यंग से भरे हुए हैं। वे जानते हैं क्या होना चाहिए, लेकिन परमेश्वर में जिस चीज की जरूरत होती है उनके पास नहीं है। एक भरपूर, फलवन्त, शक्तिशाली, विजयी जीवन जीने के बजाय वे मात्र लटके हुए हैं। इन लोगों के लिए प्रभु की बाट जोहना ही समाधान है। यह हमें परमेश्वर के साथ सही होने में और हम में आत्मिक प्रध्वंसक (डाइनेमाइट) छोड़ने में मदद करता है। परमेश्वर हमें दिखाएगा कि पवित्र आत्मा का सामर्थ्य कहाँ और कैसे इस्तेमाल करना है जो फलस्वरूप छोड़ा भी जाएगा।

आराधना परमेश्वर के साथ सम्बंध में से उत्पन्न होती है

"हमारे लोगों को उनकी आराधना में परमेश्वर की बाट जोहने और उसकी उपस्थिति की, उसके साथ एक अधिक सम्पर्क की, उस पर सम्पूर्ण निर्भरता की एक गहरी चेतना को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देना हमारी सेवकाई में एक निश्चित लक्ष्य है।"

आराधना मात्र एक कार्य या अनुभव नहीं होना चाहिए जो मसीही सभाओं में कार्यान्वित किया जाता है। यह हर विश्वासी की जीवन-शैली होनी चाहिए। बेशक, इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम दिन के 24 घंटे गीत गाते फिरें। आराधना स्वयं का परमेश्वर को अर्पित करना या देना है; उसके लिए सम्पूर्ण रूप से उपलब्ध और आज्ञाकारी होना है। यह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बंध में से उत्पन्न होती है और जैसे परमेश्वर के साथ हमारा सम्बंध विकसित होगा इसकी गहराई भी बढ़नी चाहिए। परमेश्वर हमसे ऐसी प्रतिक्रिया चाहता है और इसलिए हमें उसके साथ एक बढ़ते हुए सम्बंध की खोज में रहना चाहिए। परमेश्वर हम से इसकी माँग नहीं करता है - वह चाहता है कि हम ऐसा करना चुनें। हमारा स्वर्गीय पिता ऐसे लोगों की तलाश में है जो उसकी आराधना आत्मा और सच्चाई में करेंगे (यूहन्ना 4:23-24) - आओ हम उसे निराश न करें! सच्ची स्तुति और आराधना हमें परमेश्वर-ज्ञान देती है जो हमारा आत्म-ज्ञान हम से ले जाती है और इसलिए परमेश्वर की बाट जोहने का यह एक महत्त्वपूर्ण भाग है।

दूसरों के लिए प्रार्थना

अगुओं के रूप में, परमेश्वर की बाट जोहने में जिनकी हम अगुआई करते हैं उनके लिए मध्यस्थता की प्रार्थना भी शामिल होनी चाहिए, यानि, उनके लिए दरार में खड़ा होना। आत्मा के नेतृत्व की मध्यस्थता की प्रार्थना के बिना, परमेश्वर के अगुओं की उनके लिए प्रभावी सेवकाई नहीं हो सकती है जिनके वे अगुआई करते हैं। मूसा को इस्राएल के लिए यह निन्तर करना पड़ता था: उसकी मध्यस्थता के बिना यह देश शायद आज यहाँ न होता (निर्गमन 32:7-14; गिनती 14:10-35)। हमारे समूह के बारे में यह कभी न कहा जाए कि परमेश्वर को कोई भी दरार के बीच खड़े रहने को न मिला, यानि, समस्याओं और परमेश्वर के बीच (यहेजकेल 22:30-31)।

अगुए के रूप में एक आन्तरिक प्रार्थना, आँसुओं से भी, करने से मत डरो। अगर हम चीजों को वैसे देखें जैसे परमेश्वर देखता है तो हम सम्भवतः इसे बहुधा करेंगे। परमेश्वर अपने लोगों के दुख या कठिनाइयों से अप्रभावित नहीं रहता है। एक कारण कि वह कलीसिया को अगुओं के रूप में पुरुषों के वरदान देता है ताकि वे उसके लोगों को संकट में से निकालें और कठिनाई के समयों में उनकी सहायता करें। परमेश्वर जो महसूस करता है अगुओं को महसूस करना है और इसका कुछ भाग परमेश्वर के लोगों तक पहुँचाना है।

हम परमेश्वर से बड़ी बड़ी चीजें माँग सकते हैं यदि हम उन्हें दीनता से और सही प्रेरणा से माँगें (याकूब 4:2-3)। किसे पता है प्रभु क्या करेगा (योएल 2:12-14)। परमेश्वर के लिए प्रभावशाली सेवा उस से निकटता में से निकलती है। असल में, परमेश्वर के लिए उसके साथ हमारा सम्बंध उसके लिए हमारी सेवा से अधिक मायने रखता है।

अगुए वे लोग हैं जिनसे दूसरे आशा करते हैं कि वे परमेश्वर को उनके जीवनों में लाएँगे। हम ऐसा तब ही कर सकते हैं जब हम परमेश्वर के साथ करीबी सम्बंध में रहते हैं (1 पतरस 4:11)। कुछ अगुए प्रभु के साथ उनके कंगाल समयों के कारण ऐसा कर पाने में असफल होते हैं। अगुए जो लोगों से बात करने से पहले परमेश्वर से बात करते हैं अक्सर उनके लोगों को उनकी सुनते हुए पाते हैं।

मसीही अगुओं को ध्यान देना है कि वे जितना दे नहीं सकते उससे अधिक वादे न करें। यदि एक व्यक्ति को परमेश्वर की बाट जोहने की आवश्यकता है तो कुछ और करने का सुझाव मत दो। मसीही उन इलाजों के बारे में सुन-सुन कर थक जाते हैं जो काम नहीं करते, उन अनुभवों के बारे में जो उनकी उम्मीदों को बना देते हैं परन्तु जिनका परिणाम कुछ नहीं होता। इसे भोग रहे लोग उनका जोश और उत्साह खोने लगते हैं और या तो: सब अन्दर ले लेते हैं; मसीहियत की गति को पूरा करते रहते हैं; दूसरी चीजें आ जाती हैं जो उनकी मसीहियत से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है; या वे प्रभु की बाट जोहने लगते हैं। अनेक मसीहियों के लिए जिनको लगता है परमेश्वर लाखों मील दूर है या जिन्होंने सफल मसीही जीवन के तमाम सूत्र आजमा लिए हैं और फिर भी कुछ ठीक से नहीं कर पाते हैं, परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानना और उसके साथ समय व्यतीत करना ही समाधान है।

सामूहिक रूप से प्रभु की बाट जोहना

प्रभु की सामूहिक बाट जोहना हमें परमेश्वर के पास एक समूह के रूप में लाता है। यदि हम उसे हमसे बात करने की गुँजाइश दें तो परमेश्वर इन सब अवसरों को इस्तेमाल करता है, और निश्चय करता है कि सब उसके साथ और एक दूसरे के साथ सही सम्बंध में हों। इससे समूह में एकता बढ़ती है, क्योंकि जितने निकट हम परमेश्वर के आते हैं उतने निकट हम एक दूसरे के होंगे। परमेश्वर उस समूह को आशीष देता है जो एक हृदय और एक मन का है (2 इतिहास 30:12; भजन 133:1-3; प्रेरितों 4:31-33; रोमियों 15:5-7; 2 कुरिन्थियों 13:11; फिलिप्पियों 1:27; फिलिप्पियों 2:1-4)। एक समूह के रूप में प्रार्थना करने से समूह के सदस्यों को परमेश्वर से एकही बात सुनने का अवसर मिलता है और वे उसकी सुनना सीखते हैं; और इससे सामूहिक मार्गदर्शन भी मुमकिन होता है (प्रेरितों 13:1-3)।

याद रहे, सब मसीहियों को परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने का अवसर प्राप्त है, क्योंकि हम सब उसके राज-पदधारी याजकों के समाज का अँश हैं (1 पतरस 2:9) और हम सब बराबर हैं क्योंकि हम परमेश्वर की सन्तान हैं (रोमियों 8:15-17)। इसलिए, प्रभु की सामूहिक बाट जोहना कुछ 'आत्मिक' जनों पर ही नहीं छोड़ा जाना चाहिए लेकिन यह समूह की जिम्मेवारी है।

अभ्यास

1. क्या आप जानते हैं कि परमेश्वर की उपस्थिति की एक गहरी चेतना बनाना क्या होता है?

या

- क्या आपका विश्वास मर हुआ है ?
- क्या आपकी आराधना बासी है ?
- क्या आपकी प्रार्थना यान्त्रिक है ?
- क्या आपकी आत्मा निष्क्रिय है ?

2. परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करना सीखना आरंभ करो। अपने रोजाना के नित्यक्रम में समय निश्चय करो और इसे एक प्राथमिकता बनाओ।

3. यदि आप परमेश्वर को अधिक गहराई से और प्रत्यक्ष जानते, तो आपको क्या लगता है आपके जीवन में बदलाव आएगा ?

4. आप एक अगुए के रूप में, कहाँ से पा रहे हैं:
    - निर्देशन ? (परिस्थियों, लोगों की जरूरतों, दबाव, प्रभु से) ?
    - बल और आनन्द ? (अपना काम, सफलता, दूसरों की अभिपुष्टि, परिवार, मित्र, प्रभु से) ?
    - अधिकार ? (अपनी योग्यता, शक्ति, संचार कौशल, अगुआई कौशल, प्रभु) ?

5. अधिकाँश मसीही केवल सिद्धान्त में ही जानते हैं कि परमेश्वर उनके लिए भला ही चाहता है (रोमियों 8:28) और कि वह उनकी सारी जरूरतों को अपने धन के अनुसार जो महिमा में है पूरी करेगा (फिलिप्पियों 4:19; 2 पतरस 1:3), लेकिन वे वैसे जीवन नहीं जीते जिनसे दिखे कि वे इन चीजों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। अनेक सोचते हैं कि यदि उन्होंने खुद को सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर को सौंप दिया तो वह उनसे नीचपन करेगा या उन्हें एक उदास, उबाऊ जीवन देगा जिसमें पूर्ति की कमी होगी। उन्हें लगता है कि परमेश्वर से बेहतर वे खुद अपने जीवनों के साथ कर सकते हैं। अनेक प्रकट रूप से कभी नहीं कहेंगे या खुद से स्वीकार करेंगे, लेकिन उन्हें महसूस होता है कि जब परमेश्वर उनसे कुछ करने को कहता है तो वह गलत होता है। फिर जो उन्हें लगता है सही है करके वे परमेश्वर की मदद करते हैं। क्या हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं ? क्या हम अगुए जानते हैं कि जिनकी हम अगुआई कर रहे हैं उन्हें परमेश्वर पर भरोसे के स्थान पर कैसे ले चलना है ?

6. "जब तक तुम यहोवा के संग रहोगे तब तक वह तुम्हारे संग रहेगा; और यदि तुम उसकी खोज में लगे रहो, तब तो वह तुम से मिला करेगा, परन्तु यदि तुम उसे त्याग दोगे तो वह भी तुम को त्याग देगा।" (2 इतिहास 15:2)
यदि आपको परमेश्वर से मिलने में कठिनाई हो रही है, तो क्या समस्या है ? क्या आप परमेश्वर से मिलना चाहते हो ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं ?

7. क्या आप एक सारा दिन प्रभु की बाट जोहने में लगाना पसन्द करोगे ? यह विचार आपको कैसा लगा ?

8. प्रभु की बाट जोहने को आप क्या प्राथमिकता देते हो (1 थिस्स. 5:17) ? याद रहे, जब आप प्रार्थना करते हो, तो यह परमेश्वर के अस्तित्व और महानता को स्वीकार करना है। यह निश्चयपूर्वक कहना है कि वह हम से महान है और कि हमारी जरूरतें वह पूरी कर सकता है।

परमेश्वर के हम से बात करने के तरीके

मूर्तियों के विपरीत, हमारा परमेश्वर बात करने वाला परमेश्वर है। वह बात करता है। उसका नाम ही “वचन” है (यूहन्ना 1:1; प्रकाशित. 19:13)।

उन दिनों परमेश्वर बोलता था। वह आज भी बोलता है। और वह कल भी बोलेगा। लेकिन हमें उसकी आवाज पहचाननी है। यहीं पर असली समस्या आती है। यह अध्याय परमेश्वर को बोलते हुए सुनने की कला पर एक पुष्टिकर और सन्तुलित शिक्षा प्रस्तुत करने का प्रयास है।

इब्रानियों को लिखे पत्र में एक विचार जो देखा जाता है वह परमेश्वर का मनुष्य से बात करना है। “परमेश्वर ने...बातें कर...बातें कीं...” यह प्रारंभिक आयत है! और पुस्तक के अन्त के निकट में, 12:25, “सावधान रहो, और उस कहनेवाले से मुँह न फेरो!” सात साधन जिनके द्वारा परमेश्वर बोलता है इस पत्र में से लिए गए हैं।

1. अपने पुत्र के द्वारा

“..परमेश्वर ने...इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं।” (इब्रानियों 1:1-2)

यीशु वचन के रूप में परमेश्वर की सच्चाई को घोषित करने और प्रमाणित करने आया था (यूहन्ना 1:14)। परमेश्वर का संदेश सम्पूर्ण रूप से उसके जीवन, शिक्षा और कार्यों के द्वारा आया। हालाँकि वह अब पृथ्वी पर सदेह नहीं है, वह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है (इब्रा. 13:8)।

यीशु मार्ग है ताकि हम उसके पीछे चलें। वह सत्य है ताकि हम उससे सीखें। वह जीवन है ताकि हम उसमें चलें-फिरें। वह चरवाहा है ताकि हम उसका आज्ञापालन करें। हाँ, यीशु परमेश्वर की आवाज है। उससे सम्बंधित परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा...और जिस जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा” (व्यवस्था. 18:18)।

यीशु का जीवन हमारे लिए परमेश्वर का आदर्श है। उसने एक किशोर या व्यस्क के रूप में, घर में या बाहर, एक धार्मिक समाज या संसार में, मित्रों या शत्रुओं में, पर्वों या मृतक-क्रिया में, खुशी या दुख के समयों में कैसे व्यवहार किया, ये सब सुसमाचारों में लिखे गए हैं ताकि हम अनुकरण कर सकें। “मसीह...तुम्हें एक आदर्श दे गया है कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो।” (1 पतरस 2:21)।

न केवल उसका जीवन बल्कि उसकी शिक्षाएं भी हमारे सम्मुख सदा के लिए रखी जानी चाहिए। कुछ सिपाहियों ने जिन्होंने उसे सुना, गवाही दी, “किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं!” (यूहन्ना 7:46)। कोई गवाही इससे सच्ची नहीं हो सकती!

हमें परमेश्वर के पुत्र के जीवन और शिक्षाओं के नियमित और ध्यानपूर्वक अध्ययन में खुद को देना जरूरी है। और कहीं से अधिक यहीं पर परमेश्वर तीव्रता से और स्पष्ट रूप से बोलता है। वह हमें बुला रहा है, “यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो!” (मरकुस 9:7)।

2. अपने आत्मा के द्वारा

“अतः जैसा पवित्र आत्मा कहता है, ‘यदि आज तुम उसका शब्द सुनो, तो पने मन को कठोर न करो’” (इब्रा. 3:7)।

यीशु ने अपने चेलों से प्रतिज्ञा की, “परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा...वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।” (यूहन्ना 14:26)। यह पिन्तेकुस्त का युग है। जबकि पिता और पुत्र स्वर्ग में हैं, पवित्र आत्मा पृथ्वी पर उतरा है। प्रकाशितवाक्य में सातों कलीसियाओं को यह संदेश दिया गया था, “जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।” (प्रकाशित. 2:7, 11, 29; 3:6, 13, 22)।

यशायाह 11:2 में बताए आत्मा के छे कार्यों में से चार संचारण के बारे में हैं। “बुद्धि...समझ...युक्ति... ज्ञान” का आत्मा। 1 कुरिं. 12:7-10 में सूचीबद्ध किए गए नौ वरदानों में से पाँच संचारण के बार में हैं। “बुद्धि की बातें...ज्ञान की बातें...भविष्यद्वाणी...अनेक प्रकार की भाषा...भाषाओं का अर्थ बताना।”

किसी भी आधुनिक शिल्प-विज्ञानीय सुविधाओं के बिना, प्रारंभिक कलीसिया केवल “न-बल-से-न-शक्ति-से-पर-आत्मा” सिद्धान्त पर चलती रही। हमारे आध्यात्मिक ज्ञान का अभिमान स्वीकार करने से हिचकता है, “आत्मा ने कहा...।” परन्तु प्रेरितों और प्रेरितों के काम के लेखक ने आत्मा की आवाज को निर्लज्जता से स्वीकार किया था। “आत्मा ने उससे कहा...उठकर नीचे जा...निःसंकोच उनके साथ हो ले” (प्रेरितों 10:19-20)। “पवित्र आत्मा ने कहा, ‘मेरे लिए बरनबास और शाऊल को...अलग

करो'' (13:2)। ''पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं'' (20:23)। ''परन्तु आत्मा स्पष्टता से कहता है...'' (1 तीमु. 4:1)। ये मात्र कुछ ही उदाहरण हैं।

परमेश्वर आत्मा के वरदानों द्वारा बोलता है। वह दर्शन, स्वपन और चिन्ह भी उपयोग में लाता है। ये सब चीजें अन्तिम दिनों के लिए प्रतिज्ञा की गई थीं (प्रेरितों 2:16-12)। कोई भी वचन नहीं है जो प्रेरितों के युग की समाप्ति पर इन साधनों की निकासी का अधिकार देता है। परमेश्वर को सीमित मत करो! सच है दुरूपयोग के अनगिनत उदाहरण हैं। परन्तु फिर, क्या दुरूपयोग का इलाज अनुपयोग है ?!

देनेवाला और वरदान दोनों सिद्ध हैं (याकूब 1:17)। समस्या वरदान पाए हुए के साथ है! ''हम'' अँश में या अपूर्ण भविष्यद्वाणी करते हैं (1 कुरिं. 13:9)। जिसका अर्थ है कि एक भविष्यद्वाणी निर्णायक नहीं हो सकती है परन्तु इसे जाँचा और परखा जाना चाहिए (1 कुरिं. 14:29; 1 थिस्स. 5:19-21)। हमें न तो भविष्यद्वाणियों को तुच्छ जानना चाहिए और न ही उन पर सम्पूर्ण रूप से निर्भर रहना चाहिए। एक नकारात्मक रवैया आत्मा को बुझाता है। कुछ लोग आशीष पाने में बहुत ही सावधान और सतर्क होते हैं! कृपया, सारे विवेकशून्य पूर्वधारणाओं को छोड़ दो! आत्मा की भीतरी आवाज उद्धार पाए हुए के लिए वरदान है (रोमियों 8:14, 16)। इस आवाज की ओर संवेदी बने रहने के लिए, हमें प्रार्थना और स्तुति के आत्मा को पहने रहना है (प्रेरितों 13:2)। मूसा जब मिलाप के तम्बू में प्रवेश करता था तब परमेश्वर मूसा से बोलता था (गिनती 7:89)। जब हम धीरज से परमेश्वर की बाट जोहते हैं तब आत्मा हमारे मनों में अप्रतिरोध्य छाप लगाता है।

परमेश्वर से हमेशा नाटकीय तरीके से बात करने की अपेक्षा करना निश्चय ही धोखे का मार्ग है। श्रव्य आवाजें, चमकीले दर्शन और उल्लसित अनुभव अधिकतर अपवाद हैं न कि नियम। शैतान एक उस्ताद जालसाज है। वह खुद भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण कर लेता है और अनेकों को धोखा देता है (2 कुरिं. 11:14)। सबकुछ जो अलौकिक दिखता है जरूरी नहीं परमेश्वर से है। हजारों ने ''भरमानेवाली आत्माओं'' की सुनी है (1 तीमु. 4:1)। ''शान्त धीमी आवाज'' हमारी चेतना को कम अपील करती है, फिर भी यह सुरक्षित है (1 राजा 19:11-13)।

3. अपने पवित्रशास्त्र के द्वारा

''परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है'' (इब्रा. 4:12)।

उसी प्रकार वचन का मार्गदर्शन भी है। पैना और सुस्पष्ट ! पवित्रशास्त्र के द्वारा परमेश्वर हमें उपदेश, समझाता, सुधारता और धर्म की शिक्षा देता है (2 तीमु. 3:16-17)। जब हम अँधेरे में टटोलते हैं, वह अपने वचन द्वारा हमारे मार्ग पर प्रकाश डालता है (2 पतरस 1:19)। बाइबल परमेश्वर ही की आवाज है। आधा घंटा बाइबल पढ़ना वैसा ही है जैसा परमेश्वर को तीस मिनट सुनना! बाइबल हमसे परमेश्वर की आवाज के स्वर में ही बोलती है।

हमारे हाथों में और वह भी इतनी सारी भाषाओं में पूरा पवित्रशास्त्र होने से तो हमारा विशेषाधिकार अन्य किसी भी पीढ़ी से बढ़कर है। परन्तु व्यक्तिगत मनन की भी भारी उपेक्षा है। जब तक हम ''व्यवस्था'' और ''गवाही'' यानि, पवित्रशास्त्र की शिक्षा और उदाहरण पर नियमित मनन नहीं करते, तब तक हम जीवन की परिस्थिति में परमेश्वर का मन नहीं जान सकते हैं (यशायाह 8:20)। बाइबल के साथ एक दिन में एक घंटा तो कम से कम है! एक संकट के समय एक तिनका पकड़ने के लिए बाइबल के पन्नों को हड़बड़ी में पलटना, भ्रामक हो सकता है। बाइबल कोई भाग्य की डुबकी नहीं है। हमें वचन का भी उसी नियमित रूप से भोजन करना चाहिए जिस प्रकार हम अपनी रोटी खाते हैं (मत्ती 4:4)। ''सम्पूर्ण'' पवित्रशास्त्र लाभदायक है, इसलिए किसी भाग की भी उपेक्षा नहीं करनी है।

एक उलझन की परिस्थिति या बन्द गली पर, शान्त मनन के एक समय का उपयोग होना चाहिए। प्रभु का आत्मा बाइबल में से एक आयत या एक परिच्छेद को जीवित कर देगा। बादल छंट जाएगा। जो बाइबल की आयतों को याद करते हैं वे आत्मा द्वारा एक प्रतिज्ञा या एक सिद्धान्त का हलका अनुस्मारक अनुभव करेंगे जो उन्हें किसी भी कठिन परिस्थिति में से यशस्वी छुटकारे की ओर ले जाएगा। इतिहास परमेश्वर के पुरुषों और स्त्रियों के जीवनों से उमड़ता है जिन्होंने कभी कोई आवाज नहीं सुनी न ही कोई दर्शन देखा फिर भी अपने पीढ़ी में परमेश्वर की इच्छा इतने सुन्दर तरीके से पूरी की क्योंकि वे लिखित वचन के साथ कदम मिलाकर स्थिरता से और विश्वासयोग्यता से चलते रहे। निस्संदेह, बाइबल का मागदर्शन सबसे अधिक निश्चयी और सुरक्षित है।

4. अपने सन्तों के द्वारा

''जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो'' (इब्रा. 3:13)। ''एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो'' (इब्रा. 10:25)।

आहा साथी-विश्वासियों के होने की धन्यता जो आत्मा से भरे और वचन से भरे हैं! (इफि. 5:19; कुलु. 3:16)। जब हम मिलते हैं तो केवल "हैलो" या "प्रेज़ द लार्ड" कहना काफी नहीं है। हम एक दूसरे की उन्नति करने के लिए वचनबद्ध हैं। 1 कुरिन्थियों 14 में अन्य भाषाओं और भविष्यद्वाणी की तुलना करने में प्रेरित का जोर एक दूसरे की उन्नति पर है। हम कितनी हानि उठाते हैं जब हम अपने भाई और बहनों की सलाह नहीं खोजते हैं! आयु और अनुभव एक लाभ हैं लेकिन वे सलाह के लिए हमेशा मापदण्ड नहीं है। किसी को भी तुच्छ नहीं जानना चाहिए। "एक छोटा बच्चा" भी राज्य में अगुआई करेगा ! परमेश्वर एस्तेर से मोर्दकै द्वारा बोला। उसने कहना माना। और एक देश बचाया गया (एस्तेर 4:13-14)। योआब ने राजा दाऊद को सलाह दी कि वह लोगों की गिनती न करे, लेकिन दाऊद ने इन्कार किया। और एक देश पर संकट आया (2 शमूएल 24:2-4, 10)। स्पष्यवादी सलाहकार बिरले होते जा रहे हैं। परन्तु बाइबल कहती है, "खुली हुई डाँट गुप्त प्रेम से उत्तम है" (नितिवचन 27:5-6, 17)। दूसरों को नाराज करने का डर हमें उन्हें उपदेश देने से रोकता है। परन्तु क्या हम अपनी जिम्मेवारी में असफल नहीं होते ? वह एक कातिल था जिसने पूछा, "क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ ?" मसीह की देह हानि उठाती है जब इसके सदस्य उनकी आपसी जिम्मेवारी में असफल होते हैं। "अपने काम से काम रखो" संसार का नारा है। परन्तु परमेश्वर के परिवार में यह भिन्न है। जब मेरा भाई उदास है तो मुझे उसे उत्तेजित करना चाहिए (इब्रा. 10:24)। जब वह मार्ग से भटक जाता है तो मुझे उसे वापस लाना चाहिए (याकूब 5:19-20)।

5. अपने सेवकों के द्वारा

"जो तुम्हारे अगुवे थे, और जिन्होंने तुम्हें परमेश्वर का वचन सुनाया है, उन्हें स्मरण रखो...हे मेरे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ कि इस उपदेश की बातों को सह लो, क्योंकि मैं ने तुम्हें बहुत संक्षेप में लिखा है" (इब्रा. 13:7, 22)। पौलुस ने तीमुथियुस को उपदेश दिया, "जो मैं कहता हूँ उस पर ध्यान दे, और प्रभु तुझे सब बातों की समझ देगा" (2 तीमु. 2:7)। पौलुस अपने जीवन और शब्दों दोनों द्वारा परमेश्वर का प्रवक्ता था। उसने इफिसियों के ऐल्डरों और विश्वासियों को उसके आदर्श का अनुकरण करने की चुनौती दी (प्रेरितों 20:35)। फिलिप्पियों के सन्तों को उसने लिखा, "जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं, और ग्रहण कीं, और सुनीं, और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा" (फिलि. 4:9)।

प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना ने कलीसिया के अगुओं को "तारों" के रूप में चित्रित किया हुआ देखा (प्रकाशित. 1:20)। मार्गदर्शक तारे! अपने पत्र में उसने लिखा, "हम परमेश्वर के हैं। जो परमेश्वर को जानता है, वह हमारी सुनता है" (1 यूहन्ना 4:6)।

कलीसिया में पँच-गुणा सेवकाई सन्तों को सज्जित, उन्नत और शिक्षित करने के लिए ही हैं (इफि. 4:11-13)। एक प्रेरित अपने अधिकार, बुद्धि और अग्रेसर की आत्मा से आपको आशीष देगा। एक भविष्यद्वक्ता अपने भेदक अन्तर्दृष्टि और निर्भीकता से आपको रोमांचित करेगा। एक सुसमाचार प्रचारक मनुष्यों के लिए आपको जोश और उत्साह से भर देगा। एक चरवाहा ईमानदारी और प्रेम के साथ आपका मार्गदर्शन और रखवाली करेगा। एक शिक्षक अपनी सम्पूर्णता और सन्तुलन के साथ आपको जानकारी देगा और स्थापित करेगा। सब मिलाकर इन दिनों विश्वासी या तो सुसमाचार प्रचारकों या पास्टरों के साथ अटके हुए हैं। वे प्रेरितों या भविष्यद्वक्ताओं के प्रभाव में नहीं आए हैं। इसलिए कलीसियाँ में अधिकाँश लोग निर्देशनहीन, दर्शनहीन और मिशनहीन रहते हैं! मिशनरियों की जीवनियों का अध्ययन करो और पढ़ो। उन्हें पढ़ते हुए अनेकों ने उनके जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा का पता लगा लिया है।

परमेश्वर केवल सेवकाई के ऐल्डरों द्वारा ही नहीं बल्कि कलीसिया के प्रौढ़ सदस्यों द्वारा भी बोलता है। सेवकों को भी इन ज्येष्ठ मसीहियों को सुनने की और उनके अनुभव के प्रचुर कोष से लाभ उठाने की आवश्यकता है। जिन्होंने इसे तुच्छ जाना है ऐसा करके खुद पर संकट लाया है। परमेश्वर मूसा से बहुत सारी बातें आमने-सामने बोला करता था। परन्तु काम बाँटने और अधिकार सौंपने का साधारण नियम, उसे अपने ससुर से सीखना पड़ा (निर्गमन 18:13-24)। मूसा ऐसे सलाहकारों का बहुत मान रखता था। जब उसका साला उन्हें छोड़ अपने देश और रिश्तेदारों के पास जाना चाहता था, तो मूसा ने यह कहते हुए उससे आग्रह किया, "हम को न छोड़...तू हमारे लिए आँखों का काम देना" (गिनती 10:29-31)। इसका अक्षरशः अर्थ है, "तुम हमारे मार्गदर्शक बन सकते हो।" परन्तु रहूबियाम की कहानी एक मनहूस अनुस्मारक है। उसने बूढ़ों की सम्मति ठुकरा दी और राज्य में एक असुधार्य विच्छेद का कारण बना (1 राजा 12:8, 16)।

अक्सर हम सोचते हैं कि सेवक आत्मिक मामलों के लिए सम्मति देने में अच्छे हैं परन्तु सांसारिक और व्यवसायिक मामलों में सम्मति देने में सुयोग्य नहीं हैं। सच है, एक पास्टर या एक प्रेरित शायद तकनीकी सम्मति न दे सकें परन्तु वह अपनी अन्तर्दृष्टि और प्रेरणा से सामान्य मार्गदर्शक तो निश्चय दे सकता है। पौलुस के रोम के सफर के दौरान, सुबेदार, पौलुस की बात सुनने के बजाय, जहाज के कप्तान और मालिक की सलाह पर चला, जिसका परिणाम क्षति और हानि हुआ (प्रेरितों 27:11, 21)।

6. परिस्थितियों के द्वारा

परिस्थियों ने मूसा को फिरौन से भागकर मिद्यान के देश रहने पर मजबूर किया (निर्गमन 2:11-15)। परन्तु इब्रानियों का लेखक, जब इस घटना पर टिप्पणी करता है, तो इसे मूसा के विश्वास के रूप में बताता है (इब्रा. 11:24-27)। हाँ, परमेश्वर परिस्थितियों द्वारा बोलता है।

शाऊल को राजा के रूप में अभिषेक करने के बाद, शमूएल ने उसे कहा, "और जब ये चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उसमें लग जाना; क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा" (1 शमू. 10:7)। यदि हम विश्वास करते हैं कि परमेश्वर प्रकृति का प्रभु है और सब घटनाओं का अन्तिम नियन्त्रक है, तो जो हमारे आस-पास हो रहा है उसमें हम उसका संदेश निश्चित रूप से पढ़ सकते हैं। "दिन से दिन बातें करता है, और रात को रात ज्ञान सिखाती है" (भजन 19:2)। "उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं" (रोमियों 1:20)। हमें "समयों के चिन्हों" को पहचानने के लिए कहा गया है (मत्ती 16:3)। प्रेरित पौलुस परिस्थितियों के द्वारा परमेश्वर के मन को समझने में विश्वास रखता था। जब वह मिशन पर था, पवित्र आत्मा ने उसके दल के लिए एशिया और बितूनिया का द्वार बंद कर दिया। इसलिए वे त्रोआस आए। वहाँ पौलुस को एक मकिदूनी पुरुष दर्शन में उसे अपने प्रान्त में बुलाता दिखाई दिया। इन सब घटनाओं को साथ रखकर, दल के सदस्यों ने निष्कर्ष निकाला कि प्रभु ने उन्हें मकिदूनिया में प्रचार करने के लिए बुलाया है (प्रेरितों 16:6-10)। वहाँ उन्हें पहला यूरोपियन विश्वासी मिला!

दो बहुत की सुन्दर वचन हमें प्रोत्साहन देते हैं कि हम परिस्थितियों को हलकी बात न समझें। नीतिवचन 3:6 "उसे स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।" रोमियों 8:28 "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हें के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।"

फिर भी, केवल परिस्थितियाँ ही हमारा मार्गदर्शक नहीं हो सकती हैं। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा कि तेरी पत्नी को एक बेटा होगा। परन्तु वह और सारा बूढ़े हो रहे थे। पत्नी ने खुद उसे सुझाव दिया कि वह उसकी दासी से पुत्र पैदा करे। परिस्थितियों के तर्क ने अब्राहम को बहका दिया।

7. दुख और तकलीफ के द्वारा

"और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के सामन दिया जाता है, भूल गए हो : हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान" (इब्रा. 12:5)।

सम्भवतः सर्व-ज्ञानी परमेश्वर आपको विपत्ति की रोटी खिलाना और दुख का पानी पिलाना चाहे। ऐसे समयों में भी प्रतिज्ञा है, "तौभी तुम्हारे शिक्षक फिर न छिपें, और तुम अपनी आँखों से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे" (यशायाह 30:20-21)। परमेश्वर ने क्यों अपने लोगों को भूखा रहने दिया और फिर उन्हें मन्ना खाने को दिया? इसलिए कि वह उन्हें सिखाए कि मनुष्य केवल रोटी ही से जीवित नहीं रहता, परन्तु जो जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है। मूसा इसे ताड़ना की शिक्षा कहता था (व्यवस्था. 8:3, 5)।

परमेश्वर तड़पता है जब हम विपत्ति में उसके पास दौड़े नहीं आते हैं। यिर्मयाह परमेश्वर का दुख प्रकट करता है: "मैं ने व्यर्थ ही तुम्हारे बेटों की ताड़ना की, उन्होंने कुछ भी नहीं माना" (यिर्मयाह 2:30)। परमेश्वर मुख्य रूप से हमारा ध्यान खींचने के लिए अपनी छड़ी इस्तेमाल करता है। दाऊद का जीवन दुख का जीवन था। परन्तु उसने इससे सीख प्राप्त की। उसने गवाही दी, "मुझे जो दुख हुआ वह मेरे लिए भला ही हुआ है, जिससे मैं तेरी विधियों को सीख सकूँ" (भजन 119:71)। पिघलने से पहले गढ़ना नहीं होता! सब समयों के सन्तों ने आँसुओं की घाटी में सबसे अच्छे सबक सीखे हैं। राजा शाऊल के समान ओझों के पास तुरन्त इलाज की खोज में इधर-उधर भागने के बजाय, हमें अपने तरीकों की जाच करनी चाहिए और परमेश्वर के हाथों में पड़ना चाहिए। परमेश्वर की चुप्पी सुनने के लिए अदभुत है!

सारांश

संचार के ये सात साधन परस्पर सम्बंधित हैं। बिरले ही परमेश्वर उनमें से किसी एक को एकेले इस्तेमाल करता है। "परमेश्वर शायद श्रव्य आवाज में, बारंबार चिन्हों के द्वारा, कभी-कभार दूसरे लोगों के द्वारा, अक्सर परिस्थितियों के द्वारा और हमेशा बाइबल से बोलता है।" ये शब्द इस शिक्षा का सबसे अच्छा सार हैं।

आत्मिक अगुआई

<u>सफलता की कुँजी:</u>

क) कोई भी असली प्रयास दूसरों की सफलतापूर्वक अगुआई करने की योग्यता है।

ख) सबकुछ अगुआई पर बढ़ता और गिरता है।

ग) काम में आपकी प्रभावकारिता दूसरों की अगुआई करने या प्रभावित करने की आपकी योग्यता से कभी भी ऊपर नहीं उठेगी।

<u>अगुआई सिखाई जा सकती है:</u> 90% सीखता है और 10% वरदान है

क) कोई भी अगुआ पैदा नहीं होता है! क्यों ? हम शिशु पैदा होते हैं!

ख) अगुआई विकसित की जाती है, खोजी नहीं जाती।

ग) अगुआई सारे जीवन भर आदर्श बनाई जाती है (यीशु के समान, पौलुस ने किया)।

घ) एक अगुआ बनने के लिए आत्मानुशासन आवश्यक है।

<u>लोग चाहते हैं कि उनकी अगुआई की जाए, न कि प्रबंध किया जाए!</u>

क) विश्व अगुए, चाहे वे राजनीतिक, शैक्षिक या व्यवसायिक हों, वे सब अगुआई करते हैं, प्रबंध नहीं।

ख) दूसरों को काम अच्छी तरह करने के लिए प्रेरणा देना एक अगुए की उपलब्धि है।

ग) हर युग में एक समय आता है जब समय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अगुआई को प्रकट होना पड़ता है।

<u>अगुआई प्रभाव है:</u> या अच्छे या बुरे के लिए!, अनुयायी पाने के लिए।

<u>अगुआई के पाँच स्तर:</u>

क) <u>पद:</u> लोग पीछे हो लेते हैं <u>क्योंकि उन्हें होना ही है</u> – प्रभाव काम के विवरण के अनुबद्ध के बाहर नहीं होगा – जितनी ज्यादा देर आप ठहरे रहेंगे उतना मनोबल कम होगा।

ख) <u>अनुमति:</u> लोग आपके पीछे हो लेते हैं क्योंकि <u>वे होना चाहते हैं</u>। सम्बंध बनते हैं - जब अगुआई बहुत समय तक उसी पदवी पर होती है तो अधिक प्रेरित लोग बेचैन होने लगते हैं।

ग) <u>उत्पादन:</u> आपने जो संस्था के लिए किया है उसके कारण लोग पीछे हो लेते हैं। अधिकाँश लोग सफलता सूंघ लेते हैं।

घ) <u>निजी विकास:</u> आपने जो उनके लिए किया है उसके कारण लोग पीछे हो लेते हैं – यहीं पर दीर्घकालिक अगुआई पाई जाती है।

च) <u>व्यक्तित्व:</u> आप जो हैं और आप जिसका प्रतिनिधित्व करते हैं उसके लिए लोग आपके पीछे हो लेते हैं।

<u>अगुआई:</u> एक बॉस और अगुए में विषमता:

<u>बॉस</u>	<u>अगुआ</u>
लोगों को हाँकता है	लोगों को सिखाता है
अधिकार का सहारा लेता है	सद्‌भाव का सहारा लेता है
भय प्रेरित करता है	उत्साह प्रेरित करता है
कहता है: मैं / मेरा	कहता है: हम / हमारा
खराबी के लिए दोष लगाता है	खराबी ठीक करता है
कैसे करना है जानता है	कैसे करना है दिखाता है
कहता है 'जाओ'	कहता है 'आओ चलें'

<u>अगुआई की कुँजियाँ:</u>

प्राथमिकताएँ: अपने दर्शन के अनुसार प्राथमिकताओं को निश्चित करना और जीना सीखो, सफल होने के लिए, जिससे संकेद्रित रह सको।

चुनौती चीजों को प्राथमिकता के अनुसार करने में है। 80%-20% नियम याद रखो! 20% प्राथमिकताएँ आपको 80% परिणाम देंगी; 20% समय 80% परिणाम पैदा करता है।
अपना 80% समय अपने 20% लोगों (मुख्य लोग) पर लगाओ। अपना 20% काम निर्धारित करो जो आपको 80% परिणाम देगा। कितनी **मेहनत** हम करते हैं वो नहीं, परन्तु कितनी **चतुराई** से करते हैं वो मायने रखता है!

अगुओं और अनुयायियों में विषमताः

अगुए	**अनुयायी**
- प्रारंभ करता है	- प्रतिक्रिया करता है
- आगे जाता है / फोन उठाता है	- सुनता है / फोन बजने का इन्तज़ार करता है
- फोन से सम्पर्क बनाता है	- कोई सम्पर्क नहीं बनाता
- योजना में समय व्यतीत करता है	- एक एक दिन व्यतीत करता है
- समस्याओं का पूर्वानुमान करता है	- समस्याओं की ओर प्रतिक्रिया करता है
- लोगों में समय लगाता है	- लोगों के साथ समय व्यतीत करता है
- प्राथमिकताओं की सूची बनाता है	- निवेदनों की सूची बनाता है

अच्छा सर्वोत्तम का शत्रु हैः

उहरणार्थः प्रकाशस्तम्भ रक्षक के पास प्रकाशस्तम्भ के लिए तेल था। फिर भी कुछ स्त्रियों ने उनके परिवारों को गर्म रखने के लिए तेल माँगा। एक पिता ने दीपक जलते रखने के लिए तेल माँगा। महिने के अन्त तक तेल कम रह गया था। जब रात में कई जहाज आए, तो वे चट्टानों में फँस गए। इस प्रकार जहाज नष्ट हो गए और कई लोग मर गए! क्यों ? सही प्राथमिकताएँ नहीं थीं!

लघु प्राथमिकताएँ बहुत अधिक समय मांगती हैं:

उस हवाई जहाज के समान जो तटवर्ती ईलाके पर गिर पड़ा था। जहाज के उतरने के समय, जब उड़ान इंजीनियन एक बल्ब निकालने लगा, तो कप्तान के साथ-साथ सब लोगों ने बल्ब लगाने क् प्रयास किया। अन्त में जहाज गिर पड़ा।

अगुआई के मुख्य संगठक – अखंडता (सम्पूर्णता)

हमें आवश्यकता हैः पालन / काम से ऊपर चरित्र। अखंडता के अगुए वे लोग हैं जिनके शब्द उनके कार्यों से मेल खाते हैं। जो आप बोलते हैं वही है जो आपके हृदय में है वही है जो आप करते हैं!

अखंडता उतना वो नहीं है जो **हम करते हैं** बल्कि **जो हम हैं**।

प्रतिरूप हैः जो लोग सोचते हैं हम हैं। **अखंडता** हैः जो हम **वास्तव में हैं**।

लोग उनकी सारी कोशिशें अखंडता को बनाने के बजाय उनका प्रतिरूप बनाने में लगाते हैं।

जितने अधिक विश्वास्य आप हैं, उतना अधिक भरोसा लोग आप में करेंगे।

अगुआई के कार्य भरोसे पर आधारित होते हैं

अखंडता की कीमत उच्च प्रभाव की है।

अगुआई का अर्थ हैः अनुयायियों से उच्चतर स्तर पर जीवन जीना।

अखंडता का अर्थ है दूसरों की अगुआई करने से पहले स्वयं सही जीवन जीना।

आकर्षण लोगों को आकर्षित करेगा परन्तु केवल अखंडता ही उन्हें हमारे पास रखेगी।

अखंडता एक विजय है, वरदान नहीं : यह आत्मानुशासन, भीतरी भरोसा, सब चीजों में निष्ठुरता से सत्यवादी होने का परिणाम है। लोग जो अगुए में देखते हैं याद रखते हैं।

याद रहेः परिपक्वता आयु से नहीं आती है, परन्तु **जिम्मेवारी स्वीकारने से आती है**!

आदतें विचारों के सिलसिलों से बनती हैं। **विचार कार्य का पिता है।**

अगुआई की सामान्य गलतियाँ और कैसे उन्हें रोकें और उनसे दूर रहें

अधिक अगुओं को अन्तहीन क्रियाओं के स्थान पर सकेन्द्रित प्रार्थना में "गति निर्धारित करनी चाहिए"। देखकर चलने के बजाय, हमें विश्वास से चलना चाहिए।

सम्भवतः आपने यह कहावत सुनी हैः "अपने लोगों से एक कदम आगे रहो और आप एक अगुआ कहलाओगे। अपने लोगों से दस कदम आगे रहो और आप एक शहीद कहलाओगे।" हम में से जो अगुआई की पदों पर सेवाकार्य करते हैं निस्सन्देह उन पदों पर रहना चाहेंगे। हमें शहादत नहीं चाहिए (न ही हम ऊब या समापन चाहते हैं)।
जैसे आप उन कुछ गलतियों को जो पास्टर और कर्मचारी सेवक करते हैं पढ़ेंगे, उन कुछ तरीकों पर भी ध्यान दो जिनका सुझाव उन गलतियों को रोकने या जीतने के लिए दिया गया है। आप पाएँगे कि सूची सर्वांगपूर्ण नहीं है। फिर भी, यह शिक्षाप्रद प्रमाणित होगी। प्रसंगवश, सूची में दी गई गलतियाँ उनकी प्रायिकता के क्रम में नहीं हैं; और न ही वे महत्त्व के क्रम में हैं।

कोई सामान्य दर्शन नहीं

एक गलती जो मैं ने देखी है दर्शन के विचार से सम्बंधित है। कुछ अगुओं का कोई वास्तविक दर्शन नहीं होता है कि वे क्या चाहते हैं उनका कलीसिया परिवार पूरा करे। और, "जहाँ दर्शन की बात नहीं होती, वहाँ लोग निरंकुश हो जाते हैं" (नीतिवचन 29:18)। दूसरे अगुओं का दर्शन हो सकता है, परन्तु यह वो दर्शन नहीं है जो कलीसिया का भी है। अगुए पाते हैं कि वे एक दिशा में जा रहे हैं, जबकि मण्डली दूसरी दिशा में जा रही होती है (या किसी दिशा में भी नहीं)।
इस दर्शन की समस्या के उत्तर में योजना बनाना और संचारण शामिल हैं। किसी भी व्यक्ति को, कर्मचारी सदस्य को भी, एक दर्शन के बारे में आदेश देने का सम्पूर्ण अधिकार नहीं है। अगुओं को अगुआई करना चाहिए, और मण्डली को अगुआई के पीछे जिसे परमेश्वर ने दिया है चलना चाहिए। फिर भी सबकुछ तब ही ठीक से कार्य करेगा जब मण्डली एक सामूहिक दर्शन की ओर उनके अगुओं के पीछे चलती है। पास्टर और कर्मचारियों को लोगों के साथ उनके अपने विचारों और लक्ष्यों को औपचारिक और अनौपचारिक वातावरण में बाँटना चाहिए। कलीसिया के परमेश्वर के दर्शन की खोज करने और प्रार्थना करने में मण्डली की अगुआई की जानी चाहिए। कलीसिया के दर्शन से सम्बंधित बहुत से विचारों को सारी कलीसिया को या कम से कम जितने लोगों से हो सकता है, अपनाना चाहिए। जब लोगों ने एक दर्शन को देखने में भूमिका निभाई हो तो वे उसे पूरा करने में अधिक परिश्रम करते हैं।

योजना बनाने की असफलता

कलीसियाओं का अधिक लोगों तक पहुँचने में असफल होने का एक कारण योजना से सम्बंधित है। बहुत से अगुए उनकी कलीसियाओं को सामूहिक लक्ष्य बनाने की ओर नहीं ले जा रहे हैं। इसलिए वे कोई भी कार्य प्रणाली नहीं बना रहे हैं, जिसके फलस्वरूप कुछ भी नहीं हो रहा है। पास्टर अपने उपदेश बनाते हैं और बीमारों से मिलने जाते हैं। यूथ सेवक जवानों के साथ कुछ कर रहे हैं और शायद सिखा भी रहे हैं। शिक्षा के सेवक सूचनाएँ देते हैं और मजदूरों को भर्ती करते हैं। सेवकाई यथापूर्व स्थिति बनाए रखने का काम करती नज़र आती है। किसी ने कहा है, "अगर तुम योजना बनाने में असफल होते हो तो तुम असफल होने की योजना बना रहे हो।" किसी दूसरे ने कहा है, "यदि तुम योजना नहीं बनाते हो तो तुम अपना समय कार्य करने के बदले प्रतिक्रिया करने में खर्च करोगे।"

खराब संचारण

मुझे विश्वास है कि पहली गलती जो पास्तरीय सेवक करते हैं वह अच्छे से संचार करने की असफलता है। हम एक दूसरे के साथ अपनी बातचीत में असफल होते हैं और हम मण्डली के साथ उचित रूप से संचार करने में असफल होते हैं। सेवकाई कर्मचारियों में बातचीत पर एक क्षण के लिए विचार कीजिए। यदि आप कम से कम एक दूसरे कर्मचारी सदस्य के साथ सेवा करते हैं तो सम्भावना है कि आपकी बातचीत में कुछ इस प्रकार के वाक्यांश शामिल हुए होंगे:

"मुझे पता नहीं था कि वह अस्पताल में था!"

"मुझे किसी ने नहीं बताया कि उसकी माँ मर गई है!"

"मैं ने सोचा तुम इसे देख लोगे!"

"तुम्हारा क्या मतलब है यह सूची में नहीं था? मैं ने इसे महिनों से सोच रखा था!"

कर्मचारियों के बीच संचारण की कमी से बचने के लिए, निश्चय करो कि आप नियमित अनुसूचित आधार पर कर्मचारी सभाएँ करोगे। कर्मचारी सभाएँ योजना, अनुसूची, और व्यक्तिगत और कलीसिया सम्बंधि मामलों को बाँटने के लिए उत्तम वातावरण देती हैं। भोजन, मनोरंजन, वगैरा के दौरान मिलकर अनौपचारिक समय बिताना भी लाभदायक है।

मण्डली के साथ अच्छे से संचारण, अगुए के रवैये से शुरू होता है। हर अगुए को यह निश्चित करने की आवश्यकता है कि उसके कार्यक्रम और योजनाएँ प्रकट हैं और निर्दोष हैं। अधिकाँश मण्डलियाँ आश्चर्य पसन्द नहीं करती हैं।

"एकजन प्रदर्शन" होना

अनेक अगुए सबकुछ स्वयं करने के प्रयास के दोषी हैं। "यदि तुम इसे अच्छे से करना चाहते हो, तो स्वयं करो" एक आदर्श-वाक्य है जिस पर अनेक प्रभावहीन अगुए विश्वास करते हैं। ऐसा रवैया सेवकाई में 'बॅन आऊट' के अवसर बढ़ाता है। इससे यह भी होता है कि जब अगुआ सेवा के लिए किसी दूसरे स्थान को जाता है तो कलीसिया की सेवकाइयाँ और उपलब्धियाँ हानि उठाती हैं। किसी भी चीज से अधिक, एकजन प्रदर्शन विचार बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के विरोध में है। इफिसियों 4:12 कहता है कि अगुए का काम लोगों को तैयार करना है जिससे "सेवा का काम किया जाए।" एक प्राचीन लोकोक्ति ध्यान में आती है। "एक व्यक्ति को एक मछली दो और वह एक दिन में खा लेगा। उसे मछली पकड़ना सिखाओ और वह जीवनभर खाता रहेगा।" आप चाहे सेवकाई की किसी भी पदवी पर रहो, लोगों को सेवकाई के लिए तैयार करना आपका काम है। अधिकाँश लोग काम करना चाहते हैं (उन्हें काम करना जरूरी है)। वे सीखना भी चाहते हैं (उन्हें सीखना जरूरी है)। एक विश्व प्रसिद्ध राष्ट्रीय पार्क में हर ग्रीष्मकाल में पर्यटकों के चले जाने के बाद, भालू कोड़ियों के हिसाब से मरते हैं। क्यों? क्योंकि वे बहुत अधिक दूसरों पर (भोजन वस्तुओं के लिए पर्यटकों पर) निर्भर होते हैं। जिन मण्डलियों की हम सेवा करते हैं उन्हें कर्मचारियों पर निर्भर होने के बदले खुद अपनी सेवा करना सीखना जरूरी है। इस विशेष अगुआई की गलती को रोकने के लिए, आपको सेवकाई के बारे में दूसरों को सिखाने के लिए स्वयं को वचनबद्ध करना आवश्यक है।

सज्जित करने का काम व्यक्तिगत वातावरण में (जब आप भेंटे करने जाते हो तो किसी को साथ ले जाना, नए मसीही को आमने-सामने चेला बनाना, वगैरा) और मण्डली के वातावरण में (अस्पतालों में जाना, शिक्षकों का प्रशिक्षण) होना आवश्यक है। कलीसिया मसीह की देह है और हर भाग (व्यक्ति) का एक कार्य है। हमारे काम का एक भाग लोगों की उनका काम (उनके वरदानों और योग्यताओं को विकसित और उपयोग में लाना) करने में सहायता करना है।

अनुगमन बिना अधिकार सौंपना

सज्जित करने और अधिकार सौंपने की असफलता के साथ-साथ, अनुगमन बिना अधिकार सौंपने की भी समस्या है। अनेक लोग जो प्रशिक्षण पाए हैं (और स्वयंसेवक हैं) उन्हें प्रोत्साहन के साथ-साथ उत्तरदायित्व की आवश्यकता है। असंख्य बार मैं ने कर्मचारी सभा में पाया है कि कोई मुख्य काम किया नहीं गया था, जबकि अधिकारी कर्मचारी सदस्य कहता है, "मैं ने यह जिम्मेवारी फलाने को दी थी।" प्रभु की स्तुति हो कि कर्मचारी सदस्य को दूसरे को शामिल करने की अन्तर्दृष्टि थी। परन्तु, अन्त में अगुआ स्वयं जिम्मेवार है। यदि हम लोगों को कुछ करने को कहते हैं, तो काम हो जाए निश्चित करने के लिए या तो हमें उनकी सहायता करनी होगी या पूछ-ताछ करनी होगी। हमारा काम हस्तक्षेप करना या स्वतन्त्रता को सीमित करना नहीं है; फिर भी, हमें उचित रूप से अगुए होना है।

शरीर द्वारा काम करना

पास्टर और कर्मचारी सदस्य "परिणाम पैदा करने" का दबाव अक्सर महसूस करते हैं। हम में से अनेक स्वयं से उतनी अधिक अपेक्षा करते हैं जितनी कलीसिया के सदस्य हम से नहीं करते। हम में से अनेक स्वयं से उतनी अधिक अपेक्षा करते हैं जितनी

शायद परमेश्वर भी हम से नहीं करता है। यदि हम ध्यान न दें, तो हम स्वयं को अपनी शक्ति में न कि परमेश्वर के सामर्थ्य में काम करता हुआ पाएँगे। न केवल यह एक पाप है बल्कि यह एक अगुआई की गलती है। अधिक अगुओं को अन्तहीन क्रियाओं के स्थान पर सकेन्द्रित प्रार्थना में "गति निर्धारित करनी चाहिए"। देखकर चलने के बजाय (जो हम प्रत्यक्षतः पूरा करते हैं), हमें विश्वास से चलना चाहिए।

मत्ती 17:20 में यीशु ने चेलों को उनके विश्वास की कमी के कारण फटकारा था। इस गलती को नहीं होने देने के लिए प्रार्थना में अधिक समय व्यतीत करने की आवश्यकता है। यदि यीशु को एकान्त में प्रार्थना के लिए समय बिताना होता था, तो निश्चित रूप से हमें भी है। सेवकाई एक कठिन काम है। मैं ने एक बुद्धिमान व्यक्ति को कहते सुना, "जब तक भीतरी हालत बाहरी परिस्थिति के समान है, तो कोई दबाव नहीं होगा।" मैं आपको प्रार्थना में समय व्यतीत करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ। अपने हृदय के अगुआई के मामलों के विषय परमेश्वर के निर्देशन की खोज करो।

विश्वासीगणों की अनदेखा करना

अगुए जो वृद्धि के अनुकूलित होते हैं वे हमेशा लोगों को मसीह और उनकी कलीसिया की ओर आकर्षित करने के तरीके खोजने में लगे रहते हैं। जो अगुए अधिक पास्तरीय होते हैं (और पास्तरीय और वृद्धि अनुकूलित दोनों हो सकते हैं) उनका झुकाव जिनकी समस्याएँ हैं उनकी जरूरतों को पूरा करने के प्रयास की ओर होता है। हम किसी भी तरह अनुकूलित क्यों न हों, जब हम उन लोगों को जो विश्वासीगण हैं और जिनको लगता है कम समस्याएं हैं, पहचानने में असफल रहते हैं, तो गड़बड़ करते हैं। उन्हें अगुए के प्रेम और प्रोत्साहन की भी आवश्यकता है! इन विश्वासीगणों और प्रतीयमानतः "एकत्र" लोगों को अनदेखा होने से रोकने के लिए, मैं आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि आप उन्हें अक्सर प्रार्थना में परमेश्वर के पास ले जाते रहो। इन लोगों के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो। यही वे लोग हैं जो अक्सर चीजों को बनाए रखते हैं। प्रोत्साहन की चिट्ठियाँ भी लिखो - केवल उन्हें ही नहीं जो निराश हैं, परन्तु उन्हें भी जो दिखाते हैं कि उन्हें आवश्यकता नहीं है। सब को प्रोत्साहित शब्द सुनने की आवश्यकता है। हर सप्ताह कम से कम एक व्यक्ति का पता लगाओ जो कुछ अच्छा कर रहा है। उसी समय उस व्यक्ति की प्रशंसा करो। मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप हमेशा खोए हुओं को और चोट खाए हुओं को खोजते रहोगे। यह प्राथमिकता है; फिर भी दूसरों को मत भूलो।

आलोचना से जैसे-तैसे निपटना

ऐरिस्टॉटल ने कहा, "आलोचना कुछ ऐसी चीज है जिससे आप सरलता से बच सकते हैं, कुछ नहीं कहो, कुछ नहीं करो।" सब अगुओं की कभी न कभी आलोचना की जाएँगे। हम में से कोई भी विशेष रूप से आलोचना पसन्द नहीं करता है, और जब हम इसकी ओर ठीक से प्रतिक्रिया नहीं करते तो हम खुद की और सेवकाई की हानि करते हैं। कुछ अगुए हर समय आलोचना की ओर एक ही समान प्रतिक्रिया करने की आदत में पड़ जाते हैं। क्रोधित होने से प्रायः कोई मदद नहीं मिलती है। महसूस करना कि स्वयं की रक्षा करनी होगी (बहाने बनाकर) कोई फल नहीं लाती है। रोते रहने से भी कम ही हासिल होता है। आलोचना को अनदेखा करना कभी-कभी असल में अगुए को चोट पहुँचा सकता है।

नीचे कुछ सहायक संकेत दिए गए हैं:

- जान लो कि अच्छे लोगों की भी आलोचना होती हैं।
- रचनात्मक आलोचना और विनाशक आलोचना में अन्तर समझो। रचनात्मक आलोचना आपको कुछ सुधार करने में और बढ़ने में मदद करेगा। (जब आलोचना में कुछ सच्चाई होती है तो यह मुझे अक्सर परेशान करता है।)
- स्रोत पर विचार करोः यदि आपकी आलोचना करनेवाला व्यक्ति, सबकी आलोचना करता है – तो इससे आपको कुछ पता चलना चाहिए। यदि आपका आलोचक मसीही परिपक्वता की कमी दिखाता है या प्रकट रूप से दल में काम नहीं करता – तो इससे भी आपको कुछ पता चलना चाहिए। आलोचना लाभदायक हो सकती यदि यह एक सकारात्मक, प्रेमी तरीके से उस व्यक्ति से आती है जिसका आप आदर करते हैं।
- स्वयं को इतनी गम्भीरता से मत लो।
- अति-संवेदनशीलता, क्रोध या बहानों के प्ररूपी प्रतिक्रियाओं को इस्तेमाल करने से इन्कार करो। अपने आलोचक को उसकी आलोचना से अधिक प्रेम करो।

संघर्षों की उपेक्षा करना

किसी के साथ हो रही समस्या को अनदेखा करना, (उम्मीद करना कि यह टल जाएगी), बिरले ही कार्य करता है। यदि आप एक संघर्ष का सामना कर रहे हो तो उससे निपटो। अन्यथा, विशेषकर यदि आप अपने में या उस व्यक्ति में जिसके साथ आपका संघर्ष

हो रहा है चीजों को 'जमा होने' देंगे, तो समस्या हाथ से निकल सकती है। यीशु ने हमें संघर्ष से तुरन्त निपटने के लिए कहा (मत्ती 5:25 देखो)। उसने स्पष्ट किया कि जिम्मेवारी हमारे कंधों पर है – कि कोई भी जो उसकी सुनने को तैयार है उसे ही मेल-मिलाप की ओर पहला कदम उठाना है (मत्ती 5:23-24 देखो)। अगुओं को याद रखने की आवश्यकता है कि यदि हम उस व्यक्ति को जिससे हम असहमत हैं क्षमा करने से इन्कार करते हैं, तो हमारा स्वर्गीय पिता भी हमें क्षमा नहीं करेगा। (मत्ती 6:14-15)।

सेवा करवाने की इच्छा

कुछ अगुओं को ध्यान में आने की अत्यधिक जरूरत होती है। अगुआ जो विशिष्ट रूप से गुणी है, चाहेगा कि लोग उस पर ध्यान दें और स्नेही तरीकों से प्रतिक्रिया करें। यह समस्या अधिनायकीय अगुए के साथ भी होती है जो अपने अधीन काम करनेवालों को (स्वयंसेवकों को भी) "हुक्म" देता रहता है। यह विशेष समस्या तब दिखती है जब अगुआ मण्डली या समाज से "विशेष उपकार" की अपेक्षा से आता है (मुफ्त या सस्ता ईलाज, कपड़ों पर छूट, सामाजिक सभाओं में अतिरिक्त ध्यान, माल या नगद भेंट, वगैरा)। हर अगुए का बुलावा सेवा का है। सेवा प्रभु के साथ हमारे सम्बंध का निरन्तर परिणाम होना चाहिए।

दस सर्वप्रथम गलतियाँ जो अगुए करते हैं!

अगुओं के पास लोगों के जीवनों में भलाई या बुराई के लिए अविश्वसनीय शक्ति है। कुछ लोग अनेकों की नियती नियन्त्रित करते हैं। परन्तु हम में से कितने ऊँचे आदर्शों और सपनों से प्रारंभ करते हैं, किंतु अगुओं के साथ हमारे अनुभव से सब खट्टा हो जाता है? इससे पहले कि पता चले क्या हुआ, लोग भरोसा खो देते हैं और अतिक्रमण युद्ध शुरू हो जाता है। या, कुछ कहा नहीं जाता है, परन्तु अपनी अगुआई में विश्वास शीघ्र ही क्षय होने लगता है। लोग इस्तीफा देते हैं और चले जाते हैं। अगुओं को काम से निकाल दिया जाता है, विभाजन, झगड़े और चुगलखोरी का बोलबाला होता है। काम धीमा पड़ जाता है, नष्ट होता है या रुक जाता है।

घटिया अगुआई की आदतें घटिया अगुओं की नई पीढ़ी तक फैली हुई हैं।

दस सर्वप्रथम गलतियाँ जो अगुए करते हैं दस सबसे सामान्य अगुआई की गलतियों और कमजोरियों को प्रकट करता है।

* ऊपर-से-नीचे रवैया
* उत्तरदायित्व बिना अधिकार सौंपना
* लोगों से आगे कागजी काम को रखना
* संचारण अव्यवस्था
* स्वीकरण का अभाव
* संस्कृति संकेतों का लापता होना
* नौसिखियों के लिए कोई जगह नहीं
* उत्तराधिकारियों बिना सफलता
* फैसलों में तानाशाही
* भविष्य पर सकेंद्रित होने में असफलता

आजकल अगुए अगुआई की घटिया आदतों को जो उन्होंने दूसरों में देखी हैं अपने जीवन में दोहराते हैं। उनमें अक्सर सामान्य अगुआई की माँगों के लिए मूल कुशलताओं की कमी होती है। उनमें से अधिकाँश में तो औपचारिक प्रशिक्षण की कमी होती है, परन्तु उससे भी अधिक, अच्छे आदर्श और परामर्श की कमी रन्ध्र हो सकते हैं। हम में से अनेकों ने जो बुरी आदतें अपने अगुओं में देखी हैं, सम्भवतः हम में आ पड़ी हैं।

थोड़े ही अगुआई के लिए स्वयं को तैयार करते या स्वेच्छा से देते हैं। यह नियुक्त किए हुओं के लिए एक बुलावा है। यह सब जगह सच लगता है - उद्योग, व्यवसाय और सरकार में। अनेक लोग जो संस्थाओं में अगुआई के पदों पर आते हैं, अगुआई और प्रबंधकौशल में कम या कोई प्रशिक्षण नहीं पाए होते हैं। उद्यमों के अगुए योग्यता पाए लगते हैं, परन्तु अक्सर वे संघटनात्मक रूप से अशिक्षित होते हैं। समस्या यह है कि अगुआई में हृदय और दिमाग दोनों की आवश्यकता होती है।

अगुआई के खतरेः

1)	धमण्ड	रोमियों 12:3
2)	कुड़कुड़ाना	गिनती 12:1-16
3)	विद्रोह	गिनती 16:1-50
4)	झूठा प्रकाशन	1 तीमु. 4:1-3
5)	निराशा	यहोशू 1:9
6)	लापरवाही	नीतिवचन 13:3
7)	लालच	यहोशू 7:21
8)	प्रतिजाति	2 कुरिं. 6:14
9)	डर	2 तीमु. 1:7
10)	मनुष्य से इनाम की अपेक्षा	कुलु. 3:23

होम सेल समूह और छोटे समूह

"वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर (कलीसिया) में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे" प्रेरितों 2:46)। "वे प्रतिदिन मन्दिर (कलीसिया) में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से कि यीशु ही मसीह है न रुके" (प्रेरितों 5:42)।

होम सेल समूह क्यों महत्त्वपूर्ण हैं ?

 # व्यावहारिक सहभागिता

1. होम सेल समूह करीबी सहभागिता देते हैं जहाँ लोग आमने-सामने के सम्बंध में एक दूसरे की देखभाल करना, बाँटना और सम्बंध बना सकते हैं।
2. होम सेल समूह वातावरण देते हैं जहाँ नए विश्वासी प्रेममय पोषण और निवासी होने की भावना अनुभव कर सकते हैं।
3. होम सेल समूह मित्रों का एक जाल देते हैं जहाँ जरूरतमन्द लोग उपयोगी सहायता के लिए आ सकते हैं।

 # शिष्यता और आत्मिक वृद्धि

4. होम सेल समूह विश्वासियों को परिपक्वता में लाने का एक साधन देते हैं।
5. होम सेल समूह बाइबल की सबसे अधिक संबद्ध सच्चाइयों की जिनकी कलीसिया अध्ययन कर रही है, पारस्परिक क्रिया, विचार-विमर्श और उपयोग के लिए एक माध्यम देते हैं।
6. होम सेल समूह एक वातावरण देते हैं जहाँ विश्वासी मिलकर आराधना और प्रार्थना करके, गवाहियाँ में भागी होकर, और चमत्कार के लिए विश्वास इस्तेमाल करके बढ़ सकते हैं।

 # सेवकाई विकास

7. होम सेल समूह विश्वासियों को पास्तरीय देखभाल और मसीही सलाह में विकसित करने के लिए एक जगह देते हैं।
8. होम सेल समूह हमारे आत्मिक और स्वाभाविक दोनों वरदानों और योग्यताओं के लिए एक स्थान देते हैं – दूसरों की जरूरतों को पूरा करने के लिए परमेश्वर इस्तेमाल करता है।

 # बाइबल सम्बंधी उत्तरदायित्व

9. होम सेल समूह एक साधन देते हैं जहाँ आत्मिक अगुआई, अधीनता, प्रतिनिधान और उत्तरदायित्व के बाइबल सम्बंधी सिद्धान्त व्यावहारिक रूप से प्रयोग किए जा सकते हैं।

 # सुसमाचार प्रचार

10. होम सेल समूह सुसमाचार प्रचार के लिए एक वातावरण देते हैं जहाँ अलब्ध लोग एक छोटे समूह के वातावरण में निश्चिन्त महसूस कर सकते हैं।

होम सेल

वृद्धि जीवन की एक स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, और एक जीवित कलीसिया को बढ़ना चाहिए।

अनेक पास्टर वृद्धि के लिए काम करते हैं, परन्तु इसे समायोजित करने के लिए पर्याप्त रूप से तैयारी नहीं करते हैं। उसका परिणाम यह होता है कि कलीसिया पास्टर की व्यक्तिगत रूप से सबकी सेवा करने की उसकी शारीरिक क्षमता से अधिक बढ़ जाती है, और वह संकट में पड़ता है। फिर या तो उसे सब की सेवा करने के लिए अपनी सेवकाई की उत्तमता को कम करना पड़ेगा, या कुछ लोगों की देखभाल के लिए दूसरों को छोड़ना पड़ेगा। इससे लोग छोड़ने लगते हैं और वृद्धि कम होने लगती है।
जो पास्टर इस समस्या का पुर्वानुमान लगाता है इसके लिए तैयारी करे, परन्तु वह क्या क्या कर सकता है ?

विकल्प

एक ओर, वह अपने सेवकाई सम्बंधी कर्मचारियों की संख्या को बढ़ा सकता है परन्तु यह तो एक अस्थाई हल ही है। जैसे वृद्धि होती जाएगी उससे वैसा ही संकट फिर घटित होगा। दूसरी ओर, वह आम विश्वासियों को काम में ला सकता है जो पहले से ही कलीसिया में हैं; वह लोगों को प्रशिक्षण देकर इस्तेमाल कर सकता है। वे कलीसिया की वृद्धि के समान लचीले एक साधन हैं, और यदि अच्छी तरह काम में लाए गए तो प्रभावशाली आराधना, शिक्षा, सुसमाचार प्रचार और शिष्यता परिणाम होगा।

ढाँचा

अधिकाँश पास्टर कलीसिया के अन्दर अनुभाग और विभाग बनाते हैं, परन्तु समझने में चूक जाते हैं कि कलीसिया की मुख्य सेवकाई इसकी चारदिवारी के बाहर है। इसे गैर-मसीही पड़ोस में जाना चाहिए; इसे उन लोगों के पास जाना चाहिए जो स्वेच्छा से एक कलीसिया में नहीं आएँगे। इसे करने का साधन हमारे पास में ही है - कलीसिया के परिवार। उनके घर पड़ोस में पहुँचने के गढ़ हैं, और वे अपने पड़ोस में जाने जाते और स्वीकार किए जाते हैं।

आरंभ कैसे करें

1) पास्टर का सेल

पास्टर स्वयं कलीसिया के सदस्यों में से एक सेल स्थापित करने के द्वारा आरंभ करता है। इसके द्वारा वह सदस्यों को दिखाता है कि एक सेल समूह किस प्रकार कार्य करेगा और पुष्टि करता है कि इस कार्यक्रम को वह कितना महत्त्व देता है।

इस सेल समूह को एक आधार बनाकर, वह होम सेल सेवकाई की भावी अगुआई को तैयार करता है। उनकी जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ, वह उनमें अपना दर्शन प्रदान करता है और उन्हें सिखाता है। फिर वह कलीसिया के सदस्यों के घरों में होम सेल बनाने में उनकी अगुआई करता है। आदर्शतः, यह उनके अपने घरों में किया जाना चाहिए।

यह बहुत आवश्यक है कि अगुए कलीसिया के सदस्य हों, और जिन घरों में होम सेल कार्य करते हैं सदस्यों के घर हों। यह सुनिश्चित करता है कि पास्टर का होम सेल समूहों पर अधिकार रहे और कि वे उसके और कलीसिया के प्रति वफादार रहें।

यह भी आवश्यक है कि होम सेल अगुए सेल समूह कार्यक्रम में से उभड़ कर आएँ। कोई भी व्यक्ति जो अगुआई के लिए इस्तेमाल किया जाता है कार्यक्रम से परीचित होना चाहिए कि यह कैसे कार्य करता है और वह इसे अच्छी तरह तब ही कर सकता है जब वह पहले से सेल समूह में हो।

2) होम सेल

होम सेल कार्यक्रम तब ही प्रभावसाली होता है जब कलीसिया के सारे सदस्य इसमें भाग लेते हैं; यह इसे कलीसिया की एक बुनियादी सेवकाई बनाता है। इसीलिए पास्टर को कलीसिया के हर सदस्य को हर सप्ताह एक होम सेल में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अगुओं के द्वारा उसकी सेवकाई उन तक पहुँचेगी; उनकी जरूरतें पूरी होंगी; उनकी एक-एक करके देख-रेख की जाएगी।

वृद्धि

क्या होता है जब कलीसिया बढ़ती है? सेल समूह ढाँचे की नम्यता और वृद्धि का स्थिति-निर्धारण प्रत्यक्षतः यहाँ दिखाया गया है।

वृद्धि दो में से एक तरीके से होती है। होम सेल स्वयं पड़ोस में सुसमाचार सुनाते हैं और बढ़ते हैं, और इस प्रकार नए विश्वासियों को कलीसिया पहुँचाते हैं। कलीसिया भी अपने सुसमाचार प्रचार कार्यक्रमों द्वारा नए लोगों को लाती है जिन्हें शिष्यता के लिए सेल समूहों में भेजा जाता है।

जब एक सेल समूह में पंद्रह से अधिक लोग हो जाते हैं तो यह संचालन के लिए अधिक बड़ा हो जाता है और अगुए की व्यक्ति विशेष सेवकाई घटने लगती है। फिर भी, ढाँचा सेल समूहों में वृद्धि को समायोजित करने के अनुकूल है। इसलिए अगुए को अपने समूह को विभाजित होने और एक नया सेल समूह बनाने के लिए तैयार करना चाहिए। वह बहुत पहले एक सहायक अगुए को प्रशिक्षण देने के द्वारा आरंभ करता है, जो जब नया सेल समूह शुरू होता है तो अगुआई की बागडोर सम्भाल सकेगा। जब ऐसा होता है तो पास्टर को पता चलेगा कि उसका सेल समूह दुगुना हो गया है, और जब समूह ऐसा दोबारा करते हैं तब यह चार-गुणा बढ़ गए होंगे।

वृद्धि का प्रभाव पास्टर के सेल पर भी पड़ता है। जब अगुओं की संख्य बढ़ती है तब उसका सेल भर जाता है और वह भी व्यक्तिगत संपर्क खो देगा। इसलिए वह विभागों और अनुभागों को बनाकर अगुआई का मध्यवर्ती स्तर सम्मिलित करता है। दस

होम सेल एक विभागीय अगुए के अधीन होते हैं और दस विभागीय अगुए पास्टर के अधीन होते हैं। हर स्तर पर एक सेल समूह होता है जो एक छोटी इकाई है।
जैसे वृद्धि होती जाती है तो पास्टर विभागीय अगुओं की सेवा करेगा, जो अनुभागीय अगुओं की सेवा करेंगे, जो होम सेल अगुओं की सेवा करेंगे, जो अपनी बारी पर होम सेल में बाकी के सदस्यों की सेवा करेंगे।
इस ढाँचे की असीमित सम्भावनाएँ हैं और यह कलीसिया की वृद्धि में बाधक नहीं होगा। यह कलीसिया की सम्पूर्ण अन्तःशक्ति को काम में लगाता है; यह सेवकों की पहचान करने और उनका विकास करने में सहायता करता है; यह उनको प्रभावशाली तरीके से चेला बनाता है जो नए नए प्रभु में आए हैं। इसका परिणाम एक मजबूत और लाभदायक कलीसिया की सदस्यता होती है। यह साधन सदा हमारे पास होता है परन्तु बिरले ही विकसित किया जाता और उपयोग में लाया जाता है। यह कलीसिया के बजट में कोई कीमत नहीं बढ़ाता क्योंकि कार्य करनेवाले लोग सामान्य विश्वासी होते हैं। केवल बाद के चरण में ही, यदि वह ऐसा चाहता है तो पास्टर अपने विभागीय और अनुभागीय अगुओं को पूर्णकालिक सेवा सम्बंधी कर्मचारी बनाना चाहे।

दूसरी सेवकाइयाँ

<u>होम सेल ढाँचा कलीसिया की दूसरी सेवकाइयों को कैसे लाभ पहुँचा सकता है?</u>

1) **यह अगुआई की संभावना को बढ़ाता है**

क्योंकि सदस्य होम सेल में चेले बनाए और उन्नत किए जाते हैं, वे सेवकाई के दूसरे क्षेत्रों में लाभदायक होने की संभावना बढ़ाते हैं।

2) **यह साधनों के संग्रहण को मुमकिन करता है**

जब कलीसिया शहर भर में प्रचार कार्य करती है तो परचे बाँटने के प्रबंध के लिए होम सेल सबसे प्रभावशाली साधन हैं, और लोगों के निमंत्रण का काम घर-घर जाकर किया जा सकता है। इसके लिए निर्देश पास्टर से लेकर नीचे हर सदस्य तक शीघ्रता से पहुँचाये जाते हैं, और इसके लिए सम्पूर्ण कलीसिया एक बहुत ही संगठित तरीके से संचारित की जा सकती है।

हर स्तर पर जिम्मेवारी

1) **पास्टर**

जैसे प्रकट है, सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता, पास्टर इसमें कितना लगाता है पर अधिकाँश निर्भर करेगी। उसे इसे प्रोत्साहन देना, इसकी अगुआई की हिम्मत बढ़ाना, इसकी वृद्धि को संचालन करना और इसकी सदस्यता को प्रेरित करना है। उसे निश्चित करना है कि यह एक संगठित तरीके से कार्य करती है। पास्टर को आग्रह करना है कि भौगोलिक ढाँचा बनाए रखा जाए, और कि सदस्य उनके घर के सबसे निकट के होम सेल में उपस्थित हों।
पास्टर को एक अग्रगमन प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा अगुआई की उच्च उत्तमता को बनाए रखना चाहिए; और रिट्रीट और सेमिनारों का आयोजन करना चाहिए ताकि वे दर्शन उनके सम्मुख रख सकें। जो शिक्षा सामग्री वह उनके सामने रखता है शिष्यता की प्रक्रिया की सहायता के अनुकूल होनी चाहिए।

2) **विभागीय और अनुभागीय अगुए**

क्योंकि मध्यवर्ती अगुए पास्टर की सेवकाई का एक विस्तार हैं, वे एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस स्तर पर, अगुआई उनके विभागों और अनुभागों में समूहों की ओर महत्त्वपूर्ण सेवा सम्बंधी जिम्मेवारी धारण करती है। उन्हें समूहों में एकता की भावना प्रोत्साहित करना चाहिए और मसीह की देह के रूप में उन्हें पहचान और संदर्श देनी चाहिए। वे सेल समूह अगुआई को विकसित करते, प्रशिक्षण देते और चेला बनाते हैं।

3) **होम सेल अगुए**

ये अगुए आधारीय स्तर पर सेवा करते हैं, जहाँ पर कलीसिया की वृद्धि होती है। उन्हें निश्चित करना है कि सभाएँ प्रभावशाली और दिलचस्प हों; कि विश्वासियों की जरूरतें पूरी होती हों; कि नए विश्वासी ठीक से चेले बनाए जा रहे हों। साप्ताहिक सेल सभाओं की प्रक्रिया में, अगुओं को गवाहिया देने, मिलकर प्रार्थना करने और इकट्ठे वचन का अध्ययन करने में सदस्यता को

शामिल करना चाहिए। उसे समूह को सुसमाचार प्रचार में ले चलना चाहिए और कलीसिया के कार्यक्रमों में उन्हें शामिल करना चाहिए।

अगुआई की योग्यताएँ

इसलिए अगुआई की योग्यता एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण सोच-विचार है, और यह जरूरी है कि अगुआई (1) मण्डली के सामने आदर्श हो; (2) पास्टर और कलीसिया की ओर वफादार हो; (3) वशवर्ती और शिक्षणीय हो; और (4) सम्पूर्ण रूप से वचनबद्ध हो। यह एक कार्यक्रम है जो वचनबद्धता पर निर्भर करता है, और अगुआई इसकी ओर हर स्तर पर वचनबद्ध होनी चाहिए। उन्हें कम से कम सप्ताह में तीन शामें नियमित आधार पर देनी चाहिएँ: एक सेल समूह के लिए जहाँ वे सेवा पाते हैं; एक सेल समूह के लिए जहाँ वे सेवा करते हैं; और तीसरी सेल समूह के सदस्यों से मिलने जाने के लिए जहाँ वे सेवा करते हैं; इसके अतिरिक्त, अपने सेल समूह के सदस्यों को सलाह देने और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए उन्हें उपलब्ध होना चाहिए।

नम्यता या अनुकूलनीयता

वही मूल विचार सरलता से संस्कृति की विशेष आवश्यकता के लिए अनुकूल बनाया जा सकता है जहाँ इसे इस्तेमाल करना है। विश्व भर में सेल समूह कार्यक्रम मूलतः समान हैं, परन्तु अपने-अपने प्रान्तों की आवश्यकताओं के अनुकूल अपनाए गए हैं।

लाभ

पास्टर जो कलीसिया में एक सेल समूह कार्यक्रम बनाने में अपना समय और प्रयास बोता है, अनेक क्षेत्रों में लाभों की एक फसल बहुत जल्द ही काटेगा।

1) समय

वह पाएगा कि उसे छोटे-मोटे मामलों से कम, और जिस सेवा के लिए वह बुलाया गया है उससे अधिक निपटना पड़ रहा है। समस्याओं को होम सेल स्तर पर निपटा जाता है, और उन्हें ही जो वहाँ सम्भाली नहीं जा सकतीं ढाँचे में ऊपर अनुभागीय और विभागीय अगुओं के पास भेजी जाती हैं, और अन्त में पास्टर के पास, केवल तब ही जब वे इन स्तरों पर सम्भाली नहीं जातीं।

2) वृद्धि

सेल समूह की स्वास्थ्य वृद्धि कलीसिया की स्वास्थ्य वृद्धि की ओर ले जाती है।

3) परिपक्वता

सेवकाई में अगुआई और सेल समूह के सदस्यों का सम्मिलित होना उन्हें आत्मिक रूप से विकसित होने और बढ़ने में सहायता करता है।

4) संचारण

संचारण की प्रक्रिया कार्यक्रम के ढाँचे और इसकी व्यक्ति विशेष सेवकाई से बहुत सहायता पाती है। अगुआई सदस्यता की प्रतिक्रिया की जाँच कर सकती है और कलीसिया इस प्रक्रिया के कारण देह की सामान्य जरूरतों की ओर शीघ्रता से प्रतिक्रिया कर सकती है।

5) स्थायित्व

सेल का ढाँचा उत्तरजीविता अनुकूल भी है, और अत्याचारी परिस्थितियों में बहुत ही प्रभावशाली है, जहाँ धार्मिक सताव या एक राजनीतिक संकट होता है और बड़े समूहों को इकट्ठे होने में कठिनाई होती है।

छोटे समूहों का सामर्थ्य

छोटे समूहों में बढ़ती दिलचस्पी हमारे समय की बेदारी के सबसे अधिक आशाजनक चिन्हों को दर्शाता है। जीवन की सब स्थितियों में और हर प्रकार की कलीसिया में ये आत्मिक संबंध फूट निकल रहे हैं। यह आन्दोलन पुरुषों और स्त्रियों के हृदयों में मसीही अनुभव की वास्तविकताओं के लिए एक गहरी लालसा व्यक्त कर रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व बिली ग्रहम से पूछ गया, "यदि आप एक मुख्य शहर में एक बड़ी कलीसिया के पास्टर होते तो आपकी कार्य करने की योजना क्या होती?"

उन्होंने उत्तर दिया, "सबसे पहला काम जो मैं करूँगा, वह अपने ईर्द-गिर्द 8 या 10 या 12 लोगों का एक छोटा समूह इकट्ठा करूँगा जो सप्ताह में कुछ घंटों के लिए मिलेंगे और कीमत देंगे! उन्हें समय और प्रयास में कुछ कीमत देनी होगी। कुछ वर्षों की अवधि के दौरान, मैं उन्हें सबकुछ जो मैं जानता हूँ बता दूँगा। तब मैं असल में 12 सेवकों को लूँगा जो बदले में 8 या 10 या 12 औरों को लेंगे और उन्हें सिखाएँगे ... मसीह ने, मुझे लगता है, यह नमूना रखा है।"

मसीह में साथ-साथ

जिस सिद्धान्त की बात डॉ. ग्रहम करते हैं, विश्व भर में सुसमाचार प्रचार और शिष्यता के काम में कार्यान्वित होती दिखाई दे रही है। एक समूह जो मसीह की आत्मा में संयुक्त होता है कुछ विस्मयकारी है। जब दो या तीन व्यक्ति उसके नाम में "इकट्ठे" होते हैं उनमें आश्चर्यजनक सामर्थ्य होता है जब वे वास्तव में "सहमत होते" हैं (मत्ती 18:19-20)। जो शब्द यहाँ यीशु इस्तेमाल करते हैं उसका अर्थ है "ध्वनि में सहमत होना" या "मेल खाना"। एक संनादी ध्वनि पाना सहज नहीं है, और जैसे जैसे वाद्य जोड़े जाते हैं इसे प्राप्त करने की कठिनाई बढ़ती जाती है। इस विषय में, छोटे समूह लाभदायक प्रमाणित होते है। जैसे हम एक दूसरे को जानने लगते हैं, तो एक सुरीली ध्वनि बनाने के लिए हमें परमेश्वर द्वारा दिए अपनी व्यक्तित्व और वरदानों को तेज करना पड़ता है। इसीलिए एक संयुक्त समूह अकेले-अकेले अँगों से बड़ा होता है। फिर भी हर व्यक्ति के अनोखे योगदान को कम नहीं किया जा सकता है। इसे सबसे सुन्दर तरीके से विवाह में देखा जा सकता है। इस सम्बंध में, प्रेम अपना सबसे उच्चतम मानवीय अभिव्यक्ति पाता है, और यदि हम इसके आत्मिक महत्त्व को समझें, तो हम मसीह के उसकी कलीसिया के लिए प्रेम को अधिक गहराई से समझ पाएँगे। इस संयोग में से मानव जाति का प्रजनन होता है। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को इस प्रकार बनाया है कि इसके प्रारंभ से मानवीय जीवन उसके अपने स्वभाव की उत्तमता से घिरा रहता है। सगोत्र आत्मा के इन परिवारिक समाज में हम उन बुनियादी नैतिक मूल्यों को सीखते हैं जो हमारे चरित्र को रूप देते हैं। उचित रूप से कार्य करने पर, हम देख सकते हैं कि मसीही घर समाज में बेदारी का एक सबसे शक्तिशाली यन्त्र बन सकता है।

नए नियम की कलीसिया में नमूने

विवाह के संस्थापन की खराबी के साथ, सभ्यता का हर पहलू जिसमें कलीसिया भी शामिल है, हानि उठाता है। फिर भी, संसार की कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, परिवार के लिए परमेश्वर की योजना के सिद्धान्त और भले के लिए इसकी सम्भावना मसीही शिष्यता के छोटे समूहों में समाविष्ट किए जा सकते हैं। यीशु ने ऐसा ही किया। जबकि वह भीड़ की सेवा कर रहा था, उसने अपने पास कुछ चेले इकट्ठे किए और गतिशील शिक्षा-प्राप्ति का एक वातावरण बनाया। इस सहभागिता से विश्वासियों का बढ़ता हुआ एक केन्द्र उमड़ा जो उसके राज्य के दर्शन से अनुप्रमाणित था और उसकी सेवकाई दोहराने के लिए सज्जित था। जो कुछ चेलों ने यीशु से सीखा था प्रोरिताई कलीसिया में ले जाया गया। सारी मण्डली आराधना के लिए मंदिर के औसारे या किसी सार्वजनिक जगह में इकट्ठी होती थी, परन्तु लोग अक्सर उनके घरों में मिला करते थे। तत्त्वतः यह एक छोटा समूह आन्दोलन था।

बेदारी के इतिहास में देखा गया

परन्तु जैसे विश्वासियों ने सांसारिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली, और मसीहियत ने आखिरकार रोम के सरकारी धर्म के रूप में मान्यता प्राप्त की, तो आत्मिक जोश स्पष्ट रूप से कम हो गया। फिर भी एक विश्वासयोग्य अवशेष था जिसने विश्वास की सुलगती आग को जीवित रखा। यदा-कदा, यह नई तीव्रता में फूट पड़ती थी। प्रोटेस्टेंट सुधारान्दोलन ने कलीसिया में नवीकृत आशा लाई, हालाँकि इसका केन्द्र सही सिद्धान्त न कि बेदारी था। जब कलीसिया धर्मविज्ञान के वाद-विवाद में फँस गई, तब यह कट्टर भक्त (pietists) थे, जो होम बाइबल अध्ययन समूहों में पाले-पोसे गए थे, उन्होंने सूखी हड्डियों में नया जीवन फूँक दिया। और इतिहास अपने विभिन्न आकारों में इसे दोहराता रहा है।

विशेषाधिकार

हम में से सबको एक छोटे समूह की संगति की आवश्यकता है। पहले तो दो या तीन उत्साही लोग ही काफी हैं, हालाँकि 8 या 10 बेहतर होगा। निश्चय ही, जैसे परमेश्वर आपसे निपटा है, वह दूसरों से भी बोला है जो परमेश्वर की सर्वोत्तम खोज रहे हैं, जो जानते हैं कि परमेश्वर के वचन में गहरा धन है जिनकी थाह लेना अभी बाकी है और जो पवित्र आत्मा की शिक्षा के लिए खुले हैं। सम्भव है कि ऐसा एक समूह आपकी कलीसिया में निर्देशन का इन्तज़ार कर रहा है। वे शायद असंगठित हैं, संभवतः वे अपनी आपसी इच्छाओं के बारे में जानकार नहीं हैं। परन्तु वे हैं, बेदारी के लिए एक प्रबल शक्ति बनने के लिए, केवल प्रोत्साहन और अगुआई की आवश्यकता में हैं। उन्हें खोजिए, पता लगाइए कि आप मिलकर अपने विश्वास को प्रेरित करने और अपनी सेवकाई को बढ़ाने के लिए क्या कर सकते हैं। आपको इस साहचर्य को बनाने के लिए दूसरे संबंधों को तोड़ना नहीं पड़ेगा। असल में, अपने गवाह को विस्तृत अभिव्यक्ति देने के लिए आपको कलीसिया और समाज में दूर दूर तक मित्रता बनानी चाहिए। परन्तु मण्डली के चल रहे कार्यक्रमों के द्वारा अपनी हो रही गवाही में, व्यक्तिगत वृद्धि और प्रचार पर केन्द्रित एक छोटे समूह को विकसित करने की आवश्यकता को अनदेखा मत करो।

एक समूह अनुशासन विकसित करो

इस केन्द्र को बढ़ने में सहायता के लिए सबसे सरल तरीका नियमित रूप से प्रार्थना और बाइबल अध्ययन के लिए इकट्ठे होना है। संगति का कैसी भी आकार हो, इसके हृदय में परमेश्वर के उद्देश्यों में उच्चतम खोजने की एक दृढ़ता होनी चाहिए।

पवित्र आत्मा की ओर अपने खुलेपन में, परमेश्वर और एक दूसरे के साथ ईमानदार बनो। स्वार्थीपन किसी भी प्रकार की वृद्धि को रोकता है। इस में जरूरी है कि आप एक दूसरे का विश्वास बनाए रखें और जो कुछ भरोसे में बताया जाता है उसे समूह से बाहर किसी भी कीमत पर न ले जाएँ। सावधान रहें कि अपनी दिशा न न बदल लें या आत्मसंतुष्ट न हो जाएँ। किसी भी समय यदि आप साहस की अपनी भावना खो दें तो प्रगति का द्वार बंद हो जाएगा।

बाइबल का एक अनुशासित अध्ययन आपके दर्शन और समर्पण को फैलाने में मदद करेगा। अपने तरीकों में रचनात्मक बनो; आप शायद एक भक्तिपूर्ण सहायक या एक लोकप्रिय आत्मिक पुस्तक पर चर्चा करना चाहें। जैसे आप वचन में परिपक्व होते जाएँगे, वैसे ही आप प्रार्थना के अभ्यास में भी बढ़ते जाएँगे, जब संगति मसीह के आत्मा से भरी होगी, यह स्वाभाविक रूप से आएगा। परमेश्वर और एक दूसरे के समीप आने की आपकी इच्छा में, कभी-कभार आप और आपका दल एक रात भर का या सप्ताह-अन्त का रीट्रीट पर जाना चाहेगें।

दूसरों पर उमड़ना

समूह इसके अपने ही मामलों में उलझे रहने का साहस न करे। जब कभी पानी एक जगह इकट्ठा होता है तो यह निष्क्रिय हो जाता है। परन्तु जैसे संगति जीवन के पानी में से पीती है और परमेश्वर के प्रेम में मजबूत होती जाती है, तो आशीष को बाँटने की इसकी इच्छा बढ़ती जाएगी।

व्यक्तिगत गवाही को प्रोत्साहन देने के अतिरिक्त, आप एक सामूहिक परियोजना भी अपना सकते हैं, जैसे समाज में लोगों से मिलने जाना, बाहरवालों को सिखाने के लिए पड़ोस में अध्ययन समूह चलाना, या एक सेवा का कार्य करना।

जैसे समूह का प्रभाव बढ़ता जाएगा, नए लोग आप में जुड़ना चाहेंगे। समय के साथ, आप शायद बँटना और भिन्न लोगों को मिलाकर नए समूह आरंभ करना चाहेंगे। अपनी संगति से जो अनुभव और विश्वास आपने पाया है, नित्य बढ़ती हुई प्रचार सेवा के लिए अगुआई का एक भण्डार देगा।

घीमे घीमे बेदारी की ज्वाला फैलती जाएगी, जैसे जैसे सुसमाचार समाज में जाता जाएगा। और संसार पहचानने लगेगा।

अपनी सेल समूह सभाओं का व्यावहारिक रूप से संघटन कैसे करें

कुर्सियों का क्रमः

विचार यह है कि सब कुर्सियाँ मध्य की ओर अभिमुख हों, एक दूसरे सामने हों, अगुए की ओर न हों। याद रहे, यह कोई शिक्षा का सत्र नहीं है, और न ही यह कक्षा का वातावरण है। यह एक पवित्र आत्मा की भीड़ है - एक गोत्र ही सभा। अगुआ शीर्ष पर या सामने नहीं बैठता है परन्तु दूसरों के साथ उसी दायरे में बैठता है। इसका कम से कम लक्ष्य कुर्सियों का एक ऐसा क्रम है जिसमें हर व्यक्ति बोलने में सुविधा महसूस करे। इसका विचार यह है कि अगुआ एक शिक्षक के बदले एक सहायक की भूमिका अदा करता है। हर परिवार सम्पूर्ण की सफलता में योगदान देता है। सफलता का अर्थ है कि हर सदस्य मसीह के स्वरूप में ढाला जा रहा है। समूह में हर सदस्य दूसरे की सहायता करता है।

कमरे का वातावरणः

प्रकाश व्यवस्था महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति के पढ़ सकने के लिए पर्याप्त रोशनी होनी चाहिए। लोगों को एक एक करके पढ़ने को कहना एक अच्छा विचार नहीं है। अनेक लोगों को क्योंकि उन्हें स्कूल में जोर से बोल कर पढ़ने को कहा गया था, मानसिक आघात पहुँचा है; व्यस्कों के लिए भी अक्सर यह बहुत तनावभरा हो सकता है। पता लगाओ किसे पढ़ना अच्छा लगता है और उन्हें इस्तेमाल करो। आवश्यक हो तो बारी बारी से पढ़ो।

तापमान के बारे में, जहाँ तक हो सके आरामदायक तापमान हो तो अच्छा होगा। थोड़ा ठँडा होने से सभा के दौरान लोगों को जाग्रत रहने में सहायता मिलती है।

हालाँकि अनुकूलतम वातावरण वांछनीय है, वे सदा मुमकिन नहीं होते हैं। यदि कुर्सियों का एक सिद्ध दायरा बनाने के लिए जगह काफी नहीं है, कमरा/जगह का तापमान नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, या रोशनी कम है, तो अधिक चिन्तित मत हो जाओ। यह हमारे द्वारा चमक रहा परमेश्वर का प्रेम है जो लोगों को आकर्षित करता है। प्रेम, न कि कुर्सियाँ या रोशनी, सफलता लाता है। यदि हम यीशु को ऊँचा उठाते रहें तो लोग उसकी ओर खिंचे आएँगे। अधीन-चरवाहों के रूप में हमें मसीह के पास आने में भेड़ों के मार्ग में जो रुकावटें होती हैं, उन्हें हटाते रहना है।

सभा का क्रमः

अगला हम सभा के क्रम पर ध्यान देंगे, जिसमें आइस ब्रेकर, आराधना का समय, प्रार्थना और वचन शामिल हैं। यह बहुत आवश्यक है कि सब लोग सभा के लिए समय पर पहुँचें। एक अतिथि यदि एक घंटा पहले आ जाता है तो गृहिणी असावधान और ना-तैयार पाई जाएगी। यह भी एक बड़ी संकोचित स्थिति पैदा कर सकता है यदि अतिथि एक पुरुष है और वह पति के या दूसरे सदस्यों से पहले पहुँच जाता है। इसका उलटा भी मुमकिन है और उतना ही अवांछनीय है। बाहर किसी जगह में कुछ कुर्सियाँ रखना एक हल हो सकता है। सब को समय पर आने का प्रशिक्षण देने के सहायता के रूप में, यह महत्त्वपूर्ण है कि सभा समय पर आरंभ हो चाहे आरंभ करने के निर्धारित समय पर कितने भी लोग उपस्थित क्यों न हों। यदि आप सब के आने का इन्तज़ार करेंगे तो पाएँगे कि सभाओं के आरंभ करने का समय आगे आगे होता चला जाएगा।

आइस ब्रेकरः

आइस ब्रेकर के दौरान, पीने के लिए कुछ देना या हलका नाश्ता एक अच्छा विचार होगा। दोनों में से कोई भी आवश्यक नहीं है, परन्तु कुछ हलका पीने या खाने के लिए होना संगति को बढ़ाता है। यह सामाजिक सम्पर्क प्रेरित करता है और विशेष रूप से अतिथियों को नरम पड़ने में, तनाव और बेचैनी कम करने में सहायता करता है। खाना और पीना बाहरी व्यक्ति को "घुलने-मिलने में" सहायता करता है। यह उन्हें कुछ करने को देता है जिससे वे अधिक संकोची होने से बचे रहते हैं।

'आइस ब्रेकर' के समय के दौरान, मेजबान को कुछ प्रश्नों या दिलचस्प विषयों को बताने के लिए तैयार रहना चाहिए। इससे लोगों को एक आरामदायक और नरम वातावरण में जो एक सफल सभा के लिए निर्णायक है, जाने में मदद मिलती है। आरंभ के कुछ क्षणों के दौरान प्रश्न या विचार-विमर्श हलका रखना चाहिए, दबाव नहीं डालना चाहिए। प्रश्न ऐसे हों जो बातचीत को बढ़ाएँ और लोगों को नरम होने में मदद करें। बहुत आवश्यक है कि सब स्वागत महसूस करें। यह अतिथि को गम्भीर प्रश्नों द्वारा जाँचने का समय नहीं है। पहली बार आए अतिथि के जीवन में ताक-झाँक मत करो, और न दूसरों को करने दो।

आराधना का समयः

किस प्रकार की आराधना उचित होगी सभा का समय और स्थान प्रभावित करेगा। सभा की लम्बाई भी एक निर्धारी घटक है। डेढ़ घंटे की एक सामान्य सभा के लिए 15 से 20 मिनट का आराधना का प्रतीकी सत्र होना चाहिए। परन्तु, यदि आपके पास एक घंटा ही है, तो 45 मिनट की आराधना दूसरी चीजों के लिए जो एक सफल सभा के लिए आवश्यक हैं, अधिक समय नहीं छोड़ेगा।
एक गुणी गितार बजानेवाला एक छोटे समूह को परमेश्वर की उपस्थिति में ले जा सकता है और बहुत ही आशीष हो सकता है। एक नौसिखिया भी समूह को आराधना में ले चलने के लिए संगत कर सकता है। यदि आप ठीक से नहीं गा सकते हैं तो आप एक कैसेट या सीडी के साथ साथ गा सकते हैं। बिना किसी संगीत वाद्य के, गाने से डरे नहीं। यदि हृदय सच्चे हैं तो परमेश्वर के लिए यह हमेशा सुन्दर है। एक सेल में सामूहिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की दूसरी मुख्य कुँजी हर सदस्य का अपना प्रार्थना का जीवन है। यदि एक मात्र समय जब समूह के सदस्य सेल सभा या कलीसिया की सभा में ही प्रार्थना या आराधना करते हैं तो परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के उनके प्रयास थोड़े नीरस होंगे। समूह को सदस्यों को घर में और सेल सभाओं में भी प्रार्थना करने और आराधना करने के लिए प्रोत्साहन देने के लिए सबकुछ जो यह कर सकता है करना चाहिए।
यदि आप एक सार्वजनिक स्थान में सभा कर रहे हैं, जैसे कि होटल या नौकरी में, तो सम्भव है गीत गाने का साहस या स्वतन्त्रता न हो। परमेश्वर की आराधना का अर्थ कोई भी ऐसा कार्य है जो आपको उसकी उपस्थिति में ले जाए। आपकी सभा में परमेश्वर की उपस्थिति के बिना आपकी सभा कुछ और नहीं एक सामाजिक भीड़ ही होगी। यदि आराधना ठीक नहीं होती है, तो सभा के बाकी के समय में एकता ला पाना बहुत ही कठिन होगा। आराधना के समय से कम से कम अपेक्षा जो आप कर सकते हैं वह है एकता। मिलकर गीत गाना या आराधना करना समूह को एक करता है। इसलिए आराधना में आपका लक्ष्य परमेश्वर के साथ और अपने साथी सेल समूह सदस्य के साथ एकता होना चाहिए।

प्रार्थना:

आराधना के बाद, जबकि समूह अभी भी स्तुति के अदभुत वातावरण में है, प्रार्थना करने का यह बहुत अच्छा समय है। किसी को भी जो उस समय अपनी जरूरतें परमेश्वर को बताना चाहता है करने दिया जाए। कुछ एक साथ सब मिलकर प्रार्थना करना चाहते हैं, तो कुछ बारी बारी से करना पसन्द करते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कैसे करें। महत्त्व की बात यह है कि जब लोग अपने स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करें तो एक आराम और अभिषिक्त वातावरण हो। आराधना के बाद होने वाली प्रार्थना सप्ताह का सबसे विशेष समय हो सकता है।

वचन:

परमेश्वर के वचन का अध्ययन अत्यधिक महत्त्व का है और सम्भवत: मुख्य कर्ता है, जो पवित्र आत्मा के सामर्थ्य और अभिषेक के द्वारा मन, हृदय, रवैये और जीवन बदलता है! परमेश्वर के अचूक वचन के रूप में बाइबल के अधिकार को और हमारे सोच-विचार को नया करने के लिए हमारे जीवनों में इसके महत्त्व पर जोर देते रहो।
आपकी जिम्मेवारी बाइबल अध्ययन तैयार करना और वचन के अध्ययन को पारस्परिक क्रियाशील और उत्तेजक बनाना है! अपने सदस्यों की सत्य को खोजने में सहायता करना, प्रश्नों के उत्तर देने में उन्हें शामिल करना (इसके लिए कुछ लोगों को उत्तर देने के लिए नाम लेकर कहना होगा क्योंकि वे शायद संकोची या हीनता महसूस करें), उत्तरों का आदर करना (दया और प्रेम से प्रतिक्रिया दिखाना), जानना कि केन्द्र कैसे बनाए रखना है, और परमेश्वर के वचन में पाए गए सत्य की ओर लोगों को हमेशा ले जाते रहना है! और बाइबल के सत्य के उपयोग पर बहुत अधिक जोर देने की आवश्यकता है। यहाँ पर आप अपना अनुभव बता सकते हैं, और सेल समूह को अपना जीवन प्रदान कर सकते हैं।

सेल अगुआई

आत्मिक अगुआई में मुख्य तत्त्वः

1. **परमेश्वर के लिए हृदय**
   - क) परमेश्वर का आज्ञापालन
     1. अपने जीवन परमेश्वर के वचन के अनुसार जीना
     2. अपने जीवन दृढ़ धारणा और न कि परस्थितियों या सुविधा के अनुसार जीना
   - ख) परमेश्वर पर निर्भरता
     1. 'विश्वास से, न कि देखकर चलना' (2 कुरिं. 5:7)
     2. 'विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है' (इब्रा. 11:6)
     3. परिस्थितियों और परिणामों के बावजूद परमेश्वर में भरोसा

2. **लोगों के लिए हृदय**
   - क) परमेश्वर लोगों पर उच्च प्राथमिकता रखता है (1 इतिहास 14:2; फिलि. 2:20-21)
   - ख) लोगों की ओर अपने रवैये की जाँच करो:
     - क्या दूसरे लोगों की असफलताएँ हमें चिढ़ाती हैं या चुनौती देती हैं ?
     - क्या हम लोगों को इस्तेमाल करते हैं या उनकी सेवा करते हैं ?
     - क्या हम लोगों का संचालन करते हैं या उनका विकास करते हैं ?
     - क्या हम लोगों की आलोचना करते हैं या उन्हें प्रोत्साहित करते हैं ?
     - क्या हम समस्यात्मक लोगों से दूर रहते हैं या उन्हें खोजते हैं ?
   - ग) परमेश्वर जानता है कि लोगों के लिए हृदय होना सरल नहीं है (इफि. 4:2)

3. **परमेश्वर के वचन की ओर वचनबद्धता**
   - क) परमेश्वर का वचन जानने को वचनबद्ध
     - इसका अर्थ परिश्रमी अध्ययन है (2 तीमु. 2:15)
   - ख) परमेश्वर का वचन उपयोग में लाने को वचनबद्ध

4. **अनुशासन और विकास दिखाता है**
   - क) अनुशासनः
     - रुपये-पैसों के उपयोग में
     - मसीही मूल बातों में
   - ख) मूल बातों में विकासः
     - परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय
     - वचन का जीवन
     - प्रार्थना का जीवन
     - चरित्र

5. **गति-निर्धारक**
   - क) जो खुद पहले कर रहा है दूसरों को करने में प्रेरित करता है
   - ख) सिखाने से अधिक समझा जाता है

6. **सेवा करने द्वारा अगुआई करता है**

क)	मसीह का आदर्श - (मरकुस 10:45; यूहन्ना 13:15)
ख)	लोग हमारी अगुआई से पहले हमारे सेवकपन की ओर आकर्षित होते हैं
ग)	हमारी सेवा लोगों के लिए हमारे प्रेम का बाहरी संकेत है

7. **F.A.S.T.** (Faithfulness, Availability, Submissiveness, Teachability)
   क) विश्वासयोग्यता: थोड़े में (मत्ती 25:21)
   ऐसी कौन सी एक चीज है जिसे आप करना नहीं चाहोगे क्योंकि आप सोचते हो कि यह तुच्छ है?
   ख) उपलब्धता: परमेश्वर मेरी योग्यता से अधिक मेरी उपलब्धता से संबद्ध है।
   मैं यह करने के लिए कितना उपलब्ध हूँ:
   - कठिन काम
   - दीन-हीन काम

   ग) समपर्णशीलता: (इब्रा. 13:17)
   परमेश्वर के अभिषिक्त अगुओं के अधिकार में रहना
   जब हम सहमत होते हैं केवल उसी समय ही अधीन नहीं होना
   घ) शिक्षणीयता: (नीतिवचन 9:8-9)
   क्या आप बुद्धिमान हैं या ठट्ठा करनेवाले?
   आप दूसरों की आलोचना या शिक्षा से कैसे निपटते हो?

8. **अपना एक दर्शन है**
   क) आप परमेश्वर के लिए बड़ी बड़ी चीजों का सपना कैसे देखते हो?
   ख) जैसे आप अगुआई कर रहे हो, आपका अपने समूह के लिए क्या दर्शन है?
   ग) क्या आपने परमेश्वर को अपने लिए एक दर्शन देने को कहा है?

एक आत्मिक अगुए की चार विशेषताएँ:

क. वह वास्तविक जीवन के लिए आदर्श बनता है

"कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए; पर वचन, और चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श बन जा।" 1 तीमु. 4:12

ख. वह लोगों की जरूरतों की सेवा करता है

"...परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिए नहीं आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।" मत्ती 20:26-28

ग. वह लोगों को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है

घ. वह काम करता है

काम अपने आप होने के लिए वह हाथ पर हाथ रखे बैठे नहीं रहता है।

अगुआई की तीन किस्में

सब अगुओं में, उनके अन्दर "उद्यमी, मैंनेजर और तकनीशियन" पहलू होता है। यदि वे समान रूप से सन्तुलित होते, तो हम एक अविश्वसनीय सुयोग्य व्यक्ति का वर्णन कर रहे होते। परन्तु ये तीनों बिरले ही एक ही व्यक्ति में सन्तुलित होते हैं। इसी लिए, हमें इन तीन महत्त्वपूर्ण कार्यों को मुहैया करने के लिए एक दूसरे पर निर्भर होना चाहिए।

उद्यमी	मैनेजर	तकनीशियन
स्वपनदर्शी स्वपनद्रष्टा भविष्य	अर्थ-क्रियावादी आयोजक पूर्व	कर्ता स्थिरीकारक वर्तमान
आदर्श-वाक्य "यदि तुम चाहते हो यह काम अच्छा हो, तो एक नया...बनाओ"	**आदर्श-वाक्य** "यदि तुम चाहते हो यह काम अच्छा हो, तो अच्छे मजदूर को प्रशिक्षण दो"	**आदर्श-वाक्य** "यदि तुम चाहते हो यह काम अच्छा हो, तो इसे खुद करो"
सीमा इस दर्शन में कितने मैनेजर हो सकते हैं ? एक घर का निर्माण करता है और अगले की योजना बनाता है।	**सीमा** कितने तकनीशियनों का वह निरीक्षण कर सकता है ? एक घर का निर्माण करता है और सदा के लिए उसी में रहता है।	**सीमा** वह खुद कितना कर सकता है ? घर का निर्माण कभी भी समाप्त नहीं करता है।
अवसर देखता है सीढ़ी किस दीवार के साथ लगाई जाए ? बदलाव चाहता है	**समस्याओं को देखता है** मैं सीढ़ी को दीवार पर ठीक से कैसे लगाऊँ ? आदेश की लालसा रखता है	**करने के लिए काम देखता है** मैं कितनी बार ऊपर और नीचे जाऊँगा ? कार्य चाहिए
विश्वदर्शन हर जगह अवसर देखता है पंक्तियों में रखने के लिए चीजें बनाता है।	**विश्वदर्शन** गंदगी को साफ करना है। चीजों को सुव्यवस्थित पंक्तियों में रखता है।	**विश्वदर्शन** आज रात के खाने के लिए रोटी बनाता है। जो चीजें सुव्यवस्थित पेक्तियों में हैं उन्हें ठीक करता है।

एक सेल कलीसिया में चार अगुआई की भूमिकाएँ

क. कलीसिया का सामान्य पास्तरीय निरीक्षण – जिला पास्टर
वह अनेक मण्डलियों की कलीसिया को निरीक्षण करता है।

ख. एक मण्डली का विशेष पास्तरीय निरीक्षण और समन्वयन – क्षेत्रीय पास्टर
वह 6 से 25 सेल की मण्डली का पास्टर है।

ग. सेल के एक तन्त्र का समन्वयन और प्रशिक्षण – क्षेत्रीय निरीक्षक
3 से 5 सेल का निरीक्षण करता है।

घ. सेल के स्तर पर देखरेख मूल काम है – सेल अगुआ
वह 5 से 15 मसीहियों के एक सेल का पालन-पोषण करता है।

<u>सात अवस्थाएँ जो आत्मिक उत्साह को जोखिम में डालती हैं:</u>

क) अपचय दशा

- 1 राजा 18:24, 29, 36-37; 19:4, 7; लूका 8:46

ख) शुष्क दशा

- खाली आत्मिक टंकी
- भजन 51 से पहले राजा दाऊद

ग) विकृत दशा

- उत्पत्ति 13:10 "तब लूत ने आँख उठाकर…देखा…"

घ) सर्वनाश दशा

- 2 कुरिं. 1:8-9 "…हम ऐसे भारी बोझ से दब गए थे, जो हमारी सामर्थ्य से बाहर था, यहाँ तक कि हम जीवन से भी हाथ धो बैठे थे। वरन् हम ने अपने मन में समझ लिया कि हम पर मृत्यु की आज्ञा हो चुकी है।"

च) निर्भ्रान्त दशा

- निर्गमन 2:14 "तब मूसा यह सोचकर डर गया…"
- यशायाह 7:2 "जब दाऊद के घराने को यह समाचार मिला कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि की है, तब उसका और प्रजा का भी मन ऐसा काँप उठा जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से काँप जाते हैं।"

छ) पराजित दशा

- लूका 22:62 में पतरस "और वह बाहर निकलकर फूट-फूट कर रोया।"

ज) हताश दशा

- 1 राजा 19:3-5 "यह देख एलिय्याह अपना प्राण लेकर भागा…वहाँ उसने यह कह कर अपनी मृत्यु माँगी, 'हे यहोवा, बस है; अब मेरा प्राण ले, क्योंकि मैं अपने पुरखाओं से अच्छा नहीं हूँ…।'"

21 कारक जो सहभागिता प्रोत्साहित करते हैं

"देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें...यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है" (भजन 133:1,3)। इस सत्य के कारण शैतान निरन्तर एकता को नष्ट करने की कोशिश करता है। सहभागिता बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। यह यूँ ही नहीं होती। बाइबल इन सिद्धान्तों को मानने की आवश्यकता सिखाती है:

1. **वचनबद्धता**

   "भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो" (रोमियों 12:10)। अनेक बार 'प्रेम' तब ही उमड़ता है जब हम एक दूसरे के स्तर को संतुष्ट करते हैं, और इसलिए नहीं कि दूसरे के पालन के बावजूद यह एक मूल आवश्यकता है। क्या आप मसीह में अपने एकत्व के आधार पर, अपनी मण्डली के सदस्यों के साथ अत्यधिक और बिना शर्त वचनबद्ध हैं ?

2. **प्रेम**

   आत्मिक अनुभव में अंतिम प्रेम ही है। ध्यान दें कि हमें प्रेम करने की आज्ञा दी गई है। यूहन्ना 13:34 कहता है, "एक दूसरे से प्रेम रखो।" इसका तात्पर्य यह है कि सच्चा प्रेम एक भावना नहीं है बल्कि जान-बूझकर किए गए कार्य का परिणाम है। इसके अतिरिक्त, रोमियों 5:5 प्रमाणित करता है कि मसीह के प्रेम के द्वारा प्रेम करना मुमकिन है। "मसीह ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपना प्रेम हमारे हृदयों में उँडेला है।" प्रेम शिष्यता का एक मूल संघटक है; यीशु ने विशेष रूप से कहा कि "इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)।

3. **पारदर्शकता**

   "जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें" (1 यूहन्ना 1:7), का अर्थ है एक दूसरे और परमेश्वर के साथ पारदर्शकता में जीवन जीना ताकि कोई गलत आत्मा, दुर्भाव, कठोरता या नकारात्मक रवैया बने रहने और सम्बंधों को तोड़ने न पाए। 1 यूहन्ना 2:9-10 कहता है कि यदि हमारे हृदयों में किसी दूसरे की ओर एक गलत रवैया है तो हम ज्योति में नहीं चल सकते हैं।

4. **दीनता**

   टूटे मन या विनम्रता का आधार यह पहचान है कि हमारे कोई भी अधिकार नहीं हैं। यीशु ने शिष्यता के एक मूल-भूत संघटक के रूप में क्रूस को स्वीकरने और उठाने के बारे में बात की थी (लूका 14:27)। क्रूस में 'मैं' को काटा जाता है। पौलुस "मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये" जाने की बात करता है (गला. 2:20)। क्या हम ने क्रूस को एक नियम के रूप में स्वीकार किया है ? अच्छे व्यक्तिगत सम्बंधों का यही एक मात्र आधार है।

5. **खुलापन**

   सहभागिता में यदि हम दूसरे में अपनी ओर कोई गलत भावना महसूस करते हैं तो उसके पास जाने की स्वतन्त्रता भी शामिल है। बेशक, यदि हम दुखी या पूर्वाग्राही रवैये के साथ जाते हैं तो इससे और अधिक गड़बड़ हो सकती है। यीशु ने कहा यदि हम प्रभु की आराधना करना चाहते हैं और हम जानते हैं कि दूसरे व्यक्ति के हृदय में हमारे विरुद्ध कुछ है तो हमें पहले संगति पुनःस्थापित करने का प्रयत्न करना है। इस समय आराधना से अधिक मेल-मिलाप की प्राथमिकता है (मत्ती 5:23-24)।

6. **क्षमा**

   एक व्यक्ति के जीवन में पवित्र आत्मा के बहाव के लिए एक सबसे मुख्य रुकावट एक क्षमा न करनेवाला रवैया है। एक क्षमा करनेवाले हृदय की आवश्यकता सुसमाचारों में बार-बार प्रकट होती है, जहाँ इसे एक प्रभावशाली प्रार्थना के साथ जोड़ा गया है, जो इसके लिए एक अत्यावश्यक पूर्व शर्त है। पौलुस कहता है कि निरन्तर रहने वाली मसीही सहभागिता के लिए यह एक अत्यावश्यक संघटक है। कुलुस्सियों 3:13 कहता है, "यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।"

7. **धैर्य**

यीशु ने पहचाना कि सहभागिता में असली चरमराहट, जब दूसरे की दोष क्षमता बहुत स्पष्ट है तब भी प्रेम बनाए रखना है। असल में, प्यारे लोगों से प्रेम करने में कुछ अधिक अच्छाई तो नहीं है। पौलुस सिखाता है कि धैर्य एक 'बड़ी भावना' या हृदय का बड़ापन है। दूसरे शब्दों में, हम में एक उच्च सहनशीलता दहलीज होनी चाहिए; यह आत्मा में ही मुमकिन है। कुलु. 3:13 हमें दोबारा याद दिलाता है कि "एक दूसरे की सह लो।"

8. **संवेदनशीलता**

प्रभु चाहता है कि हम सर्वसम्मति दृष्टिकोण की ओर संवेदनशील हों और सहभागिता रवैयों के दृष्टि में व्यक्तिगत दृढ़ भावनाओं को मन्द करें। एक रोबीला चेला तो शब्द का खण्डन है। "तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिए दीनता से कमर बाँधे रहो" (1 पतरस 5:5)।

9. **सहभागिता**

मसीहियों को आराधना और संगति के लिए एक दूसरे से मिलने के बाइबल के उपदेश को मानना है। "और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें...पर एक दूसरे को समझाते रहें" (इब्रा. 10:25)।

10. **प्रोत्साहन**

यह सबसे अधिक सामरिक महत्त्व की सेवकाइयों में से एक है। "उपदेश" और "सान्त्वना" शब्दों का अर्थ "प्रोत्साहन" है। "एक दूसरे को प्रोत्साहित करो" के बारे में संदर्भ इस कार्य की उपयोगिता को प्रकाशमय करते हैं (इब्रा. 10:25; 1 थिस्स. 5:11; रोमियों 12:18)। शैतान की सेवकाई इसके विपरीत है – निराशा और उदासी।

11. **सलाह**

"एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ" (कुलु. 3:16)। सलाह के लिए प्रारंभिक शब्द में, सत्य को मन में डालने का विचार था। सच्ची सहभागिता का एक लक्षण यह है, जब एक मसीही जानता है कि वह दूसरे को सलाह या मंत्रणा का एक शब्द प्रतिक्रिया के डर के बिना दे सकता है। दूसरे शब्दों में, भरोसे का एक ऐसा मजबूत और अटूट बन्धन बन चुका है कि सत्य, अप्रिय सत्य भी, प्रेम के साथ कहा जा सकता है और आत्मा में स्वीकार किया जा सकता है। "एक दूसरे को चिता सकते हो" (रोमियों 15:18)।

12. **बाँटना**

"सहभागिता" शब्द एक यूनानी शब्द से अनुवाद किया गया है जिसका अर्थ है 'जो सामूहिक है उसको परस्पर बाँट लेना' या 'जाकर दूसरे के साथ बाँटना'। इसे रोमियों 12:13 और 15:27 में इस्तेमाल किया गया है। हमने जो मसीह के बारे में सीखा है की बातें करना सहभागिता है; अपनी चीजों को दूसरों को देना सहभागिता है; दूसरों की सहायता में समय देना सहभागिता है; एक दूसरे का बोझ उठाना सहभागिता है। गलातियों 6:2 कहता है, "एक दूसरे का भार उठाओ।"

13. **पुनःस्थापना**

मान लीजिए कि सहभागिता में एक गम्भीर खराबी हुई है। इसे पुनःस्थापित कैसे किया जा सकता है? मत्ती 18:15-22 का वचन बहुत स्पष्ट है। नाराज व्यक्ति को दूसरे के पास जाना चाहिए और मामले को ठीक करने का प्रयत्न करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो सका है, तब उसे कलीसिया के एक या दो अगुओं या भाइयों को साथ लेकर जाना है, और यदि यह भी असफल रहे तो उसे मामले को स्थानीय मण्डली के सामने रखना है जिसके वे सदस्य हैं। हमें बिगड़े हुए सम्बंधों से संतुष्ट नहीं रहना है।

14. **सेवकपन**

गलातियों 5:13 सिखाता है कि मसीही जीवन की सच्ची अभिव्यक्ति एक सेवकपन का हृदय है - एक दूसरे की सहायता करने की परवाह और एक दूसरे की सेवा करने की इच्छा। मसीह ने अपने चेलों के पैर धोए, उनके लिए नाश्ता बनाया और भलाई करता फिरा। पौलुस ने स्वयं को "सब का दास" बनाने की अपनी इच्छा प्रकट की थी (1 कुरिं. 9:19)।

15. **अतिथि-सत्कार**

1 पतरस कहता है हमें एक दूसरे के लिए अपने घर "बिना कुडकुड़ाए" खोलने चाहिए। यह वचन दिखाता है कि हमारे घर सहभागिता बनाने के लिए एक मुख्य कारक है। मसीही अगुआई की विशेषताओं में इस रवैये का दो बार वर्णन है कि यह आवश्यक है (1 तीमु. 3:2; तीतुस 1:8) और रोमियों 12 में इसे प्रार्थना, दीनता और उन्माद जैसे दूसरे मसीही सद्गुणों के साथ जोड़ा गया है।

16. **भाग लेना**

1 पतरस 4:10 सिखाता है कि हमारी सहभागिता की एक जिम्मेवारी अपने आत्मिक वरदानों को समूह के लाभ के लिए उपयोग में लाना है। ऐसा नहीं करना भण्डारियों के रूप में अपने कार्य में असफल होना है और मण्डली को उन आशीषों से वन्चित रखना है जो इन वरदानों के उपयोग से आनी अवश्य हैं।

17. **एकता**

रोमियों 15:5 "..परमेश्वर तुम्हें वरदान दे कि ..आपस में एक मन रहो" और 1 कुरिं. 1:10 "..मैं तुम से ..विनती करता हूँ कि..एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो" किसी मामले में परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने की जिम्मेवारी सिखाते हैं। पवित्र आत्मा के दो विचार नहीं हो सकते हैं। विवादास्पद मामले पर वोट देना (चुनाव नहीं) एक सच्ची मसीही मण्डली में एक आखिरी आश्रय युक्ति होनी चाहिए, आदर्श तो यही है कि प्रार्थना और विचारों के आदान-प्रदान से सर्वसम्मति का प्रयत्न किया जाए ताकि सारे समूह में स्पष्टता और दृढ़ धारणा बन सके।

18. **विविधता**

एकता का तात्पर्य एकसमानता नहीं है। यह पवित्र आत्मा की प्रतिभा है कि वह हम सबको विभिन्न तरीकों से सज्जित करता है, और 1 कुरिं. 12 की स्पष्ट शिक्षा यह है कि जबकि हम सबका देह के साथ एक अनिवार्य सम्बंध है, हम सब को हमारे अपने अनोखे कार्य के द्वारा योगदान करना है।

19. **स्वीकरण**

रोमियों 12:10 हमें "एक दूसरे का आदर करना" सिखाता है। क्या हम लोगों की प्रशंसा तब ही करते हैं जब वे हम से सहमत होते हैं ? यदि ऐसा है तो, हम पक्षपात के दोषी हैं, जिसे याकूब 2:9 में दण्डित ठहराया गया है। सच्ची विनम्रता या मन की दीनता का एक चिन्ह है कि आप "एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो" (फिलि. 2:3)।

20. **अधीनता-स्वीकरण**

इफिसियों 5:21 हमें स्पष्ट आदेश देता है, "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो"। शब्द का अर्थ है 'अधीन रखना' और शिक्षा का अर्थ है कि हमारी प्रेरणा एक स्थाई स्वीकरण में से निरन्तर दूसरे का भला, दूसरे का कल्याण होनी है, अपनी नहीं, कि हमारी प्राथमिकताएँ सर्वप्रथम यीशु, फिर दूसरे, और अन्त में हम स्वयं हों। आमूल? हाँ। परन्तु सम्पूर्ण रूप से बाइबल पर आधारित। "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है" (1 पतरस 5:5)।

21. **प्रार्थना**

एक सहभागिता उतनी ही मजबूत होती है जितनी इसके सदस्यों की एक दूसरे के लिए प्रार्थना होती है। अनेक स्थानीय कलीसियाओं में विशेष कर यह एक बहुत बड़ी कमजोरी है; या तो प्रार्थना सभाएं सहयोग के अभाव के कारण पूरी तरह लुप्त हो चुकी हैं, या सभा या विचार-विमर्श के किसी कम सामरिक महत्त्व में विकृत हो गई हैं। इकट्ठे प्रार्थना करो, इकट्ठे रहो! "प्रार्थना में लगे रहो" (कुलु. 4:2)। "निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो" (1 थिस्स. 5:17); "प्रार्थना में नित्य लगे रहो" (रोमियों 12:12)।

ग्रह कलीसियाओं के लिए बाइबल का आधार

<u>शहर</u>

संसार एक बढ़ती हुई नगरीकरण की दर अनुभव कर रहा है। हाल के अनुसन्धान ने दिखाया है कि तीसरे सहस्त्राब्दि-संधि तक नगरीकरण 52 प्रतिशत् से अधिक तक हो जाएगा।

पारंपरिक तौर पर, कलीसिया ने विश्व भर में "शहर को भय, संदेह, और एक बचकर रहने वाली जगह के रूप में" देखा है। इसलिए कलीसिया की शहर को खाली करने और उपनगरों में जाने की एक शक्तिशाली प्रवृत्ति है। नगरीकरण की ओर प्रवृत्ति ने हमारे शहरों की जनसंख्या के लिए बहुत समस्याएँ खड़ी की हैं। जब जनसंख्या तेजी से बढ़ती है, तब पानी, घर, और स्वास्थ्य जैसे आवश्यक साधनों पर दबाव बढ़ता है। जनसंख्या का यह विस्फोटकन विभिन्न स्वास्थ्य सम्बंधी महामारियाँ, ग्रहीनता और गरीबी पैदा करता है।

इन सब में सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताएं स्पष्ट हैं। उनके पीछे परिवार पर दबाव हैं; बढ़ती वैवाहिक अस्थिरता है; नए शहरी आर्थिक संघर्ष जो मानवीय सम्बंधों पर अधिक भार डालते हैं; ग्रामीण ग्रहणी से दूसरी-आमदनी कमानेवाली में पत्नियों की भूमिका में बदलाव है; परिवारों का शहर और उनके देहाती मूल के बीच उनके समय को बाँटना है; संकुचित आमदनी पर कुटुम्बीय कर्तव्य हैं; जैसे-जैसे बच्चों द्वारा अपनाई जा रहीं शहरी नैतिक-मूल्य, ग्रामीण नैतिक-मूल्य प्रणालियाँ को चुनौती देती हैं माता-पिता और बच्चों में झगड़े होते हैं; मिलनसारी के नए उभरते नमूने जो परिवार पर नहीं बल्कि पेशे पर आधारित हैं। रिपोर्टों से पता चलता है कि विभिन्न लोगों के शहर के बारे में भिन्न विचार है, "परन्तु सब सहमत हैं कि हर प्रसरणशील शहर में, एक आत्मिक और नैतिक रिक्त स्थान है।" कुल मिलाकर, कलीसिया शहरों से बचती रही है।

फिर भी, हम विश्वासियों और अगुओं को शहरों को लेना है और उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए एक जगह बनाना है।

<u>नए नियम की ग्रह कलीसिया</u>

नए नियम की कलीसिया अपने समय के महानगरों को पहुँचने में प्रभावशाली थी। नए नियम की कलीसिया का आरंभ परिवार इकाई और परिवार घर था। नए नियम का इतिहास और बाइबल स्पष्ट करते हैं कि नए नियम के समयों में घराना एक मूल राजनीतिक इकाई माना जाता था। घराने में न केवल परिवार बल्कि "गुलाम, मुक्तदास, नौकर, मजदूर, और कभी-कभार व्यवसाय सहयोगी और किरायेदार" भी शामिल होते थे। सुसमाचार फैलाने का एक सबसे महत्त्वपूर्ण तरीका घर द्वारा होता था। यरूशलेम की कलीसिया की पहली सभा घर में हुई थी - अटारी (प्रेरितों 1:13)। इसलिए घर सहभागिता और सभा की एक जगह दोनों थे। जैसे जैसे आन्दोलन बढ़ने लगा, अधिक घरों को सभा के स्थानों के रूप में सम्मिलित किया गया। यूहन्ना मरकुस की माता के घर पर प्रार्थना के लिए एक छोटे समूह का इकट्ठा होना एक उदाहरण है। प्रेरितों 12:12, और प्रेरितों 2:46 दोनों बताते हैं कि लोग उनके घरों में रोटी तोड़ा करते थे।

एक नए शहर में एक नई कलीसिया आरंभ करने के लिए, पौलुस का एक सबसे पहला लक्ष्य एक घराने को जीतना होता था जो उसके आगे के काम के लिए एक केन्द्र का काम करता था। पौलुस को कलीसिया स्थापित करने के लिए एक मिलने के स्थान की आवश्यकता होती थी। उन विभिन्न घरानों पर ध्यान दो जहाँ पौलुस के सम्बंध थेः लुदिया, फिलिप्पी दारोगा, क्रिसपुस (प्रेरितों 16:14-15, 31-34, 18:8), प्रिस्का और अक्विला, नरकिस्सुस (रोमियों 16:3, 10, 11), खलोए, गयुस, स्तिफनास (1 कुरिं. 1:11, 14-15), कैसर (फिलि. 4:22) और उनेसिफुरूस (2 तीमु. 1:16; 4:19)।

नए नियम में ग्रह कलीसिया कलीसिया की मूल इकाई बन गई। इसे "उनके / आपके / उसके घर" के शब्दों द्वारा पहचाना गया है। इन वाक्यांशों को चार बार, पौलुस के सब पत्रों में इस्तेमाल किया गया है। इसे इफिसुस और रोम में प्रिस्का और अक्विला के घर में (1 कुरिं. 16:19; रोम. 16:3-5); लौदीकिया में नुमफास के घर में (कुलु. 4:15) और कुलुस्से में आफिया और अर्खिप्पुस के घर में इकट्ठी हो रही कलीसिया के बारे में बताने के लिए इस्तेमाल किया है।

<u>ग्रह कलीसिया – सभा के लिए एक स्थान</u>

एक ग्रह कलीसिया का आकार घर के सबसे बड़े कमरे के आकार द्वारा सीमित होता था। सबसे बड़ी सम्भव सभा में 45 लोग होते थे। घरों के नमूने साम्राज्य भर में काफी विविध थे। ईजियन तट के विभिन्न नगरों में कलीसिया घर के भोजन कक्षों में इकट्ठी हुआ करती थी, जो कुछ घरों में ड्योढ़ी या खुली जगह में खुलते थे। यूनानी और रोमी घर, जो उनके मालिकों द्वारा दिए जाने वाले भोज सभाओं के कारण प्रसिद्ध थे, सभाओं के लिए अच्छी तरह सज्जित होते थे। घर के ये कमरे अक्सर सबसे बड़े हुआ करते थे।

एक बार जब ग्रह कलीसिया समाई तक भर जाती थी, तो कलीसिया की सततः वृद्धि अधिक ग्रह कलीसियाओं की जोड़ाई से होती रहती थी। एक शहर में एक से अधिक के होने की बात प्रेरितों में सूचित की गई है। प्रारंभिक कलीसिया में "घर-घर" रोटी तोड़ा करते थे (प्रेरितों 2:47)। वचन "घर-घर" में सिखाया जाता था और सताव भी "घर-घर" आया था (प्रेरितों 5:42; 20:20; प्रेरितों 8:3)। हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि मुख्य शहरों में सम्भवतः इस प्रकार की असंगठित इकट्ठी जुड़ी हुई अनेकों ग्रह कलीसियाएँ थीं।

अधिक ग्रह कलीसियाओं को जोड़कर मण्डली को बढ़ाने ने नए नियम की कलीसिया को एक प्रभावशाली 'बुनियाद-तत्त्व' का आन्दोलन बना दिया था। इसे विस्तार के लिए एक कलीसिया ईमारत पर निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं थी। इसे बस इतना ही चाहिए था कि एक और परिवार सभाओं के लिए अपना घर खोलने के लिए तैयार हो। पहली शताब्दी के मध्य तक सारे रोमी संसार भर में निश्चित ग्रह कलीसियाओं का एक प्रचुरोद्भवन था।

प्रारंभ में, इससे पहले कि सताव ने ऐसा कठिन कर दिया, यरूशलेम की कलीसिया सुलेमान के ओसारे में, जो मन्दिर का एक भाग था, इकट्ठे हुआ करते थे (प्रेरितों 2:46; 3:11; 5:12)। यहाँ वे प्रेरितों से शिक्षा पाते थे और संगति और प्रार्थना में भाग लेते थे। अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा किए जाते थे (प्रेरितों 2:42-45)। संगति में जिन्हें जरूरत होती थी उनमें धन-सम्पत्ति को बाँटा जाना शामिल था (प्रेरितों 2:42-45)। दुर्भाग्यवश, कलीसिया का यहूदी अगुओं के हाथों से जो बरताव होता था, उसके कारण वे लोग जो प्रेरितों के संदेश में रुची रखते थे सुलेमान के ओसारे में उनमें जुड़ने से डरते थे (प्रेरितों 5:13)।

ग्रह कलीसिया ने सत्य को खोजने का एक सुरक्षित अवसर प्रदान किया था। ग्रह कलीसिया के स्तर पर, कलीसिया रोटी तोड़ने, शिक्षा और प्रार्थना के लिए इकट्ठा हुआ करती थी (प्रेरितों 2:46; 20:7-12; 20:20)। कुरिन्थियों को लिखे अपने पत्र में, पौलुस सभाओं के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करता है। उसमें गीत गाना, परमेश्वर के वचन से शिक्षा (1 कुरिं. 14:26) और प्रभु भोज मनाना (1 कुरिं. 11:17) शामिल था। वह प्रार्थना के महत्त्व पर भी जोर देता है (फिलि. 4:6)।

ग्रह कलीसियाओं के उद्देश्य

सम्बंधो के बारे में नए नियम की आज्ञाओं को केवल बड़ी सभाओं में ही पूरा नहीं किया जा सकता है। ग्रह कलीसियाएँ लोगों के छोटे छोटे समूह हैं जो अनुग्रह और प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान में बढ़ने के लिए नियमित रूप से इकट्ठे होते हैं। ग्रह कलीसियाओं को विस्तृत मसीह की देह में अगुआई के दर्शन के प्रति उत्तरदायी होना है। ग्रह कलीसियाएँ एक माध्यम हैं जिनमें मत्ती 28:19 का महान आदेश पूरा हो सकता है।

एक ग्रह कलीसिया के बाइबल के कुछ उद्देश्य नीचे सूचीबद्ध किए गए हैं:

1. मसीह की स्तुति, आराधना और आज्ञा पालन करना (प्रेरितों 2:42)
2. परमेश्वर का वचन सीखना और उपयोग में लाना सीखना (प्रेरितों 2:42)
3. इकट्ठे प्रार्थना करना, और इकट्ठे प्रभु भोज मनाना (प्रेरितों 2:42, 46)
4. संगति बढ़ाना और आशा, चँगाई और जीवन के समुदाय विकसित करना (प्रेरितों 2:44-45; इब्रा. 13:16)
5. लोगों को मसीह में एक जीवित विश्वास में लाना (प्रेरितों 2:47)
6. एक दूसरे की सेवा करना (1 कुरिन्थियों 14:26)
7. एक दूसरे को संसार में मिशन के लिए तैयार करना (मत्ती 28:19)

ग्रह कलीसियाओं को नियमित रूप से एक सामूहिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्थानीय कलीसिया के सम्पूर्ण दर्शन में इकट्ठे होने के लिए संगठित करना है, जिन्हें हम उत्सव केन्द्र कह सकते हैं, जो रविवार को इकट्ठे होते हैं। ये सभाएँ शहर के लिए प्रार्थना करने (1 तीमुथियुस 2:1-2), एक मन से परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने, और सुसमाचार के अभिषिक्त और प्रमाणित सेवकों द्वारा परमेश्वर का वचन सुनने के लिए इकट्ठी होती हैं।

ये 'उत्सव केन्द्र' बाइबल के अनुसार हैं (प्रेरितों 5:42)। उनके निम्न उद्देश्य हैं:

1. मसीहियों में एकता बनाना (1 कुरिन्थियों 1:10)
2. एक इलाके पर के वातावरण को बदलना (इफिसियों 3:10; मत्ती 18:18-20)
3. अभिषिक्त प्रचारकों और शिक्षकों को (इफिसियों 4:11-12) प्रभु से उनके संदेशों द्वारा एक ही बार में अधिक विश्वासियों तक पहुँचने में समर्थ करना।

4. स्तुति, आराधना और संचारण की विभिन्न नचनात्मक अभिव्यक्तियों के लिए एक साधन प्रदान करना जो एक ग्रह सभा के स्तर पर व्यावहारिक नहीं है (भजन 149:1)
5. समाज में एक बड़ा और अधिक विश्वास्य गवाह प्रदान करना (प्रेरितों 6:7)
6. परियोजनाओं और सेवकाइयों का प्रबंध करना जिनके लिए एक विशेष क्षेत्र में सेवा के लिए वरदान पाए और बुलाए मसीहियों के बीच एक अधिक मोटे तौर पर आधारित सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

अगुआई

नए नियम की कलीसिया प्रेरितों की अगुआई से आरंभ हुई थी। प्रारंभ में वे कलीसिया के सब कार्यों के लिए जिम्मेवार थे - प्रचार से लेकर भोजन वितरण के निरीक्षण तक। जैसे कलीसिया बढ़ती गई, अगुआई के नए स्तर जोड़े गए। नए अगुए मण्डली ने चुने थे और वे प्रतिदिन के भोजन के वितरण के लिए जिम्मेवार थे। इसने बारहों को "प्रार्थना और वचन की सेवा" के लिए मुक्त कर दिया। (प्रेरितों 6:4)।

एक दूसरा अगुआई का पद - ऐल्डर (यूनानीः "presbuteros") अस्तित्व में आया। यरूशलेम कलीसिया के ऐल्डरों ने बरनबास को अन्ताकिया भेजा (प्रेरितों 11:30)। उसकी और पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के दौरान, उनके द्वारा स्थापित की गई ग्रह कलीसियाओं में उन्होंने ऐल्डर नियुक्त किए (प्रेरितों 14:23)। यरूशलेम की सभा में ऐल्डरों ने मिलकर फैसला किया था (प्रेरितों 15)। इफिसुस की कलीसिया में भी ऐल्डर थे (प्रेरितों 20:17)। लूका ने इन ऐल्डरों को "निरीक्षक" या "बिशप" भी कहा है (यूनानी "episkopos"; प्रेरितों 20:26)।

पौलुस इन ऐल्डरों / निरीक्षकों की अपेक्षाओं की सूची देता है (1 तीमु. 3:1-7 और तीतुस 1:5-9)। पतरस अगुओं को एक उत्तरदायित्व देता है (1 पतरस 5:1-6)। ये परिच्छेद ऐल्डरों की भूमिका पर ध्यान केन्द्र करते हैं; परमेश्वर के वचन से निपटना, खरी शिक्षा को जानना और कलीसिया की सेवा और प्रबंध करना। फिलिप्पी में, निरीक्षक का पद "डीकन" के साथ वर्णित है (यूनानीः "diakonos"; फिलि. 1:1)। पौलुस इस पद की आवश्कताओं को 1 तीमु. 3:8-13 में स्पष्ट करता है।

इस परिच्छेद में, "gunaikas" (यूनानी) का उल्लेख है जिसका अर्थ "डीकनों की पत्नियाँ" या "स्त्रियाँ जो डीकन का काम करती हैं" हो सकता है। फीबे को एक "diakonon" (यूनानी), "डीकन / सेवक" कहा गया है। यह इस अगुआई का एक उदाहरण हो सकता है (रोमि. 16:1)। ये परिच्छेद बड़े स्पष्ट रूप से बताते हैं कि स्त्री अगुआई नए नियम की कलीसियाओं में स्वीकृत थी।

प्रेरितों 6 में डीकनों का काम कलीसिया की सेवा करना था। यूनानी शब्द उस व्यक्ति के लिए इस्तेमाल करते थे "जो शहर में विशेष कल्याण के काम की सेवा करने के लिए जिम्मेवार या सेवक था।" यूनानी उपयोग प्रेरितों के उपयोग के समान है। डीकन ऐल्डरों के "सहायक" का काम करते थे। पहली शताब्दी के अन्त तक, बिशप / ऐल्डर और डीकन दो पद थे। पहली शताब्दी के समय तक, कलीसिया के अधिकारी अधिक निश्चित थे। बिशप ऐल्डरों के पद से एक भिन्न पद था। एक शहर में एक बिशप, ऐल्डरों की एक समिति और विभिन्न डीकन थे। एक निश्चित शहर में बिशप कलीसिया का अधिकारी होता था। ऐल्डर उसे विवरण देते थे। डीकन बिशप और ऐल्डर दोनों को विवरण देते थे। जैसे कलीसिया बढ़ती गई, अगुआई का ढाँचा भी बढ़ता गया।

प्रभाव

नए नियम की ग्रह कलीसिया का प्रभाव समाज के हर स्तर पर महसूस होता था। यह महासभा के अगुओं में व्याप्त हो गई थी (यूसुफ अरिमतिया; लूका 23:50) और नीकुदेमुस (यूहन्ना 3:1), और आराधनालय (क्रिसपुस; प्रेरितों 18:8)। यह यहाँ तक पहुँच गया कि मसीहियों के बारे में कहा जाने लगा कि इन्होंने "जगत को उलटा-पुलटा कर दिया है" (प्रेरितों 17:6)।

21वीं सदी की ग्रह कलीसियाएँ

नए नियम की ग्रह कलीसिया कोई ऐसी घटना नहीं थी जो केवल एक ही भौगोलिक स्थान में हुई थी। यह सम्पूर्ण रोमी संसार भर में फैल गया था। इसे एक "छोटा समूह तन्त्र" होने का लाभ था। इस तथ्य ने इसे फैलने और सताव सहन करने का समर्थ दिया था। एक शहर में बहुत सी ग्रह कलीसियाएँ होने से निश्चित हुआ कि कलीसिया उस शहर के विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक समूहों के अनुकूलनीय थी। रोमी साम्राज्य के मुख्य शहर इन मण्डलियों से अंतर्घट्ट थे (अन्ताकिया, सीरिया; कुरिन्थ; इफिसुस; और रोम)। आज के शहरों के सामाजिक ढाँचे नए नियम के समय के समान थे। ग्रह कलीसिया उन क्षेत्रों में खूब बढ़ती है जहाँ सताव (या सताव की धमकी) सबसे कठोर होती है। चीन एक बड़ा उदाहरण है। इन सब की कुँजी वचनबद्धता और सहभागिता है जो सार भाग के स्तर पर होती है – परिवार ग्रह इकाई।

<u>शहर की कलीसिया की परिभाषाएँ:</u>

<u>उत्सव केन्द्र:</u>

एक उत्सव केन्द्र नवागतों के साथ - अवचनबद्ध सदस्य और जो साप्ताहिक सभाओं में असली में आने में असमर्थ होते हैं, ग्रह कलीसियाओं, ग्रह समूहों, प्रचार केन्द्र और प्रार्थना सेल का जन समूह है। यह सभा रविवार को अक्सर एक किराए के हॉल या सभाभवन में, एक सुविधाजनक समय पर होती है।

एक उत्सव केन्द्र में लगभग 5 ग्रह कलीसियाएँ या कम से कम 35 सदस्य होने चाहिए जो निम्न लिखित बातों के लिए इकट्ठे होते हैं:

1. स्तुति और आराधना, वरदानों के उपयोग के साथ
2. गवाहियाँ
3. वचन का प्रचार / शिक्षा
4. रोटी तोड़ना
5. दान और दशमाँश
6. प्रार्थना और लोगों की सेवा

यही अवसर है जहाँ आराधना का दल, ऐल्डर और अगुए उनके जीवन में परमेश्वर के बुलावे के अनुसार कार्य कर सकते हैं। यहीं पर नए लोगों के लिए एक बड़े वातावरण में प्रार्थना की जा सकती है और उनकी सेवा की जा सकती है। यह सभा एक ऐसी जगह बनती है जहाँ नई सेवकाइयाँ पहचानी जाती हैं और कार्य करने के अवसर पाती हैं।

<u>ग्रह कलीसिया / ग्राम कलीसिया:</u>

[सम्बंध, प्रेम, देखभाल, एक दूसरे के लिए प्रार्थना]। एक जगह जहाँ ग्रह कलीसिया के अगुए के साथ, कम से कम 2 परिवार इकट्ठे होते हैं। इस समूह में कम से कम 7 सदस्य होने चाहिए जो 15 वर्ष और ऊपर के हैं। ग्रह कलीसिया का, जब सदस्य 20 से अधिक हो जाते हैं, विभाजन हो जाना चाहिए। ग्रह कलीसिया सप्ताह में एक बार, एक विशेष समय और स्थान पर इकट्ठी होती है और इसमें नए सदस्य जुड़ सकते हैं।

ग्रह कलीसिया में निम्न लिखित कार्य होते हैं:

1. स्तुति और आराधना, और पवित्र आत्मा के वरदानों का कार्य
2. प्रार्थना
3. गवाहियाँ
4. वचन का प्रचार / शिक्षा – क्रमबद्ध पाठ्यक्रम
5. रोटी तोड़ना
6. दान और दशमाँश लेना

हर ग्रह कलीसिया स्थानीय कलीसिया के दर्शन के अन्तर्गत अपने सुसमाचार प्रचार के कार्यक्रम / फालो-अप और दूसरे सम्बंधित कार्य करने में स्वतन्त्र है।

ग्रह कलीसिया की सभा साधारणतः लगभग डेढ़ घंटा तक चलनी चाहिए।

<u>ग्रह मण्डली:</u>

ये वे लोग हैं जो स्थानीय कलीसिया की ओर वचनबद्ध नहीं हों, परन्तु वे खोजी हैं और परमेश्वर के बारे में और अधिक जानने में रुची रखते हैं। यहाँ पर मसीही जीवन और अनुभव की नींव के बारे में आधारीय शिक्षा दी जाती है। इस समूह की स्थानीय कलीसिया के साथ वचनबद्ध होने और अन्त में एक ग्रह कलीसिया बनने की सम्भावना है। ग्रह मण्डली सप्ताह में एक बार इकट्ठी होती है जहाँ लोग परमेश्वर का वचन सुनने के लिए आते हैं। यह एक विशेष समय और स्थान पर होता है।

ग्रह मण्डली के कार्य इस प्रकार होते हैं:

1. स्तुति और आराधना, और पवित्र आत्मा के वरदानों का कार्य
2. प्रार्थना
3. गवाहियाँ
4. वचन का प्रचार / शिक्षा – क्रमबद्ध पाठ्यक्रम

5. ग्रह मण्डली लगभग डेढ़ घंटे तक चलनी चाहिए।

ग्रह मण्डलियों का लक्ष्य परिपक्व होना और ग्रह कलीसियाएँ बनना है।

प्रचार केन्द्रः

यह वो जगह है जहाँ लोग मात्र सुसमाचार सुनने के लिए एकत्र होते हैं। इसी जगह पर सुसमाचार प्रचारकों और कार्यकर्त्ताओं को कार्य करने का पूरा अवसर मिलता है। यहाँ पर वचन के प्रचार के साथ चिन्ह और चमत्कार भी होते हैं और जहाँ अनेक प्रभु की ओर फिरते हैं।

इस सभा में होता हैः

1. स्तुति और आराधना और विशेष गीत और संगीत
2. गवाहियाँ
3. उद्धार लाने के लिए सुसमाचार का प्रचार
4. बीमारों और लोगों की जरूरतों के लिए प्रार्थना
5. फालो-अप के लिए लोगों के नाम और पते सही-सही लिखना

यह सभा साप्ताहित आधार पर कार्य करती है जो आगे चलकर ग्रह मण्डलियों के आरंभ होने का मार्ग बनाती हैं।

प्रार्थना सेलः

यह वचनबद्ध विश्वासियों का एक दल है जो प्रार्थना के लिए एक विशेष समय और स्थान पर इकट्ठा होता है। इस दल में कलीसिया और लोगों की विशेष जरूरतों के लिए प्रार्थना की जाती है। सदस्य साधारणतः वे लोग हैं जिन्हें मध्यस्थता का प्रकटित बोझ है और आत्मिक युद्ध में कुशल हैं। इस दल में कम से कम 2 सदस्य होते हैं परन्तु अधिकतम दस लोग हो सकते हैं।

दान और दशमाँश के लिए लेखा कार्यप्रणालीः

क) ग्रह कलीसिया का अगुआ हर सप्ताह ग्रह कलीसिया की सभा में दान लेता है। दान में "दशमाँश और दान" दोनों शामिल हैं।

ख) सभा के अन्त में, दो सदस्य (ग्रह कलीसिया के अगुए से अलग) पैसे को गिनते हैं और प्रामाणिक फार्म में (1+2 प्रतिलिपियाँ) दर्ज कर लेते हैं और फार्म पर हस्ताक्षर करते हैं। पैसा और फार्म की एक प्रतिलिपि एक लिफाफे में डाल कर उसे बन्द कर दिया जाता है। अतिरिक्त दो प्रतिलिपियाँ लिफाफे के बाहर स्टैपल या क्लिप द्वारा जोड़ी जाती हैं। मोहर बंद लिफाफा फिर ग्रह कलीसिया के अगुए को दे दिया जाता है।

ग) ग्रह कलसिया का अगुआ फार्म की एक प्रतिलिपि अपने संदर्भ के लिए एक फाइल में रखता है। यह फाइल उसके द्वारा संपोषित की जाती है।

घ) ग्रह कलीसिया का अगुआ निश्चित करता है कि लिफाफा रविवार तक एक सुरक्षित जगह में रखा गया है।

च) ग्रह कलीसिया का अगुआ रविवार को उत्सव की सभा के पश्चात् लिफाफे को जिसके बाहर फार्म की एक प्रतिलिपि लगी है अपने क्षेत्रीय अगुए को दे देता है।

फिरः

क) रविवार की उत्सव सभा के समय, क्षेत्रीय अगुआ दान के लिफाफे उसे रिपोर्ट कर रहे ग्रह कलीसिया के अगुओं से एकत्र करता है। (यह एक अच्छा समय है जब वह ग्रह कलीसिया में जो हुआ था का एक तत्काल सार पा सकता है।)

ख) अपने घर पर लाए गुए लिफाफों पर से बाहरी प्रतिलिपियाँ वह निकालता है और उसे अपनी फाइल में फाइल कर लेता है।

ग) फिर वह हर एक लिफाफे को अलग-अलग खोलता है और जाँचता है कि क्या लिफाफे का पैसा अन्दर रखे फर्म में लिखी रकम के साथ मेल खाता है।

घ) वह फार्म पर "जाँचा" लिखता है और हस्ताक्षर करता है, अभिपुष्टि करने के लिए कि फार्म पर सही रकम लिखी गई है।

च) वह फिर उसे रिपोर्ट कर रही ग्रह कलीसियाओं द्वारा जमा की गई कुल रकम को एक नए फार्म में लिखता है। उस पर हस्ताक्षर करता है और फिर रकम, उसके द्वारा भरा गया फार्म और ग्रह कलीसियाओं द्वारा भेजे गए सब फार्मों को एक लिफाफे में डालता है और उसे मोहर बंद कर देता है।

छ) क्षेत्रीय अगुए को जब तक यह लिफाफा उसके पास है उसकी सुरक्षा निश्चित करनी है।

ज)	वह लिफाफे को सोमवार शाम की अगुओं की सभा के समय कलीसिया के लेखापाल को दे देता है जिसके लिए वह उसे स्वीकृति की रसीद देता है।

दान और दशमाँश संग्रहण फार्म का नमूनाः

ग्रह कलीसिया का नामः_

ग्रह कलीसिया के अगुए का नामः_

क्षेत्रीय अगुए या पास्टर का नामः_

तारीखः_

<u>दशमाँश</u>		<u>दान</u>

चेकः_		चेकः_

नोटः		नोटः	
1000	_	1000	_
500	_	500	_
100	_	100	_
50	_	50	_
20	_	20	_
10	_	10	_
सिक्के	_	सिक्के	_
कुलः	_	कुलः	_

दान और दशमाँश का कुल जोड़ः_

रकम शब्दों में:__

ग्रह कलीसिया में संग्रहण को गिनने वालों के हस्ताक्षरः

1)_		2)_

क्षेत्रीय अगुए / पास्टर के हस्ताक्षरः _
(केवल मूल प्रतिलिपि पर)

<u>ग्रह कलीसिया का क्रमः</u>

1. स्तुति और आराधना – 20 मिनट
2. आत्मा के वरदान और प्रतिक्रिया – 5 मिनट
3. गवाहियाँ – 10 मिनट
4. रोटी तोड़ना – 10 मिनट

5. परमेश्वर का वचन – 20 मिनट
6. दान और दशमाँश – 5 मिनट
7. प्रार्थना और मध्यस्थता की प्रार्थना – 10 मिनट
8. सूचनाएँ और संगति – 10 मिनट

कुल समयः - 90 मिनट

<u>ग्रह कलीसिया पंजीकरण रिकार्ड</u>

प्रदेश : दक्षिण	क्षेत्र :	मण्डल :	तिथि :
ग्रह कलीसिया के अगुए का ब्योरा	ग्रह कलीसिया का ब्योरा	“दर्शन” ब्योरा	
नामः पताः फोनः	आरंभ तिथि : सभा का दिन : सभा का समय : भाषा : स्थान : फोन :	ग्रह कलीसिया के सहायक अगुए का नाम : गुणा होने की तिथि :	

नियमित सदस्यों के सम्पूर्ण नाम	पेशा	लिंग पु / स्त्री	वैवाहिक कुँ / वि *1	जन्म तिथि	नया जन्म का वर्ष	जुड़ने का महिना	उपस्थिति नि / अनि *2	पानी का बपतिस्मा हाँ / नहीं
1.								
2.								
3.								
4.								
5.								
6.								
7.								
8.								
9.								
10.								
11.								
12.								
13.								
14.								

नोटः - *1ः कुँवारा के लिए “कुँ” या विवाहित के लिए “वि” लिखो
- *2ः नियमित उपस्थिति (75% से अधिक) के लिए “नि” या अनियमित उपस्थिति के लिए “अनि” लिखो

<u>ग्रह कलीसिया की मासिक रिपोर्ट</u>

प्रदेशः	क्षेत्रः	मण्डलः	रिपोर्ट का महिनाः
ग्रह कलीसिया के अगुए का नामः			
पंजीकरण रिकार्ड में सदस्यों की संख्याः			

महिने की ग्रह कलीसिया की सभाओं का ब्योरा	सप्ताह 1	सप्ताह 2	सप्ताह 3	सप्ताह 4	सप्ताह 5
	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि	तिथि
स्तुति और आराधना					
गवाहियाँ					
रोटी तोड़ना (हाँ / नहीं)					
दान और दशमाँश (हाँ / नहीं)					
समूह प्रार्थना (हाँ / नहीं)					
पवित्र आत्मा का सेवा-कार्य (हाँ / नहीं)					
वचन का सेवा-कार्य (हाँ / नहीं)					
सिखाया गया विषय					
अनुग्रह में बढ़ना पाठ क्रम.					
टिप्पणी					
नियमित सदस्यों की संख्या					
पहली बार आए अतिथिओं की संख्या					
फालो-अप भेंटों की संख्या					

नोटः **कृपया अपने ग्रह कलीसिया के सदस्यों के लिए रोजाना नाम लेकर प्रार्थना करो** !

ग्रह कलीसियाएँ और उन्हें कैसे स्थापित करें

ग्रह कलीसियाओं ने उनके प्रारम्भ से मसीही समाज के केन्द्र के रूप में कार्य किया है। कलीसिया के प्रभु ने इसे ऐसा ही चाहा था; यदि वह इसे दूसरी दृष्टि से चाहता तो वह इसकी जीवन-शैली को अलग ढंग से बना सकता था। उसकी संस्कृति में कई संस्थाएँ थीं जो सदस्यों को हालों में या विशेष रूप से बनाए रंगभवनों में एकत्र किया करते थे। संघों के अपने भवन होते थे। आराधनालय पीढ़ियों से देहातों में छाये हुए थे, जो सदस्यों को अव्यक्तिक विशाल समूहों में इकट्ठे करते थे। गैरयहूदी मंदिर भी आम बात थे। फिर भी, यीशु ने कलीसिया को घरों में एकत्र होने के लिए बनाया। उसके अपने चेले भी उसके साथ एक घर में एकत्र हुए थे जब उसने उनके लिए अन्तिम भोज परोसा था।

यीशु की ग्रह सेवकाई

यह महत्त्व की बात है कि अपनी सेवकाई में यीशु घरों में से कार्य करता था, न कि औपचारिक इमारतों में से। वह अक्सर अपने चेलों को घरों में सिखाया करता था (मरकुस 2:1; 7:14-27; 9:33; 10:2-12; मत्ती 13:36)। हम अक्सर उसे दूसरों के घरों में पाते हैं, जैसे कि पतरस, मत्ती, एक शासक, शमौन कोढ़ी, शमौन और अन्द्रियास, लेवी, एक फरीसी, याईर, जक्कई और मार्था के घर में। वह अपनी अटारी को "पाहुनशाला" कहता है (मरकुस 14:14)।

जबकि, "मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की भी जगह नहीं थी", फिर भी वह मरकुस 10:29-30 में सिखाता है कि, "ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या बाल-बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो, और अब इस समय सौ गुणा न पाए (घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और बाल-बच्चों और खेतों को)।" उसके यात्राशील सेवकों ने इसे अक्षरक्षः ले लिया था। जहाँ कहीं भी वे गए, परिवारों के साथ घरों में रहे। असल में, एक घर में रहना लोगों को व्यक्तिगत विश्वास में लाने की मुख्य नीति थी। लूका 10 में, यीशु ने सत्तर चेलों को दो-दो करके घरों में जाने के लिए भेजा, कि उनमें रहने वालों पर अपना कल्याण डालें। जब उन्हें कोई कल्याण के योग्य मिलता तो वे उसके घर में रहते, और जो कुछ उनके सामने परोसा जाता उसे खाते-पीते। इस प्रकार, एक घराना मसीही का उद्धार पाता - और एक दूसरी ग्रह कलीसिया बन जाती।

पतरस का दर्शन याफा में शमौन के घर में आया था। यूहन्ना की माता मरियम के घर में मसीही प्रार्थना करने के लिए एकत्र हुए थे। जैसे हनन्याह ने शाऊल के लिए प्रार्थना की, यहूदा के घर में उद्धार आया। जहाँ कहीं भी वह सेवा करने गया, हम उसे घरों में ठहरते हुए पाते हैं जिसमें यासोन का घर भी शामिल है – जिसे मेजबान के नाते जब उसे कैद किया गया था तो उसे अपनी जमानत करनी पड़ी थी। वह लुदिया के घर में रहा जब उसके घराने ने उद्धार पाया और दारोगा के घर में भोजन किया जब उसके सम्पूर्ण घराने ने परमेश्वर पर विश्वास किया था। और भी कई लोग थे जिन्होंने प्रेरित की मेजबानी की थी, जिसमें तितुस यूस्तुस, क्रिसपुस, फिलिप्पुस, गयुस, अक्विला और प्रिस्किल्ला शामिल हैं। प्रारंभिक कलीसिया का घरों में आकार पाने का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारण है। इसी वातावरण में नैतिक-मूल्यों को बाँटा जाता है। एक घराने में साथ रहकर नैतिक मूल्य प्रणालियाँ पक्की की जाती हैं। जब जवानों और बूढ़ों, बलवानों और कमजोरों, बुद्धिमानों और मूर्खों में जीवन बाँटा जाता है तब भीतर कुछ उत्तेजना होने लगती है। ग्रह मण्डलियों में, सब ने भाग लिया और जैसे मसीह उनमें रहता था सब दूसरों के नैतिक मूल्यों द्वारा प्रभावित हुए।

ग्रह मण्डलियों का प्रभाव

ग्रह मण्डलियों में एकत्र हो रहे प्रारंभिक मसीहियों की जीवन-शैली इतनी प्रभावशाली थी कि रोजाना लोग उद्धार पाते थे। ग्रह मण्डलियों में मसीहियों का सम्पूर्ण रूप से शामिल होने ने बाहरवालों को अभिभूत कर दिया था: "परन्तु यदि सब भविष्यवाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या बाहरवाला मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे; और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच है" (1 कुरिन्थियों 14:24-25)। इसे "देह का जीवन सुसमाचारप्रचार" कह सकते हैं। यीशु के जीवन की साधारण गवाही, जैसे यह सामर्थ्य और वास्तविकता में उसकी देह में से उमड़ती थी, सबसे कठोर संदेहवादी को भी उसे अपना प्रभु स्वीकार करने पर मजबूर कर देता था।

उस प्रारंभिक कलीसिया में कोई भी विशेषज्ञ नहीं थे। प्रेरितों की शिक्षा के अलग, अगुआई पर कोई बड़ी सीमा तक जोर नहीं दिया जाता था। जरूरत पड़ने पर जो सबसे करीब होते थे ब्योरों को सम्भाल लेते थे।

हमारा प्रभु जानता है कि आत्मिक वृद्धि में दो कारक हैं। एक उसके सामर्थ्य को पाना है; दूसरा इसका माध्यम बनना है। परिपक्वता तब ही आती है जब दोनों को अनुभव और क्रियाशील किया जाता है। ग्रह कलीसियाओं में सबसे महान पुरुष और स्त्रियाँ वे हुए हैं जिन्होंने सेवा की, न कि जिन्होंने अगुआई की। हर घराने का एक "पिता" होता था, जिसका सब आदर और सम्मान करते थे। उसी समय, एक अच्छा पिता घराने के सब सदस्यों के विकास को प्रोत्साहन देगा। वह इसका तानाशाह नहीं होगा। केवल नए नियम के युग के अन्त में ही हम एक ग्रह मण्डली को पाते हैं जिसका एक संकीर्ण तानाशाह था, और उसे यूहन्ना से अच्छी तरह फटकार मिलती है (3 यूहन्ना 9-11)। एक व्यक्ति का दूसरों पर छा जाना वृद्धि की सम्भावना को सीमित करता है। इसकी प्रारंभिक कलीसिया में अनुमति नहीं थी। इसे पूर्ण रूप से समझना महत्त्वपूर्ण है कि विश्व भर में पंथ उनके सदस्यों को नियन्त्रित करते हैं, जबकि सच्ची मसीह की देह हर सदस्य को जीवन की सम्पूर्णता में बढ़ता हुआ देखना चाहती है।

ग्रह मण्डलियाँ एक दूसरे से स्वतन्त्र नहीं थीं। वे उनके अस्तित्व के शुरू से ही मिलजुलकर कार्य करते थे। शहर भर का यह संघ दिखाता है कि "ग्रह कलीसियाएँ" मिलकर एक "स्थानीय कलीसिया" बनती थीं। पौलुस दो बार "परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थ में है" का जिक्र करता है (1 कुरिन्थियों 1:2 और 2 कुरिन्थियों 1:1), जो संकेत देता है कि वहाँ के विश्वासियों में एक सामान्य सम्बंध था। दोबारा, वह "थिस्सलुनीकियों की कलीसिया" की चर्चा करता है (1 थिस्सलुनीकियों 1:1 और 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। वह रोमियों 16:23 में "सम्पूर्ण कलीसिया" की भी चर्चा करता है। 1 कुरिन्थियों 11 में, प्रभु भोज के लिए शहर भर की ग्रह मण्डलियों के संग्रहण ने प्रेमहीनता का बुरा उदाहरण पैदा किया था। प्रेरितों 20:6-12 में, पौलुस के त्रोआस के सफर के दौरान सारी ग्रह मण्डलियाँ रोटी तोड़ने और प्रेरित की शिक्षा पाने के लिए एकत्र हुए थीं।

कलीसिया के सेवक

जैसे आँदोलन विकसित होता गया, सन्तों को उनकी सेवकाई के कार्य के लिए सज्जित करनेवाले ग्रह मण्डलियों में से निकलते गए। इफिसियों 4:11-12 विशेष रूप से बताता है कि मसीह ने स्वयं "कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया, जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए...।" कहीं भी ऐसा कुछ भी नहीं कहा गया है कि पौलुस या किसी और ने इन लोगों को नियुक्त किया था। यह खामोशी महत्त्व की है। ये लोग उनके पदों के योग्य उनके सज्जित करनेवाले सेवकों को परमेश्वर के अभिषेक को दिखाकर बने थे।

एक "सज्जित करनेवाले" के लिए पहला काम अपने जीवन को उस जीवन-शैली के अनुसार बनाना है जो वह देह के सदस्यों में अंतरित करना चाहता है। इसी लिए बिशप / ऐल्डर और डीकनों के बारे में पौलुस की टिप्पणियाँ उनके चरित्र के बारे में थीं, न कि उनके कार्यों के बारे में थीं। सम्भावना यही है कि "डीकन" की भूमिका खुद ग्रह मण्डली उनके मध्य में से किसी के लिए जो सेवक के जीवन को अपना प्रतिरूप बनाता था, निर्धारित करती थी। इस पुरुष (या स्त्री, जैसे कि किंख्रिया की फीबे के मामले में) के काम का सारे पवित्रशास्त्र में कोई वर्णन नहीं है। जब हम सदियों से चल रही पारंपरिक पदानुक्रम को फेंक देते हैं तो काम के वर्णन की कमी का कारण स्पष्ट हो जाता है। जब ग्रह मण्डलियाँ एकत्र होती थीं तो वे प्रभु भोज में भाग लेते थे। "डीकन" का अक्षरक्षः अर्थ है "जो खाना परोसता है"। क्या यीशु ने कहा नहीं, "जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने?" क्या उसने खुद अन्तिम भोज के समय अपने चेलों के पाँव नहीं धोए थे? स्पष्ट है, ग्रह मण्डली में के भक्तिपूर्ण पुरुष या स्त्री को यह अधिकार दिया गया था, और आदरपूर्ण शेष की प्रभु भोज, सम्भवतः सारे भोजन द्वारा सेवा करने की अनुमति प्राप्त थी।

जैसे हम आज के विश्व भर के सेल समूह कलीसिया के ढाँचों के जीवन को जाँचते हैं तो नए नियम में जिक्र किए पदों के कार्यों पर कुछ रोशनी डाल सकते हैं। इन सेल समूह कलीसियाओं का उनके उत्सवों के लिए सामान्य कलीसिया का ढाँचा है। हर सेल का एक सेवक-अगुआ है। हर पाँच सेल समूहों के लिए, सलाह देने और सेवकाइयों का मार्गदर्शन करने के लिए एक पास्तरीय व्यक्ति (अकसर "क्षेत्रीय सेवक" कहा जाता है) होता है। हर 25 सेलसमूहों और पाँच क्षेत्रीय सेवकों के लिए, दो से तीन सौ के इस झुँड की रखवाली करने के लिए एक व्यक्ति होना चाहिए (अक्सर "क्षेत्रीय पास्टर" कहा जाता है)। जो लोग सज्जित करनेवालों के नाम से जाने जाते हैं और जो लोग शहर भर की स्थानीय कलसिया के साथ कार्य करते हैं, और सब सेल समूहों को मार्गदर्शन, शिक्षा और सज्जित करना प्रदान करते हैं, "सेवकाई दल" कहलाते हैं।

जबकि यह अनुमान मात्र ही है, हम फिर भी उसके समय में कलीसियाओं के बारे में विश्व व्यापी नमूने के दृष्टिकोण से पौलुस द्वारा उल्लेख किए पदों पर विचार कर सकते हैं। हर क्षेत्र में, जब ग्रह मण्डलियाँ स्थानीय कलीसियाएँ बनाने के लिए एकत्र हुई तो कलीसिया प्रारंभ हुई। इस दृष्टिकोण से, पदों को किस प्रकार रचा जा सकता है? यदि वे जिस प्रकार आज सेल समूह की अगुआई क्रमबद्ध की जाती है के कुछ भी करीब थे तो यह उदाहरण एक कलीसिया के जीवन के कार्य को समझाएगा जिसमें कोई पदानुक्रम नहीं था।

डीकन ग्रह मण्डली की सेवा करता है। क्योंकि एक ऐल्डर (जिसे बिशप भी कहते हैं) को ग्रह मण्डलियों को विकसित करने और गुणा करने में अनुभव की आवश्यकता होती है, इसलिए लगभग दो वर्ष के बाद की वह कई ग्रह मण्डलियों की जिम्मेवारी लेने के योग्य हो सकेगा। इसी लिए पौलुस ठीक ही तीमुथियुस को ऐल्डर नियुक्त करने के निर्देश देता है जब वह कुछ वर्षों की अनुपस्थिति के बाद कलीसियाओं में लौट रहा है। जिन लोगों को ऐल्डर नियुक्त करना है इतने समय के अन्तराल के बाद सरलता से पहचाने जाएँगे। ध्यान दें कि इस अन्तरिम में कोई "वरिष्ठ पास्टर" (यदि आज के शब्द को इस्तेमाल करें तो) या "ऐल्डर" था भी नहीं। जब तक ग्रह मण्डलियाँ प्रफलन होने नहीं लगीं, तब तक इन सेवकों की कोई आवश्यकता नहीं थी। यदि ऐसा पद विद्यमान होता तो तीमुथियुस को स्थानीय कलीसिया के भीतरी कार्यों का संचालन करने की स्वतन्त्रता नहीं होती। प्रेरितों की पुस्तक में कलीसिया की स्थापना करनेवाले कलीसियाओं को आरंभ करने के बाद उनमें दखल देने में सावधान थे।
बाइबल संबंधी और इतर-बाइबल संबंधी दोनों प्रमाण हैं कि कुछ प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार प्रचारक, और शिक्षक भ्रमणशील सेवक थे जो स्थानीय कलीसियाओं में सफर करते रहते थे। ये शीर्षक कलीसिया के अन्दर पदों के बारे में है। उन्होंने कलीसियाएं स्थापित कीं, शिक्षा दी और सदस्यों को सज्जित किया, ईश्वरीय प्रकाशन संचारित किया, और पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते थे। वे ग्रह कलीसियाओं और उनके एकत्रित स्थानीय कलीसिया के ढाँचे के बीच कड़ी थे और उन सब शहरों में भी जहाँ ये कलीसियाएँ विद्यमान थीं।

कलीसिया के अस्तित्व का उद्देश्य

"कलीसिया के अस्तित्व का उद्देश्य क्या है?"
हम पाएँगे कि कलीसिया के अस्तित्व का कारण मूल रूप से चारगुणा है। जब परमेश्वर ने सृष्टि और उद्धार की योजना बनाई तो उसके मन में एक अनन्त उद्देश्य था। यह उद्देश्य मसीह में व्यक्त हुआ था और यह एक 'अनन्त उद्देश्य' है। यह महान उद्देश्य कलीसिया है। मसीह में परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य और उसकी कलीसिया को कुछ भी व्यर्थ नहीं कर पाएगा (इफिसियों 3)। उनके लिए जो उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाए गए हैं, सबकुछ भलाई ही उत्पन्न करता है (रोमियों 8:26-28)।

आओ हम नए नियम की कलीसिया के अस्तित्व के चारगुणा उद्देश्य पर विचार करें।

क. <u>प्रभु की सेवा</u>

कलीसिया का मुख्य उद्देश्य परमेश्वर की महिमा और उपासना करना है। सबकुछ परमेश्वर द्वारा और उसके लिए और उसकी इच्छा के लिए सृजा गया था (प्रकाशित. 4:11)
कलीसिया का उद्धार एक आराधना करनेवाले समाज के रूप में किया गया है (भजन 29:1-2)। परमेश्वर की उपासना करने, और फिर उसकी सेवा करने के लिए उद्धार किया गया है (मत्ती 4:10)। यह पहले ऊपर की ओर है, तब बाहर की ओर है; पहले परमेश्वर है, तब मनुष्य है। आराधना हमेशा सेवा से पहले आती है! इन वचनों का अध्ययन करो: व्यवस्थाविवरण 4:19; 5:9; 8:19; 11:16; 12:32; 17:3; 26:20; 30:17; यहोशू 24:14-24।
मनुष्य को आराधना करने के लिए बनाया गया था। पापी परमेश्वर की आराधना नहीं कर सकते हैं। केवल उद्धार पाए हुए ही कर सकते हैं। आराधना आत्मा और सच्चाई से होनी चाहिए। यूहन्ना 4:20-24 आराधना के विषय में नए नियम का एक मुख्य परिच्छेद है और "आराधना" शब्द यहाँ दस बार पाया जाता है।
यूहन्ना को "उपासना करनेवालों को" नापने के लिए कहा गया था (प्रकाशितवाक्य 11:1-2)। उद्धार पाए हुओं को परमेश्वर की आराधना पवित्र आत्मा की शक्ति और उसके वचन की सच्चाई से करनी होती है (यूहन्ना 17:17)।
कैटेकिज़्म "मनुष्य का मुख्य लक्ष्य या उद्देश्य क्या है?" इस प्रश्न का उत्तर देता है: "मनुष्य का मुख्य लक्ष्य सदा परमेश्वर की महिमा करना और उसका आनन्द लेना है।"

<u>आओ हम उद्धार पाए हुए समाज में आराधना के विषय से संबंधित कुछ मुख्य नुक्तों को देखते हैं।</u>

1. आराधना किसकी की जाए ?

मनुष्य स्वयं नहीं जान सकता है कि परमेश्वर की आराधना कैसे करनी है और इसी लिए विभिन्न आकार, पद्धतियाँ, विधियाँ, वगैरा बना लेता है और फिर प्रार्थना करता है कि परमेश्वर उसके कार्यक्रम को आशीष दे। इसमें बड़ा खतरा रूढ़िवाद, निर्जीवता, नीरसता, और आत्मा के जीवन की कमी हो जाता है (यिर्मियाह 3:16-17; 7:8-16; भजन 63:1-4)।
पुराने या नए नियमों में कोई विशेष आराधना का आकार या सभा का क्रम नहीं दिया गया है। फिर भी, नीचे दिए गए संघटक पुराने और नए नियमों भर में बिखरे हुए हैं। ये चीजें बताती हैं कि जब उद्धार पाया समाज आराधना के लिए एकत्र होता है तब एक, या अधिक, कुछ या सब इस्तेमाल किए जा सकते हैं।
कुँजी प्राप्यता, नम्यता और समंजनीयता हैं। "हर बात का एक अवसर होता है..." (सभोपदेशक 3:1-11)।
मनुष्य अक्सर परम्पराओं के अनुसार आराधना करते हैं और परमेश्वर के वचन को व्यर्थ करते हैं (मरकुस 7:1-10)। <u>परमेश्वर आत्मा है जिसकी आराधना होनी चाहिए!</u> (यूहन्ना 4:20-24)। किसी प्रतिमाओं, स्मृतिचिन्हों, याजकों या सेवकों के द्वारा, या हमारे अपने विचारों का परमेश्वर नहीं, बल्कि बाइबल का परमेश्वर जिसने स्वयं को आत्मा के रूप में प्रकट किया है! और कोई भी आराधना वास्तव में मूर्ति-पूजा है!

2. आराधना कैसे की जाए ?

यूहन्ना 4:20-24 हमें बताता है कि हमें "आत्मा और सच्चाई से" आराधना करनी है। पिता परमेश्वर इसी की खोज में है! वह वास्तव में पृथ्वी पर कलीसिया में कितना इसे पाता है? आराधना विचार, भावना और कार्य में सम्मान,

आदर और श्रद्धा देना है। इब्रानी शब्द का अर्थ है "दण्डवत् करना, आदर देना, भय मानना, कर्तव्यनिष्ठा से सेवा करना"।

क. आत्मा से आराधना करने का अर्थ है कि पवित्र आत्मा हमारी उद्धार पाई आत्मा को परमेश्वर की जो आत्मा है आराधना करने के लिए कार्य करता, शक्ति देता और उत्तेजित करता है। सच्ची आराधना पवित्र आत्मा से उत्तेजना पाकर मनुष्य की आत्मा में आरंभ होती है (यूहन्ना 3:1-5 और यूहन्ना 4:20-24)। एक व्यक्ति जो आत्मा से नहीं जन्मा है, किस प्रकार "परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई से कर सकता है जो आत्मा है ?" इसे करने का कोई भी मुमकिन तरीका नहीं है!

ख. सच्चाई से आराधना करने का अर्थ है कि जिस प्रकार परमेश्वर ने उसके वचन में बताया है उस प्रकार उसकी आराधना करना। उसका वचन सत्य है और इसलिए सच्चाई से आराधना करने का अर्थ है परमेश्वर के वचन के अनुसार आराधना करना।

परमेश्वर का वचन आराधना की अभिव्यक्ति को कितनी विविधता देता है (भजन 149-150)। गीत गाना और परमेश्वर की स्तुति करना, हाथ उठाना, घुटने टेकना, दणडवत् पड़ना, और ताली बजाना, सर उठाना, शान्त रहना, आराधना करना, वगैरा सच्चाई से आराधना करने की विभिन्न अभिव्यक्तियों में शामिल हैं। संगीत वाद्य भी शामिल हैं (इब्रानियों 4:15; 12:1; 13:15; 1 तीमुथियुस 2:8; भजन 3:3; 19:14; 22:22,25; 28:2; 34:1; 42:5,9; 49:1-3; 63:4-5; 95:6; 121:1; 134:2; 141:1; 143:6; विलापगीत 3:40-41; यशायाह 45:23; लूका 11:21; 22:41; 2450; यूहन्ना 11:41; 17:1)

3. पुराने नियम में आराधना की पद्धति

पुराने नियम में हम कौन (व्यक्ति), और कैसे और कब (समय), और कहाँ (जगह) और निर्दिष्ट किए हुए आराधना के संघटक पाते हैं जो नए नियम की कलीसिया में सिद्धान्ततः पालन किए जाते हैं।

इस्राएल "जंगल में कलीसिया" था (प्रेरितों 7:38)। वे उद्धार पाया समाज थे और नए नियम की कलीसिया का एक प्रतीक बने (1 कुरिन्थियों 10:6, 11)।

क) साप्ताहिक सब्त का दिन विश्राम और आराधना के लिए अलग रखा गया था (भजन 41:4; 81:1-3; भजन 92-शीर्षक; निर्गमन 31:12-17; 20:8-11)।

ख) प्रभु के तम्बू के पास स्वेच्छा से लोग एकत्र हुआ करते थे (1 शमूएल 1-2; भजन 119:164)।

ग) वर्ष के पर्वो के समय (व्यवस्थाविवरण 16; लैव्यव्यवस्था 23)। वे तीन थे:

   1) फसह – फसह के मेमने और मिस्र की गुलामी से छुटकारे का उत्सव (निर्गमन 12)

   2) पिन्तेकुस्त – व्यवस्था के देने और अन्न की उपज का उत्सव (लैव्यवस्था 2)

   3) तम्बू – पहली फसल, बारिश, प्रायश्चित्त, झोपड़ियों, वगैरा का उत्सव (लैव्यवस्था 16,23; भजन 81:3)

घ) जिस स्थान पर सब एकत्र होते थे वह स्थान था जहाँ उसका नाम लिखा गया था, जैसे कि मूसा का तम्बू, दाऊद का तम्बू, सुलेमान का मन्दिर। वेदी और सन्दूक के लोग (व्यवस्थाविवरण 12:16 और मत्ती 18:20)। पितृक वेदियाँ भी प्रतीकात्मक थीं।

4. नए नियम में आराधना की पद्धति

नए नियम का समुदाय पुराने नियम की कलीसिया में प्रतीक हुए मूल सिद्धान्तों का पालन करता है।

क) सप्ताह के पहले दिन एकत्र होना (प्रेरितों 20:8; 1 कुरिन्थियों 16:1)। मसीह का पुनरुत्थान सप्ताह के पहले दिन हुआ था (मत्ती 28:1)। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा का आना सप्ताह के पहले दिन हुआ था (प्रेरितों 2:1-4)। चेलों ने सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ी (यूहन्ना 20 और प्रेरितों 20:28)। सप्ताह के पहले दिन दान इकट्ठा किया जाता था (1 कुरिन्थियों 16:1)।

ख) विश्वासी नई वाचा के याजकों के रूप में अलग-अलग प्रभु को खोजते हैं।

ग) वर्ष के उत्सवों के अवसर, जैसे कि, कैम्प सभाएँ, वर्ष के विशेष समय।

घ) व्यक्ति और स्थान – मसीह यीशु (यूहन्ना 1:14-18; 2:19-21), और फिर स्थानीय कलीसिया (मत्ती 18:20; इब्रानियों 10:25; यूहन्ना 4:20-24; यहेजकेल 11:16; 1 पतरस 2:5-9; प्रकाशितवाक्य 1:6; 5:9-10)।

5. एक आराधना सभा के पुराने और नए नियम के संघटक

याजकीय समुदाय की एक आराधना सभा के मूल संघटक इन चीजों में पाए जाते हैं। ये चीजें सच्चाई से आराधना करने के 'क्या' और 'कैसे' हैं।

क) संगीत की सेवकाई

कुलुस्सियों 3:16; इफिसियों 5:17-18। दाऊद के तम्बू की पद्धति। भजन, कीर्तन, आत्मिक गीत। सामूहिक गीतों के लिए अच्छे लय और शब्दों वाले गीत। भजन 100; 150। फिर भी संगीत वाद्य विश्वासियों, व्यक्तिगत और सामूहिक, के वाद्यों का स्थान कभी न लें। प्रभु के लिए, सन्त के लिए और पापी के लिए भी संगीत। गीत के अगुवे की इस क्षेत्र में सेवकाई होनी आवश्यक है।

ख) प्रार्थनाएँ, धन्यवाद, विनतियाँ

1 तीमुथियुस 2:1। राजाओं, शासकों, अधिकारियों के लिए प्रार्थनाएँ। उसका घर सब देशों के लिए प्रार्थना का घर होगा। आराधना, धन्यवाद, निवेदन और स्तुति (यशायाह 56:7; मत्ती 21:13)।

ग) दान और दशमाँश

मलाकि 3:6-10। आराधना का एक कार्य। इसका महत्त्व नहीं घटाना है या इसके लिए क्षमा याचना नहीं करनी है।

घ) वचन की सेवकाई

भजन 40:9; 138:1-2; व्यवस्थाविवरण 6:3-15; 11:13-21; मलाकि 2:1-7। याजक और लेवी वचन सिखाते हैं। वचन सब चीजों से श्रेष्ठ है। यह सभा की नाभि है। जो इससे पहले होता है और जो बाद में आता है उसका इससे वैसा ही सम्बंध है जैसे पहिये के अर का नाभि से सम्बंध है। इस नाभि के बिना सभा व्यर्थ हो जाएगी; वचन जो आत्मा की तलवार है का प्रचार, सिखाना और उपदेश देना। प्रेरितों की पुस्तक में वचन की सेवकाई पर ध्यान दो।

च) देह के सदस्यों की सेवकाई

1 कुरिन्थियों 12-13-14। गवाही, अनुभव बाँटना, चीजें, उपदेश, वचन पढ़ना, वगैरा। (1 कुरिन्थियों 14:26)।

छ) वरदान

आत्मा के वरदान प्रकट होने चाहिए (1 कुरिन्थियों 12-13-14)। सहभागिता।

ज) धार्मिक संस्कार

पानी का बपतिस्मा, हाथ रखना, प्रभु-भोज, वगैरा।

झ) सूचनाएँ – पत्रिका या सूचनाओं के लिए एक संक्षेप समय।

ट) आशीर्वाद

आराधना इसके अन्तिम विश्लेषण में इस प्रकार आँकी जाएगी कि क्या यह : (1) प्रभु की महिमा करती है, और (2) आराधक को संसार की सेवा करने के लिए सबसे उत्तम विश्वास में उन्नत करती है। कलीसिया को पहले प्रभु की सेवा करने को बुलाया गया है। बाकी की सारी सेवकाइयाँ उतनी ही प्रभावशाली होंगी जितनी यह है (भजन 50:23; यूहन्ना 15:8; तीतुस 2:10; 1 पतरस 2:9; 4:11; रोमियों 15:6,9; इफिसियों 1:5-6,12,14,18; 3:21; 2 थिस्सलुनीकियों 1:12)। संगीत वाद्यों और गीतकारों से सम्बंधित पढ़ो; 1 इतिहास 16:5; 23:30; 2 इतिहास 5:12-14; 1 इतिहास 16:4-6; 25:1।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उद्धार पाए हुओं को परमेश्वर और उसके मेमने की आराधना करते हुए दिखाती है (प्रकाशित. 4:4-11; 5:1-14)। जैसे हम अपने शरीरों को जीवित बलिदान करके चढ़ाते हैं तो हम याजकीय सेवकाई में कार्य कर सकते हैं (रोमियों 12:1-2)।

6. अगुआई के लिए उपयोगी मार्गदर्शक

क) सभा एक संयुक्त और सुसंगत सम्पूर्ण होनी चाहिए। परमेश्वर का हर सभा के लिए एक उद्देश्य होता है। अँश से सम्पूर्ण, सम्पूर्ण से अँश की ओर चलो। पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन खोजो। लोगों को परमेश्वर से मिलने के लिए ले चलना है (निर्गमन 19:17; 1 कुरिन्थियों 11:17)।

ख) सभा एक नदी के समान, न कि एक बाढ़, न एक झटकेदार नदी के समान उमड़नी चाहिए। नदी अपना मार्ग खुद बनाती है। पवित्र आत्मा एक नदी है (यूहन्ना 7:37-39)।

ग) वचन की सेवकाई सभा की नाभि होती है। सबकुछ वचन की सेवकाई की ओर और से उमड़ता है।

घ) सन्तों की आत्मिक उन्नति सबकी कुँजी है (1 कुरिन्थियों 14)। क्या यह उन्नति करती है ? क्या यह बनाती है या नष्ट करती है ?

च) आत्मा द्वारा परमेश्वर और मसीह की महिमा। आत्मा पिता और पुत्र की ओर संकेत करता है (यूहन्ना 14-15-16)।

छ) आत्मा की विविधता। रूढ़िबद्ध धारणा, ढंग, कर्मकाण्डी, रूखापन और औपचारिक नहीं। मसीह की जीवित उपस्थिति होनी चाहिए। आत्मिक और बाइबल-संबंधी चरम के बिना केवल भावात्मक चरम नहीं। नई दाखरस पुरानी मशकों में नहीं, पुराने कपड़े पर नए कपड़े का पैवन्द नहीं।
प्रकाशितवाक्य आराधना की पुस्तक है जो स्वर्ग और पृथ्वी को जोड़ती है (इब्रानियों 12:22-24)। पवित्र आत्मा की रचनात्मकता, और उसकी विविधता को गुंजाइश दो।

ग) सब विश्वासियों के याजकपन के बजाय अगुआई को लोगों के लिए याजकीय सेवकाई नहीं करने देने से सावधान रहें। जो व्यक्ति सभा की अगुआई करते हैं वे सबसे अधिक आत्मिक, और न कि शारीरिक हों!

घ) "मैं" केन्द्रित सभाओं से सावधान रहें। अधिक आत्मपरकता, और विषयनिष्ठता नहीं से सावधान रहें। दोनों में संतुलन की आवश्यकता है। आत्मा को सभा के हर भाग को सजीव करने की आवश्यकता है।

ट) सेवकाई की किस्में हो सकती हैं:
1) स्तुति और आराधना सभाएँ
2) प्रार्थना और मध्यस्थता सभाएँ
3) प्रभु-भोज सभाएँ
4) पैर-धोना सभाएँ
5) वचन की सेवकाई सभाएँ
6) ऐल्डरों की सभाएँ
7) देह के सदस्य सेवकाई सभाएँ
8) आराधना का दल और संगीतज्ञों की सभाएँ

ख. सन्तों की सेवा

कलीसिया के अस्तित्व का दूसरा उद्देश्य अपनी उन्नति करना है, यह होता है जब सन्त एक दूसरे की सेवा करते हैं। यह देह की सेवकाई है जो उन्नति करती और प्रेम में स्वयं बढ़ती जाती है (इफिसियों 4:9-16; 1 कुरिन्थियों 12)।
इस विषय पर काफी कुछ कहा गया है। हम सेवकाई के इस क्षेत्र से संबंधित कुछ मुख्य नुक्तों पर ध्यान देंगे।

1. सन्तों को अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते जाना है (यहूदा 1-4)। परमेश्वर ने इस उद्देश्य के लिए विभिन्न सेवक दिए हैं (इफिसियों 4:9-16; कुलुस्सियों 2:7; 1 कुरिन्थियों 3:10-15; 14:26; यहूदा 20)।
पँचगुणा सेवकों को मसीह की देह के सदस्यों को वचन के ईश्वरीय सिद्धान्त सिखाने हैं (मत्ती 28:18-20)
2. सन्तों को चरित्र की पवित्रता और मसीह के स्वरूप की अनुरूपता में उन्नति करनी है। यह प्रभु की इच्छा है कि कलीसिया पवित्र, बिना कलंक, निर्दोष, या बिना झुर्री या कोई और ऐसी वस्तु के हो। वह एक तेजस्वी कलीसिया को अपनी दुल्हन के रूप में अपने पास खड़ी करना चाहता है (इफिसियों 5:23-33; यूहन्ना 15:2; इब्रानियों 12:10; 1 यूहन्ना 3:2; प्रकाशित. 19:7; 1 कुरिन्थियों 11:28-32; 2 कुरिन्थियों 7:1)।
3. सन्तों को मसीह की देह के क्रियाशील सदस्यों के रूप में उनकी सेवकाई के काम में ले आना है (इफिसियों 4:9-16)।
4. कलीसिया परमेश्वर के सन्तों के लिए एक आवरक और सुरक्षा भी होनी चाहिए। यह प्रभु का घर है और सबकुछ जो एक स्वाभाविक घर मुहैया कराता है, प्रभु के घर को भी कराना चाहिए (यशायाह 2:1-4)।
5. सन्त एक दूसरे की सेवा करेंगे (यूहन्ना 13:34-35; गलातियों 6:2; इफिसियों 1:22-23; 5:21), जैसे स्वाभाविक देह के सदस्य एक दूसरे की सेवा करते हैं।

क) एक दूसरे से प्रेम करो (यूहन्ना 13:34-35; 15:12, 17; 1 पतरस 1:22; 1 थिस्स. 3:12; 4:9; 1 यूहन्ना 4:7,11-12)। सत्य और काम से प्रेम करना (1 यूहन्ना 3:18)।

ख)	एक दूसरे को शान्ति दो। सहायता करो, पास में बुलाओ (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)।
ग)	एक दूसरे की चिन्ता करो (इब्रानियों 10:24)।
घ)	एक दूसरे को समझाते रहो, समीप बुलाओ (इब्रानियों 3:13; 10:25)।
च)	एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, उन्नति करो (रोमियों 14:19; 1 थिस्स. 5:11)।
छ)	एक दूसरे को सावधान करो (रोमियों 15:14; कुलुस्सियों 3:16)।
ज)	एक दूसरे की सेवा करो, डीकनों के समान सेवा करो (1 पतरस 4:10)।
झ)	एक दूसरे की सह लो, स्वयं को रोके रहो (कुलुस्सियों 3:13; इफिसियों 4:2)।
ट)	एक दूसरे को क्षमा करो, अनुग्रहकारी (कुलुस्सियों 3:13; इफिसियों 4:32)।
ठ)	एक दूसरे के अधीन रहो, अधीन तैनात रहो (इफिसियों 5:21)।
ड)	एक दूसरे के अधीन रहो, आज्ञाकारी (1 पतरस 5:5)।
ढ)	एक दूसरे को सिखाओ, शिक्षा दो (कुलुस्सियों 3:16)।
त)	एक दूसरे को अधिक चाहो, विचारों में ऊपर रखना (रोमियों 12:10)।
थ)	एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, विनती, निवेदन (याकूब 5:16)।
द)	एक दूसरे का अतिथि-सत्कार करो, अजनबियों से प्रेम (1 पतरस 4:9)।
ध)	एक दूसरे को नमस्कार करो, स्वागत, पवित्र चुम्बन (1 पतरस 5:14; रोमियों 16:16)।
प)	एक दूसरे के साथ सहभागिता, साझेदारी (1 यूहन्ना 1:7)।
फ)	एक दूसरे की बराबर चिन्ता करो (1 कुरिन्थियों 12:25; इफिसियों 4:25)।

मानव शरीर जिसके करोड़ों कोशाणु और सदस्य हैं, और जो ससंगति, एकता और जीवन में मिलकर कार्य करते हैं, दिखाता है कि मसीह की देह, कलीसिया में यह कैसा हो सकता है!

ग. पापी की सेवा

कलीसिया के अस्तित्व का तीसरा उद्देश्य सुसमाचार से पापियों की सेवा करना है। जितनी अधिक प्रभावशाली हमारी सेवा प्रभु के लिए है, जितनी अधिक प्रभावशाली हमारी सेवा सन्तों के लिए है, तब उतनी अधिक प्रभावशाली हमारी सेवा संसार, अविश्वासियों के लिए होगी। जब सन्तों की उन्नति होगी तो वे बढ़ते जाएँगे। कलीसिया को इस युग के अन्त होने से पहले संसार को राज्य का सुसमाचार प्रचार करना है (मत्ती 24:14; 28:18-20)।

1. अब्राहम को दी परमेश्वर की प्रतिज्ञा में पृथ्वी के सारे परिवारों के लिए आशीष शामिल थी (उत्पति 12:1-3)। यह अब्राहम की वाचा है।
2. परमेश्वर ने इस्राएल को भी याजकों के राज्य के रूप में पृथ्वी के राष्ट्रों को आशीष देने के लिए बुलाया था (निर्गमन 19:1-6)।
3. मसीह की मिरास खोए हुओं का उद्धार है (भजन 2:8; 11:6)। संसार की अभिषिक्त सेवकाई 10% अँगरेजी बोलनेवाले लोगों की सेवा करती है, और 6% ही 90% गैर-अँगरेजी बोलनेवाले लोगों से बात करते हैं।
   हमें बीज बिखेरना है और लोगों को जीतना है (नीतिवचन 11:23-24, 30; 13:17; 19:17; 21:13; 22:9; 24:27; 28:27; 31:8-9)।
   हमें संसार में ज्योति होना है (मत्ती 5:14-16)।
   सुसमाचार प्रचार के साथ-साथ चिन्ह और चमत्कार होने हैं (मरकुस 16:15-20)।
4. कलीसिया को महान अधिकार को पूरा करना है और इस वर्तमान युग में सब राष्ट्रों को चेला बनाना है (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 1:5-8; लूका 4:18-24; यूहन्ना 20:20-22)।
5. यह युग अन्य जातियों का यहूदियों के साथ अच्छे जैतून के पेड़ में कलम लगाने के लिए आने का समय है (रोमियों 9-10-11)। यहाँ गैर-यहूदी, यहूदियों के साथ दाऊद के तम्बू में एकत्र होते हैं (प्रेरितों 13:1-4; 15:15-18; रोमियों 11:25)।

कलीसिया एक खो रहे और मर रहे संसार के लिए परमेश्वर के उद्धार का हाथ है (यूहन्ना 3:16)। उसने अपने चेलों को उसकी सेवकाई जारी रखने के लिए भेजा जब तक हर जाति, भाषा, कुल और लोगों में से न हो लेंगे जिन्होंने उद्धार पाया है (प्रकाशित. 5:9-10)। मेमना अपने दुखों का फल देखेगा। कलीसिया को सुसमाचार की सेवा करनी है!

घ) शैतान और उसके राज्य को जीतने की सेवकाई

कलीसिया को अन्त में शैतान और उसकी दुष्ट सेना का सत्यानाश करना है और उन्हें दूर फेंक देना है। हम इसे नीचे दिए नुक्तों में देखते हैं।

1. **कलीसिया प्रयतमान और विजयमान है (मत्ती** 16:15-20)

जिस किस्म की कलीसिया मसीह बनाएगा, विजयी कलीसिया होगी। अधोलोक के फाटक इस पर प्रबल न होंगे (उत्पती 22:17)। यह प्रयतमान होगी और आत्मिक क्षेत्रों में अधोलोक के फाटकों के साथ संघर्ष और युद्ध में होगी (उत्पति 24:10)। यह अभिभावी होगी और विजयी होती हुई और विजयी होने को आगे बढ़ेगी।

कलीसिया युद्ध के लिए परमेश्वर के कवच और संग्राम के हथियारों को पहने होगी (इफिसियों 6:10-20; 2 कुरिन्थियों 10:1-5)। हथियार परमेश्वर के द्वारा सामर्थी होंगे। हमारा राज्य संसार का नहीं है, इसलिए शारीरिक युद्ध नहीं है। युद्ध प्रधानों और अधिकारियों से और इस संसार के अन्धकार के हाकियों से, और आकाश की दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है (यूहन्ना 18:36-37; प्रकाशितवाक्य 12:10-11; प्रेरितों 12:10; भजन 9:13; यशायाह 38:10; मत्ती 7:13; उत्पति 28:17; यशायाह 26:2)।

फाटक उन स्थानों के सांकेतिक हैं जहाँ प्राचीन उनके सौदे, समिति, अदालतें और नगर के प्रवेश रखते थे। अधोलोक के फाटक पर धावा बोलना होता है (उत्पति 3:15)। शत्रु स्त्री की सन्तान, प्रयतमान और विजयमान कलीसिया द्वारा कुचला जाएगा।

2. **कलीसिया और राज्य की कुंजियाँ**

कलीसिया के पास राज्य की कुंजियाँ होंगी (मत्ती 16:19); ज्ञान की कुंजी (लूका 11:51); दाऊद की कुंजी (प्रकाशितवाक्य 3:7; यशायाह 22:21-22); और प्रभु जिसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं, और अथाह-कुंड की कुंजी है इनके साथ काम करेगा (प्रकाशितवाक्य 1:18; 9:1; 20:1)।

कुंजी हमेशा अधिकार और सामर्थ्य का सार्थक है। कुंजी एक खोलनेवाला है। यह दरवाजे को खोलता और बन्द करता है, और लोगों को अन्दर आने देता या बाहर रखता है। पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने यहूदियों के लिए दरवाजा खोला (प्रेरितों 2) और फिर प्रेरितों 10-11 में अन्य-जातियों के लिए विश्वास का दरवाजा खोला।

प्रेरितों में चार कुंजियाँ थीं वचन, आत्मा, नाम और इकट्ठे मिलकर कार्य रही कलीसिया और सारे सन्तों की प्रार्थनाएँ थीं।

<u>राज्य मसीह का शासन और हुकूमत है।</u> इस संसार के राज्य उसके राज्य के अधीन हैं (प्रकाशित. 12:13,17)। कलीसिया को प्रचार करना और राज्य के सामर्थ्य को दिखाना है (मत्ती 24:14)।

राज्य का संदेश मन फिराना, विश्वास और बपतिस्मा है (मत्ती 4:16; 3:2)। आरंभिक कलीसिया ने राज्य की शिक्षा दी और राज्य दिखाया (प्रेरितों 8:12; 19:8; 20:25; 28:28-31)। इस राज्य में नए जन्म द्वारा प्रवेश किया जाता है (यूहन्ना 3:1-5; कुलुस्सियों 1:13-14)। व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे; उस समय से राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है (लूका 16:16; मत्ती 5:17-18; 11:13)।

पुराने नियम का इस्राएल परमेश्वर की कलीसिया और राज्य था (निर्गमन 19:1-6 और प्रेरितों 7:38)। राज्य के अपने वर्तमान आकार में अच्छा और बुरा दोनों का मिश्रण है, परन्तु मसीह के आगमन पर बुराई निकाल दी जाएगी (मत्ती 13)।

3. **कलीसिया की बाँधने और खोलने की सेवकाई**

क) बाँधने की सेवकाई – यूनानी 'Deo' = "बाँधना, बुनना, लपेटना"। यह कलीसिया के साथ संघर्ष में अधोलोक के फाटकों से संबंधित है। कलीसिया के पास जो विरोध करते हैं उनको बाँधने की सामर्थ्य होनी है: प्रधान, अधिकारी, दुष्ट आत्माएँ (मत्ती 12:29)। पहले बलवन्त व्यक्ति को बाँधो। पहले जंगली दाने के पौधे गट्ठों में बाँधे जाते हैं (मत्ती 13:30)। जिन्हें कलीसिया से निकाल दिया जाता है बँध जाते हैं (मत्ती 18:15-20)। परमेश्वर का वचन बँधा नहीं है। शैतान को अनन्तकाल के बाँधा जाएगा (प्रकाशित. 20:2 और भजन 105:22-26; 149:8; मरकुस 5:3; 2 तीमुथियुस 2:9)।

ख) खोलने की सेवकाई – यूनानी 'Luo' = "मुक्त करना, समाप्त करना, नष्ट करना, विधटित होना, पिघलना"। यह राज्य की कुंजियों से संबंधित है। कलीसिया की खोलने की सेवकाई भी होनी है। यीशु ने अब्राहम की एक बेटी को मुक्त कर दिया जिसे शैतान ने बाँध रखा था (लूका 13:16)। शैतान ने अपने बँधुओं को बाँध

रखा है और कलीसिया को इन शक्तियों को नष्ट करना है जो बाँधती हैं (यूहन्ना 11:44; भजन 102:20; मरकुस 7:35)। जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे...वह बँधेगा...जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह.. खुलेगा (पहले से स्वग में खुल गया है)।

ग) स्वर्ग और पृथ्वी

"पृथ्वी पर बँधेगा...खुलेगा, स्वर्ग में बँधेगा...खुलेगा"। कलीसिया पृथ्वी पर मसीह की देह है, फिर भी स्वर्ग में अपने जीवित सर से जुड़ी है।

स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार उसे दिया गया है (मत्ती 28:19-20)। मसीह के स्वर्ग पर उठा लिए जाने के बाद, चेलों ने निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा (मरकुस 16:15-20)।

वह स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक है (उत्पति 14:8)। उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी होनी है जैसी स्वर्ग में होती है (मत्ती 6:9)। पृथ्वी सारी आशीषों के लिए स्वर्ग पर निर्भर रहती है। अन्यथा पृथ्वी स्वर्ग की आशीषों के बिना सूखी खाली, एक बंजर और खंडहर बन जाएगा व्यवस्था. 11:1-21)।

नए नियम की कलीसिया का प्रभु की, सन्तों की, पापियों की सेवा करने और अन्त में शैतान और उसके दुष्ट राज्य का न्याय करने के लिए उद्धार किया है। कलीसिया के अस्तित्व का यह चारगुणा उद्देश्य है। कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने कहा, "कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे" (इफिसियों 3:21)।

घर भेंट करने कैसे जाएँ उस पर एक संक्षिप्त अध्ययन

घर भेंट करने जाने के विषय के परिचय के रूप में, मैं चाहता हूँ कि आप इस आम दृष्ट पर गौर करें: एक कलीसिया का सदस्य पास्टर के पास जाता है और कुछ इस प्रकार की बातें होती हैं: सदस्य: "पास्टर, क्या हम कर सकते हैं...?" पास्टर: "यह तो बहुत अच्छा विचार है और जरूरी चीज भी है परन्तु...मेरे पास समय नहीं है।"
हम पास्टर को एक अधीर खँडहर बनाए बिना नए सेवकों को कलीसिया की सेवकाई में कैसे ला सकते हैं? यह समस्या प्रारंभिक कलीसिया में भी थी। प्रेरितों 6 में प्रेरितों ने इस जरूरत को देखा परन्तु उन्हें लगा कि यह उनकी प्राथमिकता नहीं है। परिणामस्वरूप, उन्होंने सात पुरुषों को चुना और नियुक्त किया जो प्रेरितों को प्रार्थना और वचन की उनकी सेवकाई से ध्यान भंग किए बिना काम कर सकते थे। प्रेरित घमण्डी या आलसी नहीं थे। लोगों से मिलने जाना उनके लिए कोई छोटा काम नहीं था। परन्तु वे अपनी सेवकाई में एक प्राथमिकता स्थापित कर रहे थे। उन्होंने देखा कि देह में उनका स्पष्ट योगदान नौकर का काम नहीं है, परन्तु सन्तों को सेवकाई के लिए सज्जित करने के लिए प्रार्थना करना और वचन सिखाना है। कहा गया है कि जो लोग प्रशिक्षण देते हैं उनसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं जो वास्तव में काम करते हैं। इसके बारे में पुरानी कहावत कि लोगों को मछली देने के बजाय उन्हें मछली पकड़ना सिखाना यहाँ लागू होता है। फिर अनेक बार बाइबल का नमूना कलीसिया के सदस्यों द्वारा विफल किया जाता है जो पास्टर से सबकुछ करने की उम्मीद करते हैं।

1. बाइबल का आधार और उद्देश्य

भेंट करने जाने के लिए यूनानी शब्द है 'episkeptomai'। यह शब्द अनेक हालातों में इस्तेमाल किया गया है।

क) मिलने जाना

पौलुस ने बरनबास से कहा, "जिन जिन नगरों में हम ने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि वे कैसे हैं।" (प्रेरितों 15:36)।
पौलुस केवल जानना चाहता था कि वे कैसे हैं। रोमियों के पहले अध्याय में उसमें लोगों से मिलने की एक गहरी लालसा है (रोमियों 1:10-13)।

- उन्हें आत्मिक तौर पर मजबूत करना
- परस्पर प्रोत्साहित करना
- सुसमाचार लेकर उनके पास जाना

प्रारंभिक कलीसिया लोगों के साथ उनके घरों में मिलकर संगति करने पर बहुत जोर देती थी (प्रेरितों 2:42)। उनका मिलने जाने का उद्देश्य था:

- प्रोत्साहन
- संगति
- सिखाना
- प्रार्थना करना
- रोटी तोड़ना

ध्यान दें कि रोटी तोड़ना प्रभु-भोज मनाना था। यीशु ने उनको कहा था कि वे उसे याद रखें और वे ऐसा मिलकर रोटी तोड़ने के द्वारा करते थे। अन्तिम भोज के समान, वे अक्सर मिलकर साधारण खाना खाया करते थे और संगति करते थे।

ख) जान-पहचान करना

मिलने जाने के बारे में एक दूसरा शब्द है 'historeo' जिसका अर्थ है: एक व्यक्ति की पृष्ठभूमि जानना! गलातियों 1:18 में पौलुस इस शब्द को इस्तेमाल करता है जब वह कैफा से मिलने जाता है। यह उसे जानने के लिए मिलने जाना था।

ग) जरूरत पूरी करना

"भक्ति है: अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लेना।" (याकूब 1:27)।
हमें विधवाओं और अनाथों से मिलने जाना चाहिए। ध्यान दें यह कहता है "उनके क्लेश में"। अनेक लोग हैं जो संकट में हैं। विधवाएँ और अनाथ मात्र दो किस्में हैं।

- अनाथ वे लोग हैं जिनकी कोई सुधि नहीं लेता है।
- विधवाएं वे हैं जो अकेली रह गई हैं।

हमारे आस-पास अनेक 'विधवाएँ' और 'अनाथ' हैं जिनके पास हम जा सकते हैं।

यीशु ने भी मिलने जाने की आवश्यकता के बारे में सिखाया।
"मैं बिमार था, और तुमने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीग्रह में था, और तुम मुझसे मिलने आए।" (मत्ती 25:36)।

2. कैसे भेंट करने जाएँ

क) हम किसे मिलने जाएँ?

यह जरूरी है कि हम उन लोगों से मिलने जाएँ जिनसे हम सम्बंध बना सकते हैं। यदि कलीसिया में कुछ नए लोग आते हैं जो नौजवान हैं तो अच्छा होगा यदि कुछ नौजवान लोग उनसे मिलने जाएँ। यदि जिन लोगों से मिलने जाना है वे बहुत बीमार हैं तो अगुवों का या सयाने लोगों का जाना अच्छा होगा।
इस क्षेत्र में एक और विचार करने की बात है कि कितने लोग मिलने को जाएँ। यदि यह एक सदस्य के साथ केवल संगति के लिए मिलने जाना है तो तीन या चार लोगों का इकट्ठे जाना ठीक होगा। साधारणतः आदर्श संख्या दो है, और कम से कम दो में से एक सयाना विश्वासी होना चाहिए। ध्यान दें कि यीशु ने अपने चेलों को दो दो करके भेजा था! (मरकुस 6:7; लूका 10:1)।

ख) समय

- **मिलने जाना पहले से तय कर लें**

मिलने जाने की योजना बनाने में यह पूछना जरूरी है कि क्या लोग चाहते हैं कि उनसे मिलने आया जाए। यदि हम कहते हैं, "मैं तुम्हें मिलने आना चाहता हूँ" तो ऐसा लगता है कि यह मिलने जाना हमारे लिए है। यदि हम कहते हैं, "क्या आप चाहते हैं मैं आपसे मिलने आऊँ?" तब यह उनके लिए है। निश्चय कर लें कि इसकी आवश्यकता है, नहीं तो हम अपना समय बरबाद कर रहे होंगे।
सूचनाः मिलने जाना उनके घर पर ही होना जरूरी नहीं है, शायद यह उपयुक्त न हो। हम एक बगीचे में या चाय की दुकान में मिल सकते हैं।

- **एक निश्चित समय तय करें**

बड़ी परेशानी हो सकती है जब कोई बिना सूचना के आ टपके। समय की बरबादी होगी यदि वे घर पर न हों। इसी लिए हमें एक सुविधाजनक समय और जगह तय कर लेनी चाहिए।

- **समय की ओर संवेदनशील बनो**

बेहतर होगा यदि हम अधिक समय रुकने के बजाय थोड़ा पहले निकल लें। यदि वे सच्चाई से आशा करते हैं कि हम अधिक ठहरें तब दूसरी बार आना सरलता से तय किया जा सकता है। आवश्यकता से अधिक ठहरने के कारण शायद वे न चाहें हम दोबारा आएँ। अपना समय अधिक से अधिक एक घंटे तक ही सीमित रखें।

- **लक्ष्य**

मिलने जाने के कारण के अनुसार हमारा एक स्पष्ट लक्ष्य होना चाहिए। प्रार्थना के द्वारा पहले ही तय कर लें कि हम क्या हासिल करने वाले हैं। सिखाने के लिए और व्यक्ति या परिवार के लिए प्रोत्साहन या दिशा लाने के लिए बाइबल का एक परिच्छेद पहले ही तैयार कर लें। इस प्रकार समय बिताने की ध्यानपूर्वक योजना बना लें।

- **उपयोगी तैयारी**

मिलने जाने में कुछ भेंट ले जाना भी शामिल होगा। व्यक्ति की उपयोगी आवश्यकताओं पर विचार करो या कुछ फल साथ ले जाओ।

- **प्रार्थना**

हमारे मिलने के समय में प्रार्थना करनी बहुत आवश्यक है। प्रार्थना करने के लिए अन्त का इन्तज़ार न करें। एक उचित समय का पता लगाएँ, शायद जब उन्होंने अपनी जरूरतें या परेशानियों के बारे में आपको बताया है। इस प्रकार प्रार्थना अधिक स्वाभाविक होगी।

3. **भेंट करने जाने के विकल्प और अन्तर्दृष्टि**

क) प्रौढ़ों से मिलने जाना

- जब प्रौढ़ों से मिलने जाते हैं तब उनके साथ खाना खाने की कोशिश करें। हम उन्हें पास के किसी होटल में ले जा सकते हैं, या उनसे पूछें कि क्या आप कुछ खाना खरीदकर, पकाने में उनकी मदद कर सकते हैं।
- उन पर तरस मत खाओ। उन्हें प्रेम, प्रोत्साहन और मित्रता की आवश्यकता है।
- उनके लिए सबकुछ मत करो। यह उनका घर है और वे एक अच्छा मेजबान बनना चाहेंगे। आवश्यकता के समय उनकी मदद करने के लिए उपलब्ध रहो।
- यदि हमने उन्हें ठीक से सुना नहीं है तो ढोंग न करें कि हम समझ गए हैं। यदि सुना नहीं है तो उन्हें दोहराने के लिए कहें। हम वहाँ उनसे बातचीत करने गए हुए हैं।
- उनके लिए बाइबल पढ़ना न भूलें (एक परिच्छेद या एक भजन) और प्रार्थना करें, खासकर उनकी जरूरतों के लिए प्रार्थना करें।
- याद रखें – हमारा उद्देश्य यह मिलने का समय उनके लिए विशेष बनाना है ताकि वे खुश, प्रोत्साहित हों और उन्हें लगे कि कोई उनकी परवाह करता है।

ख) बीमारों से मिलने जाना

जब हम बीमार होते हैं और कोई हमें मिलने आए तो हमें शान्ति और शक्ति मिलती है। यह अक्सर ऐसा समय होता है जब संगति के लिए हम पर रोक लग जाती है, और इसलिए जब कोई मिलने आता है तो हम बहुत शक्ति और प्रोत्साहन मिलता है।

- बीमार व्यक्ति को प्रोत्साहित करें, उनके साथ समय बिताएँ और उनके लिए प्रार्थना करें।
- जाते समय कुछ फल या खाना ले जाएँ। हो सके तो पहले ही पूछ लें यदि उन्हें किसी विशेष वस्तु की आवश्यकता है।

ग) जेल में मिलने करने जाना

- जेल में मिलने जाने का सबसे अच्छा तरीका जेल सेवकाई के द्वारा है। वे लोगों को ऐसा करने में प्रशिक्षण भी दे सकते हैं।
- जो जेल में हैं उनके लिए कुछ साहित्य ले जाना अच्छा होगा, और यदि उन्हें टेप्स लेने की अनुमति है तो उन्हें भी ले जा सकते हैं।
- इस सेवकाई को बल देने के लिए पत्रों द्वारा उनके साथ सम्पर्क रखा और फालो-अप किया जा सकता है।

घ) नए लोगों से मिलने जाना

- जब लोग कुछ बार कलीसिया में आ चुके हैं तो उनसे पूछा जा सकता है कि क्या वे चाहेंगे कि कोई उनसे मिलने आए। यह भेंट सुसमाचार सुनाने के लिए भी इस्तेमाल की जा सकती है। इसलिए अपने साथ कुछ साहित्य जैसे कि सुसमाचार की पुस्तकें या नये नियम ले जाना जरूरी है। यह भेंट मुख्य रूप से सुसमाचार सुनाने के लिए शायद इस्तेमाल न हो, बल्कि लोगों का स्वागत करने और उनसे जान-पहचान करने और उनकी आत्मिक स्थिति जानने के लिए होगी, फिर भी इस अवसर को वचन द्वारा उनकी सेवा करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

च) विश्वास में कमजोर पड़े लोगों से मिलने जाना

- एक विश्वास में कमजोर पड़ा व्यक्ति वह है जिसका परमेश्वर के साथ सम्बंध ठंडा पड़ गया है, और जिसकी कलीसिया आने और परमेश्वर के लोगों के साथ संगति करने की इच्छा खत्म हो गई है। वह कभी-कभार आ जाता है परन्तु हमेशा 'व्यस्त' रहता है। यदि हम किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने जाते हैं तो हमारा उद्देश्य उन्हें प्रोत्साहित करना, प्रेम करना और प्रेरित करना है ताकि वे प्रभु के पास लौट आएँ।
- यदि हम व्यक्तिगत तौर पर कलीसिया के कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं जो बिरले ही आते हैं, या कभी नहीं आते, तो हम उन्हें बुलाकर पूछ सकते हैं कि क्या वे चाहते हैं हम उनसे मिलने आएँ।

छ) परिवारों से मिलने जाना

- कलीसिया में ऐसे कुछ परिवार होते हैं जिनके लिए बच्चों और शिशुओं की ओर उनकी वचनबद्धता के कारण रविवार के अलावा कलीसिया में आना कठिन होता है। इसलिए सप्ताह के दौरान उनसे मिलने जाना विशेषकर उनके द्वारा जिन्हें वे अच्छी तरह जानते हैं अक्सर सराहा जाएगा, और इस प्रकार दूसरे विश्वासियों के साथ अर्थपूर्ण सहभागिता स्थापित होगी। निश्चय करें कि यह एक सुविधाजनक समय में किया जाता है।

ज) कलीसिया के सदस्यों को मिलने जाना

समय समय पर कलीसिया के सदस्यों, अगुओं और पास्टर से भी मिलने जाना अच्छा विचार है!

- यह अक्सर 'जान-पहचान करनेवाली' स्थिति होती है, परन्तु यह उस किसी के साथ जिसे आप जानते हैं और आभार मानते हैं के साथ समय बिताना भी हो सकता है, सम्बंध गहरा करना और संगति करना हो सकता है।

झ) अस्पताल जाना

कुछ लोगों को लगता होगा कि उन्हें गम्भीर रूप से बीमार मरीजों से मिलने जाने का बुलावा है। इस सेवकाई के लिए विशेष प्रशिक्षण पाना अच्छा होगा। नीचे कुछ समस्याएँ और मार्गदर्शक दिए हैं जो गम्भीर रूप से बीमार मरीजों से संबंधित हैं:

- गम्भीर बीमारी को स्वीकार करना
  यह वो अवस्था है जिसमें से गम्भीर रूप से बीमार व्यक्ति प्रारंभिक सदमें के बाद गुजरता है।
- क्रोध। कभी-कभार परमेश्वर की ओर, या एक रिश्तेदार या डॉक्टर की ओर हो सकता है, और कभी-कभार मिलनेवाले पर निकाला जा सकता है।
- नकार। भले ही उन्हें पता हो कि वे गम्भीर रूप से बीमार हैं, वे शायद पूरी तरह से इसका इन्कार करें। यह एक मनोवैज्ञानिक रिहाई हो सकती है।
- अन्तिम चरण बीमारी की स्वीकृति हो सकता है, हालाँकि कभी-कभी वे दोबारा गुस्सा हो जाते हैं और चक्र दोहराया जाता है।

एक बीमार व्यक्ति की भावनाएँ

- नकारात्मक रूप से, वे डर, आशाहीनता, शोक, चिन्ता, एकाकी-पन, दोष और दबाव महसूस कर सकते हैं। कुछ महसूस करते हैं कि उनकी बीमारी पाप की सजा है।
- सकारात्मक रूप से, वे अक्सर अपने नैतिक-मूल्य बदल लेते हैं। रुपया-पैसा और धन-सम्पत्ति की कीमत कम होने लगती है। वे अधिक ईमानदार और खुल जाते हैं। वे अक्सर परमेश्वर और जीवन के असली अर्थ को खोजते हैं। वे सच्ची मित्रता की भी इच्छा करते हैं।

मिलनेवाले के लिए मार्गदर्शक

- यह सेवा करने से पहले हमें खुद से पूछना चाहिए कि हम यह सेवा क्यों करना चाहते हैं। अभिप्राय महत्त्वपूर्ण है क्योंकि एक गम्भीर रूप से बीमार व्यक्ति रवैयों के प्रति अतिसंवेदनशील होता है। यदि हमारा अभिप्राय एक सच्चा तरस है और मरीज की मदद करने का है तब तो कोई समस्या नहीं होगी।
- उनके साथ प्रार्थना करने का निश्चय करें और पवित्र आत्मा को अगुआई करने दो।

  ✓ ईमानदार **बनो**; सुनो; वे कैसे महसूस करते हैं समझने का प्रयास करो; उनका बोझ बाँटो; उनका सम्मान करो; समय बाँटो; प्रोत्साहन दो और प्रेम करो।

  × बहाना **मत करो**; उपदेश मत दो; उनका न्याय मत करो; गुस्ताख मत बनो; अपनी जरूरत पूरी करने मत जाओ; हिम्मत मत हारो।

यह सेवा कीमती है। काम के प्रति वचनबद्ध बनो और देने के लिए तैयार रहो।

प्रोत्साहन की सेवकाई

निराशा एक कातिल है। गिनती 21: 4 में लोग व्याकुल हो गए और परिणामस्वरूप उन्होंने पाप किया। इसी कारण से उन्होंने वो खो दिया जो उनके पास था। बाद में गिनती 32:7-9 में निराशा के कारण लोग अपनी मिरास से वंचित हो गए। आज भी कलीसिया शैतान के इस अति प्रभावी हथियार से कारण कम वंचित तो नहीं रही है। इसको रोकने के लिए बाइबल प्रोत्साहित करने, शान्ति देने, उपदेश देने के उपदेशों से भरी पड़ी है। इस शिक्षा में हम निराशा और प्रोत्साहन दोनों पर विचार करेंगे और उन तरीकों पर ध्यान देंगे जिनके द्वारा स्थानीय कलीसिया में पवित्रशास्त्र के उपदेशों को उपयोगी तौर पर लागू किया जा सकता है।

1. **निराशा**

इसका अर्थ क्या है ?

- व्यर्थ कर देना। किसी प्रभाव न छोड़ना।
- जैसे फसल काटी जाती है वैसे काट डालना।
- टुकड़े-टुकड़े कर देना।
- डर पैदा करना।
- उत्पीड़ना और थकावट पैदा करना।
- उत्साह खो देना।

परमेश्वर के सब महान लोग निराशा के शिकार होते थे।

<u>निराशा के 7 मूल कारण होते हैं:</u>

अ) व्यक्तिगत असफलता

क्या आपको लगता है आपने किसी को निराश किया है ? क्या आपको लगता है आपने खुद को निराश किया है ? जब हमारे पास कोई काम आता है और हम उसे बिगाड़ देते हैं, या उसे पूरा करने में असफल होते हैं या परिक्षा का सामना करने में असफल होते हैं, तब हम निराश हो जाते हैं। असफलता का एक और आम कारण है, जब कोई हमें कहता है कि हम अच्छे नहीं हैं। यह भी निराशा लाता है और निराशा हार लाएगी।

मुझे यह सुनकर दुख होता है जब मैं एक माता-पिता, एक शिक्षक, या मित्र को एक बच्चे से कहते हुए सुनता हूँ कि वह बेकार है या अपने बड़े भाई या बहन जितना अच्छा नहीं है। बच्चे को दोगुणा अक्षमता मिल जाती है। उसे शायद अच्छा मार्गदर्शन नहीं मिला है, परन्तु निराश भी हो जाता है और आत्मा-सम्मान खो देता है। आपको विश्वास हो या नहीं, कलीसिया में अनेक व्यस्कों के लिए यह भी एक समस्या है।

आ) लम्बा युद्ध

कठिन समय भी निराशाजनक हो सकते हैं। हम सभी परिक्षाओं और परीक्षणों का सामना करते हैं। कभी-कभी ये परिस्थियाँ लम्बी होती जाती हैं और हमारे आत्मिक साधन सूखते जाते हैं। युद्ध जितना लम्बा चलता है, उतना कम हमें लगने लगता है हम जीत सकेंगे। मसीही आदर्श-वाक्य "कभी भी हिम्मत न छोड़ो" है, परन्तु युद्ध के मध्य यह कठिन होता है, और हमारा निश्चय और विश्वास चुनौती का सामना करता है।

इ) निरन्तर अनुत्तरित प्रार्थना

कभी-कभी ऐसे समय होते हैं जब एक परिस्थिति या एक समस्या के लिए हम बहुत कठोर और लम्बे समय तक प्रार्थना करते हैं और कुछ भी होता नहीं लगता है। हम आश्चर्य करते हैं कि क्या परमेश्वर ने सुना है। हम खुद से प्रश्न करते हैं "क्या कोई फायदा है ?" यदि परमेश्वर के उद्देश्यों की समझ में हमारी कमी है, या चीजों को बहुत ही सांसारिक दृष्टिकोण से देखते हैं तो यह निराशाजनक हो सकता है।

ई) भावात्मक तनाव

बहुत सी चीजें हैं जो भावात्मक तनाव और दबाव लाती हैं, जैसे कि परिवार में मृत्यु, जन्म, वातावरण में परिवर्तन, नौकरी में परिवर्तन और और भी कई। जैसे शरीर में थके होना सामना करने की हमारी शक्ति सूखा देता है, वैसे ही भावात्मक रूप से सूखे होना हमारे विश्वास पर दबाव डालता है। इसके अतिरिक्त इस दशा को स्वयं पहचान पाना अक्सर कठिन होता है।

उ) शारीरिक बीमारी

शारीरिक बीमारी तो शक्तिहीन बना देती ही है, यह भावात्मक दबाव भी लाती है। यह हमारे जोश और उत्साह को अशक्त कर देती है, यह हमें थका देती है, और डर को हमारे विरुद्ध खड़े होने देती है। हम अक्सर शारीरिक को आत्मिक से अलग करते हैं परन्तु उनमें एक असली और महत्त्वपूर्ण संबंध है। 1 थिस्स. 5:23 में पौलुस ने प्रार्थना की कि लोग सम्पूर्ण रखे जाएँ। उसने विशेषकर आत्मा, प्राण और शरीर का नाम लिया। पौलुस को लगा यह महत्त्वपूर्ण है। हमें भी शारीरिक स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान देना जरूरी है, और जो निराशा यह ला सकता है उसका पता होना चाहिए।

ऊ) शैतानी हमले

शैतान हमें निराश करना चाहता है। इसलिए वह हमारे जीवनों के उन क्षेत्रों पर हमला करेगा जो कमजोर हैं। यह सताव और हमला अक्सर निराशाजनक होते हैं, विशेषकर जब हम उनसे अकेले निपटने की कोशिश करते हैं।

ए) समझ की कमी

हमारे जीवनों में जो हो रहा है उसे समझ न पाना निराशा का स्रोत हो सकता है। संसार में जीना और जीवन में आनेवाली समस्याओं से निपटना, और फिर परमेश्वर के साथ सहभागिता का आनन्द ले पाने के लिए बहुत व्यस्त हो जाना, हमें संसार-मनस्क बना देता है। हम सबकुछ मनुष्य के दृष्टिकोण से देखने लगते हैं जबकि हमें आत्मिक बुद्धि और पता लगाने और समझने के लिए एक अनन्त दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

2. प्रोत्साहन

"देखो, उस देश को तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे सामने किए देता है, इसलिए अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार उस पर चढ़ो, और उसे अपने अधिकार में ले लो; न तो तुम डरो और न तुम्हारा मन कच्चा हो।" (व्यवस्थाविवरण 1:21)

प्रोत्साहन ने अगुओं को देश पर कब्जा करने की शक्ति दी। जब देश को उत्तराधिकार में करने के दहलीज पर खड़े थे, तब परमेश्वर का वचन था "उसको हियाव दे!" (व्यवस्था. 1:38)। हम सब एक न एक तरीके से निराश होने वाले हैं। परमेश्वर यह जानता है, और इसलिए उसने हमें प्रोत्साहन देने की आज्ञा दी है। यह जीत और हार में अन्तर ला सकता है।

पहली बात, प्रोत्साहन के लिए यूनानी भाषा में शब्द है 'parakaleo', जिसका अर्थ है: 'बगल में होने के लिए बुलाया गया', 'paramutheomai', जिसका अर्थ है: 'सलाह के साथ'। ध्यान दो कि पवित्र आत्मा भी वह है 'जिसे बगल में रहने के लिए बुलाया गया' है।

आओ कुछ वचनों पर विचार करें:

"इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो।" (1 थिस्स. 5:11)
"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें....पर एक दूसरे को समझाते रहें।" (इब्रानियों 10:25)
"हो भाइयो, चौकस रहो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो तुम्हें जीवते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए। वरन् जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।" (इब्रानियों 3:12-13)

शैतान एक गरजते हुए शेर के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। दुर्भाग्यवश, जब से हम कलीसिया में आए हैं हम सबने लोगों को गिरते देखा है। यदि वे गिरे नहीं होते तो कलीसिया बहुत बड़ी होती। वे क्यों छोड़ गए? एक पापी और / या अविश्वासी हृदय के कारण जो जीवित परमेश्वर से फिर जाता है और जो मन फिराने के इच्छुक नहीं थे। परमेश्वर हमें ऊपर दिए वचनों में दिखाता है कि हम किस प्रकार इस से बच सकते हैं। रोजाना एक दूसरे को

प्रोत्साहन दो! जब उन भाइयों और बहनों को देखते हैं जो हताश और निराश हैं, तो हमें उनके पास जाना और उन्हें प्रोत्साहन देना चाहिए। आज ही वह दिन है। पाप को उनके दिलों को कठोर मत करने दो। उन्हें शैतान का निशाना मत बनने दो। प्रोत्साहन की सेवकाई के द्वारा हम अनेकों को परमेश्वर में दृढ़ खड़ा कर सकते हैं। प्रोत्साहन का रहस्य परमेश्वर का वचन है। जब हम झूठ और असत्य पर विचार करते हैं और सोचते हैं कि हम परमेश्वर से बेहतर जानते हैं, तब हम एक पापी और अविश्वासी हृदय पाते हैं। परन्तु जब हम इन विचारों से ऊपर परमेश्वर को उठाते हैं तब हम जय पाते हैं।

"इसलिए हम कल्पनाओं का और हर ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।" (2 कुरिन्थियों 10:5)। यह वचन हमें प्रोत्साहन की एक कुंजी देता है। सबसे पहले हम उन चीजों से पीछा छुड़ाते हैं जो निराशा लाती हैं।

अ) कल्पनाओं का खण्डन करना

यूनानी शब्द जो यहाँ इस्तेमाल किया गया है: 'loismos' है जिसका अर्थ है: 'तर्क'। यह शब्द बाइबल में केवल एक ही और जगह पाया जाता है, रोमियों 2:15 में, जो सांसारिक मनुष्य के विचारों का वर्णन करता है। इस प्रकार सोचना तर्कसंगत है। हम इस पर तर्क कर सकते हैं। उदाहरणार्थ, "मैं अधिक होशियार नहीं हूँ। मैं परिक्षाओं में असफल रहा हूँ। मैं कभी भी कुछ अच्छा नहीं कर पाता हूँ।" यह सांसारिक मनुष्य के तर्क हैं। पौलुस की सलाह स्पष्ट और सरल है: इन विचारों का खण्डन करो! उनका खण्डन करने का मात्र अर्थ है उनको अपने मन में नहीं आने देना।

आ) हर ऊँची बात का खण्डन करना

हमें हर उस विचार का खण्डन करना है जो परमेश्वर की पहचान में उठता है, एक ऊँचा विचार, उदाहरणार्थ, जब हमारा रवैया होता है: "मैं परमेश्वर से बेहतर जानता हूँ!"
हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को अपना कैसे बनाते हैं ? हम उन्हें अपने तर्कों और विचारों से ऊँचा मानते हैं। यदि हम अपने तर्कों पर भरोसा करते हैं तो हम स्वयं को ऊँचा करते हैं और अभिमानी बनते हैं, और कहते हैं "परमेश्वर मेरी परिस्थिति को समझता नहीं है। परमेश्वर मेरी सहायता नहीं कर सकता है।" हम सभी जानते हैं कि हम में ऐसे विचार होते हैं, विशेषकर निराशा के बारे में दी गई शिक्षा में दिए समयों पर। हमें इन विचारों को अपने मनों में जगह नहीं देनी चाहिए।

इ) यीशु को भावनाओं का प्रभु बनने दो

हमें अपने हृदय के मनोभावों के वश में नहीं होना है। हमें परमेश्वर के वचन के अधिकार में होना है। बात यह नहीं है कि मैं क्या महसूस करता हूँ बल्कि परमेश्वर क्या कहता है! परमेश्वर ने कहा है; वह मेरा प्रभु है; वह मेरे लिए सबसे अच्छा चाहता है। वह जानता है मेरे लिए सबसे अच्छा क्या है। इसलिए मैं उसके वचन पर भरोसा करूँगा।
हमें लोगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे पुराने मनुष्यत्व के तर्कों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से बदल दें। हमें उन्हें प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है कि वे डर के मनोभावों को विश्वास के तथ्यों से बदल दें। (कुलु. 3:16)।

3. प्रोत्साहक

रोमियों 12 सेवकाइयों की एक सूची देता है। हमें एक सेवकाई दी गई है और हमें इसे करने के लिए अनुग्रह भी दिया गया है। हम में से हर एक की देह में एक सेवकाई होनी चाहिए। यहाँ पर हम देखते हैं कि हमारी भविष्यद्वाणी, सेवा, प्रोत्साहन, देने, अगुआई और दया दिखाने की सेवा हो सकती है। कुछ लोगों की प्रोत्साहन की सेवकाई होनी चाहिए। हम सभी को प्रोत्साहित करना चाहिए, परन्तु कुछ लोगों पर विशेषकर इस सेवकाई का अभिषेक होता है।

बाइबल के उदाहरण

अ) बरनबास - प्रेरितों 4:36

बरनबास का अक्षरक्षः अर्थ है: 'शान्ति का पुत्र'। उसने अपने नाम के अनुसार आचरण किया। जब कभी भी उसकी आवश्यकता होती थी वह वहाँ होता था। ऐसा करने के लिए उसे बहुत कीमत देनी पड़ी परन्तु उसने इसे किया।

आ) इपफ्रुदीतुस - फिलि. 2:25

उसके नाम का अर्थ है: 'जो बाँटता है'। वह पौलुस की सहायता करने की कीमत देने को तैयार था। तब भी जब उसने लगभग अपनी जान से हाथ ही धो दिया। वह न कोई प्रेरित, या न कोई ऐल्डर था। वह मात्र एक प्रोत्साहक था।

इ) उनेसिफुरूस - 2 तीमु. 1:16

उसके नाम का अर्थ है: 'लाभ-धारक'। जब पौलुस जेल में था तो वह बेशक थोड़ा 'उदास' महसूस कर रहा था। उनेसिफुरूस ने उसे खोज निकाला। उसने कोई शर्म महसूस नहीं की कि पौलुस एक कैदी था। वह न कोई भविष्यद्वक्ता, या न कोई ऐल्डर, फिर भी पौलुस के लिए उसकी सेवकाई असाधारण थी।

4. हम प्रोत्साहित कैसे करते हैं ?

अ) परमेश्वर का वचन बताओ

परमेश्वर से जो आपने आज पाया है उसे बताओ। जिन प्रकाशों और बातों के बारे में परमेश्वर ने भूत में आपसे बात की है, उन्हें बताओ। यह हमें परमेश्वर के वचन को रोजाना पढ़ने की हमारी जिम्मेदारी याद दिलाएगा। यदि हम परमेश्वर से पाते नहीं तो हम दूसरों को इसे दे नहीं सकते।

आ) गवाही बताओ

परमेश्वर ने हाल में आपके लिए जो किया है बताओ। भूत में परमेश्वर ने किस प्रकार आपको आशीष दी है बताओ। यह परमेश्वर की हमारी परिस्थिति में कार्य करने की योग्यता की गवाही देना है। यदि यह उन्नति करता है तो यह अनिवार्य है।

इ) परमेश्वर ने कैसे आपकी सहायता की बताओ

हम अक्सर भाइयों और बहनों को देखते हैं जिन्होंने हमारे समान परिस्थितियों का सामना किया और विजय हासिल की। हम अपनी विजय के बारे में बता सकते हैं। ध्यान दो कि जिस समस्या में से वे अभी भी गुज़र रहे हैं उस का महत्त्व कम मत करो।

ई) दूसरों की गवाहियों को बताओ

अपनी व्यक्तिगत गवाहियों के अलावा परमेश्वर ने जो दूसरों के जीवन में किया है उसके बारे में भी बता सकते हैं। उदाहरणार्थ वे चीजें जो आपने पढ़ीं या सुनी हैं जो परमेश्वर का सामर्थ्य और उसका प्रेम और चिन्ता दिखाती हैं।

उ) लोगों की आवश्यकता के प्रति संवेदनशील बनो

हम अक्सर हँसते हैं जबकि हमें लोगों के बगल में आना और उन्हें हिम्मत दिलाना चाहिए। चीजों को दूसरे लोगों के दृष्टिकोण से देखने का प्रयास करो, और कल्पना करने का प्रयास करो कि वे कैस महसूस कर रहे हैं।

ऊ) लोगों में रुची दिखाओ

बातचीत उनके बारे में न कि आपके बारे में हो। निश्चय करो कि जो बातें और गवाहियाँ आप बताते हो उनसे और उनकी परिस्थिति से संबंधित हों। सुनने पर जोर डालो।

5. हम कब प्रोत्साहित करें

अ) सभाओं में

एक सभा के पहले या बाद में जो अवसर मिलते हैं उनका लाभ उठाओ। हमेशा केवल अपने मित्रों से ही बात मत करो, नए लोगों के प्रति संवेदनशील बनो जो क्योंकि वे किसी को नहीं जानते हैं इसलिए अकेला महसूस कर रहे होंगे। देह में जिनकी विशेष जरूरतें होती हैं उनकी ओर संवेदनशील बनो।

आ) दूसरे समयों में

क्या हम सप्ताह के दौरान लोगों को विभिन्न समयों पर मिलेंगे - जब हम अपने रोजाना के नित्यक्रम में रहते हैं, या जब हम स्कूल या काम पर जाते हैं ? अधिकाधिक लोगों के पास फोन भी होते हैं। हम सम्भवतः फोन द्वारा सम्पर्क में आए लोगों का फालो-अप भी कर सकते हैं। हो सकता है कि हम उन्हें गाँव में भी इधर-उधर मिलते रहें। हम उन लोगों को भी जिनसे हम ने सभाओं में बातें की हैं प्रोत्साहित कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उनके साथ प्रार्थना करो।

इ) लोगों से सामाजिक तौर पर मिलने से

हम अक्सर लोगों के साथ एक सभा के बजाय खाने या चाय के समय अधिक काम कर सकते हैं। लोगों से जान-पहचान करने का यह एक अच्छा समय है। एक घर के आराम और विश्राम का वातावरण सहभगिता को बढ़ाता है और यह परस्पर सन्तोषजनक और लाभदायक हो सकता है। जब हम इस प्रकार संगति करते हैं तो हम कह रहे हैं कि हम परवाह करते हैं।

नोटः ऐसा पुरुष पुरुषों के साथ और स्त्रियाँ स्त्रियों के साथ करें, या पूरे परिवार को बुलाया गया हो।

ई) कठिन समयों में

जब लोग कठिन समयों में से गुज़र रहे होते हैं तो उस समय उन्हें प्रोत्साहन देने या हमारी प्रार्थनाओं का उन्हें आश्वासन देने के लिए सम्पर्क करें। लोगों को हमारे प्रेम और परवाह से अभिभूत होने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

"इसलिए हे भाइयो, हम ने अपने सारे दुख और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शान्ति पाई।" (1 थिस्स. 3:7)

'क्लेश' का यहाँ अर्थ हैः 'दम घोटनेवाली भारी चिन्ता'। 'दुख' का अर्थ हैः 'परास्त करनेवाला संकट'। उनके पास प्रोत्साहन पहुँचने के पहले उनकी हालत ऐसी थी। परिणामस्वरूप पौलुस कहता है वे 'वास्तव में जीवित हैं!'

- निराशा परास्त करनेवाली और दम घोटनेवाली हो सकती है।
- प्रोत्साहन लोगों की परिस्थितियों में परमेश्वर का जीवन और शक्ति लाता है।

कभी-कभी यह पवित्र आत्मा है जो शान्ति लाता है। कभी-कभी यह भाई / बहन होते हैं। हमें आज कलीसिया में इस सेवकाई की आवश्यकता है। इसका परिणाम होगा कि कम लोग गिरेंगे; इसका अर्थ होगा परमेश्वर के लोग उन्नति करेंगे। हमें कल का इन्तज़ार करने की आवश्यकता नहीं है। हमें आज ही प्रोत्साहित करना है।

- शैतान हमें नकारात्मक चीजों को अधिक महत्त्व देने और आलोचना करने को उकसाता है। वह चाहता है हम असफल हों।
- हमें प्रभु के वचनों को सुनना चाहिए और प्रोत्साहक बनना चाहिए। परमेश्वर चाहता है हम सफल हों!

प्रोत्साहन की सेवकाई

इब्रानियों 10:24-25 कहता है, "और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिए हम एक दूसरे की चिन्ता किया करें, और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो क्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।"

<u>खुद की जाँच करने के लिए कि क्या हम सच में दूसरों के लिए प्रोत्साहक हैं, कुछ प्रश्न:</u>

1. क्या आपको लगता है कि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो दूसरों की परवाह करता है? आपका तरस क्या या कौन प्रकट करता है?

2. जो लोग कहते हैं परन्तु जो शब्दों से नहीं कहा गया है उसे आप कितने अच्छे से सुन सकते हो?

3. क्या आपके जीवन में इस समय कोई है जिसके लिए आपकी उपस्थिति अन्तर ला रही है? आप दूसरों के लिए कैसे "मैं हूँ ना" हैं?

4. नीतिवचन 3:27 "जिनका भला करना चाहिए, यदि तुम में शक्ति रहे, तो उनका भला करने से न रुकना।"
   क्या आपने कभी "जिनका भला करना चाहिए था लेकिन नहीं किया, हालाँकि आप के पास करने की शक्ति थी?" क्यों? आप नकारात्मक मनोभावों से कैसे निपट सकते हो जो आपको प्रोत्साहक बनने से रोकती हैं जब आपको पता है दूसरों को इसकी आवश्यकता है?

5. क्या दूसरे प्रोत्साहन के लिए आप पर निर्भर हो सकते हैं - क्यों या क्यों नहीं? आप दूसरों को प्रोत्साहित करने के लिए अधिक स्वाभाविक कैसे बन सकते हो?

6. आप दूसरों को आपका लाभ उठाने से और आपके प्रोत्साहन पर अधिक निर्भर होने से कैसे रोक सकते हो?

7. जब आप प्रोत्साहित करोगे, तो आप प्रोत्साहित हो जाओगे। (नीतिवचन 11:25)। क्या आपने अपने प्रोत्साहन को कभी-कभार आपके पास लौटते पाया है?

8. एक प्रोत्साहक के रूप में हर समय "तैयार" रहने के लिए, क्या आप दवाब महसूस करते हो या जिम्मेवारी? आप कैसे विश्राम कर सकते हो और यीशु को आपके द्वारा चमकने दे सकते हो?

9. जब आपने व्यक्तिगत दर्द को टालते हुए किसी दूसरे को प्रोत्साहित किया था तो क्या आप विकसित हुए थे? कैसे?

10. क्या आपने कभी परमेश्वर की समर्थ महसूस की है? क्या उसने कभी दूसरों के लिए आपको वरदान या शान्ति के शब्द दिए हैं उनसे बढ़कर जो आप जानते हैं स्वयं दे सकते हैं? वे क्या हैं?

11. आपके जीवन में इस समय सबसे बड़ी निराशा का स्रोत क्या या कौन है? इसे कैसे बदला जा सकता है? यदि नहीं तो आप समस्या के मध्य में स्वयं को कैसे प्रोत्साहित कर सकते हो?

12. दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाब बाँधा। (1 शमू. 30:6)।
    भजन 103 और 104 में, दाऊद प्रभु की स्तुति करने के लिए अपने प्राण को आज्ञा देता है। वह इन शब्दों को 'हे मेरे मन, प्रभु को धन्य कह' पाँच बार दोहराता है। स्तुति हमारे भीतरी मनुष्यत्व की उन्नति करती है।
    स्वयं को प्रोत्साहित करने का एक तरीका अपने दुख में उद्देश्य ढूँढना है। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, आपके जीवन में क्या हो रहा है? वह आपके दर्द के द्वारा आप में अपना चरित्र कैसे विकसित कर रहा है?

13. क्या आप या परमेश्वर आप के दर्दभरे हालातों को उठाए हुए है? आप इन्हें कैसे छोड़ोगे और फिर इन्हें वहाँ रहने दोगे जहाँ इन्हें होना चाहिए?

14. हम एक-एक कदम करके अच्छा चल सकते हैं? क्या आप कम से कम एक दिन में एक बार स्वयं को प्रभु में प्रोत्साहित करने के लिए वचनबद्ध हो सकते हो? आप कैसे शुरू करोगे?

दूसरों को प्रोत्साहित करना

क्या आपने आज किसी को प्रोत्साहित किया? यदि नहीं तो आज से करना शुरू कर दो, और निश्चय करो कि हर दिन आप किसी न किसी को जो शरीर या आत्मा में उदास, परेशान और असन्तुष्ट है, उसे प्रोत्साहित, प्रेरित, विकसित करोगे और अपने शब्दों, कार्यों और व्यवहार के द्वारा उस व्यक्ति को परमेश्वर के प्रेम और उद्धार में ले आओगे।

प्रोत्साहन हमेशा देने के लिए एक सरल चीज नहीं है। दूसरों को प्रोत्साहित करने का अर्थ जरूरी नहीं उनकी पीठ थपथपाना या प्रशंसा का एक शब्द कहना ही है। कभी-कभी इसका अर्थ सच्चा होना हो सकता है जबकि वास्तव में आप शायद कुछ नहीं कहना चाहें। असली में, प्रोत्साहन अनेक रूप ले सकता है। यह टिकने के लिए एक कंधा, एक स्नेही आलिंगन, थामने के लिए एक हाथ, एक हमदर्द मुस्कान, या सही दिशा में एक दाब हो सकता है। प्रोत्साहन चाहे कोई भी रूप क्यों न ले, इसका संदेश वही है: "तुम मेरे लिए महत्त्वपूर्ण हो, और मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ।"
सबको प्रोत्साहन का एक शब्द पाना अच्छा लगता है। परन्तु सबको इसे कैसे देना है आता नहीं है। लेकिन आप सीख सकते हो। नीचे दिए संकेत शुरू करने के लिए बहुत उचित हैं:

निश्चित बनो:-
जब प्रोत्साहन की बात होती है तो सामान्यता में बातें मत करो। कुछ इस प्रकार कहने से लाभ होगा: "तुम्हारा एक परिस्थिति को सदा सकारात्मक तरीके से देखना मुझे अच्छा लगता है।" इस प्रकार से कहने से लोगों को लगता है आप वास्तव में क्या सोच रहे हो।

सच्चे परन्तु दयालु बनो:-
रचनात्मक आलोचना ठीक है, परन्तु इसे सही स्थान और समय पर देना चाहिए। एक मित्र को पूरी गायन मण्डली के सामने बताना कि उसका गीत गाना खराब है, न केवल गलत समय पर होगा, बल्कि अविवेकी भी है। सच्चाई को प्रेम के साथ कहना (इफि. 4:16) एक ऐसा सबक है जिसे हम सबको संवेदनशील और आत्मा द्वारा चलाए चलकर सीखने की आवश्यकता है।

स्वाभाविक बनो:-
किसी की प्रशंसा करने के अवसर को कभी भी गुजर जाने मत दो। प्रशंसा पाना सबको अच्छा लगता है, हालाँकि आकस्मिक प्रशंसा सबसे मधुर लगती है।

उपलब्ध रहो:-
कभी-कभी आपकी उपस्थिति दूसरों के लिए एक प्रोत्साहन हो सकती है। जब एक मित्र कठिनाई में से गुज़र रहा है, तो यह जानने से कि कोई तो बात करने के लिए है जीवन को सहने योग्य बना देता है। (नीतिवचन 17:17; 18:24)।

नीतिवचन 25:11
इसमें लिखा है कि ठीक समय पर कहा हुआ वचन चाँदी की टोकरियों में सोने के सेब के समान होता है। दूसरों के लिए आपके प्रोत्साहन के शब्द ऐसे ही हों।

मसीहियों पर दुख आने के कारण

"और यदि (हम) सन्तान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुख उठाएँ तो उसके साथ महिमा भी पाएँ।" (रोमियों 8:17)

हम मसीहियों को, मसीह की महिमा में भागी होने का विचार अच्छा लगता है, परन्तु उसके दुख में भागी होने के बारे में क्या कहेंगे? यीशु मृत्यु की सजा से सदा के लिए निपट चुका है, और इसलिए हमें इसके बारे में दोबारा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु बाइबल कहती है कि यदि हम महिमा में भागी होना चाहते हैं तो हमें परिक्षण के समयों में से गुजरना होगा। क्या इसका कोई लाभ है? रोमियों 8:18 में पौलुस के शब्दों को सुनो... "क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होनेवाली है, कुछ भी नहीं है।" अनेक बार हम सोचते हैं कि हम अपने हालातों के कारण दुख उठाते हैं। हम सोचते हैं कि यदि हमारे हालात बदल जाएँ तो हम सही कर सकेंगे। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि हम इतने परिपक्व और स्थिर हो जाएँ कि चाहे हमारे हालात अच्छे न भी हों फिर भी हम सही करें।

विश्वास के स्तर विभिन्न प्रकार के होते हैं, और अधिकाँश समय हम अपने विश्वास को समस्या से छुटकारा पाने के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। परन्तु कभी-कभी परमेश्वर की योजना होती है कि हम एक ऊँचे स्तर के विश्वास को इस्तेमाल करें जो हमें जीवन की चुनौतियों में से ले चले। मैं समझता हूँ कि इसमें एक परिस्थिति से छुटकारा पाने से अधिक विश्वास की आवश्यकता होती है। अनेक बार हम परमेश्वर के छुटकारा देने की सामर्थ्य पर आश्चर्य करते हैं और उसके सुरक्षित रखने, शक्ति प्रदान करने, और समर्थ करने की सामर्थ्य को अनदेखा कर देते हैं।

1. वचन के ज्ञान की कमी

अनेक मसीही दुख भोगते हैं क्योंकि वे परमेश्वर के वचन में ज्ञान खोजने के बजाय सांसारिक ज्ञान खोजने में बहुत व्यस्त रहते हैं। प्रभु ने स्वयं कहा, "मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई..." (होशे 4:6)।

पौलुस एक शिक्षित व्यक्ति था जो सांसारिक ज्ञान से भरा हुआ था। परन्तु जब उसे आत्मिक ज्ञान का महत्त्व पता चला तो उसने कहा, "क्योंकि मैं ने यह ठान लिया था कि तुम्हारे बीच यीशु मसीह वरन् क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह को छोड़ और किसी बात को न जानूँ।" (1 कुरिन्थियों 2:2)।

पौलुस के समान हमें भी आत्मिक चीजों के महत्त्व को स्पष्ट अनुभव करने की आवश्यकता है। गलातियों 6:8 कहता है, "क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।"

2. अवज्ञा

एक बार जब हम परमेश्वर के वचन को जानते हैं तो इसे मानने की हमारी जिम्मेवारी है। हम में से अनेक आज्ञापालन करना चाहते हैं परन्तु कभी-कभार हम इसे टाल देते हैं। विलम्बन (विलंबित आज्ञापालन) भी अवज्ञा है, और हमें तकलीफ पहुँचा सकता है। याकूब 4:7 हमें एक अच्छी सलाह देता है: "परमेश्वर के अधीन हो जाओ...।" जब परमेश्वर मुझे कुछ करने के लिए कहता है तो लिख लेने में मुझे मदद मिलती है। यह मुझे याद दिलाता है कि यदि मैं परमेश्वर की आशीष चाहता हूँ तो मुझे आज्ञाकारी होना जरूरी है। "यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम उत्तम पदार्थ खाओगे" (यशायाह 1:19)।

3. आपके विश्वास को शुद्ध करना और परखना

कभी-कभी लोगों को आश्चर्य होता है कि उन्हें परीक्षा या दुख के एक मौसम में से गुजरना जरूरी है। सम्भवतः वे परमेश्वर के वचन को सीखने और मानने में विश्वासयोग्य थे, परन्तु फिर भी परिक्षाएँ आईं। कभी-कभी परिक्षाएँ हमारे विश्वास को मात्र परखने और शुद्ध करने के लिए आती हैं। "इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिए नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दुख में हो; और यह इसलिए है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे" (1 पतरस 1:6-7)।

4. टूटा हुआ होने की आवश्यकता

"टूटा हुआ" शब्द कुछ लोगों में डर पैदा कर सकता है, परन्तु वास्तव में यह कोई खराब शब्द नहीं है। परमेश्वर हमारी आत्माओं को तोड़ना नहीं चाहता है, परन्तु वह बाहरी कवच (शरीर) को तोड़ना चाहता है जो उसे हम में और हमारे द्वारा जो वह बनना चाहता है उसे बनने से रोकता है। वह धमण्ड, विद्रोह, स्वार्थीपन और स्वाधीनता से हमारा सम्बंध तोड़ना चाहता है। परमेश्वर चाहता है कि हम सम्पूर्ण रूप से उस पर निर्भर हों, और दुख है जो हमें उस स्थान पर लाता है। फिर भी परमेश्वर पर निर्भर होने से हमें स्वयं पर दया महसूस नहीं होनी चाहिए। मैंने एक बार कहा, "परमेश्वर, मैं कितना अकेला हूँ, और मेरे पास आपके सिवाय और कोई नहीं है।" मैंने पाया है कि केवल परमेश्वर का अपने पास होना एक अच्छी स्थिति में होना है!

5. तरस बनाना

तरस उसी प्रकार की समस्याओं को अनुभव करके पैदा होता है। बाइबल कहती, "क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके ; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला" (इब्रानियों 4:15)। इससे मुझे शान्ति मिलती है कि यीशु मुझे समझता है और मुझ पर तरस खाता है। परीक्षाओं में से गुजरना और परमेश्वर के छुटकारे को अनुभव करना दूसरों की सेवा के लिए हमें अच्छी तरह से सज्जित करता है। हमारा दर्द व्यर्थ नहीं जाता है; यह हम में तरस लाता है जो दूसरे दुखी लोगों तक पहुँचता है और कहता है: "मैंने भी इसे अनुभव किया है, और परमेश्वर ने मुझे वहाँ से निकाला। और वह आपके लिए भी वैसा ही करेगा!"

6. दूसरों को प्रोत्साहित करना

प्रोरित पौलुस ने कहा कि ऐसी बहुत सी चीजें थीं जिनमें से परमेश्वर ने उसे, लोगों के लिए, मात्र एक विषय शिक्षा के रूप में गुज़रने दिया। "हे भाइयो, मैं चाहता हूँ कि तुम यह जान लो कि मुझ पर जो बीता है, उससे सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से अधिकांश मेरे कैद होने के कारण, हियाब बाँध कर परमेश्वर का वचन निधड़क सुनाने का और भी साहस करते हैं" (फिलि. 1:12, 14)। पौलुस की कैद में भी परमेश्वर द्वारा इस्तेमाल होने की उसकी स्थिरता और योग्यता प्रकट थी। यदि हमें दूसरों की सेवा करनी है तो हमें भी कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना है। परन्तु यदि हम विश्वास और भरोसे में खड़े रहें तो परमेश्वर हमें विजय में लाएगा, और प्रक्रिया में हम दूसरों के लिए एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन होंगे।

7. वचन के कारण

कभी-कभी हम परमेश्वर के वचन में मात्र सम्मिलित होने के कारण शत्रु के हमलों का सामना करते हैं। मरकुस 4:17 उन लोगों के बारे में बात करता है जो वचन को सुनकर आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं और थोड़े दिनों के लिए उसमें बने रहते हैं और फिर जब वचन के कारण उन पर क्लेश या उपद्रव होता है, तो वे तुरन्त ठोकर खाते (अप्रसन्न, क्रुद्ध, नाराज हो जाते) हैं, और गिर जाते हैं। जब कोई परमेश्वर के वचन को ग्रहण करता है तब शैतान तुरन्त जो हृदय में बोया गया था उसे चुराने के लिए आने में आनन्द लेता है। वह जानता है कि वचन हमें मजबूत करेगा और एक जयवन्त मसीही जीवन जीने में हमारी मदद करेगा, और यदि मुमकिन हो तो वह इसे रोकने का प्रयास करेगा। इसलिए अपने हृदय में वचन की रखवाली करना और शैतान को चुराने नहीं देना महत्त्वपूर्ण है।

8. संसार में जीवन जीने के कारण

अनेक बार मसीही परखे जाते और दुख उठाते हैं केवल इसलिए कि हम पाप से भरे संसार में रहते हैं। (2 तीमूथियुस 3:12)। परन्तु यीशु ने कहा, "मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है" (यूहन्ना 16:33)।
क्या अदभुत प्रतिज्ञा है! अपने दुखों के कारण को समझना और जिस महिमा के हम भागी होंगे उसका आश्वासन होना, हमारे लिए जीवन का आनन्द लेना थोड़ा आसान कर देगा ... "दुख में भागी होने" के दौरान भी!

परन्तु यदि हम विश्वास और भरोसे में खड़े रहें तो परमेश्वर हमें विजय में लाएगा, और प्रक्रिया में हम दूसरों के लिए एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन होंगे।

एक मसीही जीवन शैली विकसित करना

जीवन शैली आजकल एक लोकप्रिय शब्द बन गया है। मैं ने एक किताबों की दुकान में एक व्यक्ति से मसीह के बारे में बात की और उसे अपनी विशेष सभाओं में बुलाया। उसने उत्तर दिया, "यह मेरी जीवन शैली नहीं है", जैसे कि ऐसा कहने से उसे परमेश्वर के बारे में और बातचीत करने से छूट मिल गई। मसीही भी स्वयं को "जीवन शैली" नामक एक अनन्य छोटे कोया में लपेट लेते हैं। "हर एक स्वयं को देखो", वे कहते हैं, जिसे इस प्रकार भी कहा जाता है "मैं अपने तरीके से कर रहा हूँ।"

आओ हम रोमियों 12 का अध्ययन करें और एक सच्ची मसीही जीवन शैली विकसित करना सीखें।

प्रस्तुतीकरण

रोमियों 12 की पहली आयत में हम पढ़ते हैं कि हमें अपने शरीर मसीह को प्रस्तुत करने हैं। वैसे भी उसने जब स्वयं को कलवरी के क्रूस पर हमारे लिए फिरौती के रूप में दिया था तो उन्हें खरीदा था। आगे भी ध्यान दो कि रोमियों 12 "इसलिए" शब्द के साथ शुरू होता है। यह अध्याय 11 के अन्तिम आयत की ओर इशारा करता है: "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सबकुछ है। उसकी महिमा युगानुयुग होती रहे : आमीन।" यह व्यवस्थित कर देता है। सबकुछ जो हमारे पास है यीशु में है, और उसके द्वारा और उसके लिए है। उसके बिना हम क्या होंगे? इसलिए पौलुस हमें आग्रह करता है कि हम अपने शरीरों को जीवित बलिदान "उचित सेवा" के रूप में उसे प्रस्तुत करते हुए मसीही जीवन शैली में प्रवेश करें। हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को समझने की यह एक कुँजी है। परमेश्वर अब पुराने नियम की वेदियों पर लहू बहते हुए बलिदान नहीं माँग रहा है। मसीह परमेश्वर का मेमना है, और उसका एक ही बार का बलिदान (इब्रानियों 7:27; 9:28) जब हम अपने शरीर उसे प्रस्तुत करते हैं तो हमारे लिए नया जीवन शैली उपलब्ध कराता है। और पहली आय प्रकट करती है कि यह प्रस्तुतिकरण पवित्र और ग्राह्य दोनों है और उचित भी। क्या हम कभी उसकी उपस्थिति में अपने शरीर उसे और उसकी सेवा के लिए समर्पित करने के लिए रुके हैं (Cf. रोमियों 6:13)।

रूपान्तरण

रोमियों 12 अपने शरीर उसे प्रस्तुत करने के फलस्वरूप एक क्रान्तिकारी परिवर्तन, एक रूपान्तरण के बारे में बात करता है। हमें अब इस संसार के सदृश नहीं बनना है, इसलिए रूपान्तरण शुरू होने से पहले सदृश बनना छोड़ देना चाहिए।
हम में से अनेक अभी भी संसार के सदृश हैं, अभी भी इसके साथ ताल-मेल में हैं, अभी भी साँचे में फँसे हैं। हम इस प्रकार के वचनों को जो 1 यूहन्ना अध्याय दो में दिए हैं जल्दी जल्दी पढ़ लेते हैं जहाँ हमें बताया गया है कि संसार से प्रेम न करें और न ही "संसार में की चीजों" जैसे कि रुपया-पैसा से प्रेम करें (1 यूहन्ना 2:15)। इनमें की कुछ संसार की चीजें अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु हमें उनसे प्रेम नहीं करना है। इसके बदले, हम कुछ ऊँचे और अति पवित्र का आनन्द लेते हैं - उसकी समानता में महिमामय रूपान्तरण का। और हमारे जीवनों का यह रूपान्तरण हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को ले आता है। (रोमियों 8:29-30)। इसे यहाँ "भली, और भावती, और सिद्ध" घोषित किया गया है। सिद्धता को मात देना कठिन है! परमेश्वर की इच्छा से कुछ भी कम अपूर्ण है।

दीनता

आगे, परमेश्वर दीनता के बारे में बात करता है, परमेश्वर और मनुष्य के सम्मुख स्वयं को दीन करना। हमें रोमियों 12:3 में आदेश दिया गया है कि जैसा हमें स्वयं को समझना चाहिए उससे बढ़कर अपने आप को न समझें। कुछ धार्मिक प्रदर्शन जो आजकल हम देखते हैं शरीर का जलूस होता है, और कुछ लोग जिन्होंने परमेश्वर के लिए जीना आरम्भ किया था अब हमेशा अपने बारे में, अपनी उपलब्धियों, अपनी पुस्तकों, अपने गीतों, अपने अनुभवों के बारे में बात करते हैं और हम सोचते हैं परमेश्वर इन सब के बारे में क्या सोचता होगा।
दीनता लगता है एक लुप्त कला है। फिर भी परमेश्वर कहता है, "इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए" (1 पतरस 5:6)। और यह दीनता केवल परमेश्वर की ओर हमारी अधीनता के बारे में है बल्कि जो हमारे आस-पास हैं उनके प्रति भी है, क्योंकि हम पढ़ते हैं कि दूसरों को अधिक चाहना हमारे लिए सम्मान की बात है (रोमियों 12:10 देखो)। (हम में से अधिकाँश स्वयं को अधिक चाहते हैं!)। दूसरों पर अधिकार जताने के बजाय, "आपस में एक मन रखो;

अभिमानी न हो, परन्तु दीनों के साथ संगति रखो" (आय. 16)। और अन्त में वह इस आज्ञा के साथ समाप्त करता है, "अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो"।

निर्देश

जैसे हम अपनी सेवकाई के लिए उसकी योजना खोजते हैं, तो निर्देश की बात होती है। "उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं" (रोमियों 12:6)। तो चाहे वह चाहता है हम सेवा करें, सिखाएँ, दें या अगुआई करें, हम स्वयं को उस काम के लिए परिश्रम, सरलता, विश्वासयोग्यता और प्रसन्नता से दें।
मसीह ने कहा, "जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है" (यूहन्ना 9:4), और जब तक हमें पता न चल जाए वह क्या चाहता है हम करें, हमें विश्राम नहीं करना है और फिर उस निर्देश का पालन करना है।

पृथक्करण

बहुत लोग आजकल पृथक्करण को त्याग देना चाहते हैं, परन्तु यहाँ हमें कहा गया है कि हमारा प्रेम निष्कपट हो; और कि "बुराई से घृणा करो; [और] भलाई में लगे रहो" (रोमियों 12:9)। आज की धार्मिक जीवन शैली जो "मसीही" लगती है, उसे बुराई से घ्रणा करना है, हाँ, "उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है" (यहूदा 1:23)।
हमें अपने जीवनों में से गंदगी और कालिख को दूर रखने के लिए परिश्रमी होना है। एक छोटे लड़के ने एक बार कहा, "मैं जानता हूँ फूल क्यों बढ़ते हैं, वे जल्दी करना और गंदगी में निकल जाना चाहते हैं!"
पौलुस ने सोचा "हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ?" (रोमियों 6:2)। हमें संसार में से निकलना और एक पृथक लोग बनना है (2 कुरिं. 6:17 देखो)। क्या हम "नई सृष्टि" नहीं हैं?

समर्पण

हमारा कुछ भी धंधा क्यों न हो, हमें उसके प्रति समर्पित होना है। "प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद से भरे रहो; प्रभु की सेवा करते रहो" (रोमियों 12:11)। अनेक मसीहियों ने, प्रभु के लिए, नौकरी में आलसी बनकर या अपना अति उत्तम प्रयास करने में असफल रह कर अपनी गवाही को हानि पहुँचाई है। हम प्रभु के सेवक हैं और हमें अपना काम उचित ढंग से करने का प्रयास करना चाहिए (कुलु. 3:23), "तुम जानते हो कि तुम्हें इसके बदले प्रभु से मिरास मिलेगी; तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो" (आय. 24)।
पौलुस रोमियों 12:12 में आगे कहता है, "आशा में आनन्दित रहो; क्लेश में स्थिर रहो; प्रार्थना में नित्य लगे रहो।" एक उन्माद से भरा, आनन्दित, धीरजवन्त मसीही कुछ दुष्प्राप्यता सा है, है ना? परन्तु मैं विश्वास करता हूँ कि हम में से हर एक उतना समर्पित हो सकता है जितना हम चाहते हैं, परमेश्वर कभी भी एक नामुमकिन आज्ञा नहीं देता है।

साहचर्य

पौलुस हमें दूसरे सन्तों की आवश्यकताओं के लिए स्वेच्छा से देने के लिए चुनौती देता है (रोमियों 12:13 देखो)। हमें उदार और मेहमाननवाज होना है। स्वार्थी, कंजूस, मक्खीचूस लोग हमेशा दुखी रहते हैं, और एक अप्रिय चेहरा अक्सर ऐसे विश्वासियों की आत्मकेन्द्रित जीवन शैली प्रर्दशित करता है।
हम परमेश्वर की सेवा समर्पित विश्वासियों के रूप में करने वाले हैं। कुछ लोग सम्भव है हमें सताएँगे, परन्तु हमें उन्हें आशीष देना है और स्राप नहीं देना है (आय. 14 देखो), हो सकता है कभी हमारा ऐसा करने का मन करे। "जहाँ तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो" (आय. 18)। मुझे खुशी है परमेश्वर ऐसा यहाँ कहा है। हम सबका अनुभव है कि किस प्रकार हमने उस किसी के साथ जो हमें पसन्द नहीं करता, मेल मिलाप में रहने के प्रयास में स्वयं को थका दिया है, चाहे कितनी भी कोशिश हमने की हो! हम मसीही सामान्य रूप से दूसरों की तुलना में लोगों के साथ अच्छी तरह मेल मिलाप में रह सकते हैं। सहज बुद्धि इस्तेमाल करने में मदद मिलती है। प्रयोगात्मक बनो। सच्चे बनो। खुश रहो। असली बनो। जब हमने ऐसा कर लिया है और इसे प्रार्थना में भी भिगोया है, तो हम जो कर सकते हैं जब उसे किया है तो परमेश्वर अधिकार में ले लेगा और अपने तरीके से हमारे प्रयासों को आशीष देगा।
"बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा" (आय. 19)। क्या यह जानना अदभुत नहीं है? तब तक "आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो, और रोनेवालों के साथ रोओ" (आय. 15)। हमें सच्चे दिल से दूसरों में रुची रखनी है और

"आपस में एक मन" रखना है (आय. 16)। और दूसरों के साथ सहचर्य में रहने का एक सबसे महत्तवपूर्ण भाग है "बुराई के बदले किसी से बुराई न करो; जो बातें सब लोगों के निकट भली हैं, उनकी चिंता किया करो" (आय. 17)। यदि हम सम्पूर्ण रूप से सच्चे नहीं हैं तो हमारे चरित्र में कहीं कुछ घोर त्रुटि है जो लोगों को प्रभु से दूर ठकेल सकती है जिनके बारे में हम कहते हैं हम उनसे प्रेम करते हैं। जैसे किसी ने कहा है, "जो चीज अधिकाँश लोगों को कलीसिया में से बाहर रखती है वो भीड़ है जो पहले से कलीसिया में है!"

उल्लास

संकलन जो उल्लास की ओर ले जाता है, मसीही जीवन शैली के इस अध्याय के आखिरी आयत में पाया जाता है। "बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो" (आय. 21)। तो हम बुराई को भलाई से जीत लेते हैं! सबसे अच्छा बचाव एक जोरदार आक्रमण है, जैसा कि अनेक फुटबाल कोच आपको बताएँगे। हमें धूल में पड़े शैतान से नज़र हटा कर प्रभु की सेवा के लिए स्वयं को तेज करना है। जीवन के प्रभु के आगमन तक, हमारी जीवन शैली ऐसी ही हो!

पवित्रता – कुँजी है: समर्पण

पवित्रता के बारे में बात करने की कुँजी है समर्पण! व्यक्ति के हृदय, मन, प्राण और शक्ति का समर्पण एक जयवन्त जीवन जीने में एक सुनिश्चित कुँजी है। उस प्रकार के जीवन को अनुभव करना जिसे पौलुस ने जीया था जहाँ "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है" (गलातियों 2:20), जो अहम् के निस्संकोच समर्पण के बिना नामुमकिन है। हम आदम के अहम् के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जिससे कलवरी पर निपटा गया है (रोमियो 6:6), बल्कि इसहाक के बारे में बात कर रहे हैं। हालाँकि यह पाप में नहीं परन्तु प्रतिज्ञा से पैदा हुआ है, फिर भी इसे समर्पित होने की आवश्यकता है। कुछ लोग इसे पढ़ते हुए सफल जयवन्त मसीही जीवन की लुप्त कड़ी को पहचान लेंगे। प्रश्न अक्सर पूछा जाता है, "मैं इस समर्पण को कैसे करूँ?" व्यक्तिगत रूप से मैं इस प्रश्न को रहस्यमय पाता हूँ। यह मेरे मन में कभी भी नहीं आया है कि इसे कैसे करना है जान पाना कठिन है।

जब मेरे भाई या मित्र ने मुझे अपना साइकिल एक या दो सप्ताह के लिए सौंपने के लिए कहा, तो मुझे पता था इसका अर्थ क्या है - कि उस समय के दौरान मैं उसे इस्तेमाल नहीं कर पाऊँगा। जब प्रभु ने जब मैं क्षेत्र में था मेरी नई कार को अपने दुभाषिया को सौंपने को कहा, तो मैं समझ गया कि यह पूरी तरह से उसकी है और मैं इसे दोहारा चला नहीं पाऊँगा। मैंने ऐसा नहीं कहा, "मैं इसे तुम्हें उधार दे रहा हूँ, और जब मैं मिलने के लिए लौटूँगा तो इसे इस्तेमाल करना चाहूँगा।" मेरी समझ में समर्पण का अर्थ था बिना शर्त त्याग देना। मेरे लिए समर्पण का अर्थ है त्याग देना, इस पर से अपने हाथ हटा लेना क्योंकि यह अब तुम्हारी नहीं है। इसी तरीके से मैंने अपना जीवन, अहम् और इच्छा परमेश्वर को सौंप दिए थे। जब तुम ऐसा करते हो तब तुम्हारा जीवन, समय और योग्यताएँ तुम्हारी नहीं रहतीं। उन्हें मालिक की इच्छा के अनुसार किसी भी समय, स्थान और तरीके से इस्तेमाल होना है।

किसी को लग सकता है कि परमेश्वर का ऐसे समर्पण की माँग करना अनुचित है। हम इस प्रकार महसूस कर सकते हैं यदि हम स्वामित्व और जीवन के बारे में परमेश्वर के नियमों को नहीं समझते। हम अपने नहीं हैं, हमें मोल देकर खरीदा गया था। वह कीमत चाँदी या सोने जैसी कोई धातू नहीं थी, परन्तु उसका अपना बहुमूल्य लहू था। "क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है, उससे तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ; पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने, अर्थात् मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हुआ" (1 पतरस 1:18-19)। क्योंकि उसने हमें मृत्यु से, परमेश्वर से अनन्त विच्छेद से, अनन्त नरक से छुड़ाया है तो उसे सम्पूर्ण आज्ञापालन की माँग करने का हक है।
परन्तु यह उससे भी आगे जाता है। यहाँ एक प्रेम का नियम भी शामिल है। मैं जानता हूँ कि ऐसा समर्पण मेरी भलाई के लिए है। उसने न केवल अपना प्रेम मेरे लिए मरने के द्वारा दिखाया, बल्कि वह चाहता है कि मैं जीवन पाऊँ और बहुतायत का जीवन पाऊँ (यूहन्ना 10:10)। जो अपना प्राण "खोए वह उसे जीवित रखेगा" (लूका 17:33)। यदि मैं स्वयं के लिए जीने से इन्कार करूँ और अपना सबकुछ उसे समर्पित करूँ, तो वह उसे इस प्रकार इस्तेमाल करेगा कि यह पूरी क्षमता तक जीया जाएगा। परमेश्वर को स्वीकार्य होना, दूसरों के लिए आशीष होना आत्मवास्तविकता लाता है। पाप की सेवा करते हुए आत्मवास्तविकता पाना असम्भव है। पाप कार्यान्वित होगा। मनुष्य को शैतान के स्वरूप और समानता में होने के लिए नहीं बनाया गया था। नया जन्म पाया मनुष्य का परमेश्वर के स्वरूप और समानता में रूपान्तर और सदृश हो रहा है। जब यह नया मनुष्य मसीह के महत्ता में परिपक्व होता है, इसे आत्मवास्तविकता कहते हैं। तब भी वह इसके लिए कोई श्रेय नहीं ले सकता है क्योंकि यह मसीह है जो उसमें जीवित है।
नये जन्म पाए व्यक्ति की इच्छा स्वयं से बलिदान में समर्पित होनी चाहिए। "जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है" (यूहन्ना 12:24)। उसे अपने लिए नहीं जीना है। उसे अपने अंगों को पाप के लिए नहीं बल्कि धार्मिकता के लिए समर्पित करना चाहिए। परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता और पवित्र बेटा समर्पित कर दिया। अब्राहम ने परमेश्वर से ऐसा प्रेम किया और वाचा के सम्बंध को ऐसा हृदय में बसाया कि उसने अपना एकलौता प्रतिज्ञा का बेटा दे दिया। यदि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं तो हम स्वयं को वेदी से रोके नहीं रखेंगे। क्योंकि हम आशीष नहीं पा सकते हैं इसलिए हम आशीष नहीं बन सकते हैं। वह उसी को आशीष दे सकता है जो उसके लिए समर्पित है। प्रेरित पौलुस ने इस प्रकार का समर्पण अनुभव किया था। उसने वास्तव में जीवन का उद्देश्य पाया था। कोई आश्चर्य नहीं कि वह कलीसिया को कहता है:
"इसलिए हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यह तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)। एक बार उसने गलातियों के लिए नया जन्म पाने के लिए प्रार्थना की थी, अब वह कहता है: "हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिए जच्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ" (गलातियों 4:19)।

पवित्र आत्मा तब ही हम में मसीह गढ़ सकता है जब हम उसके प्रति समर्पित होंगे। हम उसकी 'poiema' (यूनानी) कारीगरी हैं (इफि. 2:10)। जिस प्रकार मूर्तिकार लकड़ी या पत्थर के एक अच्छे टुकड़े पर काम करता है, उसी प्रकार पवित्र आत्मा नए मनुष्य को मसीह के स्वरूप और समानता में गढ़ रहा है। परमेश्वर अपने पुत्र से बहुत प्रसन्न था। परमेश्वर के चरित्र और स्तर की माँग मसीह की समानता से कम नहीं है। यदि हम अविकसित आत्मिक बौने होते तो हम सारे अनन्तकाल में कभी भी खुश नहीं हो पाते। यदि हम अपना सबकुछ उसे समर्पित करें तब ही वह हम में काम कर सकता है और हमें परिपक्वता में ला सकता है।

वह उस मन और इच्छा को दोबारा बना और रूपान्तर नहीं कर सकता है जो समर्पित नहीं है। मसीह समानता, पाप से ऊपर का जीवन जीने की यह कुँजी है। एकान्तरतः सम्पूर्ण समर्पण की कमी निरन्तर असफलता और पाप की कुँजी है। एक समर्पित मन परमेश्वर के विचार सोचेगा। यह स्वयं में नहीं बल्कि ऊपर की चीजों और दूसरों में विचारमग्न रहेगा। मैंने "दूसरे" कहा क्योंकि नया जन्म पाए लोग अक्सर स्वयं के साथ लवलीन रहते हैं। हाँ, वे नया जन्म पाए हैं। उनमें नया स्वयम है जो मसीह के डीलडौल में परिपक्व होने के लिए स्वयं से ऊपर उठना चाहता है। परन्तु क्योंकि इच्छा-शक्ति बिना शर्त समर्पित नहीं हुई है, और क्योंकि शैतानी शक्तियाँ उस नए स्वयम को एक "देवता" बनाने में निरन्तर लगी हुई हैं, इच्छा-शक्ति अक्सर इन शक्तियों को सहयोग दे देती हैं।

हम ऐसी शक्तियों को हव्वा में काम करता हुआ देखते हैं। उसका एक "स्वयं" और एक स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति थी। शैतान ने इच्छा-शक्ति को "स्वयं" को एक देवता बनाने के लिए आग्रह किया। उसका कोई 'शारीरिक स्वयं' नहीं था फिर भी उसने प्रतिक्रिया दिखाई और स्वयं को शारीरिक बनने दिया। उसने 'अपने मन की आत्मा' को एक दुष्ट आत्मा को उत्तर देने दिया, शारीरिक बन गई और शारीरिक काम किया। इसकी तुलना में, यीशु, दूसरे आदम ने आदम की स्थिति अपनाकर (इब्रानियों 2:7,9), जो एक स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति वाला मनुष्य बना, तुरन्त उस इच्छा-शक्ति को पिता के हवाले कर दिया और केवल पिता की इच्छा पूरी की। जब शैतान ने उसकी अपनी इच्छा करवाने के लिए बहुत दवाब डाला तो उसने तुरन्त लिखित वचन घोषित किया। 'तब यीशु ने उससे कहा, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है : "तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर"' (मत्ती 4:10)।

इसलिए परमेश्वर के वचन को जानना महत्त्वपूर्ण है। जब पापी के आत्मा में उद्धार का काम होता है तो मसीह आत्मा में आ जाता है और सब चीजें नई हो जाती हैं (2 कुरिं. 5:17। इस नया जन्म पाई आत्मा में कोई पुराना शारीरिक स्वभाव नहीं है बल्कि एक नया स्वभाव है। "पुराना मनुष्य" (रोमियों 6:6), "पुराना स्वयं" नहीं, एक नया स्वयं, और एक नई इच्छा-शक्ति। यह इच्छा-शक्ति, यदि सम्पूर्ण रूप से यीशु को समर्पित नहीं होती, तो इस नए स्वयं को एक "देवता" बनने की इच्छा में ले जाएगा। जब ऐसा होता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति ने परमेश्वर को खो दिया है या कि व्यक्ति दुष्टात्माग्रस्त है। नए विश्वासी के अन्दर परमेश्वर का आत्मा 'मन के आत्मा' के द्वारा इच्छा-शक्ति के साथ संघर्ष करता है कि वह परमेश्वर के आत्मा की ओर सम्पूर्ण रूप से समर्पित हो जाए और आत्मा में चले। शत्रु भी जिसे बेदखल कर दिया गया था, शरीर के कामों को कराने के लिए 'मन के आत्मा' के द्वारा इच्छा-शक्ति के साथ संघर्ष करता है। वह जानता है कि सामान्य विश्वासी व्यभिचार, कत्ल, नशा या ऐसे काम नहीं करेगा। यह तो उन पर "गरजते हुए शेर" की तरह आना होगा और बहुत सरलता से पता चल जाएगा, इसलिए वह ज्योतिर्मय स्वर्गदूत के समान आता है। "यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कोई बड़ी बात नहीं, परन्तु उनका अन्त उनके कामों के अनुसार होगा" (2 कुरिं. 11:14, 15)।

जब वह एक "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" के समान आता है तो वह वैसे ही आता है जैसे वह हव्वा के पास आया था। "तुम निश्चय न मरोगे - तुम परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।" "तुम कुछ बन जाओगे। परमेश्वर तुम पर रोक लगा रहा है। परमेश्वर की उपासना करने के बजाय तुम्हारे पास भी क्षमता है कि तुम भी देवता बन जाओ ताकि तुम्हारी उपासना हो। परमेश्वर केन्द्रित मत बनो - स्वयं केन्द्रित बनो। मेरे पीछे आओ और मैं तुम्हें सुख, पूर्ति, रोमांच, सम्मान दूँगा। तुम कुछ बन जाओगे, लोग तुम्हें झुककर प्रणाम करेंगे, तुम्हारा नाम और चेहरा संसार के शामियानों पर होगा। देखो तो यीशु तुम्हें क्या देना चाहता है - क्रूस। वह चाहता है तुम स्वयं को वेदी पर रख दो। वह चाहता है तुम एक दास बनो। मैं तुम्हारे लिए लोकप्रियता और जीवन का प्रस्ताव रखता हूँ। मन की आत्मा महाशत्रु से ऐसे प्रचार को सोख लेता है और इच्छा-शक्ति को एक विकल्प देता है। शैतान मन को यह नहीं बताता कि जीवन मृत्यु के द्वारा आता है। ऐसे तर्क उसके लिए अप्रासंगिक हैं क्योंकि वह स्वयं को मृत्यु के बारे में कुछ नहीं जानता है।

वह यह सच्चाई नहीं जानता है कि: "जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई उसे खोए वह उसे जीवित रखेगा" (लूका 17:33)।

इसलिए शैतान "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" के समान आता है और कहता है, "अपने बारे में सोचो। परमेश्वर और दूसरों के बारे में सोचो। स्वयं-केन्द्रित बनो, स्वयं-चिन्तित बनो, असंयमी बन जाओ। नहीं, तुम्हें मसीह का इन्कार करने की आवश्यकता नहीं है, केवल इतना मसीह-केन्द्रित और लोग-केन्द्रित मत बनो।" परीक्षाओं की इन गोला-बारी से वह हिम्मत नहीं हारता है। वह परिपक्व पास्टर को कहता है, "तुम ने मसीह के लिए मेहनत की है, अपने परिवार की परवाह नहीं की, सेवा-निवृत्ति कार्यक्रम को बनाने में असफल रहे। अब आओ भी, इन चीजों को अपने कंधे से निकाल फेंको, और परिवर्तन के लिए अपने बारे में सोचो।"

सेवक की पत्नी के कान में वह फुसफुसाता है, "अपने सारे विवाहित जीवन में तुम अपने पति और परमेश्वर की दास बनी हुई हो। तुम उसके जीवन, वचनबद्धता और समय में दूसरे स्थान पर हो। जब दूसरे छुट्टियों पर चले गए होते हैं और सफर कर रहे होते हैं तो तुम तो चीजों के साथ ठहरी रहती हो। तुमने लोगों, सुसमाचार-प्रचारकों और प्रचारकों की सेवा की है। तुम्हारा घर सबके लिए सराय बना हुआ है और न कि तुम्हारा अपना व्यक्तिगत घर है। तुम कभी भी उस प्रकार कपड़े नहीं पहन पाई जैसा तुम चाहती थी, या औरों के समान गहने या श्रृंगार नहीं कर पाई हो, क्योंकि तुम्हें हमेशा दूसरों के लिए एक आदर्श बनना था। अब जरा सोचो। तुम्हें पता नहीं तुम क्या खो रही हो। तुम्हारा पति शहर से बाहर गया है। मजा करो, जैसा कि सब कर रहे हैं। परिवर्तन के लिए अपने बारे में सोचो।" कभी-कभी उसे एक अल्पकालिक विजय मिल जाती है।

बेशक यदि वह पुराना शैतान, वह चतुर साँप, "ज्योतिर्मय स्वर्गदूत" जो अन्धकार है, प्रचारक या उसकी पत्नि पर अपने हाथ नहीं डाल सकता है तो उसे उनके बच्चों तक पहुँचना है। वह उनसे उनकी "आदर्श बनो" स्थिति की ओर नाराजगी पैदा करता है। "तुम्हें दूसरे बच्चों से भिन्न क्यों होना है? यह तुम्हारी गलती नहीं है कि तुम्हारे माता-पिता ने ऐसा संकीर्ण, अनैसर्गिक जीने का तरीका चुना है। तुम्हें एक मजेदार जीवन से वंचित रखा गया है। वे कितने कट्टर, सीमित और कठोर हैं। उनकी भाषा में "ऐसा मत करो" और "ऐसा करो" अधिक होता है। दूसरे बच्चे सबके निहारने के लिए एक ग्लास कटोरे में एक सुनहरी मछली के समान बंद नहीं हैं। वे निरन्तर सूक्ष्म परीक्षण में नहीं है। और याद रखो किस प्रकार तुम्हारे माता-पिता को रात भर फोन आते रहते हैं। उनके जीवन उनके अपने नहीं हैं। उन गालियों के बारे में तो जरा सोचो जो तुम्हारे पिता को लोगों और दूसरे अगुओं से मिलती हैं। क्या तुम ऐसे बेलिहाज लोगों के लिए बलिदान होना चाहोगे? इसे छोड़ो, बाइबल स्कूल और इस सुसमाचार प्रचार चीज को भूल जाओ। अपने प्रतिबंधक माता-पिता के निर्देशों से निकल आओ। उनके स्तर और नियम बिलकुल पुराने हैं। उनके समान जीवन खो मत दो। अपने बारे में सोचो। जब तुम नौजवान ही हो मजा करो।"

शत्रु द्वारा सताए जाकर और लिखित वचन पर निर्भर न होकर वे धोखा खाते हैं। "वे वायु बोते हैं, और वे बवन्डर लवेंगे" (होशे 8:7)। जब टुकड़े बटोरने का समय होता है तब प्रेमी माता-पिता अभी भी वहाँ होते हैं। परन्तु शैतान भी एक अच्छे प्रख्यापित तमाशे पर हँस रहा होता है। आओ शिमशोन को देखें (न्यायियों 16:21) जो चक्की पीस रहा है। अंधा और बँधा हुआ, बोझ से दबा और नाराज परन्तु चक्की पीस रहा और बदनामी का एक सार्वजनिक विषय बना है। नहीं, शैतान उन्हें एक अ-समर्पित इच्छा-शक्ति का अन्तिम परिणाम कभी नहीं देखने देता है। गुमराह पुत्र बदनाम है परन्तु जब तक जीवन है तब तक सम्पूर्ण पुत्रत्व में वापसी की आशा बनी हुई है। गुमराह पुत्र एक अ-समर्पित इच्छा-शक्ति की कीमत और समर्पण के परिणाम की एक सजीव तस्वीर है। एक पुत्र, एक मिरास, एक स्वयम और एक इच्छा-शक्ति - भविष्य इच्छा-शक्ति में है। उसे फैसला करना था कि क्या वह अपनी विरासत को बहुमूल्य समझेगा, पिता की ओर विश्वासयोग्य रहेगा और अपने सम्पूर्ण क्षमता तक जीवन जीएगा या विरासत को उड़ा देगा। उसने दूसरे को चुना। पाप का सुख कुछ समय तक ही चला। जल्दी ही संसार उस पर ढह गया। तब तक न तो उसका सांसारिक पिता और न ही पिता जो स्वर्ग में है उसकी कोई मदद कर सका जब तक उसने अपनी इच्छा-शक्ति को इस्तेमाल नहीं किया और कहा:

"जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा, 'मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ। मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा कि पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है। अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ, मुझे अपने एक मजदूर के समान रख ले।' तब वह उठकर, अपने पिता के पास चला : वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, 'पिता जी, मैं ने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप किया है; और अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊँ।' परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहिनाओ, और उसके हाथ में

अँगूठी, और पाँवों में जूतियाँ पहिनाओ, और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएँ और आनन्द मनाएँ। क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, फिर जी गया है : खो गया था, अब मिल गया है।' और वे आनन्द करने लगे।" (लूका 15:17-24)।

यदि किसी गुमराह के समान कोई अपनी सेवा करके चूक गया है तो ऐसों के लिए क्या महान खबर दी गई है? खबर यह है कि पिता इन्तज़ार कर रहा है, उन्हें पुनःप्रतिष्ठित करने के लिए जो "इच्छा-शक्ति" रखते हैं। एक अ-समर्पित इच्छा-शक्ति एक पुत्र को सुअर-बाड़ा में ले जा सकती है। एक सम्पूर्ण रूप से समर्पित "इच्छा-शक्ति" व्यक्ति को स्वर्गीय स्थानों में "सिंहासन" तक ले जाएगी। हाँ, सिंहासन का रास्ता अपने क्रूस को उठाना, जीवन में, गतसमनी में, क्रूस तक, मृत्यु से महिमामय पुनरुत्थान और सिंहासन के अधिकार और सामर्थ्य तक है।

मसीही जीवन की सफलता मालिक की इच्छा के सामने अपनी इच्छा-शक्ति के सम्पूर्ण समर्पण से न तो अधिक और न कम की माँग करती है। जैसा यीशु ने जीवन जीया (1 यूहन्ना 2:6) वैसा जीवन जीने की सफलता या असफलता इस निर्णायक बात पर टिकी है। इस प्रकार के जीवन के लिए समर्थ करनेवाली शक्ति और सफलता यहाँ से शुरू होती है। यह एक "सम्पूर्ण स्वरूप" प्राप्ति का भ्रूण है, एक सम्पूर्ण "स्वयं-कार्यान्वित मसीही जीवन" की कुँजी है। आत्म-प्राप्ति और स्वयं-कार्यान्वित पंथ "स्वयं" को बड़े बड़े शब्दों में लिखते हैं। मसीह में स्वयं-कार्यान्वित विश्वासी मसीह को बड़े बड़े शब्दों में लिखते हैं। "मेरे लिए जीवित रहना मसीह है, और मर जाना (स्वयं के लिए) लाभ है।" स्वयं तब ही परमेश्वर को स्वीकार्य हो सकता है जब यह मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।

मसीही कहता है, "स्वयं से प्रेम करो" क्योंकि तुम अपने सृष्टिकर्त्ता के लिए सम्पूर्ण क्षमता तक जीवन जी रहे हो। स्वयं से प्रेम करो क्योंकि तुम ने शैतान को अपनी विरासत लूटने नहीं दी है। तुम ने सीधा और संकीर्ण पथ पर चलना चुना है। तुम ने शैतान को अपने मन में बुरी कल्पनाओं को बोने नहीं दिया है। तुम ने अपना मन पवित्र आत्मा पर रखा है और शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार चले हो (गलातियों 5:16-18)। तुम ने अपना कुँआरापन विवाह के लिए सम्भाल कर रखा है। तुम ने अपनी इच्छा-शक्ति और भावनाओं को क्रोध, झगड़ा और घृणा से दूर रखा है। तुम झूठ, मूर्तियों, नशा और कत्ल से दूर रहे हो। तुम ने अपने अंगों को धार्मिकता के लिए दिया है और तुम्हारा मालिक पवित्र आत्मा है। तुम पीछे मुड़कर जीवन को देखते हो, तुम ने यीशु को अपनी आत्मा पर राज्य करने दिया है और तुम स्वयं से प्रेम करते हो क्योंकि तुम ने उसे उसका जीवन तुम्हारे द्वारा जीने दिया है।

यदि हम अपना सबकुछ उसके सुपुर्द नहीं करते और स्पष्टतया से उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते, तो हम निरन्तर विभाजित वफादारी का सामना करते रहेंगे। खुशी, शान्ति, प्रशान्ति और उपलब्धी उन में नहीं पाई जाती हैं जिनकी वफादारियाँ बँटी हुई होती हैं। यीशु की कोई बँटी हुई वफादारी नहीं थीं। वह मृत्यु तक पिता की ओर वचनबद्ध था। "मैं तेरी इच्छा पूरी करने आया हूँ"। मृत्यु के सामने भी कोई हिचकिचाहट नहीं थी। न ही यूहन्ना बपतिस्मादाता मृत्यु के सामने हिचकिचाया था!

समर्पण वही है जो यह कहता है यह है - समर्पण! समर्पण संघर्ष, दमन, तनाव, त्यागने के सम्पूर्ण प्रयास या किसी चीज को मौत देना नहीं है। इसका अर्थ बिना-शर्त आत्मसमर्पण है। हम एक प्रेमी परमेश्वर को समर्पण करते हैं जिसके हृदय में हमारे लिए उत्तम चीजें ही हैं। हमारे जीवनों के स्रोत के सामने ऐसा समर्पण करना कठिन नहीं होना चाहिए।
जब यीशु ने अपना चेहरा यरूशलेम की ओर किया जहाँ उसे क्रूस का सामना करना था, उसे पता था कि वह पिता की इच्छा में मरने को जा रहा है। और यहाँ हम पतरस को परमेश्वर की इच्छा उसके जीवन में पूरी होने पर जोरदार आपत्ति उठाते हुए देखते हैं। उसकी हिम्मत तो देखो, वह यीशु को अलग ले जाकर कहता है, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे ! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा" (मत्ती 16:22)। पतरस के इरादे अच्छे ही होंगे परन्तु यह उतना पतरस नहीं कह रहा था जितना कि शत्रु कह रहा था। "उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो ! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है" (मत्ती 16:23)। ऐसे ही अवसर पर यीशु ने असली अर्थपूर्ण जीवन का नुसखा दिया है। "या तो अपने लिए जीओ और जीवन का असली उद्देश्य खो दो, या स्वयं को, जीवन को खो दो, इसे पूरी तरह मेरे हवाले कर दो ताकि मैं तुम्हारे द्वारा जी सकूँ और तुम जीवन का असली अर्थ पा लोगे।" "तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, 'यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बताना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा? मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता

की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा" (मत्ती 16:24-27)। हम कितनी ही बार इन वचनों को लेकर पापियों को प्रचार करते हैं और कहते हैं इसकी सच्चाई उन पर लागू होती है। परन्तु हमें याद रखना है कि ये शब्द उसके चेलों को एकान्त में कहे गए थे।

संसार की शिक्षा से यह शिक्षा कितनी विपरीत है। संसार कहता है, "अपने जीवन को मत गँवाओ। जीवन तब मिलेगा जब तुम प्रभाव डालोगे। तुम स्वाग्राही बनकर ही आत्मविकास प्राप्त कर सकते हो। एक स्वाग्राही व्यक्ति बनो। जब तक तुम अपना रास्ता बनाकर आगे नहीं आते तुम कभी पहचाने और अगुआई का स्थान नहीं पाओगे। वही संसार जो तुम्हें बताता है कि योग्यतम ही उत्तरजीविता है, इसलिए तुम्हें बाहर निकलकर लड़ते हुए ऊपर पहुँचना है, ऐसा करते हुए वे जबाव डालने लगते हैं और शत्रु बना लेते हैं। वे लोगों को चोट पहुँचाते हैं, तरस खो देते हैं और ऐसा करने के कारण दूसरों का सम्मान और आत्म-सम्मान खो देते हैं। पहचाने जाने के लिए उन्हें कहीं जाना होगा क्योंकि जब वे ऊपर चढ़ रहे थे तो उन्होंने कई लोगों को चोट पहुँचाई थी। संसार से हमारे प्रभु का उदाहरण कितना भिन्न है। "दूसरा गाल फेर दो, एक मील और जाओ, कोट और कुर्ता भी दे दो। भोज में निचला स्थान ग्रहण करो, चेलों के पाँव धोओ। स्वयं से पहले परमेश्वर और दूसरों को रखो। ऊपर जाने का मार्ग नीचे को जाता है।"

यह सिद्धान्त स्वाभाविक व्यक्ति को पसन्द नहीं आता है। "मैं किसी के लिए पायंदान नहीं बनूँगा।" "मैं अपने पति, अपने माता-पिता या दूसरों के जो मेरे ऊपर अधिकारी हैं अधीन नहीं होऊँगा।" बेशक, यह बातें तो स्वाभाविक मनुष्य कर रहा है क्योंकि आत्मिक व्यक्ति तो वचन जानता है और कहता है, "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो। (इफि. 5:21)। अधीनता कठिन या बोझिल नहीं है यदि हम समझते हैं कि दूसरों के अधीन होने की प्रक्रिया में हम मसीह के अधीन हो रहे हैं। जब मैं अधिकार के अधीन होता हूँ जिसे प्रभु ने नियुक्त किया है तो मैं परमेश्वर के अधीन हो रहा हूँ। परमेश्वर रोजाना के जीवन में, कलीसिया में और घर में, शासकों और अधिकारियों को रखता है। घर में उसी सीमा और परिमाण का सुख होगा जितना एक पति, पत्नी और बच्चे अपने स्वयम को दूसरे को सौंपने के योग्य होंगे। यह तब ही मुमकिन हो सकता है जब स्वयं को मसीह की प्रभुता में समर्पित किया जाता है।

हम स्वयं को समपर्ण करना इतना कठिन क्यों महसूस करते हैं। जीवन के स्वाभाविक क्षेत्र में इसे समझा जा सकता है। मैं एक पत्नी की समस्या समझ सकता हूँ जब उसके पास उसके पति के उसके बारे में अच्छे से अच्छे विचारों पर भी संदेह करने के कारण हैं। यदि उसने निरादर दिखाया है, यदि उसने उसके साथ दुर्व्यवहार किया है, उसकी परवाह नहीं की, या बेईमान निकला। परन्तु हम अपना स्वयम, अपनी इच्छा, अपना सबकुछ उसे समर्पित करने से क्यों हिचकिचाएँ जिसने हमसे इतना प्रेम किया कि हमारे लिए मर गया, जिसने परम उदाहरण के द्वारा अपना सबकुछ पिता को सौंप दिया?

हम किसी और को समर्पण कैसे करें? और मैं कहना चाहता हूँ कि समर्पण एक बहुत ही संवेदनशील मामला है। परमेश्वर हमें एक सामान्य नियम के रूप में समर्पण करने को नहीं कहता है। स्वयं का परमेश्वर को समर्पण उपयोगिता, सुख-शान्ति और पूर्ति के लिए अपेक्षित और अनिवार्य है। इसके अलावा किसी दूसरे को समर्पण पर बहुत ही कम शिक्षा है। ढाँचे में समर्पण, हाँ है, परन्तु सम्पूर्ण स्वयं की इच्छा का समपर्ण, नहीं!

परमेश्वर ने हमें अपने लिए बनाया है। हमारे नये जन्म के समय जो व्यक्तित्व उसने हमें दिया है उसके स्वरूप में होने के लिए पहले से ठहराया है (रोमियों 8:29-30)। यदि इसे किसी दूसरे को दिया गया हो तो पवित्र आत्मा इसे हमारी इच्छा-शक्ति के द्वारा उसके स्वरूप में कैसे विकसित कर सकता है? हमारा व्यक्तित्व और इच्छा-शक्ति एक साझेदारी बनाते हैं जो जयवन्त होने और उसके स्वरूप में परिपक्व होने के लिए पवित्र आत्मा को प्रतिक्रिया दिखाते हैं। इसी लिए इस व्यक्तित्व को उसी के सामने समर्पित होना चाहिए। इसे न तो शत्रु को समर्पित करना है और न ही किसी दूसरे को देना है।

नौजवान लोग स्वप्नलोक में जीते हैं। वे समर्पण के अन्त में सुख देखते हैं इसलिए वे बेकार की बातें कहते हैं जैसे कि "मैं तुम्हें अपना सारा हृदय देता हूँ।" "प्रिये, मैं अपना सबकुछ तुझे सौंपता हूँ।" वे जल्दी ही पता लगा लेते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं है। पहली शिकायत या विवाद प्रकट कर देता है कि उनका हृदय और व्यक्तित्व अभी भी उनके ही अधिकार में है। समर्पण एक नाजुक प्रक्रिया है। उनका व्यक्तित्व और इच्छा-शक्ति अभी भी उनके पास है परन्तु वे दूसरे के अधीन होना चाहते हैं, इसलिए प्रक्रिया शुरू होती है।

उन कदमों पर ध्यान दो जो समर्पित होने के लिए लिए जाते हैं:

(1) सम्बंध विकसित होने की एक प्रक्रिया है।

लड़का लड़की से मिलता है। दृष्टि - सुनने की इंद्रियाँ शामिल हैं। यदि आँख "नहीं" कहती है तो मामला ठप्प हो जाता है। यदि आँख को जो देखता है अच्छा लगता है, कान सहमत होते हैं, फिर छूना, हाथ मिलाना, सम्बंध आरम्भ हो सकता है।

(2) प्रतीक्षा की प्रक्रिया

लड़का और लड़की उनके जीवन में किसी विशेष की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं। वे परिणाम का विचार करते हैं। "हाँ - नहीं। मुझे पता नहीं कि इसे होने देना चाहिए। यह कोई गम्भीर चीज की ओर ले जा सकता है। मैं उसके जीवन में विशेष होना चाहता हूँ। पता नहीं कि यही वो व्यक्ति है।" मन में एक प्रक्रिया चल रही है जो दूसरे के अधीन होने के एक फैसले में विकसित होती है; जीवन भर के लिए दूसरे के साथ अपना जीवन जीना; केवल उस लड़के को एक विशेष रूप से प्रेम करना; उसके कपड़े धोना, उसका खाना पकाना, उसके बच्चों को पालना एक बड़ा फैसला है। उसकी देखभाल करना, केवल उसी के लिए स्वयं को रखना, उसकी आवस्यकताएँ पूरी करना और जीवन भर के लिए ऐसी एक वचनबद्धता बनाना एक बड़ा फैसला है। सम्बंध विकसित करने और ऐसी एक वचनबद्धता करने के लिए समय लगाना पड़ता है।

(3) तुम एक फैसला करते हो - यह स्वैच्छिक है

तुम छलांग लगाते हो। भले या बुरे के लिए, तुम ऐसा करते हो। तुम्हें लगता है कि तुमने स्वयं को सम्पूर्ण रूप से उस व्यक्ति को दे दिया है। परन्तु यह भ्रम है। ऐसा कुछ नहीं होता है। तुम्हें पता चलता है कि तुम और वह अभी भी निजी व्यक्ति हो। कभी-कभी तो तुम्हें वास्तव में धक्का लगेगा कि वे कितने निजी हैं। यह तब दिखता है जब वे नाराज हो जाते हैं, शिकायत करते हुए दूसरे कमरे में बैठते हैं।

परन्तु हम उनसे स्वयं को समर्पित करने की आशा क्यों करें? हमें प्रेम हो गया और उनसे प्रेम करने का इरादा किया, हम ने उनसे विवाह किया क्योंकि वे वे थे। उन्हें बदलने का प्रयास क्यों करें और उन्हें अपने जैसा क्यों बनाएँ? हमें जिसकी आशा करनी चाहिए वह है अपनी इच्छा-शक्तियों की दूसरे को उनके सुख और पूर्ति के लिए समर्पण करना। परन्तु स्वयं का दूसरे को समर्पण - नहीं! यह परमेश्वर के लिए है जिसने इसे दिया है। जब हम स्वयं को उसे समर्पित करते हैं तो वह इसे शुद्ध करता है, पवित्र करता है और इसे अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करने देता है। तब ही स्वाभिमान हो सकता है। तब ही व्यक्ति स्वयं से खुश हो सकता है। मसीह अपना जीवन हमारे द्वारा जीता है, हमें सफल बनाता है और हम खुद से खुश होते हैं। हमारे द्वारा उसका मन, उसका प्रेम, उसकी परवाह, चिन्ता और तरस प्रकट होता है। वह हमें कठोर और बेलिहाज नहीं बनाता है। हम जो मसीह में हैं उस से खुश हैं। यह मुझे एक बेहतर पति, पत्नी, मालिक या कर्मचारी बनाता है। इसलिए केवल मसीह में ही स्वयं यथार्थ होता है। भलाई जो मेरे जीवन में हो रही है देखकर, मैं अपने स्वयम को, अपनी इच्छा-शक्ति को उसके निर्देश के लिए दे देता हूँ।

(4) मैं स्वयं का परमेश्वर और दूसरों के साथ अन्त-व्याप्ति पाता हूँ

मेरी इच्छा परमेश्वर की इच्छा बन जाती है क्योंकि परमेश्वर की इच्छा मेरी इच्छा है। मेरी पत्नी की इच्छा भी परमेश्वर की इच्छा है और इसलिए परमेश्वर की इच्छा हम में अन्त-व्याप्त होती और एक सुन्दर कार्य निकलता है। हमारा अभी भी एक व्यक्तित्व हैं परन्तु यह अपनी रुचियों के लिए कार्य नहीं करता है परन्तु दूसरों के लिए कार्य करता है। यह स्वयं का दूसरे को समपर्ण नहीं है बल्कि स्वयं का प्रभु को समर्पण है जो इसे दूसरे के लिए कार्य करने में बदल देता है।

यह परमेश्वरत्व के सिद्धान्तों से मेल खाता है। इसी लिए यीशु ने अपनी इच्छा पूरी नहीं की परन्तु सम्पूर्ण रूप से पिता की इच्छा के लिए समर्पित हो गया। उसका व्यक्तित्व अभी भी अविकल था। शैतान ने गतसमनी के मानसिक आघात, क्रूस पर तानों और मृत्यु के द्वारा इस तक पहुँचने का प्रयास किया। यह पापी व्यक्तित्व नहीं था। यह इच्छा-शक्ति के साथ एक मानवीय पात्र में एक पवित्र व्यक्तित्व था।

स्वयं का समर्पण केवल एक अधिकार को ही किया जा सकता है। जिसने इसे बनाया है वह इसे अपनी महिमा और हमारी भलाई के लिए ही इस्तेमाल करना चाहता है। एक दूसरे के अधीन हो जाओ - स्वयं को प्रभु को समर्पित करो। स्वयं का प्रभु के बलिदान करने से डरो मत। वह आपसे प्रेम करता है और जानता है कि जब तक यह नही किया हो, सुख और पूर्ति नहीं आ सकते हैं।

इसहाक तब तक फलदायक नहीं हो सकता जब तक उसे वेदी पर नहीं रखा जाए। वह व्यक्तिगत पूर्ति और सुख पा सका। परमेश्वर के उद्देश्य उन जीवनों द्वारा साकार होते हैं जो वेदी पर रखे गए हैं। यह मनुष्य का पृथ्वी पर का अन्तिम परिणाम और कार्यान्वित पवित्रता है। ऐसे पवित्र जीवन परमेश्वर का निवासस्थान निर्माण कर रहे हैं (इफि. 2:21)। इससे पहले यह सामूहिक रूप से वास्तविकता बने इसे व्यक्तिगत वास्तविकता बनना है (प्रकाशित. 21:3)।

अन्त में, "पवित्र बनने के लिए समय निकालो"। परमेश्वर की बाट जोहना, उसके करीब आना पवित्रता में एक अनिवार्य तत्त्व है। जैसे सम्बंध में होता है, इसे विकसित करने के लिए समय लगाना आवश्यक है। जो लोग बहुत कम या कुछ भी समय साथ नहीं बिताते, सम्बंध बना नहीं सकते हैं। ऐसा ही पवित्रता के साथ है। प्रार्थना, सहभागिता और प्रभु के साथ संगति परम महत्त्व के हैं। बाइबल कहती है कि "..यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उसकी सहायता में वह अपनी सामर्थ्य दिखाए" (2 इतिहास 16:9)।

जिस प्रकार के व्यक्ति की परमेश्वर खोज करता है वह पवित्र व्यक्ति है। जिसने स्वयं और इच्छा-शक्ति का बिनाशर्त समपर्ण किया है। जो परमेश्वर की सेवा के लिए सज्जित है, जो जिन्हें क्षम्य पाप और असफलताएँ कहा जाता है से घिरा हुआ नहीं है, परन्तु जो प्रभु की बाट जोहता है और कहता है, "मैं यहाँ हूँ, प्रभु, मुझे भेज"। परमेश्वर ऐसे मनुष्यों के लिए लालायित होता है जिनके द्वारा वह अपनी सामर्थ्य और महिमा प्रकट करना चाहता है। परमेश्वर उन्नत तरीकों, प्रवचन-मंच पर प्रशिक्षित मनोवैज्ञानियों और उच्च तकनीकी अधिकारियों को नहीं बुला रहा है, बल्कि वह पवित्र जीवन, प्रार्थना का जीवन, स्वेच्छा से उपलब्ध पुरुषों और स्त्रियों को बुला रहा है जो जब तक पृथ्वी पर परमेश्वर की महिमा प्रकट होती रहती है परवाह नहीं करते कि कौन महिमा पाता है। इससे पहले हम राष्ट्रों को रूपान्तरित कर सकें हमारे पास रुपान्तरित पुरुष होने हैं - मूसा जैसे पुरुष जिसका चेहरा परमेश्वर की महिमा से चमक रहा था। उसने पहाड़ पर परमेश्वर के साथ समय बिताया था। परमेश्वर आज भी ऐसे पुरुषों के लिए तरसता है जिनके द्वारा वह आज के फिरौनों से निपट सके। इस किस्म का पुरुष यूँ ही नहीं बन जाता है। परमेश्वर इस किस्म के पुरुष को बनाता है। रेगिस्तान में अनेक वर्ष जहाँ भेड़ों के अलावा ध्यान भंग करने को कोई नहीं था। परमेश्वर के साथ पहाड़ पर कई दिन जहाँ और कोई भी बातचीत करने को नहीं था। एक पवित्र परमेश्वर के लिए पवित्र बनने में समय निकालना ताकि वह स्वयं को प्रकट कर सके।

प्रिय प्रचारक, आप अच्छे संगीत, अच्छी सुविधाएँ, एक सक्रिय कार्यक्रम, एक अच्छे परिष्कृत छोटे उपदेश के द्वारा भीड़ इकट्ठी कर सकते और सफल लग सकते हो। परन्तु सफलता तो जीवनों को मसीह के स्वरूप और समानता में बदलना है। इस अति महान प्रयास में आपकी सफलता का परिणाम आपके अपने जीवन में ऐसे परिवर्तन का परिणाम है। आप उसे ही सफलतापूर्वक दूसरों को दे सकते हो जो आपने अनुभव किया है। हम सब जानते हैं कि प्रचार एक आधे-घंटे का प्रदर्शन नहीं है बल्कि एक जीवन का उमड़ना है जो उसके जीवन से संतृप्त है। पवित्र प्रवचन पवित्र जीवनों में से निकलते हैं।

महायाजक ने साफ-साफ और अनुभवात्मक रूप से "प्रभु के लिए पवित्र" की घोषणा की थी। बलिदान, अभिषेक और अलग किए जाने के द्वारा पवित्र किए जाने के बाद, वह तुरन्त सात दिन के लिए परमेश्वर की अनन्य उपस्थिति में चला जाता था। जो पवित्रता की सेवा करता है उसे पवित्र होने के लिए प्रभु के साथ समय बिताना चाहिए। जैसे महायाजक मनुष्यों में अनोखा था, उसी प्रकार प्रचारक को भी मनुष्यों में अनोखा होना है।

मुझे निश्चय है कि यदि परमेश्वर पुरुषों और स्त्रियों की एक परिवर्तित सेना ढूँढ पाता तो यह संसार परिवर्तित हो जाएगा - एक सेना जो व्यक्तित्व और इच्छा में सम्पूर्ण रूप से प्रभु के लिए समर्पित हो - एक सेना जो मनुष्यों को खुश करनेवाले और मनुष्यों से डरनेवाले होने से इन्कार करते हैं और उसके बदले परमेश्वर का भय मानते और पृथ्वी पर उसकी इच्छा पूरी करते हैं - एक दयालु, प्रेमी सेना, जो शहीद होने तक वचनबद्ध है, जो लोगों से प्रेम करती है फिर भी पाप, अधर्म, शैतान और उसके सारे कार्यों के लिए एक पवित्र घृणा रखती है। ऐसी एक सेना उदय होती है और देश को धार्मिकता से भर देती है और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को स्थापित करती है। "तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो" (मत्ती 6:10)। ऐसी सेना रेगिस्तान के निष्फलता में, प्रार्थना की कोठरी में, सताव के महामार्ग पर, देख के कैदखानों में, गतसमनियों में प्रशिक्षित की गई होती है। इससे पहले यह अधिकार और सामर्थ्य के सिंहासन पर चढ़ती है, यह क्रूस को मृत्यु तक ले चलती है। यह अपने पिन्तेकुस्त तक प्रतिक्षा करती है और जब तक स्थान थरथराता नहीं यह प्रार्थना में रहती है। ऐसे कैदखाने के लिए द्वार खुले हैं। ऐसों के सामने साम्राज्य ढह जाते हैं। धार्मिकता उनका पीछा करती है क्योंकि पवित्रता उनका झंडा है। "जाति की बढ़ती धर्म ही से

होती है, परन्तु पाप से देश के लोगों का अपमान होता है" (नीतिवचन 14:34)। ऐसी सेना का एक पवित्र जनरल है। वह सेनाओं के कप्तानों को बुलाता है। पौलुस ने कहा, "तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ" (1 कुरिं. 11:1)। वह जानता था कि जड़ पवित्र थी इसलिए डालियाँ भी पवित्र होनी चाहिए (रोमि. 11:6)। वह जानता था कि कलीसिया को संसार के नींव से पहले से पवित्र होने के लिए चुना था (इफि. 1:4), और उसकी मनसा इसे पवित्र और निष्कलंक प्रस्तुत करने की थी। "और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन् पवित्र और निदोर्ष हो" (इफि. 5:27)। "... तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निदोर्ष बनाकर उपस्थित करे" (कुलु. 1:22)।

विश्वासियों को जीवन की शुद्धता के लिए उपदेश देने में, वह विश्वास करता था कि वेः
"... शरीर और आत्मा को सब मलिनता से शुद्ध करें" (2 कुरिं. 7:1)। उसने ताड़ना सह ली यह जानते हुए कि वह पवित्रता का भागी होगा (इब्रानियों 12:10), और जानता था कि पवित्रता के बिना कोई प्रभु को न देखेगा (आय. 14)। ऐसा जान पड़ता है कि पवित्रता और प्रार्थना प्रेरित के जीवन में समान रूप से श्रेष्ठ थे। "इसलिए मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष...पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें" (1 तीमु. 2:8)। याकूब ने भी यही विचार प्रकट किया जब उसने याकूब 5:16 में लिखा, "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।"

<u>हम न केवल मनुष्यों से परमेश्वर के बारे में बात करें, बल्कि हम परमेश्वर से मनुष्यों के बारे में बात करें।</u> परमेश्वर से अपने बारे में बात करना हमें मनुष्यों से परमेश्वर के बारे में और परमेश्वर से मनुष्यों के बारे में बात करने में प्रभावशाली बनाएगा। हमारा परमेश्वर के करीब आना उसे हमारे करीब लाता है (याकूब 4:8)। भजनकार ने कहा "परमेश्वर के समीप रहना, यही मेरे लिए भला है" (भजन 73:28)। पवित्र होने के लिए समय निकालो! परमेश्वर के महान पवित्र जन सब प्रार्थना के लोग थे। रॉबर्ट मरे मैक्किनी सुबह चार से पाँच और पाँच से छः व्यक्तिगत प्रार्थना में बिताया करता था। विलियम ब्रैमवेल व्यक्तिगत पलित्रता और प्रचार में सफलता के लिए, रोजाना चार घंटे व्यक्तिगत सहभागिता में बिताया करता था। जॉन वेल्श जो एक महान स्कॉटिश प्रचार था, अक्सर रोजाना आठ से दस घंटे प्रार्थना में बिताया करता था। ब्रेनर्ड कई दिन प्रार्थना के लिए कॉटेज में बिताया करता था, और चलते-फिरते और सफर में परमेश्वर के साथ बातचीत में रहता था। ये सब लोग सुबह जल्दी उठते थे ताकि मनुष्यों के साथ होने से पहले परमेश्वर के साथ अकेले हो सकें। परिपक्व हो रही पवित्रता के लिए प्रार्थना एक भोजन है। प्रार्थना रहित व्यक्ति पवित्रता की कीमत नहीं जानता है। जिस प्रकार फेफड़े शुद्ध हवा पर निर्भर होते हैं उसी प्रकार पवित्र मनुष्य प्रार्थना पर निर्भर होता है।

हाँ, परमेश्वर की नज़रों ने जो पृथ्वी पर इधर-उधर घूमती रहती थीं, अब्राहम, मूसा, दाऊद, यशायाह, यिर्मियाह, यूहन्ना बपतिस्मादाता, पौलुस, लूथर, वेस्ली, नॉक्स, फिन्नी, ब्रेनर्ड और दूसरों के एक झुंड को ढूँढ लिया। क्या हम अपने लिए उसकी नज़र में आए हैं क्योंकि हम उसके करीब आ रहे थे? परमेश्वर के राज्य का भविष्य बेशक परमेश्वर के हाथों में है, परन्तु यह परमेश्वर के पवित्र सन्तों के पवित्र हाथों में भी है। पवित्र घुटने पवित्र पैरों को ताकत देते हैं कि वे एक पवित्र परमेश्वर के सामने एक पवित्र चाल चल सकें। परमेश्वर एक पवित्र देश दे जो पवित्रता के महामार्ग पर चलता हुआ पवित्र शगर में जाता है जहाँ त्रिएक, पवित्र परमेश्वर वास करता है! आमीन!

गप-शप – इसका विनाश और इस पर जय कैसे पाएँ

स्वयं को गप-शप सुनने और दूसरों को बताने के द्वारा अशुद्ध होने से रोकने पर एक अध्ययन

1. एक बुरी बात क्या है

झूठे तथ्य और सच्चाइयाँ या सही तथ्य और सच्चाइयाँ भी किसी की प्रतिमा को चोट पहुँचाने और नष्ट करने की मनसा से कही जा सकती हैं। इसके लिए साधारण शब्द है: गप-शप।

"ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी बातें बकता फिरता है, वह नैन से सैन और पाँव से इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है, उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न करता है। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नष्ट हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा" (नीतिवचन 6:12-15)।

"छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसकी घृणा है : अर्थात् घमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निदोर्ष का लहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन..." (नीतिवचन 6:16-18)

2. बुरी बात के पीछे क्या प्रेरणा होती है

अबशालोम ने अपने पिता राजा दाऊद के विरुद्ध कैसे चाल चली की कहानी (2 शमूएल 15:1-6, 11)।

अ) कटुता

यह एक विद्वेषपूर्ण आत्मा है; हर एक जो इसके मार्ग में पड़ता है उसके प्रति प्रतिशोधी, महत्त्वाकांक्षा, तत्त्व-ज्ञान का तरीका। अनेक वर्षों से अबशालोम अपने पिता, राजा दाऊद से कटु था। (इब्रानियों 12:15)।

आ) विद्रोही आत्मा

यह एक स्वाधीन आत्मा भी है। यह एक बहुत ही गम्भीर पाप है - जादू-टोना के तुल्य (1 शमूएल 15:23)।

इ) धोखा

दाऊद के बेटे, अबशालोम ने लोगों को राजा दाऊद के विरुद्ध चाल चलने के लिए धोखे से फँसाया। अबशालोम बुरी बातों या अर्धसत्य को बताकर लोगों को अधिकार से विमुख करने में सफल हुआ था। अबसालोम एक चोर था। उसने लोगों के हृदय राजा के प्रति वफादार होने से चुरा लिए थे। कटु लोग जानते हैं कि जिन लोगों की अधिकार के साथ शिकायतें होती हैं उन्हें कैसे खोज निकालना है।

ई) धमण्ड

राजा बनना अबशालोम का बुलावा नहीं था, फिर वह उस पद के लिए लालायित था। (Cf. प्रेरितों 20:29-30)।

उ) ईर्ष्या

यह जो दूसरों के पास है उसकी इच्छा करना और कि उसके पास नहीं है के कारण कटु महसूस करना है। (याकूब 3:14)।

3. बुरी बातें फैलाने में शैतान का उद्देश्य

"गप्पी" अनजाने में शैतान का काम करता है। यूनानी भाषा में "शैतान" नाम का अर्थ है "निन्दक"। इसलिए यदि आप गप-शप मारते हैं या कहानियाँ फैलाते हैं तो आप वास्तव में शैतान का काम कर रहे हैं। (प्रकाशित. 12:10)।

अ) अगुओं को बदनाम करना

मूसा का विद्रोही लोगों और व्यक्तियों से निरन्तर सामना होता रहा जो जानबूझकर या अनजाने में बुरी बातें फैलाने के लिए शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाते थे।

कुछ भोले-भाले लोग यह भी सोचते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें भिन्न सेवकाइयों की कमजोरियों को प्रकट करने के लिए बुलाया है। परन्तु हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर स्वयं प्रकट नहीं करता है। वह केवल अपराध स्वीकार कराता है - परन्तु हमें मन फिराने के उदेश्य से ही! (यूहन्ना 16:8-9)। दण्डाज्ञा और दोषसिद्धि में; एक आलोचनात्मक आत्मा और रचनात्मक आत्मा में; नीचा दिखाने की आत्मा और पुनःप्रतिष्ठित करने की आत्मा में एक बड़ा अन्तर है। (गला. 6:1)।

आ) मसीहियों से एक दूसरे के लिए उनकी आत्माओं को बंद कराना

परिणामः झगड़े, संघर्ष और दुष्टता। ""जहाँ कानाफूसी करनेवाला नहीं, वहाँ झगड़ा मिट जाता है"। (नीतिवचन 26:20-22)।

इ) शेष के मनों में जहर भरना

गिनती 14:1-4। बुरी बातें एक घातक कैन्सर बीमारी के समान हो सकती हैं, वे लोगों के मनों में जहर भर सकते हैं और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के उत्तराधिकारी होने से रोक सकती हैं। सारे समूह के मनों में जहर भरने के लिए नकारात्मक आत्मा वाले एक या दो बुरी बातों वालों की ही आवश्यकता होती है। यदि कोई भी एक उनकी बातों को सुनता रहता है तो वह भी वैसा ही करेगा - बुरी बातों को फैलाएगा।

ई) संसार द्वारा मसीहियों की हँसी उड़ाना और मसीह को ठुकराना

उ) परमेश्वर के अभिषेक को रोकना (भजन 133:1-2)।

4. उसका पता कैसे लगाना जो आपको एक बुरी बात बता रहा है

बुरी बात बतानेवालाः

अ) एक बुरी बात बताने से पहले आपकी आत्मा को परखेगा

यदि आप सामान्यतः एक नकारात्मक व्यक्ति हैं तो आप नकारात्मक लोगों को आकर्षिक करोगे। कटु लोग कटु लोगों को इकट्ठे करते हैं।

आ) बात बताने से पहले वह आपकी स्वीकृति को परखेगा

वह सम्भव है किसी विशेष व्यक्ति के बारे में आपकी राय पूछे। वह आपकी प्रतिक्रियाओं पर ध्यान देगा।

इ) वह आपकी जिज्ञासा को उत्तेजित करने का प्रयास करेगा

इसलिए अन्त में, आप स्वयं ही जानकारी लेना चाहेंगे। (नीतिवचन 17:4; 18:8)

ई) वह गप-शप को छिपाएगा और दिखाएगा कि वह सलाह और प्रार्थना चाह रहा है

उस व्यक्ति से सावधान रहो जो पिछले सलाहकार के बारे में एक बुरी बात लेकर आप के पास आता है। वह बाद में आपके साथ भी ऐसा ही करेगा!

5. बुरी बात करनेवाले से कैसे निपटें

उसे सात प्रश्न प्रेम से पूछोः

अ) आपका मुझे बताने का क्या कारण है?
गप-शप के दायरे को बड़ा करने से समस्या केवल बढ़ती है।

आ) आपको यह जानकारी कहाँ से मिली?
स्रोत का पता बताने से इन्कार करना बुरी बात का संकेत है।

इ) क्या आप उनके पास गए हो जो सीधे इसमें शामिल हैं?

ई) क्या आपने सब तथ्यों की स्वयं जाँच की है?

उ) क्या मेरे लिए इसे सुनना आवश्यक है?
क्या इसके बारे में बात करने से समस्या हल हो जाएगी?

ऊ) क्या मैं उस व्यक्ति से सम्पर्क कर सकता हूँ जो इस स्थिति के लिए जिम्मेवार है?

ए) क्या मैं तुम्हारा नाम ले सकता हूँ?

6. क्या होता है जब मैं एक बुरी बात सुनता हूँ

"अधर्मी मनुष्य बुराई की युक्ति निकालता है, और उसके वचनों से आग लग जाती है" (नीतिवचन 16:27)।

"टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है" (नीतिवचन 16:28)।

"ओछे और अनर्थकारी को देखो, वह टेढ़ी बातें बकता फिरता है, वह नैन से सैन और पाँव से इशारा, और अपनी अंगुलियों से संकेत करता है, उसके मन में उलट-फेर की बातें रहतीं, वह लगातार बुराई गढ़ता है और झगड़ा-रगड़ा उत्पन्न करता है। इस कारण उस पर विपत्ति अचानक आ पड़ेगी, वह पल भर में ऐसा नष्ट हो जाएगा, कि बचने का कोई उपाय न रहेगा" (नीतिवचन 6:12-15)।

एक गप-शप शुरू करना न केवल पाप है, बल्कि बिना रोके इसे सुनना भी पाप है!

सुननेवाला अपने -

अ) प्राण को अपवित्र करेगा

विद्रोह और बुरी बातें फैलाने के कारण अबशालोम अपने जीवन से हाथ धो बैठा! बुरी बातें फैलाने की बाध्यकारी आदत एक बहुत ही विनाशकारी बीमारी है।

"कुकर्मी अनर्थ बात को ध्यान देकर सुनता है, और झूठा मनुष्य दुष्टता की बात की ओर कान लगाता है" (नीतिवचन 17:4)।

बाइबल उसके बारे में क्या कहती है जो अनर्थ बात को ध्यान से सुनता है और दुष्टता की बात की ओर ध्यान लगाता है ?

आ) कटुता की आत्मा के वश में हो जाएगा

सुननेवाला दूसरे की ओर कटुता से भर सकता है, हालाँकि उसे सीधे-सीधे ठेस न पहुँची हो।

इ) स्वयं को न्यायी के स्थान पर रखकर परमेश्वर का स्थान लेगा

"अतः हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिए कि तू जो दोष लगाता है स्वयं ही वह काम करता है" (रोमियों 2:1)।

ई) परमेश्वर के प्रकोप का पात्र बन जाएगा

"छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसकी घृणा है : अर्थात् धमण्ड से चढ़ी हुई आँखें, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग दौड़नेवाले पाँव, झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य" (नीतिवचन 6:16-19)।

7. एक बुरी बात से अपना मन कैसे शुद्ध करें

अ) परमेश्वर को हमें दूषण से शुद्ध करने को कहें।

आ) मान कर मत चलो या चीजों को सच मत मान लो

सिद्धान्तः एक व्यक्ति जब तक गलत प्रमाणित नहीं हो जाता दोषी नहीं है। "भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझकर चलता है" (नीतिवचन 14:15)।

इ) जाँच लोः क्या इस बात ने जिस दृष्टिकोण से आप निन्दा के पीड़ित को देखते हो प्रभावित किया है ? परमेश्वर से पक्षपात को निकालने को कहो। (भजन 19:13)

ई) प्रेम पहन लो।

"सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है" (1 पतरस 4:8)

उ) बात दूसरों तक पहुँचाने के आवेग को रोको

जब तुम एक बुरी बात को सुनते हो तो तुम्हारे अन्दर एक पवित्र शोक उठना चाहिए। बुरी बातें पवित्र आत्मा को शोकित करती हैं। (इफि. 4:30)। इफि. 4:29 याद रखो "कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवाले पर अनुग्रह हो।"

ऊ) नकारात्मक लोगों की संगति से बचो

उनकी नकारात्मक आत्मा आसानी से तुम में आ सकती है। (भजन 1:1-3)

"जो लुतराई करता फिरता है वह भेद प्रकट करता है; इसलिए बकवादी से मेल जोल न रखना" (नीतिवचन 20:19)।

"...तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हम से पाई उसके अनुसार नहीं करता।...तौभी उसे बैरी मत समझो, पर भाई जानकर चिताओ।" (2 थिस्स. 3:6, 15)

ए) आप खण्ड 5 में दिए सात प्रश्नों को पूछ कर भी बुरी बातों को रोक सकते हो। (भजन 19:14)

यह प्रार्थना अक्सर किया करोः भजन 141:3 याद रखोः याकूब 1:26

जीने के लिए सिद्धान्तः याकूब 1:19 अभ्यासः फिलिप्पियों 4:8

कानाफूसी करनेवाली जीभें

क्या हाल में कोई मजेदार गप-शप सुनी है? कोई लुभावनी अफवाहें "केवल आपके कानों के लिए" बताई हैं? निन्दा और गैरजिम्मेदार बातों के विषहर के बारे में पढ़ो।

कलीसिया में बहुत सी समस्याएँ पैदा होती हैं जब किसी के बारे में किसी से कुछ कहा जाता है। जो गलतियाँ हमारे मुँह में से निकलती हैं तबाही मचा सकती हैं। ये कलीसिया में लोगों को अलग कर देती हैं। इनके कारण लोग प्रभु के लिए जोश और कलीसिया के लिए दर्शन खो देते हैं। हमें इलाज करने के बजाय निवारण के लिए काम करना चाहिए।

> "सुनो, उसने कहा...उसने पास्टर को देखा...
> मैं यह तुमसे इसलिए कह रहा हूँ कि तुम इसे प्रार्थना में रख सको..."

जीभ एक उपद्रवी सदस्य है और कलीसिया और परिवारों को नष्ट कर देती है। हमें दो कारणों से इसे एक दूसरे के विरुद्ध इस्तेमाल करते हैं। पहला, हम बहुत ही असुरक्षित हैं। हम सोचते हैं कि यदि हम किसी को खराब बनाकर दिखा दें, तो हम अपने आप को अच्छा बनाकर दिखा रहे हैं। परन्तु यीशु ने कहा कि यदि तुम परमेश्वर के राज्य में महान बनना चाहते हो तो, एक सेवक बनो।
दूसरा कारण है कि जो अपराध और भ्रष्टता हम दूसरों में देखते हैं हम अक्सर स्वयं उसी के दोषी होते हैं। बाइबल चार प्रकार के लोगों के बारे में बताती है जो जीभ का दुरूपयोग करते हैं:

कनफुसका:
यह वो व्यक्ति है जो किसी के बारे में बिना उनके जाने जानकारी देता है। वे लोगों के बीच में घुस जाना और किसी के बारे में कुछ बताना पसन्द करते हैं।

गप्पी:
एक गप्पी अफवाहों या सुझावों को बढ़ा-चढ़ाना और नाटकीय बनाना पसन्द करता है। आप कह सकते हैं कि कलीसिया में बातों को फैलाना उनके काम का हिस्सा है। और वह इस सेवा में असफल नहीं होना चाहता है।

निन्दक:
निन्दक हानि पहुँचानेवाले तथ्यों के द्वारा दूसरे की विश्वसनीयता या नाम को नष्ट करने की कोशिश करता है। हालाँकि कुछ तथ्य सच्चे हो सकते हैं, वे तोड़े-मरोड़े या मात्र पूर्वानुमान ही हों, और अभिप्राय चोट पहुँचाना, न कि चंगाई लाना है।
जब गप-शप का दायरा बड़ा होता जाता है तो आप निश्चय जान लो कि कलीसिया में समस्या खड़ी होगी। जब जानकारी फैलती है तो हमेशा इसमें कुछ जुड़ता या कम होता है, जो अक्सर बात किए जा रहे व्यक्ति के लिए हानिकारक होता है।
जीभ का दुरुपयोग उन लोगों के लिए विध्वंसक साबित होता है जो वर्षों से करीबी मित्र रहे हैं। नीतिवचन 16:28 कहता है, "टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में फूट करा देता है।"

दस्तंदाज:
यह बाइबल में अन्तिन और सम्भवत: सब से बुरा वर्गीकरण है। दस्तंदाज को किसी प्रकार लगता है कि दूसरों के बारे में नकारात्मक जानकारी खोज निकालना उसका बुलावा है। 1 पतरस 4:15 में दस्तंदाजों (पराए काम में हाथ डालनेवाले) को हत्यारों और चोरों के साथ सूचीबद्ध किया गया है।
समस्या यह है कि एक बार जब हम ऐसे लोगों के साथ बातें करने लगते हैं जिन्हें नए-नए जीवाणु लगे हैं जो उन्हें फैलाने हैं तो हम भी संदूषित हो जाते हैं। ये लोग सोचते हैं कि वे परमेश्वर के निजी जाँच करनेवाले हैं। वे चीजों को खोज निकालते हैं और फिर अपने काम के परिणामों को किसी के साथ बाँटना चाहते हैं।

<u>नीचे पाँच मुख्य प्रश्न दिए गए हैं जो कानाफूसी, गप-शप, निन्दा और दस्तंदाज जैसे कामों से आपकी कलीसिया को दूषित होने से रोक सकते हैं।</u>

कुँजी 1 – तुम मुझे यह क्यों बता रहे हो?

मैंने पास्टर के रूप में किसी की बातें सुनकर जो तथाकथित सलाह की स्थिति में था कुछ बड़ी गलतियाँ की हैं जबकि वह व्यक्ति किसी अधिकार के पद में किसी व्यक्ति को कुछ नकारात्मक बात बताना चाहता था। मुझे यह कहना चाहिए था 'तुम मुझे यह क्यों बता रहे हो?' सच्चा उत्तर होगा 'मेरे मन में इस व्यक्ति के विरुद्ध कुछ है।' यदि आपके मन में किसी के प्रति कुछ है तो बाइबल यह नहीं कहती कि तुम जाकर अपने पास्टर को बताओ। यह कहती है कि तुम जाओ और उस व्यक्ति को बताओ। (मत्ती 18:15-17)। नहीं तो क्या होगा है कि गप-शप का दायरा बड़ा होता जाएगा और जिस व्यक्ति को इससे निपटना चाहिए उससे दूर दूर होता जाएगा।

कुँजी 2 – तुम्हें यह जानकारी कहाँ से मिली?

कुछ लोग उत्तर देंगे, "मुझे क्षमा कीजिए, यह मैं आपको नहीं बता सकता?" मैं कुछ इस प्रकार कहूँगा, "तुम्हारा क्या मतलब है तुम बता नहीं सकते? तुम क्या हो? एक सरकारी अधिकारी या ऐसा कुछ?" <u>जब कोई आपको उनका स्रोत नहीं बताना चाहता तो समझ जाइए वह गप-शप कर रहा है।</u>

कुँजी 3 – क्या तुमने उनसे बात की है जो इसमें शामिल हैं?

जब तुम दूसरे लोगों को किसी और की जानकारी जो शायद सच भी न हो बताने लगते हो - तो यह उस व्यक्ति और उसके नाम को हानि पहुँचाने वाला है। जब तुम किसी के बारे में कुछ नकारात्मक कहते हो, तो सबसे पहली बात आपके सुनने वाले के मन में वो नकारात्मक बात आएगी जब वे उस व्यक्ति को देखेंगे।

कुँजी 4 – क्या आपने तथ्यों की जाँच की है?

एक गलती जो हम बड़ी सरलता से कर जाते हैं वह है कहानी का एक ही पक्ष सुनना। आप एक पति, पत्नी या परिवार के सदस्य की बात सुनते हो जो कहता है कि यह व्यक्ति बड़ा बेकार है और कि हम उस व्यक्ति से कभी बात भी नहीं करते हैं। प्रत्यक्षज्ञान विकृत किया जा सकता है और सुनी-सुनाई बात पर गलत फैसला करना आसान है। तथ्यों को जाँच लो।

कुँजी 5 – क्या इसके लिए मैं तुम्हारा नाम ले सकता हूँ?

'नहीं! नहीं! मैं तो तुम्हें इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुम इसके लिए प्रार्थना कर सको!' यदि आप उन लोगों के साथ हैं जो इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देते हैं और तुम उनके आस-पास रहते हो तो जीवाणु तुम पर आ जाएँगे।

तो हम इस महामारी से कैसे बच सकते हैं? हमें ईश्वरीय चंगाई की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर से हमारे अस्वस्थ होठों और मनों को शुद्ध करने के लिए कहना चाहिए। (यशायाह 6:5-7)। हमें स्वयं को भी उत्तरदायी बनाना होगा। सम्भव है कलीसिया में दो या तीन ऐसे लोग होंगे जिनसे आप कह सकते हो, "मुझे मेरे मुँह के साथ समस्या है। कृपया यदि मुझे आवश्यकता हो तो मुझे डाँटने और सुधारने में स्वतन्त्रता महसूस करो।" आप जान जाओगे कि आप इस समस्या से स्वतन्त्र हो चुके हो जब आप नकारात्मक बातें सुनते हो और उत्तेजित होने के बजाय वे आपको शोकित करती हैं।

यदि लोगों के बारे में बात करना आपके लिए समस्या है तब जान लो कि आपकी आदत कलीसिया में एक घातक, संक्रामक बीमारी है। प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपको बताए कि उनके साथ क्या खराबी है। और यदि आप गप-शप करने में परीक्षा महसूस करते हो तो उन लोगों से दूर रहो जो आपको पाप, यानि दूसरी गप-शप में खींच लेंगे!

जीभ के लिए दस आज्ञाएँ

1. **तुम गप-शप मत करना।** (नीतिवचन 18:8)। इससे पहले कान में फुसफुसाई कोई कहानी आगे बढ़ाई जाए, इसके साथ वैसा ही बरताव करना चाहिए जैसे ग्रहणी सेब के साथ करती है - पहले छीलना, फिर चार टुकड़े करना, फिर बीजकोष निकालना; फिर जो बच जाता है उस पर खूब चीनी लगाना।

2. **तुम बहुत से खोखले शब्द इस्तेमाल मत करना।** (नीतिवचन 10:19)। तुम्हारी जीभ तुम्हारे सोच-विचार और तुम्हारे चरित्र की प्रकृति प्रकट करती है। किसी ने कहा है: "एक मरीज की जीभ जाँचने के द्वारा, डॉक्टर शरीर की बीमारी और मनोवैज्ञानी मन की बीमारी पता लगा लेते हैं।" ईश्वरीय मालिक स्वयं भी मनुष्यों को चेतावनी देता है कि "परन्तु तुम्हारी बात 'हाँ' की 'हाँ', या 'नहीं' की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है।" (मत्ती 5:37)

3. **तुम घमण्ड मत करना।** (नीतिवचन 27:2)। एक छोटा मनुष्य लम्बी-लम्बी और बड़ी-बड़ी बातें करता है ताकि वह दूसरों का ध्यान खुद पर केन्द्रित कर सके; एक महान व्यक्ति शान्ति से और शामोशी से काम करता है, दीप-स्तंभ को चमकाता है ताकि यह जहाजों को सुरक्षित इच्छित स्थान का मार्ग दिखाए।

4. **तुम चापलूसी मत करना।** (नीतिवचन 26:28)। किसी ने कहा है कि "चापलूसी नरम साबुन के समान है: यह 90% सज्जीदार पानी है" - और आप निश्चय जान सकते हो कि यह अनुपात सौ प्रतिशत सही होगी। एक पुरुष या स्त्री के शब्द जो चापलूसी करता है, भजनकार के अनुसार जिसे इस किस्म की चीजों में काफी अनुभव था "उसके वचन तेल से अधिक नरम तो थे परन्तु नंगी तलवारे थीं।" (भजन 55:21)

5. **तुम मत कुडकुड़ाना।** (फिलिप्पियों 2:14)। इस रोग का इलाज अपने जीवन को प्रेममय व्यवहार से संतृप्त करना है। इसे हर छिद्र में घुसने दो, और यह प्रक्रिया आपको सतानेवाली कुढ़न और चिन्ताओं के विरुद्ध अधिक मजबूत, अधिक हमदर्द, अधिक सुन्दर, अधिक स्थिर, अधिक सहायक और पूर्णतया सफलता निश्चित कर देगा जो दीमकों से बदतर हैं और आपके प्राण को खा जाते हैं।

6. **तुम चुगली या झूठी निन्दा मत करना।** (भजन 64:3)। जो जीभ चुगली खाती या झूठी निन्दा करती है वो हथियार है जो कलीसियाओं को खाली कर देता है, झगड़ते हुए मनुष्यों को तलाक के दलदल में धकेलता है, हमारे कैदखानों को अभागे मनुष्यों से भरता है और पुरुषों और स्त्रियों को शैतान के राज्य में फेंकता है।

7. **तुम हँसी मत उड़ाना।** (अय्यूब 11:3)। आओ हम सहानुभूति सीखें और अपने साथियों को चाहे वे कितने भी अनोखे क्यों न हों, उपहास के बदले मदद दें और भूलें नहीं कि स्वर्गदूत भी पृथ्वी पर सब प्रकार के वेशों में फिरते रहते हैं।

8. **तुम झूठ मत बोलना।** (निर्गमन 20:16)। एक धोखेबाज ने अदन की वाटिका में पहला झूठ बोला था। तब से सारी पृथ्वी पर यह व्यवहार एक महामारी के समान फैल गया है। सब और स्वयं आप भी एक झूठ बोलनेवाली जीभ से घृणा करते हैं। विज्ञानियों ने इसका पता लगाने के लिए एक मशीन का अविष्कार किया है, और यह प्रभु के भयानक दिन तक जब सब झूठ बोलनेवाली जीभों को शान्त कर दिया जाएगा फलती-फूलती रहेगी। (प्रकाशित. 21:27)

9. **तुम शपथ मत खाना।** (निर्गमन 20:7)। गन्दी भाषा शैतान के राज्य की सरकारी भाषा है। इसमें तुम्हारा कोई भाग न हो, क्योंकि यह तुम्हें स्वर्ग अयोग्य कर देगा।

10. **तुम क्रोध में वादविवाद मत करना।** (होशे 7:16)। चिड़ने का कारण चाहे कुछ भी क्यों न हो, याद रखो कि "खामोशी सोना है" और "कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा हो जाता है, परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।" (नीतिवचन 15:1)

वचन में से प्रार्थना के लिए निदेशक

फसल। मत्ती 9:38; लूका 10:2
"इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे।"

सरकार के राष्ट्रीय और स्थानीय अगुओं के लिए प्रार्थना करो। 1 तीमु. 2:2
"राजाओं और सब ऊँचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएँ।"

प्रार्थना करो कि परमेश्वर वचन की सेवकाई के लिए द्वार खोल दे। कुलु. 4:3
"और इसके साथ ही साथ हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिसके कारण मैं कैद हूँ।"

उनके लिए प्रार्थना करो जिन्होंने तुम्हारा अपमान किया है। लूका 6:28
प्रार्थना करो कि तुम परीक्षा में न पड़ो। लूका 22:40
"परन्तु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उनका भला करो। जो तुम्हें स्राप दें, उनको आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिए प्रार्थना करो।"

प्रार्थना करो कि तुम कोई बुराई न करो। 2 कुरिं. 13:7
"हम अपने परमेश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि तुम कोई बुराई न करो, इसलिए नहीं कि हम खरे दीख पड़ें, पर इसलिए कि तुम भलाई करो, चाहे हम निकम्मे ही ठहरें।"

प्रार्थना करो कि सब लोगों के लिए तुम्हारा प्रेम बढ़ता जाए। फिलि. 1:9
"मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए।"
"शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।"

पवित्र आत्मा की परिपूर्णता के लिए प्रार्थना करो। लूका 11:13
"अतः जब तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा।"

प्रार्थना करो कि जो तुम अन्य भाषाओं में बोलते हो उसका अर्थ निकाल सको।
"इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।"
"यरूशलेम की शान्ति का वरदान माँगो, तेरे प्रेमी कुशल से रहें।"

प्रार्थना मार्गदर्शिका

1. **हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए**
    अ. कलवरी को ध्यान में रखो और परमेश्वर को धन्यवाद दो कि यीशु के लहू के कारण आप उसे "पिता" कह सकते हो।
    आ. नई वाचा में पाँच लाभों के अनुकूल परमेश्वर के नामों को पवित्र कहो, और अपने विश्वास की घोषणाएँ करो।

लाभ	नाम	अर्थ
उद्धार	यहोवा-सिदकेनु	"यहोवा हमारी धार्मिकता"
	यहोवा-मकदेश	"यहोवा जो पवित्र करता है"
आत्मा	यहोवा-शालोम	"यहोवा शान्ति है"
	यहोवा-शम्मा	"यहोवा उपस्थित है"
स्वास्थ्य	यहोवा-रोफे	"यहोवा चंगाई देता है"
सफलता	यहोवा-यिरे	"यहोवा उपाय करता है"
सुरक्षा	यहोवा-निस्सी	"यहोवा मेरा झंडा है"
	यहोवा-रोही	"यहोवा मेरा चरवाहा है"

2. **तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पूरी हो**
    अ. आप स्वयं
    आ. आपका परिवार (पति/पत्नी, बच्चे, परिवार के दूसरे सदस्य)
    इ. आपकी कलीसिया (पास्टर, अगुआई, लोगों की विश्वासयोग्यता)
    ई. देश (शहर, राज्य, और राष्ट्रीय राजनीतिक और आत्मिक अगुए, फसल)

3. **हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे**
    अ. परमेश्वर की इच्छा में बने रहो (प्रार्थना का जीवन, कलीसिया, काम की आदतें, देने में आज्ञाकारिता)
    आ. विश्वास करो कि आपको समृद्ध करना परमेश्वर की इच्छा है।
    इ. सुनिश्चित और दृढ़ बनो

4. **हमारे अपराधों को क्षमा करो जैसे हमने अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं**
    अ. परमेश्वर को आपको क्षमा करने को कहो
    आ. दूसरों को क्षमा करो और मुक्त करो
    इ. जो आपके विरुद्ध पाप करते हैं उन्हें क्षमा करने का संकल्प करो

5. **और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा**
    अ. परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो (प्रभु यीशु मसीह को पहन लो)
    - सत्य से कमर कसकर
    - धार्मिकता की झिलम पहिन कर
    - पाँवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर
    - विश्वास की ढाल लेकर
    - उद्धार का टोप

- आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है

आ. सुरक्षा के बाड़ा के लिए प्रार्थना करो (तू मेरा शरणस्थान, मेरा गढ़, मेरा परमेश्वर है) (भजन 91:9, 14)

6. **क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे हैं**

अपने विश्वास की घोषणा करो और स्तुति करो।

प्रभाव के लोगों के लिए प्रार्थना करने के तरीके

हर नागरिक का जीवन व्यक्तियों की एक विशाल संख्या से प्रभावित होता है जो हर दिन सार्थक प्रभाव काम में लाते हैं। विचार करो : सैकड़ों हजारों चुने हुए अधिकारी, नियुक्त किए गए न्यायाधीश, वकील, पुलिस अधिकारी, दफ्तरशाह, सैनिक अधिकारी, मीडिया विशिष्ट वर्ग, समाचार लंगर, प्रकाशक और संपादक, वार्ता-प्रदर्शन मेजबान, व्यवसायी कार्यकारी और मैंनेजर, धर्मविज्ञानी, याजक, पुरोहित, ऐल्डर, पास्टर, डीकन, अयाजकीय वर्ग, पैरा-चर्च सेवकाई अधिकारी, शिक्षक, प्रोफेसर, शिक्षक, चिकित्सा कर्ता और अस्पताल प्रबंधक, विज्ञानी, अनुसन्धायक, आविष्कारक और अभियन्ता, कलाकार और अभिकल्पक, व्यायामी, संगीतज्ञ, अभिनेता और मनोरंजन व्यक्ति। हम इन व्यक्तियों के लिए प्रार्थना कैसे कर सकते हैं ?

1. कि वे परमेश्वर का भय मानने वाले हों और पहचानें कि वे अपने हर फैसले और कार्य के लिए उसे उत्तरदायी हों (नीतिवचन 9:10)।
2. कि उन्हें बुद्धि, ज्ञान और समझ दी जाए (याकूब 1:5)।
3. कि उन्हें सुसमाचार सुनने और एक प्रेमी मसीही गवाह देखने को मिले (रोमियों 10:14)।
4. कि वे यदि उद्धार नहीं पाए हैं तो उद्धार पाएँ; यदि नया जन्म पाएँ हैं तो अपने विश्वास में मजबूत हों और उन्नति करें (1 तीमु. 2:4; इफि. 1:17-23)।
5. कि वे अपनी अपर्याप्तता को पहचानें और परमेश्वर की इच्छा के लिए प्रार्थना करें और खोजें (नीतिवचन 3:5-8; लूका 11:9-13)।
6. कि उन्हें पाप, उल्लंघन और अपराध का एहसास हो (भजन 51:17; यूहन्ना 8:9)।
7. कि वे अपने विवेक की सुनें, अपने पापों को स्वीकार करें और मन फिराएँ (नीतिवचन 28:13; याकूब 4:8)।
8. कि वे बाइबल पढ़ें और प्रार्थना सभाएँ और बाइबल अध्ययनों में भाग लें (भजन 119:11; कुलु. 3:2)।
9. कि वे दस आज्ञाओं और मसीह की शिक्षाओं को मूल्यवान जानें और समझें (भजन 19:7-11; यूहन्ना 8:31-32)।
10. कि वे अपने माता-पिता का, यदि वे जीवित हैं, तो सम्मान करें (इफि. 6:2-3)।
11. कि वे अधिकार का सम्मान करें और उत्तरदायी हों (रोमियों 13:1-7)।
12. कि उन्हें भक्तिपूर्ण सलाह और परमेश्वर का भय माननेवाले सलाहकार मिलें (नीतिवचन 24:6)।
13. कि वे पति/पत्नी और बच्चों के प्रति ईमानदार और विश्वासयोग्य रहें (मलाकि 2:15-16)।
14. कि वे स्थानीय कलीसियाओं के सक्रिय सदस्य हों (इब्रानियों 10:25)।
15. कि वे शुद्धता की इच्छा रखें और विलासिता, अश्लील साहित्य, कामविकृति और मतवालापन से बचें (1 कुरिं. 6:9-20; तीतुस 2:12)।
16. कि वे समयोचित, विश्वसनीय और भरोसे के हों (मत्ती 21:28-31)।
17. कि वे आर्थिक, करों और नैतिक मामलों में ईमानदार हों (1 कुरिं. 6:10; 1 तीमु. 6:6-10)।
18. कि वे आवश्यकता के अनुसार पास्तरीय देखभाल और सलाह खोजें (इब्रा. 13:7)।
19. कि वे भक्तिपूर्ण मित्रता को खोजें और विकसित करें (भजन 1:1-3)।
20. कि वे कृतज्ञ हों और उनके शिक्षणीय हृदय हों (रोमियों 1:21)।
21. कि वे उदार हों और गरीबों और दरिद्रों के प्रति दयालु हृदय रखें (भजन 112:9; लूका 10:33-37)।
22. कि वे उनके समय को बहुमूल्य समझें और प्राथमिकताओं को समझें (इफि. 5:15-17)।
23. कि वे ईमानदारी, अखण्डता और वफादारी की इच्छा रखें (भजन 26; नीतिवचन 11:3)।
24. कि उनके पास मनुष्यों की धोखेबाजी, दबाव और डर का सामना करने की हिम्मत हो (नीतिवचन 29:25; 2 तीमु. 1:7)।
25. कि उनकी गुह्यविद्या, न्यू एज पंथों, झूठे धर्मो और गुप्त संघों से बचाव किया जाए (यशा. 1:29; 2:6)।
26. कि उन्हें बाइबल के दृष्टिकोण और सिद्धान्त पेश किए जाएँ (इफि. 3:10)।
27. कि वे हमारे देश में जीवन, परिवार की पवित्रता, ईश्वरीय व्यवस्था और नैतिकता को पुनःस्थापित करने का प्रयास करें (इफि. 5:22-6:1)।
28. कि वे हमारे देश में मानववाद, समाजवाद, साम्यवाद और प्रादेशिकता की प्रवृतियों को पलटने के लिए काम करें (1 इतिहास 12:32; यशा. 59:19)।
29. कि वे दीनता और नम्रता की इच्छा रखें और सेवा करने और सहयोग देने के इच्छुक हों (यूहन्ना 13:14; तीतुस 3:1-2)।
30. कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर को हिसाब देने के लिए तैयार हों (इब्रा. 9:27)।

अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करने के बाइबल के 31 सद्‌गुण

1. **उद्धार** "प्रभु, मेरे बच्चों में उद्धार प्रकट हो, कि वे अनन्त महिमा सहित मसीह यीशु में जो उद्धार है उसे पा लें।" (यशा. 45:8; 2 तीमु. 2:10)।

2. **अनुग्रह में वृद्धि** "मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बच्चे हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ते जाएँ।" (2 पतरस 3:18)।

3. **प्रेम** "प्रभु, प्रदान कर कि मेरे बच्चे, उस आत्मा के द्वारा जो उनमें रहता है, प्रेम का जीवन जी सकें।" (गला. 5:25; इफि. 5:2)।

4. **ईमानदारी और अखंडता** "अखंडता और ईमानदारी उनके सद्‌गुण और उनकी सुरक्षा हों।" (भजन 25:21)।

5. **संयम** "पिता, मेरे बच्चों की मदद कर कि वे उनके आस-पास के दूसरे बच्चों जैसे न बनें, बल्कि उन्हें जो कुछ वे करते हैं उसमें चौकस और संयमी बनाओ।" (1 थिस्स. 5:6)।

6. **परमेश्वर के वचन के लिए प्रेम** "मेरे बच्चे तेरे वचन को शुद्ध सोने से अधिक कीमती और छत्ते के मधु से अधिक मीठा पाएँ।" (भजन 19:10)।

7. **न्याय** "परमेश्वर, मेरे बच्चों को तेरे समान न्याय से प्रेम करने और जो कुछ वे करते हैं उसमें उचित रूप से कार्य करने में मदद कर।

8. **दया** "मेरे बच्चे सदा दयालु हों, जैसे उनका पिता दयालु है।" (लूका 6:36)।

9. **आदर** (स्वयं, दूसरों, अधिकारियों के लिए) "पिता, प्रदान कर कि मेरे बच्चे सबको उचित आदर दें, जैसे तेरा वचन आज्ञा देता है।" (1 पतरस 2:17)।

10. **बाइबल का स्वाभिमान** "मेरे बच्चों को एक मजबूत स्वाभिमान विकसित करने में मदद कर जो इस अनुभूति में स्थिर है कि वे मसीह यीशु में परमेश्वर की हस्तकला हैं।" (इफि. 2:10)

11. **विश्वासयोग्यता** "प्रेम और विश्वासयोग्यता मेरे बच्चों को कभी छोड़ने न पाए, बल्कि इन दो सद्‌गुणों को उनके गले का हार बना दे और उनके हृदय की पट्टियों पर लिख दे।" (नीतिवचन 3:3)

12. **साहस** "मेरे बच्चे उनके चरित्र और कार्यों में सदा मजबूत और साहसी हों।" (व्यवस्था. 1:6)

13. **शुद्धता** "हे परमेश्वर, उनमें एक शुद्ध हृदय बना, और हृदय की यह शुद्धता उनके कार्यों में देखने को मिले।" (व्यवस्था. 31:6)।

14. **कृपा** "प्रभु, मेरे बच्चे सदा एक दूसरे और सबके प्रति भले हों।" (1 थिस्स. 5:15)

15. **उदारता** "प्रदान कर कि मेरे बच्चे उदार हों और बाँटने के इच्छुक हों, और इसलिए अपने निमित्त आनेवाले युग के लिए एक स्थिर नींव के रूप में स्वर्ग में धन इकट्ठा करें।" (1 तीमु. 6:18-19)

16. **शान्ति-प्रिय** "पिता, मेरे बच्चे वो सब करने के लिए जो शान्ति लाता है हर सम्भव प्रयास करें।" (रोमियों 14:19)

17. **आनन्द** "मेरे बच्चे उस आनन्द से भर जाएँ जो पवित्र आत्मा देता है।" (थिस्स. 1:6)

18. **दृढ़ता** "प्रभु, मेरे बच्चों को जो कुछ वे करते हैं उसमें दृढ़ रहना सिखाओ, और उनकी विशेषकर उस दौड़ में जो उनके लिए सीमांकन की गई है दृढ़ता से दौड़ने में मदद करो।" (इब्रा. 12:1)

19. **दीनता** "परमेश्वर, कृपया मेरे बच्चों को सबके प्रति सच्ची दीनता दिखाने की योग्यता में बढ़ाओ।" (तीतुस 3:2)

20. **तरस** "प्रभु, कृपया मेरे बच्चों को तरस के सद्‌गुण से ढक दो।" (कुलु. 3:12)

21. **जिम्मेवारी** "प्रदान कर कि मेरे बच्चे जिम्मेवारी सीखें, क्योंकि हर एक को अपना बोझ स्वयं उठाना है।" (गला. 6:5)

22. **सन्तोष** "पिता, मेरे बच्चों को उसके द्वारा जो शक्ति देता है, हर परिस्थिति में सन्तुष्ट रहने का रहस्य सिखाओ।" (फिलि. 4:12-13)

23. **विश्वास** "मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बच्चों के जीवन में विश्वास जड़ पकड़ेगा, और कि वे सम्पूर्ण दिल से सेवा करेंगे, जैसे कि वे मनुष्यों की नहीं बल्कि प्रभु की सेवा कर रहे हैं।" (इफि. 6:7)

24. **एक सेवक का हृदय** "परमेश्वर, कृपया मेरे बच्चों को सेवक का हृदय विकसित करने में मदद कर, कि वे सम्पूर्ण हृदय से सेवा करें, जैसे कि वे मनुष्यों की नहीं बल्कि प्रभु की सेवा कर रहे हैं।" (इफि. 6:7)

25. **आशा** "परमेश्वर की आशा प्रदान करे कि मेरे बच्चे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा परमेश्वर की आशा और आशान्वितता से परिपूर्ण हों।" (रोमियों 15:13)

26. **काम करने की उत्सुकता और योग्यता** "प्रभु, मेरे बच्चों को काम की कीमत और इसे अपने सारे हृदय से करना सिखाइए, जैसे कि वे मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हों।" (कुलु. 3:23)

27. **परमेश्वर के लिए उत्साह** "प्रभु, मेरे बच्चों में एक ऐसा हृदय डाल दे जो "तेरे पीछे लगा रहता है" (भजन 63:8), जो उत्साह के साथ तुझ से चिपका रहता है।"

28. **संयम** "पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरे बच्चे एक अनुशासित और विवेकी जीवन प्राप्त करें, और वो करें जो सही, उचित और निष्पक्ष है।" (नीतिवचन 1:3)

29. **प्रार्थनाशीलता** "प्रभु प्रदान कर कि मेरे बच्चों के जीवन प्रार्थनाशीलता से अंकित हों, कि वे हर अवसर पर हर प्रकार की प्रार्थनाओं और विनतियों के द्वारा आत्मा में प्रार्थना करना सीखें।" (इफि. 6:18)

30. **कृतज्ञता** "पिता, मेरे बच्चों की सहायता कर कि उनके जीवन कृतज्ञता से भरे हों और वे सदा हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम में पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहें।" (इफि. 5:20; कुलु. 2:7)

31. **मिशन के लिए हृदय** "प्रभु, कृपया मेरे बच्चों की मदद कर कि वे सारे देशों में तेरी महिमा, सब लोगों में तेरे अदभुत कार्यों को घोषित करने की इच्छा रखें।" (भजन 96:3)

10 – 40 खिड़की के देशों के लिए प्रार्थना

आज के 100 प्रवेशद्वार शहर जिन्हें महिने के हर सप्ताह प्रार्थना में उठाना है, जैसे नीचे दिया गया है:

दिन – 1, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	कासाबलांका	एल आइयूं	नोकचोत	दाकर
देश	मोरोक्को	पश्चिम सहारा	मोरीशियस	सेनेगल
जनसंख्या	3,858,000	186,000	650,000	1,847,000
स्थापन	उ अफ्रीका	उ प अफ्रिका	उ प अफ्रीका	उ प अफ्रीका
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 2, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	बंजुल	बिसाव	कोनाकरी	बमाको
देश	जाम्बिया	गिनिया-बिसाऊ	गिनिया	माली
जनसंख्या	560,000	130,000	1,734,000	680,000
स्थापन	उ प अफ्रीका	उ अफ्रीका	उ अफ्रीका	उ अफ्रीका
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 3, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	ऊगाडोगो	अलजियरस	तुनिस	त्रिपोली
देश	बुरकिना फासो	अलजीरिया	तुनीसिया	लिबिया
जनसंख्या	437,000	3,722,000	1,935,000	1,828,000
स्थापन	उ प अफ्रीका	उ अफ्रीका	उ अफ्रीका	उ अफ्रीका
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 4, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	कोटोनू	नियामी	कानो	नजामेना
देश	बेनिन	नाइजर	नाइजीरिया	चाड
जनसंख्या	501,000	430,000	660,000	729,000
स्थापन	उ म अफ्रीका	उ प अफ्रीका	प म अफ्रीका	उ म अफ्रीका
धर्म	जीववाद	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 5, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	खारतूम	जिबूटी	आदिस अबाबा	असमारा
देश	सुडान	जिबूटी	इथियोपिया	इरिटरी
जनसंख्या	2,477,000	137,000	2,419,000	1,069,000
स्थापन	उ पू अफ्रीका	उ पू अफ्रीका	उ पू अफ्रीका	उ पू अफ्रीका
धर्म	इसलाम	इसलाम	मसीहियत	इसलाम/मसीहीहियत

दिन – 6, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	मोगादिशू	मक्का	रियाद	साना
देश	सोमालिया	साऊदी अरेबिया	साऊदी अरेबिया	यमन
जनसंख्या	849,000	884,000	2,664,000	503,000
स्थापन	पू अफ्रीका	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम	इसल

दिन – 7, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	मसकत	आबु धाबी	दोहा	मनामा
देश	ओमान	यूएइ	कतर	बहरीन
जनसंख्या	177,000	730,000	340,000	270,000
स्थापन	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 8, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	कुवेत शहर	बेरूत	तिराना
देश	कुवेत	लेबनान	तिराना
जनसंख्या	231,000	1,543,000	427,000
स्थापन	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	द पू यूरोप
धर्म	इसलाम	इसलाम/मसीहीयत	इसलाम

दिन – 9, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	कायरो	अम्मान	दमस्कस
देश	मिस्र	जॉरडन	सीरिया
जनसंख्या	10,361,000	1,273,000	2,511,000
स्थापन	उ पू अफ्रीका	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 10, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	गाज़ा	यरूशलेम	तेलअवीव
देश	गाज़ा पट्टी	इस्राएल	इस्राएल
जनसंख्या	1,073,000	518,000	2,092,000
स्थापन	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 11, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	इसतंबुल	अंकारा	इज़मीर
देश	तुर्की	तुर्की	तुर्की
जनसंख्या	8,143,000	7,509,000	2,168,000
स्थापन	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 12, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	बगदाद	तेहरान	मशहद
देश	इराक	इरान	इरान
जनसंख्या	4,511,000	7,509,000	2,450,000
स्थापन	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व	मध्य पूर्व
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 13, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	बाकू	शखाबद	आशकंत
देश	अज़रबैजन	तुर्कमेनिस्तान	उजबेकिस्तान
जनसंख्या	1,808,000	407,000	2,037,000
स्थापन	म एशिया	म एशिया	म एशिया
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 14, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	दशांब	बिशकेक	असमाती
देश	तजकिस्तान	किरगिज़स्तान	कज़खस्तान
जनसंख्या	620,000	710,000	1,197,000
स्थापन	म एशिया	म एशिया	म एशिया
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 15, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	काबुल	कराची	लाहोर
देश	अफगानिस्तान	पाकिस्तान	पाकिस्तान
जनसंख्या	2,051,000	9,506,000	4,926,000
स्थापन	म एशिया	म एशिया	म एशिया
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 16, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	माले	अहमदाबाद	जयपुर
देश	मालदीव्स	भारत	भारत
जमसंख्या	50,000	4,396,000	1,969,000
स्थापन	द म एशिया	द म एशिया	द म एशिया
धर्म	इसलाम	हिन्दु	हिन्दु

दिन – 17, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	अम्रितसर	दिल्ली	पुने
देश	भारत	भारत	भारत
जनसंख्या	837,000	10,857,000	2,971,000
स्थापन	द म एशिया	द म एशिया	द म एशिया
धर्म	सिख	हिन्दु	हिन्दु

दिन – 18, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	हैदराबाद	कलकत्ता	कानपुर
देश	भारत	भारत	भारत
जनसंख्या	4,208,000	13,604,000	2,378,000
स्थापन	द म एशिया	द म एशिया	द म एशिया
धर्म	हिन्दु	हिन्दु	हिन्दु

दिन – 19, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	वाराणसी	लखनऊ	पटना
देश	भारत	भारत	भारत
जनसंख्या	1,193,000	1,391,00	2,209,000
स्थापन	द म एशिया	द म एशिया	द म एशिया
धर्म	हिन्दु	हिन्दु/इसलाम	हिन्दु

दिन – 20, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	काठमंडू	थिम्फू	कोलम्बो
देश	नेपाल	भूटान	श्री लंका
जनसंख्या	372,000	121,000	2,345,000
स्थापन	द म एशिया	द म एशिया	द म एशिया
धर्म	हिन्दु	बुद्ध	बुद्ध

दिन – 21, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	ताइपी	शेंयाँग	चंगचूँ
देश	तैवान	चीन	चीन
जनसंख्या	3,561,000	5,493,000	2,620,000
स्थापन	पू एशिया	पू म एशिया	पू म एशिया
धर्म	बुद्ध	नास्तिकता	नास्तिकता

दिन – 22, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	उरुम्की	लासा	लन्ज़ो
देश	चीन	चीन	चीन
जनसंख्या	1,724,000	120,000	1,803,000
स्थापन	म एशिया	द म एशिया	पू म एशिया
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 23, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	बीजिंग	होहोत	तियांजिन
देश	चीन	चीन	चीन
जनसंख्या	12,232,000	1,312,000	10,995,000
स्थापन	पू म एशिया	पू म एशिया	पू म एशिया
धर्म	नास्तिकता	बुद्ध/इसलाम	नास्तिकता

दिन – 24, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	ताइयूँ	जिनान	नैनजिंग
देश	चीन	चीन	चीन
जनसंख्या	2,596,000	3,208,000	3,073,000
स्थापन	पू म एशिया	पू म एशिया	पू म एशिया
धर्म	नास्तिकता	नास्तिकता	नास्तिकता

दिन – 25, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	ज़ियान	चेंगडू	चोंगक्वींग
देश	चीन	चीन	चीन
जनसंख्या	3,417,000	3,528,000	3,646,000
स्थापन	पू म एशिया	पू म एशिया	पू म एशिया
धर्म	नास्तिकता	नास्तिकता	नास्तिकता

दिन – 26, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	शंघाई	वुहान	गुआंगझो
देश	चीन	चीन	चीन
जनसंख्या	15,112,000	4,556,000	4,184,000
स्थापन	पू म एशिया	पू म एशिया	पू म एशिया
धर्म	नास्तिकता	नास्तिकता	नास्तिकता

दिन – 27, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	हनोई	वीनतिअन	नोम पेनह
देश	वियेतनाम	लाओस	कम्बोडिया
जनसंख्या	1,260,000	491,000	2,827,000
स्थापन	द पू एशिया	द पू एशिया	द पू एशिया
धर्म	बुद्ध	बुद्ध	बुद्ध

दिन – 28, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	बैंकाक	यांगोन	ढाका
देश	थाईलैंड	म्याँमार	बँगलादेश
जनसंख्या	8,627,000	3,905,000	9,105,000
स्थापन	द पू एशिया	द पू एशिया	द पू एशिया
धर्म	बुद्ध	बुद्ध	इसलाम

दिन – 29, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	कौला लम्पुर	जकारटा	बंदरसेरी बेगावाँ
देश	मलेशिया	इन्डोनेशिया	ब्रूनी
जनसंख्या	2,183,000	11,401,000	110,000
स्थापन	द पू एशिया	द पू एशिया	द पू एशिया
धर्म	इसलाम	इसलाम	इसलाम

दिन – 30, आज के प्रवेशद्वार शहरः

	उलानबाटर	प्योंगयाँग	साप्पोरो
देश	मोंगोलिया	उत्तरी कोरिया	जापान
जनसंख्या	600,000	2,471,000	2,300,000
स्थापन	म एशिया	पू एशिया	पू एशिया
धर्म	जीववाद	नास्तिकता	शिंटो

दिन – 31, आज के प्रवेशद्वार शहर:

	टोकयो/ योकोहमा	ओसाका/कोबे/ क्योटो	फुकोको/किटा/ क्यूशु
देश	जापान	जापान	जापान
जनसंख्या	18,527,000	8,563,000	4,164,000
स्थापन	पू एशिया	पू एशिया	पू एशिया
धर्म	शिंटो	शिंटो	शिंटो

वचन में से व्यक्ति विशेष प्रार्थनाएँ

(1) आत्मिक वृद्धि और मनन के लिए प्रार्थनाएँ

मेरे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर जो महिमा का पिता है, मुझे अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे, और मेरे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि मैं जान लूँ कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है, और उसकी सामर्थ्य मुझ में जो विश्वास करता हूँ, कितनी महान है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ्य, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में पर आनेवाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया; और सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है। (इफिसियों 1:17-23)

मैं उस पिता के सामने घुटने टेकता हूँ, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है, कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार मुझे यह दान दे कि मैं उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवन्त होता जाऊँ; और विश्वास के द्वारा मसीह मेरे हृदय में बसे कि मैं प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर, सब पवित्र लोगों के साथ भलि-भाँति समझने की शक्ति पाऊँ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई, और गहराई कितनी है, और मसीह के उस प्रेम को जान सकूँ जो ज्ञान से परे है कि मैं परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाऊँ। अब जो ऐसा सामर्थी है कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ्य के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रही। आमीन। (इफिसियों 3:14-21)

पिता मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए, यहाँ तक कि मैं उत्तम बातों को प्रिय जानूँ, और मसीह के दिन तक सच्चा बना रहूँ, और ठोकर न खाऊँ; और उस धार्मिकता के फल से जो मसीह यीशु के द्वारा होते हैं, भरपूर होता जाऊँ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे। (फिलिप्पियों 1:9-11)

पिता मैं प्रार्थना और विनती करता हूँ कि मैं सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाऊँ, ताकि मेरा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और प्रभु, तू सब प्रकार से प्रसन्न हो, और मुझ में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और मैं परमेश्वर की पहिचान में बढ़ता जाऊँ, उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होता जाऊँ, यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सकूँ, और पिता तेरा धन्यवाद करता रहूँ, जिसने मुझे इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी होऊँ। (कुलुस्सियों 1:9-12)

पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरा प्रेम सब मनुष्यों के साथ बढ़े, और उन्नति करता जाए, ताकि तू मेरे मन को ऐसा स्थिर करे कि जब मेरा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वह मेरे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरे। (1 थिस्स. 3:12,13)

पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे, ताकि मेरे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार मेरे प्रभु यीशु का नाम मुझ में महिमा पाए, और मैं उस में। (2 थिस्स. 1:11,12)

पिता, मैं तेरा सदा घन्यवाद करता हूँ कि तेरा अनुग्रह मुझ पर मसीह यीशु में हुआ कि उस में होकर मैं हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किया गया - कि मसीह की गवाही मुझ में पक्की निकली - यहाँ तक कि किसी वरदान में मुझे घटी नहीं, और मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहता रहता हूँ। तू मुझे अन्त तक दृढ़ भी करेगा कि मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरूँ। (1 कुरिन्थियों 1:4-8)

पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुझे यह वरदान दे कि तेरा वचन बड़े हियाब से सुनाऊँ। चंगा करने के लिए तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएँ। (प्रेरितों 4:29-30)

(2) प्रेम पर मनन

1. परमेश्वर उन पर करुणा करता है जो उस से प्रेम रखते और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं। परमेश्वर मुझ पर करुणा करता है क्योंकि मैं उस से प्रेम करता और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ। (निर्गमन 20:6)

2. परमेश्वर मुझ से प्रेम रखता और मुझे चुनता है, और अपनी उपस्थिति और अपने बड़े सामर्थ्य के साथ मुझे संसार में से निकालता है। (व्यवस्था. 4:37)

3. मैं प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखता हूँ। मैं उसके वचन और उसकी आज्ञाओं को अपने मन में रखता हूँ। (व्यवस्था. 6:5-6)

4. प्रभु मेरा परमेश्वर मेरे हृदय और मेरे बच्चों के हृदय का खतना करता है कि हम अपने सारे मन और सारे प्राण के साथ उस से प्रेम करें, जिससे हम जीवित रहें। (व्यवस्था. 30:6)

5. मैं प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम करता, और उसके मार्गों पर चलता, और उसकी आज्ञाओं, विधियों, और नियमों को मानता हूँ, जिससे मैं जीवित रहता हूँ और बढ़ता जाता हूँ, और मेरा प्रभु परमेश्वर उस देश में जिसका अधिकारी होने को मैं जा रहा हूँ, मुझे आशीष देगा। (व्यवस्था. 30:16)

6. मैं प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम करता हूँ, और उसकी बात मानता हूँ, और उससे लिपटे रहता हूँ; क्योंकि मेरा जीवन और दीर्घजीवन यही है। (व्यवस्था. 30:20)

7. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ; मैं उसके हाथ में हूँ; मैं उसके पाँवों के पास बैठे रहता हूँ और उसके वचनों से लाभ उठाता हूँ। (व्यवस्था. 33:3)

8. मैं अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम करने की पूरी चौकसी करता हूँ। (यहोशू 23:11)

9. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ और उदय होते हुए सूर्य के समान तेजोमय हूँ। (न्यायियों 5:31)

10. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ और वह अपनी वाचा और करुणा मेरे साथ रखता है। (नहेम्याह 1:5)

11. मैं परमेश्वर के नाम का प्रेमी हूँ और उसमें आनन्दित हूँ। (भजन 5:11)

12. प्रभु धर्मी है और वह धार्मिकता से प्रसन्न होता है। मैं मसीह में धर्मी हूँ और प्रभु मुझ से प्रेम करता है। (भजन 11:7; 2 कुरिं. 5:21)

13. मैं परमेश्वर के धाम से और उसकी महिमा के निवासस्थान से प्रेम रखता हूँ। (भजन 26:8)

14. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ जो मेरा बल है। (भजन 18:1)

15. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ क्योंकि वह सच्चे लोगों की रक्षा करता है। (भजन 31:23)

16. प्रभु धर्म और न्याय से प्रेम करता है। पृथ्वी उसकी करुणा से भरपूर है। मैं धार्मिकता और न्याय से प्रेम करता हूँ। (भजन 33:5)

17. मैं प्रभु के उद्धार से प्रेम करता हूँ और निरन्तर कहता हूँ, 'प्रभु की बड़ाई हो।' (भजन 40:16; 70:4)

18. मैं प्रभु से तो प्रेम और बुराई से घृणा करता हूँ। (भजन 97:10)

19. मैं परमेश्वर की आज्ञाओं से अति प्रसन्न होता हूँ जिन्हें मैं प्रेम करता हूँ। मैं तेरी आज्ञाओं की ओर जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, अपने हाथ उठाऊँगा। मैं तेरी विधियों पर मनन करूँगा। (भजन 119:47-48)

20. मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करता हूँ और दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है। (भजन 119:97)

21. मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम रखता हूँ और दुचित्तों से घृणा करता हूँ। (भजन 119:113)

22. मैं परमेश्वर की आज्ञाओं से खरे सोने से भी अधिक प्रेम करता हूँ। (भजन 119:127)

23. मैं परमेश्वर के नाम से प्रेम रखता हूँ और वह मेरी ओर फिरकर मुझ पर अनुग्रह करता है। (भजन 119:132)

24. परमेश्वर का वचन बहुत शुद्ध है, इसलिए मैं उसके वचन से प्रेम रखता हूँ। (भजन 119:140)

25. परमेशअवर देखता है मैं उसके नियमों से कैसे प्रेम करता हूँ और वह अपनी करुणा के अनुसार मुझे जिलाता है। (भजन 119:159)

26. मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम रखता हूँ और झूठ से बैर और घृणा करता हूँ। (भजन 119:163)

27. मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रेम करता हूँ और मुझ में बड़ी शान्ति है और मुझे कुछ भी ठोकर नहीं लग सकती है। (भजन 119:165)

28. मैं तेरी चितौनियों को जी से मानता हूँ और उन से बहुत प्रेम रखता हूँ। (भजन 119:167)

29. मैं परमेश्वर की नज़र में कीमती हूँ और वह मुझ से प्रेम करता और मेरी सम्मान करता है। (भजन 43:4)

30. मैं अपने शत्रुओं से प्रेम करता, जो मुझे स्राप देते उन्हें आशीष देता, जो मुझ से बैर करते उनका भला करता और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करता हूँ। (मत्ती 5:44)

31. मैं परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखता हूँ। मैं अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखता हूँ। (मत्ती 22:37-39)

32. परमेश्वर मेरा पिता है और मैं प्रभु यीशु मसीह से प्रेम करता हूँ। (यूहन्ना 8:42)

33. यीशु मुझे एक नई आज्ञा देता है कि जैसा उसने मुझ से प्रेम रखा है वैसा मैं भी दूसरों से प्रेम रखूँ। (यूहन्ना 13:34)

34. मैं यीशु से प्रेम करता हूँ और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ। (यूहन्ना 14:15)

35. मेरे पास यीशु की आज्ञाएँ हैं और मैं उन्हें मानता हूँ क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूँ। मैं यीशु से प्रेम रखता हूँ और पिता मुझ से प्रेम रखता है। यीशु मुझ से प्रेम रखेगा और अपने आप को मुझ पर प्रकट करेगा। (यूहन्ना 14:21)

36. मैं यीशु से प्रेम रखता हूँ और उसके वचन को मानता हूँ और पिता मुझ से प्रेम रखता है; और यीशु और पिता मेरे पास आते हैं और मेरे साथ निवास करते हैं। (यूहन्ना 14:23)

37. जैसे पिता यीशु से प्रेम करता है, वैसा ही यीशु मुझ से प्रेम रखता है और मैं उसके प्रेम में बना रहता हूँ। यह यीशु की आज्ञा है कि जैसा उसने मुझ से प्रेम रखा है वैसा ही मैं भी दूसरों से प्रेम रखूँ। (यूहन्ना 15:9,12)

38. परमेश्वर मुझ से प्रेम रखता है जैसा उसने यीशु से प्रेम रखा है। परमेश्वर यीशु से जगत की उत्पत्ति के पहले से प्रेम रखता है। पिता मुझ से जगत की उत्पत्ति के पहले से प्रेम रखता है। जिस प्रेम से पिता ने यीशु से प्रेम रखा है मुझ में है और यीशु मुझ में है। (यूहन्ना 17:23, 26)

39. मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ और मेरे लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं क्योंकि मैं उसकी इच्छा के अनुसार बुलाया गया हूँ। (रोमियों 8:28)

40. स्वर्ग, पृथ्वी या नरक में कुछ भी मुझे परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता है। (रोमियों 8:35, 38-39)

41. मैं परमेश्वर के द्वारा जो मुझ से प्रेम करता है जयवन्त से भी बढ़कर हूँ। (रोमियों 8:37)

42. मैं दूसरों से प्रेम करने के कर्ज को छोड़, किसी का भी कर्जदार नहीं हूँ क्योंकि जब मैं प्रेम करता हूँ तब व्यवस्था पूरी करता हूँ। (रोमियों 13:8)

43. मेरी आँख ने नहीं देखा, न कान ने सुना है और न वे बातें मेरे चित में चढ़ी हैं जो परमेश्वर ने मेरे लिए तैयार की हैं क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूँ। (1 कुरिं. 2:9)

44. मुझ में परमेश्वर का प्रेम है और मैं धीरजवन्त हूँ और कृपालु हूँ। मुझ में परमेश्वर का प्रेम है और मैं डाह नहीं करता। मुझ में परमेश्वर का प्रेम है और मैं अपनी बड़ाई नहीं करता और फूलता नहीं। मैं अनरीति नहीं चलता और अपनी भलाई नहीं चाहता। मैं झुँझलाता नहीं और बुरा नहीं मानता। मैं कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता हूँ। मैं सब बातें सह लेता हूँ, सब बातों की प्रतीति करता हूँ, सब बातों की आशा रखता हूँ और सब बातों में धीरज धरता हूँ। मुझ में परमेश्वर का प्रेम है और मैं कभी टलता नहीं। (1 कुरिं. 13:4-8)

45. मैं आत्माओं के लिए बहुत आनन्द से खर्च करूँगा और खर्च हो जाऊँगा क्योंकि मैं यीशु मसीह के प्रेम से भरपूर प्रेम करता हूँ। (2 कुरिं. 12:15)

46. मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। (गला. 2:20)

47. परमेश्वर ने मुझे जगत की उत्पत्ति से पहले मसीह में चुन लिया कि मैं उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हूँ। (इफि. 1:4)

48. परमेश्वर ने जो दया का धनी है, अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिस से उस ने मुझ से प्रेम किया, जब मैं अपने अपराधों के कारण मरा हुआ था तो मुझे मसीह के साथ जिलाया और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में मुझ पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। (इफि. 2:4-7)

49. मैं प्रेम में चलता हूँ जैसे मसीह ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को सुखदायक सुगन्ध के लिए परमेश्वर के आगे भेंट करके बलिदान कर दिया। (इफि. 5:2)

50. मैं अपने प्रभु यीशु मसीह से सच्चा प्रेम रखता हूँ इसलिए मुझ पर उसका अनुग्रह होता रहता है। (इफि. 6:24)

51. मुझे परमेश्वर ने दूसरों से प्रेम रखना सिखाया है। (1 थिस्स. 4:9)

52. मेरा प्रभु यीशु मसीह आप ही, और मेरा पिता परमेश्वर, जिसने मुझ से प्रेम रखा और अनुग्रह से अनन्त शान्ति और उत्तम आशा दी है, मेरे मन में शान्ति दे और मुझे हर एक अच्छे काम और वचन में दृढ़ करे। (2 थिस्स. 2:16-17)

53. मैं प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने को प्रिय जानता हूँ और मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है। (2 तीमु. 4:8)

54. मैं ने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा है; इस कारण परमेश्वर ने हर्षरूपी तेल से मेरा अभिषेक किया है। (इब्रा. 1:9)

55. मैं प्रभु से प्रेम करता हूँ और परीक्षा में स्थिर रहता और खरा निकलता हूँ और जीवन का मुकुट पाता हूँ। (याकूब 1:12)

56. मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ और उसने मुझे विश्वास में धनी और राज्य के अधिकारी होने के लिए चुना है। (याकूब 2:5)

57. मैं पवित्रशास्त्र के अनुसार राज व्यवस्था पूरी करता हूँ क्योंकि मैं अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखता हूँ। (याकूब 2:8)

58. मैं मसीह से प्रेम रखता हूँ और ऐसे आनन्दित और मगन होता हूँ जो वर्णन से बाहर और महिमा से भरा हुआ है। (1 पतरस 1:8)

59. मैं ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मन को पवित्र किया है और मैं तन-मन लगाकर दूसरों से अधिक प्रेम रखता हूँ। (1 पतरस 1:22)

60. मैं अपने भाई से प्रेम रखता हूँ और मैं ज्योति में रहता हूँ और मैं ठोकर नहीं खा सकता हूँ। (1 यूहन्ना 2:10)

61. मैं न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखता हूँ क्योंकि पिता का प्रेम मुझ में है। (1 यूहन्ना 2:15)

62. मैं जानता हूँ कि मैं मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचा हूँ क्योंकि मैं भाइयों से प्रेम रखता हूँ। (1 यूहन्ना 3:14)

63. मैं वचन और जीभ ही से नहीं, पर काम और सत्य के द्वारा भी प्रेम करता हूँ। (1 यूहन्ना 3:18)

64. परमेश्वर की आज्ञा यह है कि मैं उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करूँ और उसी के अनुसार दूसरों से प्रेम रखूँ। (1 यूहन्ना 3:23)

65. मैं दूसरों से प्रेम रखता हूँ क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। मैं प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं परमेश्वर से जन्मा हूँ और परमेश्वर को जानता हूँ क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (1 यूहन्ना 4:7-8)

66. परमेश्वर मुझ में बना रहता है और मैं दूसरों से प्रेम करता हूँ और उसका प्रेम मुझ में सिद्ध हो गया है। जो प्रेम परमेश्वर मुझ से रखता है, उसको मैं जान गया हूँ और उसका मुझे विश्वास है। परमेश्वर प्रेम है और क्योंकि मैं प्रेम में बना रहता हूँ, मैं परमेश्वर में और परमेश्वर मुझ में बना रहता है। (1 यूहन्ना 4:12, 16)

67. प्रेम मुझ में सिद्ध हुआ है और मुझे न्याय के दिन होगा; क्योंकि जैसा वह संसार में है वैसा मैं भी हूँ। (1 यूहन्ना 4:17)

68. मुझे प्रेम में भय नहीं क्योंकि सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है। मैं उससे प्रेम करता हूँ क्योंकि पहले उस ने मुझ से प्रेम किया। (1 यूहन्ना 4:18-19)

69. मैं यीशु से और जो उससे उत्पन्न हुए हैं उनसे प्रेम रखता हूँ। जब मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ और उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ तो मैं जानता हूँ कि मैं परमेश्वर की सन्तानों से प्रेम करता हूँ। (1 यूहन्ना 5:1-2)

70. परमेश्वर शैतान और उसके साथियों को मेरे वश में कर देगा और वे आकर मेरे पैरों पर गिरेंगे, और यह जान लेंगे कि परमेश्वर मुझ से प्रेम रखता है। (प्रकाशित. 3:9)

(3) विचारों के जीवन पर मनन

1. परमेश्वर मेरे उठने और बैठने को जानता है। परमेश्वर मेरे विचारों को दूर ही से जान लेता है। परमेश्वर के विचार मेरे लिए बहुमूल्य हैं। (भजन 139:2, 17)

2. धर्मियों के विचार न्याय के होते हैं। मैं मसीह में धर्मी हूँ और मेरे विचार न्याय के हैं। (नीतिवचन 12:5; 2 कुरिं. 5:21)

3. मैं अपने काम परमेश्वर पर डाल देता हूँ और मेरे विचार स्थिर हो जाते हैं। (नीतिवचन 16:3)

4. परमेश्वर के विचार मेरे लिए हैं शान्ति के विचार हैं जो मुझे भविष्य और आशा देते हैं। (यिर्मयाह 29:11)

5. मैं कल्पनाओं और हर ऊँची बात का जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करता हूँ और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देता हूँ। (2 कुरिं. 10:5)

6. परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है; और मेरे प्राण और आत्मा को, और मेरे गाँठ-गाँठ और गूदे-गूदे को अलग करके आर-पार छेदता है और मेरे मन की भावनाओं और विचारों को जाँचता है। (इब्रा. 4:12)

7. मैं केवल उन बातों पर विचार करता हूँ जो सत्य, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी, मनभावनी और जो बातें सद्‌गुण और प्रशंसा की हैं। (फिलि. 4:8)

8. परमेश्वर मुझे पूर्ण शान्ति के साथ रखता है क्योंकि मेरा मन उस में धीरज धरे हुए है और मैं उस पर भरोसा रखता हूँ। (यशायाह 26:3)

9. परमेश्वर अपनी व्यवस्था मेरे मन डालता है और मेरे हृदय पर लिखता है। वह मेरा परमेश्वर है और मैं उसकी सन्तान हूँ। (इब्रा. 8:10)

10. परमेश्वर अपने नियम मेरे हृदय पर लिखता है और मेरे विवेक में डालता है। (इब्रा. 10:16)

11. मैं अपनी बुद्धि की कमर बाँधता हूँ। (1 पतरस 1:13)

12. मैं खुद को मसीह के मन से सज्जित करता हूँ। (1 पतरस 4:1)

13. परमेश्वर की शान्ति जो सारी समझ से परे है, मेरे हृदय और विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखती है। (फिलि. 4:7)

14. मेरा मन परमेश्वर की व्यवस्था की सेवा करता है। (रोमियों 7:25)

15. मैं इस संसार के सदृश नहीं बना हूँ बल्कि मेरे मन के नए हो जाने से मेरा चाल-चलन भी बदल गया है, जिससे मैं परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करता रहता हूँ। (रोमियों 12:2)

16. मैं आत्मा के अनुसार जीवन जीता हूँ और आत्मा की बातों पर मन लगाता हूँ। मैं आध्यात्मिक हूँ और मुझ में जीवन और शान्ति है। (रोमियों 8:5-6)

17. मैं मसीह के मन को जानता हूँ क्योंकि मुझ में मसीह का मन है। (रोमियों 11:34; 1 कुरिं. 2:16)

18. मैं अपने मन के आत्मिक स्वभाव में नया हूँ। (इफि. 4:23)

19. मैं मसीह के दीन स्वभाव को अपने में होने देता हूँ। (फिलि. 2:5)

20. मैं परमेश्वर के सेवकों द्वारा दी गई बातों पर ध्यान देता हूँ। (2 पतरस 3:2)

21. परमेश्वर ने मुझे भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। (2 तीमु. 1:7)

22. मैं पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाता हूँ। मैं परमेश्वर की बातों पर मन लगाता हूँ। (कुलु. 3:2)

(4) स्वास्थ्य और चंगाई के लिए मनन

1. मैं अपने प्रभु परमेश्वर का वचन तन मन से सुनता हूँ, और जो उसकी दृष्टि में ठीक है वही करता हूँ, और उसकी आज्ञाओं पर मन लगाता हूँ, और उसकी सब विधियों को मानता हूँ, और परमेश्वर जितने भी रोग संसार में होते हैं उनमें से कुछ भी मुझ पर नहीं भेजेगा; क्योंकि वह मेरा चंगा करनेवाला प्रभु है। (निर्गमन 15:26)

2. मैं अपने प्रभु परमेश्वर की उपासना करता हूँ, और वह मेरे अन्न जल पर आशीष देता है, और मेरे बीच में से रोग दूर करता है। (निर्गमन 23:25)

3. मैं उन सारे मार्गों पर चलता हूँ जिनकी आज्ञा प्रभु मेरे परमेश्वर ने दी है, और मैं जीवित रहता हूँ, और मेरा भला होता है, और जिस देश का अधिकारी होने के लिए मैं जा रहा हूँ उसमें बहुत दिनों के लिए बना रहूँगा। (व्यवस्था. 5:33)

4. प्रभु मुझ से प्रेम रखता है, और मुझे आशीष देता है, और गिनती में बढ़ाता है। वह मेरे बच्चों और मेरी सारी धन संपत्ति को आशीष देता है। प्रभु मुझे सब प्रकार के रोग से दूर रखेगा; और संसार की जितने भी रोग हैं उनमें से कोई भी मुझ पर आने नहीं देगा। (व्यवस्था. 7:13-15)

5. मैं अपने प्रभु परमेश्वर की सब आज्ञाएँ चौकसी से पूरी करने को चित लगाकर उसकी सुनता हूँ, और वह मुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करता है। फिर प्रभु अपने परमेश्वर की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद मुझ पर पूरे होते हैं। धन्य हूँ मैं नगर में, धन्य हूँ मैं खेत में। धन्य है मेरी सन्तान, और मेरी भूमि की उपज, और गाय और भेड़-बकरी आदि पशुओं के बच्चे। धन्य है मेरी टोकरी और मेरी कठौती। धन्य हूँ मैं भीतर आते समय, और धन्य हूँ मैं बाहर जाते समय। प्रभु ऐसा करता है कि मेरे शत्रु जो मुझ पर चढ़ाई करते हैं वे मुझ से हार जाते हैं; वे एक मार्ग से मुझ पर चढ़ाई करते हैं, परन्तु मेरे सामने से सात मार्ग से होकर भाग जाते हैं। मेरे खत्तों पर और जितने कामों में मैं हाथ लगाता हूँ उन सभों पर प्रभु आशीष देता है। क्योंकि मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हुए उसके मार्गों पर चलता हूँ, वह मसीह में

मुझे अपनी पवित्र प्रजा करके स्थिर करता है। और पृथ्वी के देश देश के लोग यह देखकर, कि मैं मसीह का कहलाता हूँ, मुझ से डरते हैं। और जिन आशीषों के विषय प्रभु ने मुझे देने को कहा था, उसमें वह मेरी सन्तान की, और भूमि की उपज की, और पशुओं की बढ़ती करके भलाई करता है। प्रभु मेरे लिए अपने आकाशरूपी उत्तम भण्डार को खोलकर मेरी भूमि पर समय पर मेंह बरसाया करता है, और मेरे सारे कामों पर आशीष देता है। मैं बहुतों को उधार देता हूँ, परन्तु किसी से उधार लेना नहीं पड़ता है। प्रभु मुझे पूँछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराता है, और मैं नीचे नहीं, परन्तु ऊपर ही रहता हूँ, क्योंकि मैं अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने में मन लगाकर चौकसी करता हूँ। मैं उन वचनों से जिनकी आज्ञा प्रभु ने मुझे दी है, न दाहिने और न बाएँ मुड़ता हूँ। मैं केवल प्रभु की आज्ञाओं को मानता हूँ। प्रभु मुझ पर से बीमारी, गरीबी और मृत्यु के स्राप को उठा ले जाता है। मुझ में सिद्ध स्वास्थ्य है क्योंकि मसीह ने मुझे व्यवस्था के स्राप से छुड़ा लिया है। (व्यवस्था. 28:1-14; गलातियों 3:13)

6. परमेश्वर मेरी हड्डी हड्डी की रक्षा करता है और उनमें से एक भी टूटने नहीं पाती। (भजन 34:20)

7. मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है। (भजन 42:11)

8. परमेश्वर मेरा प्राण अधोलोक की शक्ति से छुड़ाता है और मैं अनन्त प्रेम रखता हूँ क्योंकि मुझ में मसीह में अनन्त जीवन है।

9. परमेश्वर की करुणा जीवन से उत्तम है। मेरी जीव मानो चर्बी और चिकने भोजन से तृप्त होता है और मैं जयजयकार करके परमेश्वर की स्तुति करता हूँ। (भजन 63:3,5)

10. मेरा मन प्रभु को धन्य कहता है और उसके किसी भी उपकार को नहीं भूलता क्योंकि परमेश्वर मेरे सब अधर्म क्षमा करता है और मेरे सब रोगों को चंगा करता है। परमेश्वर हर दिन मुझे आशीष देता है। (भजन 103:2-3; 68:19)

11. मेरे परिवार में कोई भी निर्बल नहीं है। (भजन 105:37)

12. मनभावने वचन सदा मेरे मुँह में होते हैं और वे मधुभरे छत्ते के समान हैं, वे मेरे प्राण के लिए मीठे और हड्डियों को हरे भरे रखते हैं। (नीतिवचन 16:24)

13. मैं परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहता और सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाता हूँ। मैं प्रभु के विषय में कहता हूँ, वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूँगा। वह मुझे बहेलिए के जाल से, और महामारी से बचाता है; वह मुझे पंखों की आड़ में ले लेता है और मैं उसके परों के नीचे शरण पाता हूँ। उसकी सच्चाई मेरे लिए ढाल और झिलम ठहरती है। मैं न तो रात के भय से डरता हूँ और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है, न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन-दुपहरी में उजाड़ता है। मेरे निकट हजार और मेरी दाहिनी ओर दस हजार गिर सकते हैं परन्तु वे मेरे पास न आएँगे। मैं अपनी आँखों से दृष्टि करता हूँ और दुष्टों के अन्त को देखता हूँ। परमेश्वर मेरा शरणस्थान ठहरा है, और मैं ने परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है, इसलिए कोई विपत्ति मुझ पर न पड़ेगी, न कोई दुख मेरे डेरे के निकट आएगा। परमेश्वर अपने दूतों को मेरे निमित्त आज्ञा देता है कि जहाँ कहीं मैं जाऊँ वे मेरी रक्षा करें। वे मुझे हाथों हाथ उठा लेते हैं ऐसा न हो कि मेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे। मैं सिंह और नाग को कुचुलता और जवान सिंह और अजगर को लताड़ता हूँ। मैं शैतान और उसकी सारी दुष्ट शक्तियों को अपने पैरों चले कुचलता हूँ। मैं अपने परमेश्वर पर अपना प्रेम रखता हूँ और वह मुझे छुड़ाता है। वह मुझे ऊँचे स्थान पर रखता है क्योंकि मैं ने उसके नाम को जान लिया है। मैं परमेश्वर को पुकारता हूँ और वह मेरी सुनता है। वह संकट में मेरे साथ रहता है। वह मुझे बचाता है और सम्मान करता है। वह मुझे लम्बी उम्र से तृप्त करता है और अपना उद्धार दिखाता है। (भजन 91)

14. परमेश्वर अपने वचन को भेजता है और मुझे चंगा करता है और नष्ट होने से बचाता है। (भजन 107:20)

15. परमेश्वर मेरा उद्धार करता, मुझे चंगाई देता और मुझे सफल बनाता है। (भजन 118:25)

16. परमेश्वर अपने वचन के अनुसार मुझे जिलाता है। परमेश्वर अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भालता है। (भजन 119:25,28)

17. परमेश्वर अपनी करुणा के अनुसार मुझे जिलाता है और मैं उसकी दी हुई चितौनियों को मानता हूँ। (भजन 119:88)

18. परमेश्वर मुझे अपने वचन के अनुसार सम्भालता है और मैं जीवित रहता हूँ। (भजन 119:116)

19. मेरा हृदय परमेश्वर की आज्ञाओं को रखे रहता है और मेरी आयु बढ़ती है और मैं अधिक कुशल से रहता हूँ। मैं प्रभु का भय मानता हूँ और बुराई से अलग रहता हूँ। परमेश्वर का वचन मेरे शरीर को चंगा और मेरी हड्डियों को पुष्ट रखता है। जब मैं लेटता हूँ, तब भय नहीं खाता और जब मैं लेटता हूँ, सुख की नींद आती है। (नीतिवचन 3:1-2, 7-8, 24)

20. मैं परमेश्वर की बातें सुनकर ग्रहण करता हूँ और बहुत वर्ष तक जीवित रहता हूँ। मैं शिक्षा को पकड़े रहता हूँ और उसे छोड़ता नहीं। मैं उनकी रक्षा करता हूँ क्योंकि वे मेरा जीवन हैं। (नीतिवचन 4:10, 13)

21. मैं परमेश्वर के वचन पर ध्यान धरता और उसकी बातों पर कान लगाता हूँ। मैं इनको अपनी आँकों की ओट नहीं होने देता बल्कि उन्हें अपने मन में धारण करता हूँ। वे मेरे लिए जीवन और मेरे सारे शरीर के लिए चंगाई हैं। (नीतिवचन 4:20-22)

22. मैं प्रभु का भय मानता हूँ और मेरी आयु बढ़ती है। मैं सबसे अधिक अपने मन की रक्षा करता हूँ क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है। (नीतिवचन 10:27; 4:23)

23. मेरा फल जीवन का वृक्ष है और मेरे बोलने से लोग चंगे होते हैं। मैं धर्म के मार्ग पर चलता हूँ और मुझ में जीवन है। मेरे मार्ग में मृत्यु नहीं है। (नीतिवचन 11:30; 12:18, 28)

24. मेरी लालसा केवल प्रभु के लिए है और यह जीवन का वृक्ष है। मैं प्रभु का भय मानता हूँ और मैं जीवन का सोता हूँ। मेरा हृदय स्वस्थ्य है और यह मेरे शरीर का जीवन है। (नीतिवचन 13:12; 14:27, 30)

25. मेरा मन आनन्दित रहता है और यह मेरे लिए अच्छी औषधि के समान है। मैं अपने मुँह की बातों के फल से पेट भरता हूँ और मेरे बोलने से जो प्राप्त होता है उससे मैं तृप्त होता हूँ। (नीतिवचन 17:22; 18:20-21)

26. मैं धर्म और कृपा का पीछा करता हूँ, और मैं जीवन, धर्म और महिमा पाता हूँ। (नीतिवचन 21:21)

27. यीशु मसीह ने मेरे रोगों को सह लिया और मेरे दुखों को उठा लिया। वह मेरे लिए मारा-कूटा गया और दुर्दशा में पड़ा। वह मेरे अपराधों के कारण घायल किया गया। वह मेरे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया। मेरी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी और उसके कोड़े खाने से मैं चंगा हो गया। (यशायाह 53:4-5)

28. यीशु ने आप मेरी दुर्बलताओं को ले लिया और मेरी बीमारियों को उठा लिया और अब मैं स्वस्थ्य हूँ और मेरे शरीर में कोई बीमारी या कमजोरी नहीं है। यीशु ने शैतान के कामों को नष्ट कर दिया है जो हैं बीमारियाँ, रोग और शारीरिक कमजोरियाँ; इसलिए मेरे शरीर पर के शैतान के सारे काम नष्ट किए गए हैं और मैं यीशु मसीह में बिलकुल स्वस्थ्य हूँ। (मत्ती 8:17; 1 यूहन्ना 3:8; प्रेरितों 10:38)

29. परमेश्वर की इच्छा जैसे स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्वी पर पूरी होती है। स्वर्ग में कोई बीमारी नहीं है; इसलिए मैं इस पृथ्वी पर बीमार नहीं हूँ। यीशु इस पृथ्वी पर कभी भी बीमार नहीं थे। यीशु मुझ में है और उसका जीवन मुझ में है। जिस प्रकार वह संसार में है वैसे ही मैं भी संसार में हूँ। मैं वैसे ही यीशु के समान स्वस्थ्य हूँ किस प्रकार वह इस पृथ्वी पर स्वस्थ्य था। (मत्ती 6:10; गला. 2:20; 1 यूहन्ना 4:17)

30. मैं अपनी बातों के द्वारा निर्दोष ठहराया जाता हूँ। मुझ में यीशु मसीह का विश्वास है क्योंकि यीशु मुझ में है और वह मेरे विश्वास का कर्त्ता और सिद्ध करनेवाला है। मैं बीमारियों और कमजोरियों के पहाड़ों को कहता हूँ और वे मेरा कहा मानते हैं और चले जाते हैं। मुझे सारी बीमारियों और कमजोरियों पर अधिकार और सामर्थ्य है; मैं उन्हें चले जाने को कहता हूँ और वे मेरा कहना मानते हैं। मैं बीमारों पर अपने हाथ रखता हूँ और वे चंगे हो जाते हैं। (मत्ती 12:37; इब्रा. 12:2; 2 पतरस 1:1, 4; मत्ती 17:20; 10:1; मरकुस 16:18)

31. मैं परमेश्वर में विश्वास करता हूँ और मेरे लिए सबकुछ सम्भव है। परमेश्वर की सारी प्रतिज्ञाएँ मेरे लिए "हाँ" हैं क्योंकि मसीह ने उन सब की कीमत चुकाई है। (मत्ती 9:23; 2 कुरिं. 1:19-20)

32. मैं विश्वास करता हूँ कि जो मैं कहता हूँ वह मेरे लिए हो जाता है और जो मैं कहता हूँ मुझे मिल जाता है। जो कुछ मैं प्रार्थना करके माँगता हूँ, मैं विश्वास करता हूँ कि मुझे मिल गया, और मेरे लिए हो जाता है। (मरकुस 11:23-24)

33. मैं यीशु में विश्वास करता हूँ और जो काम यीशु ने किए थे मैं भी कर सकता हूँ, वरन् इनसे भी बड़े काम करूँगा क्योंकि यीशु पिता के पास चला गया है। जो कुछ मैं यीशु के नाम में माँगता हूँ यीशु करता है कि उसके द्वारा पिता की महिमा हो। यदि मैं यीशु से कुछ भी उसके नाम में माँगूँ, तो यीशु कहता है वह उसे करेगा। (यूहन्ना 14:12-14)

34. मैं यीशु मसीह में बना रहता हूँ और उसके वचनों को उन पर रोजाना मनन करने के द्वारा अपने में बने रहने देता हूँ। मैं जो चाहता हूँ माँगता हूँ और यीशु कहता है यह मेरे लिए हो जाएगा। (यूहन्ना 15:7)

35. मैं जो कुछ पिता से यीशु मसीह के नाम में माँगता हूँ, वह मुझे देता है। पिता यीशु मसीह से प्रेम रखता है और जो कुछ वह माँगता है उसे देता है। पिता मुझ से भी उतना ही प्रेम करता है जितना यीशु से करता है और सब कुछ जो मैं माँगता हूँ मुझे देता है। (यूहन्ना 16:23; 26-27; 17:23)

36. स्वर्ग और पृथ्वी पर सारा अधिकार यीशु मसीह को दिया गया है। मुझे यीशु मसीह के नाम के सामर्थ्य और अधिकार में विश्वास है और उसके नाम के द्वारा मैं पूर्ण रूप से चंगा किया गया हूँ। (मत्ती 28:18; प्रेरितों 3:16)

37. परमेश्वर का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया मुझ में बसा हुआ है और जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह मेरी देह को भी, उस आत्मा के द्वारा जो मुझ में बसा हुआ है, जीवन देता है (रोमियों 8:11)

38. मैं अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करता हूँ, और अपने मन से विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया है और मैं चंगा हुआ हूँ। क्योंकि मैं धार्मिकता के लिए मन से विश्वास करता हूँ, और चंगाई और स्वास्थ्य के लिए मुँह से अंगीकार करता हूँ। (रोमियों 10:9-10)

39. मेरा प्रकाश पौ फटने के समान चमकता है। मेरी चंगाई शीघ्र आती है और मेरा धर्म मेरे आगे आगे चलता है। प्रभु का तेज मेरे पीछे रक्षा करते चलता है। (यशा. 58:8)

40. प्रभु मुझे चंगाई और स्वास्थ्य देता है। वह मुझे चंगा करता है और मुझ पर पूरी शान्ति और सच्चाई प्रकट करता है। (यिर्मयाह 33:6)

41. मैं आत्मा के लिए बोता हूँ और आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटूँगा। मैं हर दिन स्वास्थय और चंगाई के शब्द बोता हूँ और हर दिन मेरे शरीर में स्वास्थ्य की कटनी काटता हूँ। (गला. 6:8-9)

42. यीशु ने शैतान को जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी नष्ट कर दिया है। मैं मृत्यु के भय के बंधन से छुड़ाया गया हूँ। यीशु ने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जयजयकार की ध्वनि लगाई। यीशु मसीह के नाम में मुझे तमाम दुष्टात्माओं और बीमारियों पर अधिकार है और मैं उन्हें निकाल देता हूँ। (इब्रा. 2:14; कुलु. 2:14-15; मरकुस 16:17-18)

43. मेरी प्रार्थना और विश्वास का वचन बीमारों को चंगा करते हैं और यदि उन्होंने पाप किया है, तो वे क्षमा होते हैं। वचन मेरे निकट है, मेरे मुँह में और मेरे मन में है; यह वही विश्वास का वचन है जिसे मैं बोलता हूँ। (याकूब 5:15; रोमियों 10:8)

44. यीशु मेरे पापों को लेकर क्रूस पर चढ़ गया और उसी के मार खाने से मैं चंगा हुआ हूँ। (1 पतरस 2:24)

45. यह परमेश्वर की इच्छा है कि जैसे मैं आत्मिक उन्नति कर रहा हूँ वैसे ही सब बातों में उन्नति करूँ और भला चंगा रहूँ। (3 यूहन्ना 2)

46. मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है और परमेश्वर की सारी भरपूरता मुझ में बास करती है। मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा में परमेश्वर की महिमा करता हूँ। (1 कुरिं. 6:19-20; इफि. 1:23; 3:19)

47. मैं उसके द्वारा जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूँ। (फिलि. 4:13)

48. मैं अब जीवित नहीं हूँ पर मसीह मुझ में जीवित है। (गला. 2:20)

49. जो मुझ में है वह उस से जो संसार में है, बड़ा है। (1 यूहन्ना 4:4)

(5) **किशोरावस्था पर मनन**

1. जैसे मूसा की आँखें न धुंधली पड़ी थीं, और न उसका पौरुष घटा था, उसी प्रकार न मेरी आँखें धुँधली पड़ी हैं और न मेरा पौरुष घटा है। (व्यवस्था. 34:7)

2. परमेश्वर मुझे लम्बी आयु से तृप्त करता है और अपना उद्धार दिखाता है। (भजन 91:16)

3. मेरी आँखें बिलकुल धुंधली नहीं होंगी। प्रभु की आज्ञा निर्मल है, मेरी आँखों में ज्योति लाती है। (यशा. 32:3; भजन 19:8)

4. मेरे दाँत उन ऊन कतरी हुई भेड़ों के झुण्ड के समान हैं, जो नहाकर ऊपर आई हों, उनमें हर एक के जुड़वा बच्चे होते हैं, और उनमें से किसी का साथी नहीं मरा। (श्रेष्ठगीत 4:2)

5. परमेश्वर मुझे बल देता है और मुझे बहुत सामर्थ्य देता है। तरुण तो थकते और श्रमित हो जाते हैं, और जवान ठोकर खाकर गिरते हैं। परन्तु मैं प्रभु की बाट जोहता हूँ, और नया बल प्राप्त करता हूँ; मैं उकाबों के समान उड़ता हूँ, दौड़ता हूँ और श्रमित नहीं होता हूँ, चलता हूँ और थकता नहीं हूँ। (यशा. 40:29-31)

6. मेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है। (भजन 103:5)

7. परमेश्वर का आत्मा जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया मुझ में बसा हुआ है और जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह मेरी देह को भी, उस आत्मा के द्वारा जो मुझ में बसा हुआ है, जीवन देता है (रोमियों 8:11)

8. मेरा शरीर पवित्र आत्मा का मंदिर है। मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा में, जो परमेश्वर के हैं, उसकी महिमा करता हूँ। (1 कुरिं. 6:19-20)

9. मसीह की मेरे शरीर में बड़ाई होती है। (फिलि. 1:20)

10. मैं प्रभु के प्रताप को निहारता हूँ और प्रभु के आत्मा के द्वारा, उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलता जाता हूँ। (2 कुरिं. 3:18)

11. मुझ में न कलंक, न झुर्री या न कोई और ऐसी वस्तु है, वरन् मैं पवित्र और निर्दोष हूँ। मेरा शरीर मसीह की देह, उसके माँस और उसकी हड्डियों का एक अंग है। (इफि. 5:27, 30; 1 कुरिं. 6:15)

12. मेरे सम्पूर्ण आत्मा, प्राण और शरीर प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित हैं। (1 थिस्स. 5:23)

(6) **मसीह में हमारी स्थिति**

1. मसीह में, मैं उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा सेंत-मेंत धर्मी ठहराया गया हूँ। (रोमियों 3:24)

2. मसीह में, मुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं क्योंकि मैं शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलता हूँ। (रोमियों 8:1)

3. मसीह में, जीवन की व्यवस्था ने मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र कर दिया है। (रोमियों 8:2)

4. मसीह में, मैं सब नया जन्म पाए विश्वासियों के साथ एक देह हूँ और एक दूसरे का अंग हूँ। (रोमियों 12:5)

5. मसीह में, मैं पवित्र किया गया हूँ और पवित्र होने के लिए बुलाया गया हूँ, उन सब के साथ जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं। (1 कुरिं. 1:2)

6. मसीह में , मेरे पास परमेश्वर की बुद्धि है और धार्मिकता, और पवित्रता, और छुटकारा है। (1 कुरिं. 1:30)

7. मसीह में, मैं जिलाया जाऊँगा। (संदर्भ है पुनरुत्थान) (1 कुरिं. 15:22)

8. मसीह में, मैं स्थिर और अभिषिक्त किया गया हूँ। (2 कुरिं. 1:2)

9. मसीह में, परमेश्वर सदा मुझे जय के उत्सव में लिए फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध मेरे द्वारा हर जगह फैलाता है। (2 कुरिं. 2:14)

10. मसीह में, मेरे हृदय और मन पर का वो परदा जो मुझे परमेश्वर का वचन समझने से रोकता है, उठा लिया गया है। (2 कुरिं. 3:14-16)

11. मसीह में, मैं एक नई सृष्टि हूँ; पुरानी बातें बीत गई हैं और सब बातें नई हो गई हैं। (2 कुरिं. 5:17)

12. मसीह में, पिता परमेश्वर के साथ मेरा मेल-मिलाप हुआ है जो मेरे अपराधों का दोष मुझ पर नहीं लगाता बल्कि उस ने मेल-मिलाप का वचन मुझे सौंपा है। (2 कुरिं. 5:19)

13. मसीह में, मैं स्वतन्त्र हूँ। (गला. 2:4)

14. मसीह में, मुझे विश्वास के द्वारा जीवन और धार्मिकता की प्रतिज्ञा मिली है क्योंकि मैं विश्वास करता हूँ। (गला. 3:21-22)

15. मसीह में, मैं विश्वास द्वारा परमेश्वर का एक पुत्र हूँ। (गला. 3:26)

16. मसीह में, न कोई यहूदी है और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि मैं सब विश्वासियों के साथ एक हूँ। (गला. 3:28)

17. मसीह में, न खतना और न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल विश्वास जो प्रेम द्वारा प्रभाव डालता है। (गला. 5:6)

18. मसीह में, न खतना और न खतनारहित कुछ है, परन्तु नई सृष्टि। (गला. 6:15)

19. मसीह में, मेरे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता ने मुझे स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है। (इफि. 1:3)

20. मसीह में, परमेश्वर ने मुझे भले कामों के लिए सृजा है जिन्हें उस ने पहले से मेरे करने के लिए तैयार किया है। (इफि. 2:10)

21. मसीह में, समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध है कि परमेश्वर ने मुझे उन सब के साथ जो कुछ स्वर्ग में है और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ मसीह में एकत्र किया है। (इफि. 1:10)

22. मसीह में, मैं उसके साथ उठाया गया हूँ, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया गया हूँ। (इफि. 2:6)

23. मसीह में, मैं जो पहले परमेश्वर से दूर था, अब मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गया हूँ। (इफि. 2:12-13)

24. मसीह में, मैं सुसमाचार के द्वारा मीरास में साझी, और एक ही देह का और प्रतिज्ञा का भागी हूँ। (इफि. 3:6)

25. मसीह में, मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है। (फिलि. 3:14)

26. मसीह में, मैं प्रचार करता हूँ, हर एक मनुष्य को चेतावनी देता हूँ और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाता हूँ, कि मैं हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करूँ। (कुलु. 1:28)

27. मसीह में, मैं जी उठूँगा जब प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी। (1 थिस्स. 4:16)

28. मसीह में, मैं हर बात में धन्यवाद करता हूँ क्योंकि मेरे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है। (1 थिस्स. 5:18)

29. मसीह में, मेरे प्रभु का अनुग्रह विश्वास और प्रेम के साथ बहुतायत से हुआ है। (1 तीमु. 1:14)

30. मसीह में, परमेश्वर ने मेरा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह मेरे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मुझ पर हुआ है। (2 तीमु. 1:9)

31. मसीह में, मैं उन खरी बातों को जो मैं ने सुनी हैं, विश्वास और प्रेम के साथ अपना आदर्श बनाकर रखता हूँ। (2 तीमु. 1:13)

32. मसीह में, मैं परमेश्वर के अनुग्रह में बलवन्त हूँ। (2 तीमु. 2:1)

33. मसीह में, मैं पवित्रशास्त्र जानता हूँ जो मुझे विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। (2 तीमु. 3:15)

34. मसीह में, विश्वास में मेरा सहभागी होना, मेरी सारी भलाई की पहचान में, मैं प्रभावशाली हूँ। (फिलेमोन 6)

35. मसीह में, मैं अपने प्रभु यीशु मसीह की पहचान में न निकम्मा और न निष्फल हूँ बल्कि मैं विश्वास, सद्‌गुण, समझ, संयम, धीरज, भक्ति, भाईचारे की प्रीति और प्रेम में बढ़ता जाता हूँ। (2 पतरस 1:5-8)

36. मसीह में, मैं मसीह की शिक्षा में बना रहता हूँ और मेरे पास पिता भी है और पुत्र भी। (2 यूहन्ना 9)

37. मसीह में, मैं जीवित रहता, चलता-फिरता और स्थिर हूँ। (प्रेरितों 17:28)

38. मसीह में, मेरे पास परमेश्वर का जीवन है जो मनुष्यों की ज्येति है। (यूहन्ना 1:4)

39. मसीह में, मैं नष्ट नहीं होता बल्कि मेरे पास अनन्त जीवन है। (यूहन्ना 3:15)

40. मसीह में, परमेश्वर की सब प्रतिज्ञाएँ हाँ और आमीन हैं जिससे मेरे द्वारा परमेश्वर की महिमा होती है। (2 कुरिं. 1:20)

41. मसीह में, मैं परमेश्वर की धार्मिकता बना हूँ क्योंकि परमेश्वर ने यीशु को जिसने पाप नहीं जाना मेरे लिए पाप ठहराया। (2 कुरिं. 5:21)

42. मसीह में, परमेश्वर ने मुझे जगत की उत्पत्ति से पहले चुन लिया कि मैं उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष होऊँ। (इफि. 1:4)

43. मसीह में, मुझे परमेश्वर से विश्वास के द्वारा धार्मिकता मिली है। (फिलि. 3:9)

44. मसीह में, मैं वैसे ही चलता हूँ जैसे मैं ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण किया है। (कुलु. 2:6)

45. मसीह में, जैसा मुझे सिखाया गया है वैसे ही विश्वास में मैं जड़ पकड़ते और बढ़ते और दृढ़ होता जाता हूँ, और अधिकाधिक धन्यवाद करता रहता हूँ। (कुलु. 2:7)

46. मसीह में, मैं भरपूर हो गया हूँ जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। (कुलु. 2:10)

47. मसीह में, मैं परमेश्वर के वचन पर चलता हूँ और परमेश्वर का प्रेम मुझ में सिद्ध हुआ है। (1 यूहन्ना 2:5)

48. मसीह में, मैं उसमें बना रहता हूँ और वैसा ही चलता हूँ जैसा वह चलता था। (1 यूहन्ना 2:6)

49. मसीह में, प्रेम की नई आज्ञा मुझ में सच्ची ठहरती है जैसी उसमें थी, क्योंकि अन्धकार मिटता जाता है और सत्य की ज्योति चमकने लगी है। (1 यूहन्ना 2:8; यूहन्ना 13:34)

50. मसीह में, मेरे पापों का और संसार के पापों का भी प्रायश्चित हुआ है। (1 यूहन्ना 2:2)

51. मसीह में, मुझे मसीह के प्रकट होने की आशा है और मैं अपने आप को वैसा ही पवित्र करता हूँ जैसा वह पवित्र है। (1 यूहन्ना 3:2-3)

52. मसीह में, कोई पाप नहीं है। (1 यूहन्ना 3:5)

53. मसीह में, मैं उसमें बना रहता हूँ और मैं पाप नहीं करता क्योंकि मैं ने उसे देखा है और उसे जानता हूँ। (1 यूहन्ना 3:6; 2 कुरिं. 3:18)

54. मसीह में, मैं उसमें बना रहता हूँ और वह मुझ में बना रहता हूँ क्योंकि मैं उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ। (1 यूहन्ना 3:24)

55. मसीह में, मैं उसमें बना रहता हूँ और वह मुझ में और मैं यह जानता हूँ क्योंकि उसने अपने आत्मा में से मुझे दिया है। (1 यूहन्ना 4:13)

56. मसीह में, मुझे यह भरोसा है कि यदि मैं उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगूँ, तो वह मेरी सुनता है। (1 यूहन्ना 5:14)

57. मसीह में, मैं जानता हूँ कि उसने मुझे समझ दी है ताकि मैं उसको पहचानूँ जो सत्य है। (1 यूहन्ना 5:20)

58. मसीह में, परमेश्वर ने मुझे अपना अनुग्रह सेंत-मेंत दिया है। (इफि. 1:6)

59. मसीह में, मैं जो पहले अन्धकार था, अब प्रभु में ज्योति हूँ और ज्योति की सन्तान के समान चलता हूँ। (इफि. 5:8)

60. मसीह में, मैं उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त हूँ। (इफि. 6:10)

61. मसीह में, मुझे उसके अनुग्रह के धन के अनुसार, उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा मिली है। (इफि. 1:7)

62. मसीह में, मुझे उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास मिली है। (इफि. 1:11)

63. मसीह में, उस पर विश्वास करने के द्वारा, मुझ पर प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी है। (इफि. 1:13)

64. मसीह में, मैं कलीसिया के साथ जुड़ा हूँ, जिसमें सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती है। (इफि. 2:21)

65. मसीह में, मैं आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाया गया हूँ। (इफि. 2:22)

66. मसीह में, मुझे विश्वास करने के साहस और भरोसे के साथ परमेश्वर के निकट आने का अधिकार है। (इफि. 3:12)

67. मसीह में, मुझे छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा मिली है। (कुलु. 1:14)

68. मसीह में, मुझ में बुद्धि और ज्ञान के सारे भण्डार हैं। (कुलु. 2:3)

69. मसीह में, मेरा खतना हुआ है परन्तु हाथों से नहीं, अर्थात् मसीह का खतना जिससे शारीरिक देह उतार दी गई है। (कुलु. 2:11)

70. मसीह में, मैं उससे प्रेम करता हूँ और आनन्दित और मगन होता हूँ जो वर्णन से बाहर है और महिमा से भरा हुआ है। (1 पतरस 1:8)

71. मसीह में, परमेश्वर की धार्मिकता जो विश्वास के द्वारा है मेरे लिए प्रकट हुई है। (रोमियों 3:21-22)

72. मसीह में, परमेश्वर का अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान मुझ पर बहुतायत से हुआ है। (रोमियों 5:15, 17)

73. मसीह में, मैं जीवन में राज्य करता हूँ। (रोमियों 5:17)

74. मसीह में, मैं मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिए मरा हुआ हूँ और मसीह का हो गया हूँ जो मरे हुओं में से जी उठा था, और मैं परमेश्वर के लिए फल लाता हूँ। (रोमियों 7:4)

75. मसीह में, मैं अपने परमेश्वर का सदा धन्यवाद करता हूँ कि उसका अनुग्रह मसीह यीशु में मुझ पर हुआ है। (1 कुरिं. 1:4)

76. मसीह में, परमेश्वर ने मेरा अपने साथ मेल-मिलाप किया है और मेल-मिलाप की सेवा मुझे सौंप दी है। (2 कुरिं. 5:18)

77. मसीह में, मैं व्यवस्था के कामों से नहीं बल्कि यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरा हूँ। (गला. 2:16)

78. मसीह में, परमेश्वर ने अपनी इच्छा के अभिप्राय के अनुसार अपना लेपालक पुत्र होने के लिए मुझे पहले से ठहराया है। (इफि. 1:5)

79. मसीह में, मैं परमेश्वर की महिमा और स्तुति के लिए धार्मिकता के फल से भरपूर हूँ। (फिलि. 1:11)

80. मसीह में, परमेश्वर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित है, मेरी हर एक आवश्यकता को पूरी करता है। (फिलि. 4:19)

81. मसीह में, परमेश्वर ने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से मुझे जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया है। (1 पतरस 1:3)

82. मसीह में, मैं एक जीवित पत्थर के समान, आत्मिक घर, पवित्र समाज बनता जाता हूँ जिससे परमेश्वर को ग्राह्य आत्मिक बलिदान चढ़ाता हूँ। (1 पतरस 2:5)

83. मसीह में, परमेश्वर ने मुझे अपनी अनन्त महिमा के लिए सिद्ध और स्थिर और बलवन्त होने के लिए बुलाया है। (1 पतरस 5:10)

84. मसीह में, मैं हर बात में अर्थात् वचन और सारे ज्ञान में धनी किया गया हूँ। (1 कुरिं. 1:5)

85. मसीह में मैं जीवित हूँ, जिसके द्वारा सब वस्तुओं की रचना हुई। (1 कुरिं. 8:6)

86. मसीह में, सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई है, चाहे स्वर्ग की हों, अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार। मैं उसके द्वारा और उसके लिए सृजा गया हूँ। (कुलु. 1:16)

87. मसीह में, सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं क्योंकि वह सब वस्तुओं में प्रथम है। मसीह सिर है और सब बातों में वही प्रधान है। (कुलु. 1:17-18)

88. मसीह में, मसीह के क्रूस पर बहे लहू के द्वारा मेरा परमेश्वर से मेल-मिलाप हुआ है। (कुलु. 1:20)

89. मसीह में, मैं वचन में या काम में जो कुछ भी करता हूँ, सब प्रभु यीशु मसीह के नाम से करता हूँ और उसके द्वारा पिता परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। (कुलु. 3:17)

90. मसीह में, परमेश्वर मेरा पूरा पूरा उद्धार करता है, क्योंकि मैं मसीह के द्वारा उसके पास आता हूँ, और वह मेरे लिए विनती करने के लिए सर्वदा जीवित है। (इब्रा. 7:25)

91. मसीह में, मैं परमेश्वर को स्तुतिरूपी बलिदान सर्वदा चढ़ाया करता हूँ, जो मेरे होठों का फल है। (इब्रा. 13:15)

92. मसीह में, मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि मेरा विश्वास और आशा परमेश्वर में हो। (1 पतरस 1:21)

93. मसीह में, मेरे पाप धोए गए हैं। (इब्रा. 1:3)

94. मसीह में, उसके बलिदान के द्वारा मेरे पाप दूर किए गए हैं। (इब्रा. 9:26)

95. मसीह में, मैं यीशु मसीह के लहू के द्वारा अनन्त छुटकारा पाया है। (इब्रा. 9:12)

96. मसीह में, मेरा विवेक उसके लहू के द्वारा शुद्ध किया गया है और मैं अब जीवते परमेश्वर की सेवा करता हूँ। (इब्रा. 9:14)

97. मसीह में, मैं बुलाया गया हूँ और मैं ने अनन्त मीरास की प्रतिज्ञा पाई है, उसके द्वारा जो नई वाचा का मध्यस्थ है। (इब्रा. 9:15)

98. मसीह में, मुझे यीशु के लहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस है, जिसे उसने अपने शरीर में से होकर मेरे लिए अभिषेक किया है। (इब्रा. 10:19-20)

99. मसीह में मैं ज्योति में चलता हूँ जैसे वह ज्योति में है और मेरी दूसरों के साथ सहभागिता है, और यीशु का लहू मुझे सब पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7)

100. मसीह में, विश्वास के कारण मेरी उस अनुग्रह में पहुँच है, जिसमें मैं बना हुआ हूँ, और मैं परमेश्वर की महिमा की आशा में आनन्दित होता हूँ। (रोमियों 5:2)

101. मसीह में, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, मेरा परमेश्वर से मेल-मिलाप हुआ है। (रोमियों 5:10-11)

102. मसीह में, संसार मेरी दृष्टि में, और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ। (गला. 6:14)

103. मसीह में, सारी देह (मसीह की कलीसिया), हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर और एक साथ गठकर, उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक अंग के ठीक-ठीक कार्य करने के द्वारा उस में होता है, अपने आप को बढ़ाती है कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए। (इफि. 4:16)

104. मसीह में, मैं उस शिरोमणि को पकड़े रहता हूँ जिससे सारी देह जोड़ों और पट्ठों के द्वारा पालन-पोषण पाकर और एक साथ गठकर, परमेश्वर की ओर से बढ़ती जाती है। (कुलु. 2:19)

105. मसीह में, मैं परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिए मसीह की सुगन्ध हूँ। (2 कुरिं. 2:15)

106. मसीह में, मैं उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूँ, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा है। (फिलि. 3:12)

107. मसीह में, मेरी देह उसकी है और मेरा मूल तत्त्व मसीह का है। (कुलु. 2:17)

108. मसीह में, मुझे धार्मिकता का प्रतिफल मिलेगा क्योंकि मैं प्रभु मसीह की सेवा करता हूँ। (कुलु. 3:24)

109. मसीह में, कुछ भी अन्धकार नहीं है क्योंकि परमेश्वर ज्योति है। (1 यूहन्ना 1:5)

110. मसीह में उससे मुझे अभिषेक मिला है और मुझ में बना रहता है, और यही अभिषेक मुझे सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नही; और जैसा उसने मुझे सिखाया है वैसे ही मैं उसमें बने रहता हूँ। (1 यूहन्ना 2:27)

111. मसीह में, मैं विश्वास से धर्मी ठहरा हूँ और अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा मेरा परमेश्वर के साथ मेल है। (रोमियों 5:1)

112. मसीह में, मैं उसके द्वारा परमेश्वर में आनन्दित होता हूँ। (रोमियों 5:11)

113. मसीह में, मैं अपने आप को पाप के लिए तो मरा हुआ, परन्तु परमेश्वर के लिए जीवित समझता हूँ। (रोमियों 6:11)

114. मसीह में, मुझे परमेश्वर का वरदान मिला है, जो अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:23)

115. मसीह में, मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ जो मुझे जयवन्त करता है। (1 कुरिं. 15:57)

116. मसीह में, मैं मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया गया हूँ और अब्राहम की आशीष मुझ तक पहुँची है और विश्वास के द्वारा मुझे प्रतिज्ञा का आत्मा मिला है। (गला. 3:13-14)

117. मसीह में, मैं अब दास नहीं परन्तु परमेश्वर का पुत्र हूँ और परमेश्वर का वारिस हूँ। (गला. 4:7)

118. मसीह में, परमेश्वर अपनी उस कृपा से जो मसीह में मुझ पर है, आनेवाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाता है। (इफि. 2:7)

119. मसीह में, मैं किसी भी बात की चिन्ता नहीं करता; परन्तु हर एक बात में मेरे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाते हैं। और परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, मेरे हृदय और मेरे विचारों को सुरक्षित रखती है। (फिलि. 4:6-7)

120. मसीह में, मैं उसके द्वारा जो मुझे सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूँ। (फिलि. 4:13)

121. मसीह में, मैं उसी की इच्छा से यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किया गया हूँ। (इब्रा. 10:10)

122. मसीह में, यीशु मसीह के सनातन वाचा के लहू के द्वारा, मैं हर एक भली बात में उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सिद्ध किया गया हूँ। (इब्रा. 13:20-21)

123. मसीह में, जगत उसके द्वारा उद्धार पाया है। (यूहन्ना 3:17)

124. मसीह में, मैं उसके लहू के कारण धर्मी ठहरा हूँ और उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से बचा हूँ। (रोमियों 5:9)

125. मसीह में, मैं उसके द्वारा जिसने मुझ से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हूँ। (रोमियों 8:37)

126. मसीह में, परमेश्वर का प्रेम मेरे लिए इस से प्रकट हुआ कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा कि मैं उसके द्वारा जीवन पाऊँ। (1 यूहन्ना 4:9)

127. मसीह में, मैं उसके साथ मर गया हूँ और उसके साथ जीता भी हूँ। (रोमियों 6:8)

128. मसीह में, मैं क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। (गला. 2:20)

129. मसीह में, मैं जो अपने अपराधों के कारण मरा हुआ था, उसके साथ जिलाया गया हूँ। (इफि. 2:5)

130. मसीह में, मैं संसार की आदि शिक्षा की ओर से मर गया हूँ, और मैं इस संसार की विधियों के वश में नहीं हूँ। (कुलु. 2:20)

131. मसीह में, मैं स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहता हूँ, क्योंकि मैं मसीह के साथ जिलाया गया और उसके साथ परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा हूँ। (कुलु. 3:1; इफि. 2:6)

132. मसीह में, मैं तो मर गया हूँ और मेरा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। (कुलु. 3:3; गला. 6:16)

133. मसीह में, मैं मृत्यु का बपतिस्मा पाने से उसके साथ गाड़ा गया हूँ, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही मैं भी नए जीवन की सी चाल चलूँ। (रोमियों 6:4)

134. मसीह में, मेरा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि मेरा पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए और मैं आगे को पाप के दासत्व में न रहूँ। (रोमियों 6:6)

135. मसीह में, परमेश्वर ने मुझे सब कुछ दिया है, जिसने अपने पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा परन्तु उसे मेरे दे दिया। (रोमियों 8:32)

136. मसीह में, मैं परमेश्वर के सामर्थ्य से जीवित हूँ। (2 कुरिं. 13-4)

137. मसीह में, मैं बपतिस्मा में गाड़ा गया और परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठा हूँ। (कुलु. 2:12)

138. मसीह में, मेरे सब अपराध क्षमा किए गए हैं और मैं उसके साथ जिलाया गया हूँ। (कुलु. 2:13)

139. मसीह में, जब मसीह जो मेरा जीवन है प्रकट होगा, तब मैं भी उसके साथ महिमा सहित प्रकट किया जाऊँगा। (कुलु. 3:4)

140. मसीह में, मैं उसके साथ जीवन जीता और राज्य करता हूँ। (2 तीमु. 2:11-12)

141. मसीह में, मैं उसे खाता और उसके कारण जीवित रहता हूँ जैसे जीवित पिता ने पुत्र को भेजा और वह पिता के कारण जीवित है। (यूहन्ना 6:57)

142. मसीह में, मैं उसके पास आता हूँ क्योंकि वह मार्ग, सत्य और जीवन है। (यूहन्ना 14:6)

143. मसीह में, मैं उसके वचन खाता हूँ जो आत्मा और जीवन हैं, और वह मुझ में और मैं उसमें बना रहता हूँ। (यूहन्ना 6:56, 63)

144. मसीह में, मैं जानता हूँ कि वह पिता में है, और वह मुझ में है और मैं उसमें हूँ। (यूहन्ना 14:20)

145. मसीह में, मैं बहुत फल फलता हूँ क्योंकि मैं एक डाली हूँ और वह दाखलता है; मैं उसमें बना रहता हूँ और वह मुझ में बना रहता है क्योंकि उस से अलग होकर मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ। (यूहन्ना 15:4-5)

146. मसीह में, क्योंकि मैं उसमें बना रहता और उसके वचन मुझ में बने रहते हैं, इसलिए मैं जो चाहे माँगूं और वह मेरे लिए हो जाएगा। (यूहन्ना 15:7)

147. मसीह में, मुझे शान्ति है और क्लेश में मुझे ढाढ़स है क्योंकि उसने संसार को जीत लिया है। (यूहन्ना 16:33)

148. मसीह में, वह मुझे से वैसा ही प्रेम रखता है जैसा पिता उससे रखता है और मैं उसके प्रेम में बना रहता हूँ। (यूहन्ना 15:9)

149. मसीह में, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से और अपने परमेश्वर के आत्मा से धोया गया और पवित्र हुआ और धर्मी ठहरा हूँ। (1 कुरिं. 6:11)

150. मसीह में, मैं वो काम भी करता हूँ जो उसने किए वरन् उनसे भी बड़े काम करता हूँ क्योंकि वह पिता के पास गया है और सत्य के पवित्र आत्मा को भेजा है जो सर्वदा मेरे साथ रहता है। (यूहन्ना 14:12, 16-17)

(7) **सम्पन्नता पर मनन**

1. परमेश्वर मुझे आशीष देता है और मेरे द्वारा अपना नाम महान करता है। मैं दूसरों के लिए आशीष हूँ। मैं अब्राहम की सन्तान हूँ और अब्राहम की आशीषें मुझ पर आ पड़ी हैं। (उत्प. 12:2-3; गला. 3:7,14)

2. मैं परमप्रधान की ओर से, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, धन्य हूँ। (उत्पत्ति 14:19)

3. परमेश्वर मेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा प्रतिफल है। (उत्पत्ति 15:1)

4. प्रभु मेरे साथ है और मुझे सफलता देता है और जो कुछ मैं करता हूँ उसमें सम्पन्न होता हूँ। (उत्पत्ति 39:2-3)

5. परमेश्वर का वचन मेरे चित से कभी उतरता नहीं है, और मैं इसमें दिन और रात ध्यान किए रहता हूँ ताकि जो कुछ इसमें लिखा है उसके अनुसार करने की मैं चोकसी करूँ। ऐसा करने से मेरे सब काम सफल होते हैं और मैं प्रभावशाली होता हूँ। (यहोशू 1:8)

6. मैं परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहता हूँ और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता हूँ। मैं उस वृक्ष के समान हूँ जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता हूँ, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। जो कुछ मैं करता हूँ उसमें सफल होता हूँ। (भजन 1:2-3)

7. प्रभु मेरा चरवाहा है और मुझे कुछ घटी न होगी। (भजन 23:1)

8. मैं प्रभु का भय मानता हूँ और मुझे किसी बात की घटी नहीं होकी है। जवान सिंहों को तो घटी होती है और वे भूखे रहते हैं, परन्तु मैं उसे खोजता हूँ और मुझे किसी भली वस्तु की घटी नहीं होती। (भजन 34:9-10)

9. मैं प्रभु का दास हूँ और वह मेरी सम्पन्नता से प्रसन्न होता है। (भजन 35:27)

10. मैं प्रभु में आनन्दित होता हूँ और वह मेरे हृदय की इच्छाओं को पूरा करता है। (भजन 37:4)

11. आज वह दिन है जो प्रभु ने बनाया है। मैं इसमें मगन और आनन्दित होऊँगा। प्रभु मेरा उद्धार करता और मुझे सफलता देता है। (भजन 118:24-25)

12. मैं प्रभु का भय मानता हूँ और उसकी आज्ञाओं में अति प्रसन्न रहता हूँ; धन सम्पत्ति मेरे घर में रहती है। (भजन 112:1, 3)

13. मैं अपनी सम्पत्ति और अपनी भूमि की सारी पहली उपज से प्रभु की प्रतिष्ठा करता हूँ, और मेरे खत्ते भरे पूरे रहते हैं। (नीतिवचन 3:9-10)

14. मैं परमेश्वर की बुद्धि से प्रेम रखता हूँ और मेरे पास धन और प्रतिष्ठा, वरन् ठहरनेवाला धन और धर्म भी हैं। मेरे भण्डार भरे रहते हैं। (नीतिवचन 8:12, 18, 21)

15. प्रभु मेरे प्राण को भूखों मरने नहीं देता है। मैं कामकाजी हूँ और वह मुझे धनी करता है। (नीतिवचन 10:3-4)

16. मेरे सारे परिश्रण में सदा लाभ होता है। मैं प्रभु में बुद्धिमान हूँ और वह मुझे धन का मुकुट पहनाता है। (नीतिवचन 14:23-24)

17. दीनता और प्रभु के भय से मुझे धन, महिमा और जीवन मिलते हैं। (नीतिवचन 22:4)

18. मैं इच्छुक और आज्ञाकारी हूँ और देश के उत्तम उत्तम पदार्थ खाता हूँ। (यशा. 1:19-20)

19. मैं अपना सारा दशमांश भण्डार में लाता हूँ कि परमेश्वर के भवन में भोजनवस्तु रहे। मैं प्रभु को परखता हूँ और वह मेरे लिए आकाश के झरोखे खोलता है और मेरे ऊपर अपरम्पार आशीष की बारिश करता है। और प्रभु मेरे लिए नाश करनेवाले को घुड़कता है। (मलकी 3:10-11)

20. मैं सबसे पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करता हूँ और ये सब चीजें मुझे मिल जाती हैं। (मत्ती 6:33)

21. मैं देता हूँ और मुझे भी दिया जाता है: पूरा नाप दबा दबाकर और हिला हिलाकर और उभरता हुआ मेरी गोद में डाला जाता है, और जिस नाप से मैं नापता हूँ , उसी नाप से मेरे लिए नापा जाता है। (लूका 6:38)

22. मैं अपना सब कुछ यीशु और सुसमाचार के लिए त्याग देता हूँ और मैं इस समय सौ गुणा पाता हूँ, सताव के साथ, और परलोक में अनन्त जीवन पाता हूँ। (मरकुस 10:30)

23. यीशु मेरे लिए कंगाल हो गया कि उसके कंगाल हो जाने से मैं धनी हो जाऊँ। (2 कुरिं. 8:9)

24. मैं बहुत बोता हूँ और बहुत काटता हूँ। मैं खुशी से देता हूँ; न कुढ़ कुढ़ के और न दबाव से, और परमेश्वर मुझ से प्रेम रखता है और सब प्रकार का अनुग्रह बहुतायत से देता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो मुझे आवश्यक है, मेरे पास रहता है; और हर एक भले काम के लिए मेरे पास बहुत कुछ होता है। (2 कुरिं. 9:6-8)

25. मसीह ने मुझे गरीबी के शाप से छुड़ा लिया है। (गला. 3:13; व्यवस्था. 28)

26. मैं देने की सेवकाई में भागी होता हूँ और मेरा परमेश्वर अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, मेरी हर घटी को पूरा करता है। (फिलि. 4:15-16, 18-19)

27. यह परमेश्वर की इच्छा है कि मैं सब चीजों में उन्नति करूँ और भला चंगा रहूँ, जैसे मैं आत्मिक उन्नति कर रहा हूँ। (3 यूहन्ना 2)

(8) बच्चों के लिए मनन

1. मैं अपने पिता और अपनी माता का आदर करता हूँ, जैसे मेरे प्रभु परमेश्वर ने आज्ञा दी है और मेरे दिन बहुत हैं और मेरा भला होता है। (व्यवस्था. 5:16)

2. मैं बढ़ता जा रहा हूँ और प्रभु मुझे आशीष देता है और प्रभु का आत्मा मुझे उभारता है। (न्यायियों 13:24-25)

3. मैं प्रभु की सेवा करता हूँ और प्रभु के संग रहता हुआ बढ़ता जाता हूँ। (2 शमूएल 2:11, 21)

4. मैं बढ़ता जाता हूँ और परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह मेरे साथ है। (1 शमूएल 2:26)

5. मैं अपने पिता की शिक्षा पर कान लगाता हूँ और अपनी माता की शिक्षा ठुकराता नहीं हूँ; और वे मेरे सिर के लिए शोभायमान मुकुट और मेरे गले के लिए कन्ठ माला हैं। (नीतिवचन 1:8-9)

6. मैं अपने पिता की शिक्षा सुनता हूँ, और बुद्धि, ज्ञान और आत्मिक बातों की समझ प्राप्त करता हूँ। (नीतिवचन 4:1)

7. मैं बुद्धिमान हूँ और अपने पिता को प्रसन्न करता हूँ। मैं बुद्धि से प्रेम रखता हूँ और अपने पिता को आनन्दित करता हूँ। (नीतिवचन 15:20; 29:3)

8. मैं अपने कामों से पहिचाना जाता हूँ, कि क्या मेरा काम पवित्र और सीधा है। (नीतिवचन 20:11)

9. मुझे उसी मार्ग की शिक्षा मिली है जिस मार्ग पर प्रभु में मुझे चलना है; और मैं बुढ़ापे में भी उससे न हटूँगा। (नीतिवचन 22:6)

10. मैं अपने जन्मानेवाले पिता की सुनता हूँ और जब मेरी माता बूढ़ी हो जाती है तब भी उसे तुच्छ नहीं जानता। (नीतिवचन 23:22)

11. मैं बढ़ता और बलवन्त होता हूँ, और बुद्धि से परिपूर्ण हूँ और परमेश्वर का अनुग्रह मुझ पर है। (लूका 2:40)

12. मैं बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता हूँ। (लूका 2:52)

13. मैं प्रभु में अपने माता-पिता का आज्ञाकारी हूँ, क्योंकि यह उचित है, और मेरा भला होता है, और मैं पृथ्वी पर बहुत दिन जीवित रहता हूँ। (इफि. 6:1, 3)

14. मेरा प्रभु की शिक्षा और चेतावनी में पालन-पोषण हुआ है। (इफि. 6:4)

15. मैं सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करता हूँ क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता हूँ। (कुलु. 3:20)

16. मैं किसी को अपनी जवानी को तुच्छ नहीं समझने देता हूँ, बल्कि चाल-चलन, और प्रेम, और विश्वास, और पवित्रता में विश्वासियों के लिए आदर्श हूँ। (1 तीमु. 4:12)

17. मैं बचपन से पवित्रशास्त्र को जानने का प्रयास करता हूँ कि मैं विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बन सकूँ। (2 तीमु. 4:15)

एक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना

यह प्रार्थना आज भी हमें चुनौती दे!!!!
यह ए. ड्बल्यू. टोज़र - एक व्यक्ति जिसे देशों का गवाह होने के लिए बुलाया गया था, की प्रार्थना है। अपने अभिषेक के दिन उसने प्रभु से यह कहा था। ऐल्डरों और मिनिस्टरों के उस पर हाथ रखने और प्रार्थना करने के बाद, वह एक एकान्त और शान्त जगह में अपने उद्धारकर्त्ता से मिलने के लिए अलग हुआ। और उसने कहा:

"हे प्रभु, मैं ने तेरी आवाज सुनी और मैं डर गया। तू ने मुझे एक गंभीर और संकटपूर्ण समय में, एक विस्मयकारी काम के लिए बुलाया है। तू सारे देशों और स्वर्ग और पृथ्वी को हिलाने वाला है, कि जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता वे बने रहें।

हे मेरे प्रभु, मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे अपना सेवक होने का सम्मान देने की कृपा की है। कोई भी यह सम्मान अपने लिए अपने आप से नहीं ले सकता है, पर वही जो हारून के समान बुलाया गया है। तू ने मेरा, उनके लिए जो हृदय के हठीले और कानों के बहरे हैं, अपने संदेशवाहक के रूप में अभिषेक किया है। उन्होंने तुझे स्वामी के रूप में ठुकराया है, और यह आशा नहीं की जा सकती है कि वे मुझे तेरे सेवक के रूप में स्वीकार करेंगे।

मेरे परमेश्वर, मैं अपनी कमजोरियों के बारे या काम के लिए खुद को अनुपयुक्त जानकर दुखी होकर समय बर्बाद नहीं करना चाहता। जिम्मेवारी मेरी नहीं बल्कि तेरी है। तू ने कहा है, मैं मुझे जानता हूँ - मैं ने तेरा अभिषेक किया, मैंने तुझे पवित्र किया, और तू ने यह भी कहा है, तू उन सब के पास जाएगा जिन के पास मैं तुझे भेजूँगा, और जो कुछ भी कहने की मैं तुझे आज्ञा दूँगा तू कहेगा। मैं कौन हूँ कि तेरे साथ विवाद करूँ या तेरी सर्वसत्ताक फैसले पर संदेह प्रकट करूँ? फैसला मेरा नहीं, परन्तु तेरा है। तो प्रभु, ऐसा ही हो। मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो।

मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूँ, हे भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों के परमेश्वर, कि जब तक मैं तेरा सम्मान करूँगा, तब तक तू भी मेरा सम्मान करेगा। इसलिए मुझे यह विधिवत् प्रतिज्ञा लेने में मदद कर कि मैं अपने भावी जीवन और परिश्रम में तेरा आदर कर सकूँ, चाहे मुझे लाभ हो या नुक्सान, जीऊँ या मरूँ, और फिर जीते जी इस प्रतिज्ञा का पालन कर सकूँ।

हे परमेश्वर, तेरा काम करने का समय आ गया है, क्योंकि शत्रु तेरे चरागाह में घुस गया है और भेड़ों को फाड़ा और तितर-बितर किया जा रहा है। और झूठे भविष्यद्वक्ता बहुत हो गए हैं जो खतरे का इन्कार करते और संकट पर हँसते हैं जो तेरी भेड़ों पर आ रहा है। भेड़ें इन किराए के टट्टूओं से धोखा खाती और वफ़ादारी से उनके पीछे चलती हैं जबकि भेड़िये फाड़ने और नष्ट करने के लिए करीब आते जाते हैं। मैं विनती करता हूँ कि तू मुझे शत्रु की उपस्थिति को पहचानने के लिए तेज आँखें दे; सच्चे में से झूठे मित्रों को पहचानने के लिए मुझे समझ दे। देखने के लिए मुझे दर्शन और जो देखता हूँ उसे विश्वासयोग्यता से बताने के लिए साहस दे। मेरी आवाज को अपनी आवाज जैसी बना दे ताकि बीमार भेड़ें भी इसे सुनकर पहचानें और तेरे पीछे चल सकें।

प्रभु यीशु, मैं आत्मिक तैयारी के लिए तेरे पास आता हूँ, अपना हाथ मुझ पर रख। मुझे नए नियम के भविष्यद्वक्ता के तेल से अभिषेक कर। ऐसा न हो कि मैं एक धार्मिक शास्त्री बन जाऊँ और अपने भविष्यद्वक्ता के बुलावे को खो दूँ। मुझे उस शाप से बचा जो आजकल के याजक-वर्ग पर अन्धकार के समान छाया हुआ है, समझौते का, नकल का, व्यावसायिकता का शाप। मुझे एक कलीसिया का उसके आकार, उसकी लोकप्रियता या उसकी वार्षिक दान की मात्रा के आधार पर न्याय करने की गलती से बचा।

मुझे याद रखने में मदद कर कि मैं एक भविष्यद्वक्ता हूँ - एक प्रवर्तक नहीं, एक धार्मिक मैंनेजर नहीं, परन्तु एक भविष्यद्वक्ता। मुझे कभी भी भीड़ का गुलाम मत बनने दे। मेरे प्राण को शारीरिक अभिलाषाओं से चंगा कर और प्रसिद्धि की ललक से मुझे छुड़ा। चीजों की गुलामी से मुझे बचा। मुझे अपने दिन घर के ईर्द-गिर्द फड़फड़ाते हुए व्यर्थ न गँवाने दे। हे परमेश्वर, मुझ में अपना भय डाल दे और मुझे प्रार्थना के स्थान में खदेड़ दे जहाँ मैं प्रधानों, और अधिकारियों, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों के साथ संघर्ष कर सकूँ। जरूरत से अधिक खाने और देर से सोने से मुझे छुड़ा। मुझे संयम सिखा कि मैं यीशु मसीह का एक अच्छा सौनिक बन सकूँ।

मैं इस जीवन में कड़ी मेहनत और कम ईनाम स्वीकार करता हूँ। मैं कोई सरल स्थान की माँग नहीं करता। मैं उन छोटे छोटे तरीकों के लिए आँखें बंद करने का प्रयास करूँगा जो जीवन आसान बना सकते हैं। यदि दूसरे चिकने रास्ते खोजते हैं तो मैं उन्हें अधिक दोषी ठहराए बिना कठिन रास्तों पर चलने का प्रयास करूँगा। मैं विरोध की अपेक्षा करूँगा और जब यह आए तो इसे शान्ति से सहने का प्रयास करूँगा। यदि, जैसा कभी-कभार तेरे सेवकों के साथ होता है, तेरे दयालु लोग मुझ पर कृतज्ञ दान आग्रह के साथ डाल दें, तो उस समय मेरे साथ रह और मुझे उस विनाश से बचा जो अक्सर इसके पीछे पीछे आता है। जो कुछ मैं पाऊँ उसे मुझे इस प्रकार इस्तेमाल करना सिखा कि यह न तो मेरे प्राण को चोट पहुँचाए और न मेरे आत्मिक सामर्थ्य को कम करे।

और यदि तेरे अनुमत पूर्वप्रबंध में, तेरी कलीसिया से मुझे सम्मान मिलता है, तो ऐसा कर कि उस घड़ी मैं यह न भूल जाऊँ कि मैं तेरी छोटी से छोटी दया के योग्य भी नहीं हूँ, और कि यदि लोग मुझे उतने ही करीब से जानते जितने करीब से मैं खुद को जानता हूँ तो वे अपने सम्मान को देने से इन्कार करते या वे उस किसी दूसरे को दे देते जो उसे पाने के अधिक योग्य है।

और अब, हे स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं अपने बाकि के दिन तेरे लिए पवित्र करता हूँ; वे तेरी इच्छा के अनुसार अधिक या कम हों। मुझे बड़े बड़े लोगों के सामने खड़ा कर या गरीबों या दीनों की सेवा करने दे, यह फैसला मेरा नहीं है और यदि मैं कर सकता भी तो इसे प्रभावित करने की कोशिश नहीं करूँगा। मैं तेरी इच्छा पूरी करने के लिए तेरा सेवक हूँ। यह इच्छा किसी पद या धन या प्रसिद्धि से मीठी है, और मैं पृथ्वी या स्वर्ग की सब चीजों से बढ़कर इसे चुनता हूँ।

हालाँकि मुझे तू ने चुना है और एक ऊँचे और पवित्र बुलावे से सम्मानित किया है, मुझे यह कभी भूलने न देना कि मैं मात्र धूल और राख का एक मनुष्य हूँ, उन स्वाभाविक त्रुटियों और मनोभावों के साथ जो सारी मनुष्य जाति को सताती हैं। हे मेरे प्रभु और उद्धारकर्त्ता, मैं इसी लिए आग्रह करता हूँ कि तू मुझे मुझसे और उन सब हानियों से बचा ले जो मैं दूसरों की सेवा करते हुए अपने ऊपर ला सकता हूँ।

मुझे पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से भर दे, और मैं तेरे सामर्थ्य में जाऊँगा और तेरी ही धार्मिकता का प्रचार करूँगा। जब तक मेरा सामान्य बल कार्य करेगा मैं तेरे उद्धार करनेवाले प्रेम के संदेश को दूर दूर तक फैलाऊँगा।

तब, मेरे प्यारे प्रभु, जब मैं बूढ़ा और थका-माँदा हो जाऊँ और मुझ में चलते रहने की शक्ति न रहे, मेरे लिए स्वर्ग में एक स्थान तैयार रख, और अनन्त महिमा में अपने पवित्र सन्तों के साथ मेरी गिनती कर ले। आमीन।

उपवास – एक बाइबल का जीने का तरीका

उपवास प्रभु के साथ गहरी संगति पर ध्यान लगाने और आत्मिक सामर्थ्य के नवीनीकरण के उद्देश्य के लिए भोजन से जान-बूझकर किया गया परहेज है। यदि प्रार्थना पटरी है जिस पर परमेश्वर का इंजन दौड़ता है, तो उपवास वो तेल है जो गाड़ी का पटरी पर तेज दौड़ना आसान बना देता है। उपवास परमेश्वर की गाड़ी की गति तेज करता है।

कुछ चीजें हैं जिन्हें परमेश्वर तब तक नहीं करेगा जब तक उसके बच्चों की प्रार्थनाएँ उपवास के साथ नहीं होती हैं। उपवास में, व्यक्ति महसूस करता है कि उसने वह सब किया है जो मुमकिन है और अब परमेश्वर को अलौकिक तरीके से कार्य करना होगा। बाइबल उपवास करते हुए लोगों के उदाहरणों से भरी पड़ी है। हम उन में से कुछ पर ध्यान लगाएँगे।

उपवास – मन फिराने का एक कार्य

"फिर उसी महिने के चौबीसवें दिन को इस्राएली उपवास का टाट पहिने और सिर पर धूल डाले हुए, इकट्ठे हो गए। तब इस्राएल के वंश के लोग सब अन्यजाति लोगों से अलग हो गए, और खड़े होकर, अपने अपने पापों और अपने पुरखाओं के अधर्म के पापों को मान लिया। तब उन्होंने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर दिन के एक पहर तक अपने परमेश्वर यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक पढ़ते, और एक और पहर अपने पापों को मानते, और अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करते रहे।" (नहेम्याह 9:1-3)
"हे याजको, कटि में टाट बाँधकर छाती पीट-पीट के रोओ। हे वेदी के टहलुओ, हाय, हाय, करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात बिताओ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्ध अब नहीं आते। उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन् देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठा करके उसकी दोहाई दो।" (योएल 1:13-14)
"तौभी", यहोवा की यह वाणी है, "अभी भी सुनो, उपवास के साथ रोते-पीटते अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ। अपने वस्त्र नहीं, अपने मन ही को फाड़कर," अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो; क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करुणानिधान और दुख देकर पछतानेहारा है। क्या जाने वह फिरकर पछताए और और ऐसी आशीष दे जिस से तुम्हारे परमेश्वर यहोवा का अन्नबलि और अर्ध दिया जाए। सिय्योन में नरसिंगा फूँको, उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो; लोगों को इकट्ठा करो। सभा को पवित्र करो; पुरनियों को बुला लो; बच्चों और दूधपीउवों को भी इकट्ठा करो। दुल्हा अपनी कोठरी से, और दुल्हिन अपने कमरे से निकल आएँ। याजक जो यहोवा के टहलुए हैं, वे आँगन और वेदी के बीच में रो रोकर कहें, "हे यहोवा, अपनी प्रजा पर तरस खा; और अपने निज भाग की नामधराई न होने दे; न जाति-जाति उसकी उपमा देने पाएँ। जाति-जाति के लोग आपस में क्यों कहने पाएँ, 'उनका परमेश्वर कहाँ रहा?'" (योएल 2:12-17)
तो, यहाँ उपवास को हम शोक के रूप में देखते हैं - टाट बाँधना, मन को फाड़ना, रोना, और प्रभु को पुकारना। यह प्रभु को कहना है, "परमेश्वर, मुझे अपने व्यक्तिगत पाप और असफलता के लिए पछतावा है", या "मुझे मेरे लोगों के पाप और असफलता के लिए पछतावा है।" उपवास है जैसे परमेश्वर से कहना, "प्रभु, मेरे मन फिराने को देख! जो मैंने किया है उससे मुझे घृणा है। मुझे क्षमा कर।" जब इस्राएल का बिन्यामीन के साथ युद्ध हुआ, और उसने एक ही दिन में बाइस हजार पुरुषों को खो दिया, तो बाइबल कहती है, "तब सब इस्राएली, वरन् सब लोग बेतेल को गए; और रोते हुए यहोवा के सामने बैठे रहे, और उस दिन साँझ तक उपवास किया, और यहोवा को होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।" (न्यायियों 20:26)। इससे उन्हें बिन्यामीन के विरुद्ध एक बड़ी विजय मिली।

उपवास – स्वयं को दीन करने के लिए

एज्रा उन यहूदियों में से था जो बेबिलोन से लौट आये थे। राजा ने उसे परमेश्वर के भवन के पुनःनिर्माण के लिए काफी धन-सम्पत्ति ले जाने दी थी। राजा के साथ अपने बर्ताव में, उसने राजा को समझाया था कि उसका परमेश्वर सारी पृथ्वी का राजा है। अब उसके सामने इस सारी धन-सम्पत्ति को ले जाने का काम था। क्या वह राजा के पास जाए और सुरक्षा की माँग करे? नहीं। उसे लगा, इससे उसकी गवाही कमजोर पड़ जाएगी। और उसने फैसला किया कि उसे सुरक्षा की आवश्यकता तो है, परन्तु यह उस प्रकार मिलनी चाहिए जिससे परमेश्वर की योग्यता प्रकट हो सके। तब उसने क्या किया? वह इसे स्वयं स्पष्ट रूप से बताता है, "तब मैं ने वहाँ अर्थात् अहवा नदी के तट पर उपवास का प्रचार इस आशय से किया कि हम परमेश्वर के सामने दीन हों; और उस से अपने और अपने बालबच्चों और अपनी समस्त सम्पत्ति के लिए सरल यात्रा माँगें। क्योंकि मैं मार्ग के शत्रुओं से बचने के लिए सिपाहियों का दल और सवार राजा से माँगने से लजाता था, क्योंकि हम राजा से यह कह चुके थे, "हमारा परमेश्वर अपने सब

खोजियों पर, भलाई के लिए कृपादृष्टि रखता है और जो उसे त्याग देते हैं, उसका बल और कोप उनके विरुद्ध है।" इसी विषय पर हम ने उपवास करके अपने परमेश्वर से प्रार्थना की, और उसने हमारी सुनी।" (एज्रा 8:21-23)।
एज्रा ने सरल मार्ग नहीं अपनाया। उसने मनुष्य पर निर्भर होने का फैसला नहीं किया। बल्कि उसने परमेश्वर पर निर्भर होने का एकाकी मार्ग अपनाया। वह जानता था कि परमेश्वर पर सम्पूर्ण निर्भरता का मार्ग एकाकी मार्ग है और कीमती है - उपवास और परमेश्वर को खोजना। परन्तु एज्रा जानता था कि यह मार्ग आखिरकार सुरक्षित मार्ग है, क्योंकि एक व्यक्ति भी परमेश्वर के साथ बहुमत होता है और जहाँ मनुष्य असफल हो जाए, परमेश्वर कभी भी असफल नहीं होता। परमेश्वर ने उसे धोखा नहीं दिया, क्योंकि उसने उसकी विनती सुनी। सच है, परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं को अनसुना नहीं करेगा, विशेषकर जब प्रार्थनाएँ दीन उपवास में भिगोई होती हैं। प्रभु हमारी सहायता कर कि हम इसी प्रकार उपवास और प्रार्थना करें।

उपवास – युद्ध के लिए (2 **इतिहास** 20:1–30)

मोआबियों और अम्मोनियों ने और उनके साथ कई मुनियों ने युद्ध करने के लिए यहोशापात पर चढ़ाई की। यह भीड़ उसके लिए बहुत बड़ी थी और वह डर गया। अपने डर में वह दूसरे राजाओं की ओर मदद के लिए फिर सकता था, परन्तु बाइबल कहती है कि, "तब यहोशापात...यहोवा की खोज में लग गया, और पूरे यहूदा में उपवास का प्रचार करवाया। अतः यहूदी यहोवा से सहायता माँगने के लिए इकट्ठे हुए, वरन् वे यहूदा के सब नगरों से यहोवा से भेंट करने को आए" (2 इतिहास 20:3-4)। उसने उपवास की घोषणा की, केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि सारे यहूदा के लिए की। वह प्रभु को खोजने लगा, लेकिन अकेले नहीं बल्कि यहूदा को सब नगरों से लोग प्रभु को खोजने के लिए आए। जब उन्होंने उपवास किया और प्रभु को खोजा, तब यहोशापात ने लोगों के सुनते कहा, "हे हमारे पितरों के परमेश्वर यहोवा ! क्या तू स्वर्ग में परमेश्वर नहीं है ? और क्या तू जाति जाति के सब राज्यों के ऊपर प्रभुता नहीं करता ? और क्या तेरे हाथ में ऐसा बल और पराक्रम नहीं है कि तेरा सामना कोई नहीं कर सकता ? हे हमारे परमेश्वर ! क्या तू ने इस देश के निवासियों को अपनी प्रजा इस्राएल के सामने से निकालकर इन्हें अपने मित्र अब्राहम के वंश को सदा के लिए नहीं दे दिया ? वे इसमें बस गए और इसमें तेरे नाम का पवित्रस्थान बना कर कहा, 'यदि तलवार या मरी अथवा आकाल या और कोई विपत्ति हम पर पड़े, तौभी हम इसी भवन के सामने और तेरे सामने (तेरा नाम तो इस भवन में बसा है) खड़े होकर, अपने क्लेश के कारण तेरी दोहाई देंगे और तू सुनकर बचाएगा।' और अब अम्मोनी और मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के लोग जिन पर तू ने इस्राएल को मिस्र देश से आते समय चढ़ाई करने न दिया, और वे उनकी ओर से मुड़ गए और उनका विनाश न किया, देख, वे ही लोग तेरे दिए हुए अधिकार के इस देश में से जिसका अधिकार तू ने हमें दिया है, हम को निकालकर कैसा बदला हमें दे रहे हैं। हे हमारे परमेश्वर, क्या तू उनका न्याय न करेगा ? क्या जो बड़ी भीड़ हम पर चढ़ाई कर रही है, उसके सामने हमारा तो बस नहीं चलता और हमें कुछ सूझता नहीं कि क्या करना चाहिए ? परन्तु हमारी आँखें तेरी ओर लगी हैं।" (2 इतिहास 20:6-12)। यह बेशक एक गहरी प्रार्थना है, ऐसी प्रार्थना जो साधारणतः एक उपवासी हृदय से निकलती है।

वास्तव में, उपवासी, खोजी, प्रार्थनाशील चेला मानवीय अयोग्यता और परमेश्वर की योग्यता स्वीकार कर रहा है।

यह वास्तव में एक उपवासी व्यक्ति की प्रार्थना थी, एक व्यक्ति जो भारी संकट में पड़ा है। उसने कहा कि वे शक्तिहीन थे। केवल वही लोग जो खुद शक्तिहीन हैं, उपवास करेंगे और परमेश्वर को खोजेंगे। उसने कहा कि उन्हें सूझता नहीं कि वे क्या करें। उसकी अपनी समझ समाप्त हो चुकी थी। केवल वही लोग जो अपनी समझ-बुद्धि के अन्त तक पहुँच चुके हैं, उपवास और प्रार्थना करेंगे। जिनके जीवन शरीर की शक्ति में मजबूत हैं, उनके जीवन में उपवास, परमेश्वर को खोजने और प्रार्थना करने की कोई जगह नहीं है। उसने कहा हालाँकि वे शक्तिहीन और उलझन में हैं, फिर भी उनकी आँखें प्रभु पर टिकी हैं। यही विश्वास है। एक उपवासी, प्रार्थनाशील व्यक्ति वो है जो अपनी आशाहीन स्थिति देखता है, अपनी शक्तिहीनता देखता है, परन्तु जानता है कि परमेश्वर योग्य है और अपनी आँखें प्रभु पर लगाता है। वास्तव में उपवासी, खोजी, प्रार्थनाशील चेला मानवीय अयोग्यता और परमेश्वर की योग्यता स्वीकार कर रहा है। मेरी प्रार्थना है कि जैसे जैसे दिन निकट आ रहा है, परमेश्वर कलीसिया में ऐसे अनेकों को खड़ा करे।

जब लोगों ने परमेश्वर को खोजा, तब वे पूरी उत्सुकता से भरे हुए थे। सब लोग शामिल हो गए : उनकी पत्नियाँ, उनके बच्चे और उनके शिशु भी प्रभु के सामने खड़े थे। यह बहुत बड़ा प्रार्थना, खोजने और उपवास का कार्य था। जब एक व्यक्ति उपवास करता और प्रार्थना करता है, जब शैतान घबरता है; जब कुछ सन्त उपवास और प्रार्थना करते हैं, जब सारा नरकलोक हिल जाता है; परन्तु परमेश्वर को उस दिन का इन्तजार है जब सारी कलीसिया उपवास करेगी, खोजेगी और प्रार्थना करेगी, और तब सारा नरकलोक

शून्य हो जाएगा। मेरी प्रार्थना है कि वे सब जो मसीह की देह के विभिन्न भागों की अगुआई करते हैं उस दिन के उदय के लिए परिश्रम करें।

उस भीड़ द्वारा उपवास, खोजने और प्रार्थना करने से प्रभु का आत्मा यहजीएल पर उतरा और उसने भविष्यवाणी की, "हे सब यहूदियो, हे यरूशलेम के रहनेवालो, हे राजा यहोशापात, तुम सब ध्यान दो; यहोवा तुम से यों कहता है, 'तुम इस बड़ी भीड़ से न डरो और तुम्हारा मन कच्चा न हो; क्योंकि युद्ध तुम्हारा नहीं परमेश्वर का है'" (2 इतिहास 20:15)। युद्ध अब दूसरे के हाथों में चला गया था। पहले, युद्ध यहोशापात और यहूदा के लोगों का था। अब यह परमेश्वर का बन गया था। बदलाव कैसे आया? उपवास !!!! खोजना !!!! प्रार्थना !!!! मैं यह कहना चाहता हूँ कि उपवास, खोजना, प्रार्थना किसी भी युद्ध को जिसका कोई व्यक्ति या समूह प्रभु में सामना कर रहा है बदल देगा; और जब युद्ध की जिम्मेवारी बदल जाती है, तब हम आराम कर सकते हैं, क्योंकि परमेश्वर योग्य है। "इस लड़ाई में तुम्हें लड़ना न होगा; हे यहूदा, और हे यरूशलेम, ठहरे रहना, और खड़े रहकर यहोवा की ओर से अपना बचाव देखना" (2 इतिहास 20:17)। और वास्तव में, उन्हें लड़ना नहीं पड़ा। परमेश्वर लड़ा और युद्ध जीता गया। बाइबल कहती है, "जिस समय वे गाकर स्तुति करने लगे, उसी समय यहोवा ने अम्मोनियों, मोआबियों और सेईर के पहाड़ी देश के लोगों पर जो यहूदा के विरुद्ध आ रहे थे, घातकों को बैठा दिया और वे मारे गए। क्योंकि अम्मोनियों और मोआबियों ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों को डराने और सत्यानाश करने के लिए उन पर चढ़ाई की, और जब वे सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों का अन्त कर चुके, तब सभों ने एक दूसरे का नाश करने में हाथ लगाया। जब यहूदियों ने जँगल की चौकी पर पहुँचकर उस भीड़ की ओर दृष्टि की, तब क्या देखा कि वे भूमि पर पड़े हुए शव हैं; और कोई नहीं बचा।" (2 इतिहास 20:22-24)। परमेश्वर ने युद्ध जीत लिया था! यदि हम कीमत देंगे तो वह आज भी युद्ध जीत सकता है।

उपवास – परमेश्वर से मिलने की तैयारी (1 राजा 18)

एलिय्याह ईजेबेल, अहाब और बाल के पुजारियों का सामना करता है और जीत जाता है। परन्तु इसके बाद एक निराशा का समय आता है जब वह मरना चाहता था। परमेश्वर चमत्कार द्वारा उसे भोजन देता है और तब वह होरेब पर्वत को जाते हुए चालीस दिन उपवास में रहता है। उसके उपवास ने उसे परमेश्वर के साथ एक नई भेंट के लिए तैयार किया। होरेब पर वह परमेश्वर से मिला और परमेश्वर ने उसे प्रोत्साहित किया, और सेवकाई के लिए नए निर्देश दिए। और उस भेंट से शक्ति पाकर वह भक्तिहीनता के विरुद्ध युद्ध में एक बार फिर उतरता है।

हम व्यक्तिगत अनुभव से कहते हैं कि उपवास और प्रार्थना परमेश्वर के जन को परमेश्वर के साथ एक नई भेंटे या परमेश्वर के आत्मा से एक बार फिर भरने के लिए तैयारी में मदद करते हैं। इस उपवास में, यह ऐसा है जैसे हम परमेश्वर से कह रहे हैं, "मुझे तुझ से नए तरीके से मिलने की आवश्यकता है। तेरे लिए मेरी भूख इतनी अधिक है कि मैं शरीर की सामान्य जरूरतों को छोड़ रहा हूँ।" परमेश्वर ऐसी प्रार्थनाओं को सदा सुनता है। वह एक उपवासी जीव को आशीष दिए बिना कैसे जाने देगा?

उपवास – परमेश्वर का मन बदलने के लिए (योना अध्याय 3 और 4)

नीनवे एक दुष्ट शहर था जिसकी दुष्टता प्रभु तक पहुँच चुकी थी। (योना 1:2)। परमेश्वर ने नीनवे का न्याय करने का फैसला किया। असली में, नीनवे का न्याय होने को चालीस दिन ही रह गए थे (योना 3:4)। जब उनके सन्निकट सर्वनाश का संदेश उनके पास पहुँचा तो लोगों ने क्या किया? सबसे पहले, लोगों ने खुद होकर उपवास की घोषणा की। बाइबल कहती है, "तब नीनवे के मनुष्यों ने परमेश्वर के वचन की प्रतीति की; और उपवास का प्रचार किया गया और बड़े से लेकर छोटे तक सभों ने टाट ओढ़ा।" (योना 3:5)। दूसरे, बुरी खबर राजा के पास भी पहुँची। उसने कार्य किया, "तब यह समाचार नीनवे के राजा के कान में पहुँचा; और उसने सिंहासन पर से उठ, अपने राजकीय वस्त्र उतारकर टाट ओढ़ लिया, और राख पर बैठ गया। (योना 3:6)। यह कार्य राजा का खुद को दीन करना प्रकट करता है। तो इस प्रकार राजा और लोग दीन होने में लग गए। फिर भी उसने मामला यहीं पर नहीं छोड़ दिया। बाइबल कहती है, "राजा ने प्रधानों से सम्मति लेकर नीनवे में इस आज्ञा का ढिंढोरा पिटवाया : "क्या मनुष्य, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या अन्य पशु, कोई कुछ भी न खाए; वे न खाएँ और न पानी पीएँ। मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और वे परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर दें; और अपने कुकर्म से फिरें; और उस उपद्रव से जो वे करते हैं, पश्चाताप करें।" (योना 3:7-8)।

राजा ने एक आदेश जारी किया। यह सरकारी कार्य था। हम जानते हैं कि अनेक धार्मिक अगुए अपने आदेश जारी करते हैं। इनके विषय-वस्तु स्तर के नहीं होते। परन्तु, यह नीनवे का राजा था। उसके आदेश में जोर दिया गया था कि उसके राज्य के सारे लोग

और पशु दीन हों, शोक करें, और उपवास करें। इसकी पहुँच बड़ी थी - शिशु, दूध-पिउवे, बीमार, वगैरा और सारे पशु भी शामिल थे। कोई भी यह बहाना करके कि वह बीमार है, इस आदेश से बच नहीं सकता था। कोई भी शिशु इतना छोटा नहीं था कि शामिल नहीं हो सकता था। पशु भी उपवास कर रहे थे! न केवल उन्होंने खाना नहीं खाया, उन्होंने पानी भी नहीं पिया। गर्भवती महिलाएँ और सब शामिल थे। यह सम्भवतः इतिहास में सबसे अधिक व्यापक उपवास रहा होगा।

परन्तु उन्होंने केवल उपवास ही नहीं किया। उन्हें परमेश्वर की दोहाई चिल्ला-चिल्ला कर देनी थी, और उन सब ने ऐसा ही किया। इससे तो बहुत शोर हुआ होगा, आजकल के सुप्रबंधित, शान्त धार्मिक समूहों के लिए बहुत ही कोलाहल ! उन्होंने न केवल चिल्ला-चिल्लाकर दोहाई दी, परन्तु उन्हें कहा गया था, "अपने कुकर्म से फिरें; और उस उपद्रव से जो वे करते हैं, पश्चाताप करें।" (योना 3:8)। उन्होंने पश्चाताप किया। वे अपने बुरे कामों से फिरे - उनमें से सब, कोई भी चूक नहीं सकता था।

उनका मानभंग, उपवास और प्रार्थना निरूद्देश्य नहीं था। उनके मन में एक ही लक्ष्य था - दया की भीख माँगना। वे चाहते थे कि परमेश्वर पछतावा करे और अपने घोर क्रोध से फिरे। सारा मानभंग, उपवास, पश्चाताप एक लक्ष्य की ओर होना चाहिए। कोई भी विश्वासी या मण्डली मन में विशेष लक्ष्य रखे इन चीजों को करने का साहस न करे। प्रेरित पौलुस ने कहा, "मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है।" (1 कुरिं. 9:26)। इस उपवास की ओर परमेश्वर की प्रतिक्रिया क्या हुई ? बाइबल कहती है, "जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया।" (योना 3:10)।

हम जानते हैं कि साधारणतः परमेश्वर मन नहीं बदलता। बाइबल कहती है, "ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले। क्या जो कुछ उसने कहा वह न करे ? क्या वह वचन देकर उसे पूरा न करे ?" (गिनती 23:19)। परन्तु, विशेष हालात होते हैं जैसे कि नीनवे के लोगों के थे जब एक पूरे देश, मनुष्य, पशु, और सबने टाट ओढ़ कर और उपवास के साथ पश्चाताप किया। ऐसे हालातों में, परमेश्वर ने अपने असीम दया के कारण, खुद को उनके टाट, उपवास, आँसू, और पश्चाताप के द्वारा अपना मन बदलने दिया। ऐसे पछतावे में, परमेश्वर कमजोरी नहीं बल्कि ताकत दिखाता है - असीमित प्रेम और दया की ताकत। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।" (2 पतरस 3:9)।

आज के संसार में हावी परिस्तिथियाँ नीनवे की परिस्थितियों से भिन्न नहीं है। हर मनुष्य में पाप है और लोग पाप करने के नए नए तरीके खोजते हैं। यह पीढ़ी पाप में सदोम और अमोरा से बढ़कर है, और इसे स्वीकार किया जा रहा है। हम परमेश्वर के न्याय के करीब ही खड़े हैं। यह केवल संसार ही नहीं है जो न्याय के लिए तैयार है। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया स्वस्थ्य होने के बजाय बाकी सबकुछ है। यहीं पर पाप बहुतायत से है; सब जगह गुनगुनापन है। सांसारिकता आज की दशा है। सिद्धान्त-संबंधी संभ्रान्ति, समझौता, और निष्क्रियता हर दिन विजयी होते हैं। परमेश्वर ने न्याय करने की प्रतिज्ञा की है। क्या वह अपना वचन पूरा करेगा ? क्या उसका मन बदला नहीं जा सकता ?

कलीसिया के अगुए कहाँ हैं जो नीनवे के राजा के समान टाट, उपवास, आँसू, और पश्चाताप की घोषणा करें ? यह उन प्रणालियों में भी सामान्य क्रम क्यों नहीं है जो परमेश्वर की सम्पूर्ण सम्मति के लिए संघर्ष करने का दावा करते हैं ? क्या यह हो सकता है कि जिन्हें उपवास और आँसू की घोषणा करनी चाहिए, खुद "भोजन के देवता" के मंदिर पर पूजा करते पाए जाते हैं ? क्या कोई चुनौती स्वीकार करेगा और बहाव को रोकने में मदद करेगा ? नीनवे बचाया गया। क्या हम अपने संसार को नष्ट होने देंगे या क्या इसके बारे में कुछ करेंगे ?

उपवास – आत्मिक हस्तक्षेप को तोड़ना (दानिय्येल 10:2–15)

जब दानिय्येल भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ रहा था, तो वह उस भाग में आया जो कहता है, "यहोवा यों कहता है : बेबीलोन के सत्तर वर्ष पूरे होने पर मैं तुम्हारी सुधि लूँगा, और अपना यह मानभावना वचन कि मैं तुम्हें इस स्थान में लौटा ले आऊँगा, पूरा करूँगा।" (यिर्मयाह 29:10)। दानिय्येल ने कैलेन्डर देखा और पाया कि समय पूरा हो गया है। तब दानिय्येल "अपना मुख प्रभु परमेश्वर की ओर करके गिड़गिड़ाहट के साथ प्रार्थना करने लगा, और उपवास कर, टाट पहिन, राख में बैठकर वरदान माँगने लगा।" (दानिय्येल 9:3)। वह प्रार्थना करने लगा, अपने और अपने लोगों के पाप स्वीकार करने लगा। वह परमेश्वर से विनती

करने लगा और कहा, "हे हमारे परमेश्वर, अपने दास की प्रार्थना और गिड़गिड़ाहट सुनकर, अपने उजड़े हुए पवित्रस्थान पर अपने मुख का प्रकाश चमका; हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त यह कर....।" (दानिय्येल 9:17-19)।

उसके उपवास और विनती के उत्तर में, जिब्राएल स्वर्गदूत को उसे आश्वासन देने के लिए, कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा को अवश्य पूरी करेगा भेजा गया। जिब्राएल ने कहा, "हे दानिय्येल, मैं तुझे बुद्धि और प्रवीणता देने को अभी निकल आया हूँ। जब तू गिड़गिड़ाकर विनती करने लगा, तब ही इसकी आज्ञा निकली, इसलिए मैं तुझे बताने आया हूँ, क्योंकि तू अति प्रिय ठहरा है.....तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रकट हो...।" (दानिय्येल 9:22-24)।

परन्तु, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के पूरे होने के आश्वासन के साथ जिब्राएल ने यह भविष्यवाणी भी की कि शहर और पवित्रस्थान नष्य किए जाएँगे और उसके लोग काटे जाएँगे। यह दानिय्येल के लिए बुरी खबर थी, और उसने इसे हल्कि बात नहीं समझा। वह तीन सप्ताह तक आंशिक उपवास में रहा। बाइबल कहती है, "उन दिनों मैं, दानिय्येल, तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैं ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न माँस या दाखमधु अपने मुँह में रखा, और न अपनी देह में कुछ तेल लगाया।" (दानिय्येल 10:2-3)। वह अपने लोगों के भविष्य के बारे में कुछ और जानना चाहता था। उत्तर तुरन्त तो नहीं आया। उत्तर को लाने के लिए तीन सप्ताह के उपवास की जरूरत पड़ी। क्यों? आत्मिक हस्तक्षेप के कारण। बाइबल कहती है, "फिर किसी हाथ ने अपने हाथ से मेरी देह को छुआ, और मुझे उठाकर घुटनों और हथेलियों के बल थरथराते हुए बैठा दिया। तब उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, हे अति प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ उसे समझ ले, और सीधा खड़ा हो, क्योंकि मैं अभी तेरे पास भेजा गया हूँ।" जब उसने मुझ से यह वचन कहा, तब मैं खड़ा तो हो गया परन्तु थरथराता रहा। फिर उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल, मत डर, क्योंकि पहले ही दिन को जब तू ने समझने-बूझने के लिए मन लगाया और अपने परमेश्वर के सामने अपने को दीन किया, उसी दिन तेरे वचन सुने गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। फारस के राज्य का प्रधान इक्कीस दिन तक मेरा सामना किए रहा; परन्तु मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, वह मेरी सहायता के लिए आया, इसलिए मैं पारस के राजाओं के साथ रहा, और अब मैं तुझे समझाने आया हूँ, कि अन्त के दिनों में तेरे लोगों की क्या दशा होगी। क्योंकि जो दर्शन तू ने देखा है वह कुछ दिनों के बाद पूरा होगा।" (दानिय्येल 10:10-14)।

तो हम यह बातें देखते हैं:

1. एक व्यक्ति को पता चलता है कि परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी होनी है।
2. वह उपवास और प्रार्थना करता है।
3. परमेश्वर उत्तर भेजता है परन्तु उत्तर का एक भाग उसके लोगों के सर्वनाश के बारे में है।
4. वह आंशिक उपवास करता है और तीन सप्ताह तक प्रार्थना करता है।
5. उसकी उपवास प्रार्थना के पहले दिन को ही परमेश्वर ने उस के पास उत्तर लाने के लिए एक स्वर्गदूत को भेजा था।
6. शैतानी दूत (फारस का प्रधान) हस्तक्षेप करता है और स्वर्गदूत को दानिय्येल तक पहुँचने से रोकता है।
7. उपवास और प्रार्थना के कारण परमेश्वर मीकाएल को स्वर्गदूत की सहायता के लिए भेजता है।
8. मीकाएल फारस के प्रधान के साथ युद्ध करता है और स्वर्गदूत को दानिय्येल के लिए उत्तर ले जाने के लिए छोड़ा जाता है।

क्या होता यदि दानिय्येल उपवास और प्रार्थना नहीं करता रहता?

खैर, दानिय्येल के प्रार्थना करने के पहले दिन से परमेश्वर ने जो उत्तर दिया था, सम्भवतः उसके पास पहुँचता ही नहीं, हालाँकि परमेश्वर ने उत्तर दे दिया था, या यह बहुत देर बाद आया होता। जैसे हम पाते हैं, फारस का प्रधान नामक दुष्टात्मा एक बहुत ही शक्तिशाली त्मा थी। उसने परमेश्वर के संदेशवाहक को इक्कीस दिन तक रोके रखा, और जब मीकाएल जो मुख्य प्रधानों में से है, आया, वह उससे तुरन्त नहीं निपट सका। उसने युद्ध अपने हाथों में ले लिया ताकि वह संदेशवाहक को दानिय्येल तक उत्तर ले जाने के लिए छुड़ा सके। तो हम कह सकते हैं कि उपवास और प्रार्थना के कारण जो प्रबलन भेजा गया था, यदि न भेजा जाता तो दानिय्येल के उत्तर नहीं पहुँचता।

क्या इससे पता चलता है कि कितनी सारी प्रार्थनाएँ जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार की जाती हैं, प्रत्यक्ष उत्तर बिना रह जाती हैं ? परमेश्वर ने उत्तर दिया है, परन्तु उत्तर शैतानी हस्तक्षेप के कारण व्यक्ति तक पहुँच नहीं पाता है और क्योंकि बहुत कम लोग हैं जो उपवास करते हैं, अन्तिम छुटकारे के लिए प्रबलन गायब होता है!

परमेश्वर हमारी आँखों को अदृष्य संसार देखने के लिए खोल दे! काम कर रहीं अदृष्य शक्तियों का प्रकाशन हमें दिया जाए! परमेश्वर हमारी आँखें खोल दे ताकि हम समझ सकें कि क्यों कुछ लोग परमेश्वर के वचन का अंश ही स्वीकार करते हैं या क्यों वे आंशिक आज्ञापालन ही करते हैं। अदृष्य शक्तियाँ काम रही होती हैं। शैतान रुकावट डालने के लिए तैयार रहता है। प्रेरित पौलुस ने कहा, "इसलिए हम ने (अर्थात् मुझ पौलुस ने) एक बार नहीं वरन् दो बार तुम्हारे पास आना चाहा, परन्तु शैतान हमें रोके रहा।" (2 थिस्स. 2:18)। वह दोबारा कहता है, "मेरे लिए वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।" (1 कुरिं. 16:9)।

मेरी प्रार्थना यह है कि ये सच्चाइयाँ धधकती हुई परमेश्वर के बच्चों के हृदय में घुस जाएँ और उन्हें उपवासी और प्रार्थनाशील लोगों में परिवर्तित कर दें। प्रभु यह काम मुझ में एक नए सिरे से और बड़े पैमाने पर करे।

उपवास – अतिरिक्त आत्मिक सामर्थ्य बनाने का एक माध्यम (लूका 4:1–14)
जब प्रभु यीशु के पानी का बपतिस्मा लिया और पवित्र आत्मा से भर गया, उसके तुरन्त बाद पवित्र आत्मा उसे जंगल में ले गया, सबसे पहले उपवास करने के लिए; दूसरा, परीक्षाओं का सामना और उन पर विजयी होने के लिए; और तीसरा, अपने जीवन के काम के लिए सामर्थ्य से भरकर गलील को लौटने के लिए।

पवित्र आत्मा पहले उसे चालीस दिन के उपवास में ले गया। पवित्र आत्मा जानता था कि यदि प्रभु को परीक्षाओं पर जो उसके सामने आएँगी, विजयी होना है तो उसे इसकी आवश्यकता है। इसलिए प्रभु ने खुद को चालीस दिन के उपवास के लिए दे दिया। उसने चालीस दिन उपवास किया "और जब वे दिन पूरे हो गए, तो उसे भूख लगी" (लूका 4:2)। उसे भूख लगी और शत्रु ने सोचा कि वह अब उस पर प्रहार कर उसे हरा सकता है। एक बात जो शैतान नहीं जानता था, कि उपवास ने तो उसे उस पर विजयी होने के लिए, आत्मिक तौर पर मजबूत ही किया था। उपवास से पहले की तुलना में शरीर कमजोर था, परन्तु उसकी आत्मा अधिक मजबूत थी और उसने शत्रु को तीन शक्तिशाली मुठभेड़ों में हराया जिस से नरक को कड़ी हार का सामना करना पड़ा। यदि यीशु ने उपवास न किया होता, तो क्या पता शैतान इतनी पूरी तरह से और इतनी शीघ्रता से हराया जा सकता था।

उपवास ने न केवल युगों की झड़प में शत्रु को मात देने में उसे योग्यता दी, बल्कि इसने यीशु को आत्मिक सामर्थ्य के एक नए कगार पर खड़ा किया, क्योंकि बाइबल कहती है, "फिर यीशु आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ गलील को लौटा" (लूका 4:14)। जैसे कि, उपवास उसे आत्मा के सामर्थ्य के एक नए अनुभव में ले आया, और वह उस सामर्थ्य की भरपूरता में अपनी सेवकाई के अन्त चलता रहा।

कुछ विश्वासी इतने कमजोर क्यों हैं कि शैतान के परीक्षा के दो शब्द बोलने से पहले ही वे समपर्ण में उसके पैरों पर घिघिया रहे होते हैं ? एक कारण है कि कुछ लोगों ने उस आत्मिक सामर्थ्य को अपना बनाने से इन्कार किया है जो परीक्षा पर विजयी होने के लिए आवश्यक है। वह सामर्थ्य कुछ अंश तक उपवास द्वारा आता है। प्रेरित पौलुस ने, अपने आत्मिक यात्रा और सेवकाई के शुरू में, कुछ दिन उपवास में बिताए थे (प्रेरितों 9:9)। यह जानते हुए क्या हम आश्चर्य करते हैं कि किस प्रकार वह प्रभु के लिए अपनी सेवा में अनेक लोगों से आगे निकल गया ?

उपवास – प्रभु की सेवा (लूका 2:36–40) (प्रेरितों 13:1–3)
भविष्यद्वक्तिन हन्नाह के बारे में बात करते हुए, बाइबल कहती है, "वह मन्दिर को नहीं छोड़ती थी, पर उपवास और प्रार्थना कर करके रात-दिन उपासना किया करती थी" (लूका 2:37)। उसने मन्दिर में, रात-दिन परमेश्वर की उपासना करते हुए, कम से कम पच्चास वर्ष बिताए। वह उपासना कैसे करती थी ? वह उपवास और प्रार्थना कर करके उपासना करती थी। परमेश्वर से यह चीज या वो चीज पाने के लिए उपवास नहीं करती थी। वह उपवास कर करके परमेश्वर की उपासना किया करती थी। उसने ऐसा एक बार नहीं किया। वह हर समय किया करती थी - रात और दिन।

और प्रारंभिक कलीसिया? अन्ताकिया में, कलीसिया के अगुए उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे। (प्रेरितों 13:2)। जब वे उपवास सहित उपासना करते रहे, तब पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे लिए बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैं ने उन्हें बुलाया है।" (प्रेरितों 13:3)। परमेश्वर उपासना और उपवास करने वाले लोगों से अधिक बातें करता है। क्या यही कारण है वह तुम से कुछ बोला नहीं रहा है? क्या यह इस लिए है कि तुम भोजन के प्रेमी हो?

हालाँकि प्रभु ने उन्हें बरनबास और शाऊल को अलग करने के लिए कहा, उन्होंने उन्हें भेजने में जल्दबाजी नहीं की। उन्होंने और उपवास और प्रार्थना की और तब उन्हें भेजा। यह सब एक आत्मिक कार्य था। आश्चर्य नहीं कि बाइबल इन दोनों के बारे में कहती है कि वे पवित्र आत्मा द्वारा भेजे गए। आज के मिश्नरी किस प्रकार भेजे जाते हैं? क्या वे उपवास और प्रार्थना द्वारा भेजे जाते हैं या वे पेटू प्रतिभोजों के साथ भेजे जाते हैं? आज के मिश्नरी जोश, गहराई, आत्मिकता, वचनबद्धता, आत्मिक अधिकार, महत्त्वाकांक्षा, और फल पर एक सुविचारित नज़र यह विचार देगी कि उनमें से अधिकाँश के लिए उपवास और प्रार्थना उनकी तैयारी और विदाई के भाग नहीं थे। साधारण मिश्नरी प्रयास से पैदा किया गया साधारण मसीही में उपवास के लिए कम ही कोई प्रकृति होगी, जैसे कि कहावत है, "जैसा पिता, वैसा पुत्र।" परमेश्वर कलीसिया को इस चीज से मुक्त कर दे! इस से कोई अन्तर नहीं कि मिश्नरी पूर्व से है या पश्चिम से। एक चीज तो निश्चय है और मैं यह दीन होकर कहता हूँ, उपवास और प्रार्थना के स्कूल के विद्यार्थी बहुत ही कम हैं।

उपवास – हर्ष, आनन्द और उत्सव के पर्व के रूप में (जकर्याह 8:18–19)

बाइबल कहती है, "फिर सेनाओं के यहोवा का यह वचन मेरे पास पहुँचा, "सेनाओं का यहोवा यों कहता है : चौथे, पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के लिए हर्ष, और आनन्द और उत्सव के पर्वों के दिन हो जाएँगे; इसलिए अब तुम सच्चाई और मेलमिलाप से प्रीति रखो।" (जकर्याह 8:18-19)। उपवास एक आनन्द का समय होना चाहिए। यदि हम प्रभु की उपासना के लिए उपवास रखते हैं, तो क्या हमें उसकी उपासना करने के विशेषाधिकार पर आनन्द नहीं करना चाहिए? यदि हम उपवास खुद को उसके सामने दीन करने के लिए करते हैं, तो क्या हमें उसके साथ नई और गहरी सहभागिता के विशेषाधिकार के लिए आनन्दित नहीं होना चाहिए?

इसलिए, हर्ष, आनन्द और उत्सव के रूप में उपवास एक सामान्य बात समझी जानी चाहिए; क्योंकि परमेश्वर के साथ सारी असली सहभागिता पर्व है; और कौन उस हर्ष और आनन्द को पाए बिना जो परमेश्वर से आते हैं उस की उपस्थिति में देर तक रह सकता है?

उपवास के बारे में प्रभु की शिक्षा

उपवास के विषय में सबसे बड़ी शिक्षा जो प्रभु ने हमें दी उसका अपना उदाहरण है। उसने चालीस दिन उपवास किया। उस कार्य के द्वारा उसने उपवास को पवित्र किया और अपने पवित्र नाम की महिमा के लिए इसे सेवकाई के रूप में ठहराया। उसने केवल उदाहरण ही प्रस्तुत नहीं किया बल्कि उसने उपवास के बारे में सिखाया भी। उसने कहा कि जब वह चला जाएगा तब उसके चेले उपवास करेंगे। वह अभी लौटा नहीं है। इसलिए यह उपवास करने का समय है। उसने कहा, "जब तुम उपवास करो" और न कि "यदि तुम उपवास करो" (मत्ती 6:16)। प्रभु ने अपेक्षा की थी कि उसके अनुयायी उनके मसीही जीवन के एक भाग के रूप में उपवास करेंगे।

गलत उपवास (यशायाह 58)

एक प्रकार का उपवास है जो प्रभु को स्वीकार नहीं है। यह वो है जिसकी प्रभु ने भर्त्सना की जब उसने कहा, "सुनो, उपवास के दिन तुम अपनी ही इच्छा पूरी करते हो और अपने सेवकों से कठिन कामों को कराते हो। सुनो, तुम्हारे उपवास का फल यह होता है कि तुम आपस में लड़ते झगड़ते और दुष्टता से घूँसे मारते हो। जैसा उपवास तुम आजकल रखते हो, उस से तुम्हारी प्रार्थना ऊपर नहीं सुनाई देगी। जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ अर्थात् जिस में मनुष्य स्वयं को दीन करे...जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूँ, वह क्या यह नहीं, कि अन्याय से बनाए हुए दासों, और अन्धेर सहनेवालों का जूआ तोड़कर उसको छुड़ा लेना, और सब जूओं को टुकड़े टुकड़े कर देना? क्या यह नहीं कि अपनी रोटी भूखों को बाँट देना, अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना, और अपने जातिभाइयों से अपने को न खिपाना?" (यशायाह 58:3-7)।

उपवास धार्मिकता का स्थान कभी नहीं ले सकता है। उपवास केवल प्रभु के लिए होना चाहिए। उपवासी व्यक्ति को निश्चित करना चाहिए कि वह प्रभु के साथ अत्यावश्यक सहभागिता में है। अस्वीकृत पाप मन में रखना और उपवास करना समय की बर्बादी है, क्योंकि ऐसा उपवास प्रभु को प्रसन्न नहीं कर सकता है। उपवास को जीवन के व्यवहारिक मामलों से भागने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चहिए। यदि करने के लिए कोई काम है तो मुझे यह कहकर कि मैं उपवास कर रहा हूँ काम से भागना नहीं चाहिए। मेरे उपवास से परमेश्वर का हृदय कार्य करे इसके लिए मुझे मनुष्य के साथ सही सम्बंध में होना आवश्यक है।

उपवास प्रदर्शन के लिए नहीं किया जाना चाहिए, और न ही इसे शरीर को किसी प्रकार से महिमा देने के लिए किया जाना चाहिए। उपवास केवल प्रभु की ही महिमा के लिए किया जाना चाहिए। प्रभु हमें सही उपवासों में ले चले और गलत उपवासों से हमें छुड़ाए!

उपवास की किस्में

तीन प्रकार के उपवास हैं जिनता पता बाइबल से चलता है। सबसे पहला, **परम उपवास** है। परम उपवास में, न खाना और न पानी लिया जाता है। नीनवे ने ऐसा उपवास किया था, और मूसा ने भी किया था। यह उपवास साधारणतः बहत्तर घंटों (तीन दिन) से अधिक नहीं होना चाहिए।

दूसरा, **पूर्ण उपवास** है। एक पूर्ण उपवास के समय, पानी पिया जा सकता है और कुछ भी नहीं - न दूध, न चाय, न फल, पानी के अलावा और कुछ नहीं। अधिकाँश विश्वासियों के लिए यह सामान्य उपवास है। यह चालीस दिन तक चल सकता है।

तीसरा, **आंशिक उपवास** है। यह वो उपवास है जो दानिय्येल ने तीन सप्ताह तक किया था। वह कहता है, "उन दिनों मैं, दानिय्येल, तीन सप्ताह तक शोक करता रहा। उन तीन सप्ताहों के पूरे होने तक, मैं ने न तो स्वादिष्ट भोजन किया और न मांस या दाखमधु अपने मुँह में रखा।" (दानिय्येल 10:2-3)। आंशिक उपवास का अर्थ है कि एक दिन में तीन सामान्य भोजन के बजाय एक हल्का भोजन लिया जाता है। आंशिक भोजन का लाभ है कि यह हफ्तों तक चल सकता है, जिससे उपवासी व्यक्ति के पास सब सामान्य काम करने की ताकत रहेगी, और जो कमजोरी पूर्ण उपवास के साथ आती है जिससे कभी-कभी प्रार्थना करना कठिन हो जाता है, नहीं होगी। बड़ी समस्या अनुशासन की है जब भारी भोजन के बजाय हल्का भोजन किया जाना है, और दो भोजन छोड़े जाने हैं। व्यक्तिगत तौर पर, मैं सब मसीह के प्रेमियों को प्रोत्साहन देता हूँ कि वे तीनों प्रकार के उपवास नियमित किया करें ताकि वे आवश्यकता के अनुसार उनमें सुविधा महसूस करें।

उपवास करना प्रारंभ करना

हर विश्वासी को नियमित उपवास करना चाहिए। हमारी मण्डली में अधिकाँश विश्वासी सप्ताह में दो बार उपवास करते हैं। एक सामूहिक, राष्ट्रीय उपवास है, और दूसरा, व्यक्तिगत, निजी उपवास है जो आत्म-उन्नति, प्रभु की उपासना, या किसी युद्ध में विजय के लिए होता है।

समस्या है उपवास शुरू कैसे करें। हम सुझाव देते हैं कि आप एक छोटे पैमाने पर शुरू करें। शुरू में बारह घंटों तक उपवास करें और जैसे जैसे आप अपने जीवन में अनुशासन पाने लगें, तब आप हफ्तों और सम्भवतः महिनों तक जा सकेंगे। शुरू में, आपका सारा शरीर विद्रोह करता लगेगा, और आपको महसूस होगा कि यदि आपने उपवास तोड़ा नहीं तो आपका सारा शरीर टूट जाएगा। हिम्मत मत हारो। भूख की तीव्र कसक भी असली भूख न हो बल्कि भोजन के लिए प्रेम की एक मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया ही हो। सामना करो। जितना अधिक आप सामना करोगे, उतना अधिक अगली बार विजयी होना आसान हो जाएगा। मैं आपको आश्वासन दिलाना चाहता हूँ, क्योंकि आपने उपवास किया है आप भुखमरी से मरेंगे नहीं। इसे भोजन न करके प्रमाणित करो और अनुभव आपको आनन्दित करेगा।

उपवास की तैयारी

एक उपवास की मूल तैयारी आत्मिक प्रार्थना है। नीचे कुछ चीजें दी गई हैं जिन पर उपवास से संबंधित विचार और प्रार्थना करनी चाहिए।

1. उपवास का उद्देश्य। प्रार्थना के द्वारा प्रभु के साथ तय कर लो कि उपवास का उद्देश्य क्या है। उससे स्पष्ट लक्ष्य पा लो जिन्हें आप उपवास के दौरान हासिल करना चाहोगे।

2. उपवास की लम्बाई। प्रार्थना के द्वारा प्रभु से पता लगाओ कि उपवास कब आरम्भ करना और कब समाप्त करना चाहिए। उसने तुम्हारा मार्गदर्शन करने का वादा किया है और यदि तुम उसे पूछोगे तो वह अवश्य बताएगा।
3. उपवास के दौरान प्रार्थनाः
   क) प्रभु से एक भारी बोझ जिसे उतारने के लिए गहरी प्रार्थना की आवश्यकता होगी, माँगो और पाओ।
   ख) प्रभु से प्रार्थना में एक दृढ़ता की आत्मा जब शरीर आत्मा के साथ सहयोग नहीं देना चाहता है, माँगो और पाओ।
4. प्रार्थना में जयवन्त खड़े रहो और
   क) अपने लिए आत्मिक भण्डार बनाओ
   ख) प्रभु की उपासना करो
   ग) मसीह की देह की सेवा करो
   घ) प्रभु यीशु के राज्य के लिए लोगों को माँग लो
5. जैसे आप प्रभु की बाट जोहते हो उससे अपने लिए कुछ विशेष माँगो और पाओ।
6. सारे उपवास भर के लिए प्रभु से आनन्द की एक आत्मा माँगो और पाओ।
7. प्रभु से माँगो कि वहः
   क) उपवास के दौरान आपको शारीरिक ताकत दे।
   ख) जब तक उपवास चल रहा है आप में से भोजन की सारी इच्छा निकाल ले।
   ग) खाली पेट पर सोने की आपको योग्यता दे।
   घ) अन्त में उपवास समाप्त करने की आपको बुद्धि दे जिससे शरीर पर कोई खराब असर न पड़े।
   ण) उपवास से पाए लाभ को बनाए रखने की आपको योग्यता दे।

उपवास समाप्त करना

एक लम्बा उपवास, और कोई भी उपवास प्रार्थना द्वारा और सावधानी से समाप्त करना चाहिए। मैं यह सुझाव देता हूँ:

1. उपवास के लिए प्रभु का धन्यवाद और स्तुति के लिए एक विशेष सत्र हो। इस विशेष सत्र के बिना भोजन के लिए जल्दी मत करो। भोजन पर टूट पड़ने का मोह अवश्य होगा, परन्तु कृपया इसे जीतो।
2. सावधान रहो तुम क्या खाते हो। एक गलास ज्यूस के साथ उपवास समाप्त करना एक बेहतर तरीका है। इसके तुरन्त बाद भारी भोजन मत करो। अच्छा होगा यदि तीन या चार घंटे तक रुको और फिर दलिया जैसा कुछ तरल और नरम खाओ। तुम्हें काफी अच्छा लगेगा यदि ठोस भोजन खाने के लिए अगले दिन का इन्तजार कर सको। सबसे अच्छा है उबली हुई नरम सब्जियों से शुरू करना, और उन्हें छोटी छोटी मात्रा में खाना।
3. उपवास के बाद जरूरत से अधिक मत खाओ। पेटूपन एक घातक पाप है। लम्बे उपवास के बाद यह गम्भीर शारीरिक हानियाँ पैदा कर सकता है। उपवास के बाद के समय को भोजन करने के नए नमूने निश्चित करने के लिए इस्तेमाल करो जिससे परमेश्वर की महिमा हो और आपको एक स्वस्थ्य शरीर मिले।
4. उपवास के दौरान विकसिक किया प्रार्थना का हृदय अपने बाकी के जीवन भर के लिए बनाए रखो।

राष्ट्रीय उपवास मध्यस्थता का बाइबल का आधार

हमारे देश में, विश्वासी हर बुधवार देश के जीवन के हर पहलू के लिए उपवास और प्रार्थना करते हैं - उसके अगुआ, उसकी सम्पन्नता और विकास, उसका आत्मिक जीवन और प्रगति और सबकुछ जो प्रभु यीशु की इच्छा से संबंधित है। हालाँकि यह सेवकाई प्रभु से सीधे प्रकाशन द्वारा मिली थी, यह स्पष्ट रूप से बाइबल पर आधारित है। प्रभु ने कहा, "यदि मैं आकाश को ऐसा बन्द करूँ, कि वर्षा न हो, या टिड्डियों को देश उजाड़ने की आज्ञा दूँ, या अपनी प्रजा में मरी फैलाऊँ, तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी चाल से फिरें, तो मैं स्वर्ग में से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँगा।" (2 इतिहास 7:13-14)।

हमारे देश ने पाप किया है। हमारे देश का न्याय हुआ है। हम यह अपेक्षा नहीं करते कि देश के सब लोग इस समय में प्रभु यीशु के विश्वासी हों। फिर भी, परमेश्वर ने विश्वासियों को बुलाया है कि वे खुद को दीन करें (उपवास के साथ) और परमेश्वर के नाम को पुकारें; परमेश्वर के खोजी हों और मन फिराएँ। हम ने ऐसा किया है और हम ऐसा कर रहे हैं। हम तब तक करते रहेंगे जब तक हमारे देश के हर पापी को क्षमा न मिल जाती और जब तक देश इसकी आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक,

वगैरा बीमारियों से चंगाई न पा लेता। हम मानते हैं कि उपवास सहित मध्यस्थता की प्रार्थना सब देशों में एक सेवकाई बननी चाहिए जहाँ विश्वासी हैं और जहाँ अभी भी पाप है और अन्धकार की शक्तियाँ अभी भी काम कर रही हैं।

उपवास की घोषणा करना

हम बुरे दिनों में जी रहे हैं। हम युग के अन्त में जी रहे हैं। परमेश्वर हमारे पास अवश्य आएगा, प्रेम और आशीष में या न्याय में। कितनी अदभुत् बात है जब एक व्यक्ति उपवास करता है और परमेश्वर को खोजता है। फिर भी, अकेले उपवास करना काफी नहीं। इसके अलावा कुछ और भी होना चाहिए। हमें एक उपवास की घोषणा करनी चाहिए। हमें सम्पूर्ण कलीसिया को उपवास और प्रार्थना के लिए बुलाना चाहिए। पुराने नियम में कठिन समयों में, अगुए उपवास की घोषणा करते थे। असल में, उपवास की घोषणा करने की आज्ञाएँ भी हैं। बाइबल कहती है, "हे याजको, कटि में टाट बाँधकर छाती पीट-पीटकर के रोओ ! हे वेदी के टहलुओ, हाय, हाय करो। हे मेरे परमेश्वर के टहलुओ, आओ, टाट ओढ़े हुए रात बिताओ ! क्योंकि तुम्हारे परमेश्वर के भवन में अन्नबलि और अर्ध अब नहीं आते। उपवास का दिन ठहराओ, महासभा का प्रचार करो। पुरनियों को, वरन् देश के सब रहनेवालों को भी अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में इकट्ठा करके उसकी दोहाई दो।" (योएल 1:13-14)। हमें, प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के अगुओं को भी ऐसा ही करने के लिए बुलाया गया है।

उपवास स्थानीय मण्डलियों, कस्बों, शहरों, जिलों, राज्यों, देशों और परमेश्वर के अनुग्रह से विश्व भर में आयोजित किया जाना चाहिए। यह जिम्मेवारी आत्मिक अगुओं के कंधों पर टिकी है। प्रभु उन्हें इसे करने के लिए अनुग्रह दे!

अज्ञानता के दिन बीत गए हैं

भूत में, उपवास के बारे में बहुत कम जानकारी थी, और इसलिए हम खाते रहे, और भूल गए थे कि हम शत्रु के राज्य में रह रहे हैं। परन्तु अब ऐसे दिन बीत गए हैं। हमें पता है हमें क्या करना चाहिए, हमें क्या करना अवश्य है। अज्ञानता के दिन बीत चुके हैं, और परमेश्वर भोजन के सब प्रेमियों, सब पेटुओं को मन फिराने, और भोजन के प्रेम को त्याग देने, और अपने आप को उपवास और प्रार्थना में दे देने के लिए बुलाता है। क्या आप मन फिराओगे ? क्या आप इसी समय मन फिराओगे ?

अन्तिम बात

जब तुम उपवास करते हो, तो महसूस करते हो कि तुम ने वो अन्तिम काम किया है जो तुम कर सकते थे, कि अब और ऐसा कुछ भी करने के लिए नहीं बचा है जो तुम ने नहीं किया है। उपवास तुम्हें अलौकिक के होने के लिए परमेश्वर पर एक दावा देता है, और यह होता भी है!

वचन याद क्यों करें?

कई वर्ष पहले, जब मैं अस्पताल में एक रिश्तेदार से मिलने गया था, मैं ने उसे बताया कि मेरा नए वर्ष का लक्ष्य हर महिने बाइबल में से एक अध्याय याद करना है।

"तुम ऐसा क्यों करना चाहते हो?" उसने पूछा। "इससे क्या लाभ होगा?"

जैसे ही मैं उसे बताने लगा था, एक नर्स आई और उसे परीक्षण के लिए ले गई।

बाद में, मैं ने उसे लिख कर अपने कारण भेज दिए।

मूल अभिप्राय, मैं ने लिखा, आज्ञापालन है। परमेश्वर ने हमें आज्ञा दी है कि हम उसके वचन को अपने हृदय में रख छोड़ें, इसे अपने हृदय की पट्टियों पर लिख लें, और "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से" बसने दें" (कुलु. 3:16)।

परमेश्वर ने यह आज्ञा इसलिए नहीं दी कि हम ज्ञान के कारण घमण्ड से भर जाएँ, परन्तु "इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।" (यहोशू 1:8)।

कहा गया है कि हम जो खाते हैं वही हैं। उससे भी बढ़कर हम जो सोचते हैं हम वही हैं। (नीतिवचन 23:7)। जैसे हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में डालते हैं, यह हमारे अन्तरात्मा में ढल जाता है। यह हमारे पैरों के लिए दीपक और हमारे मार्ग के लिए उजियाला है। (भजन 119:105)।

उसका दूसरा प्रश्न "इससे क्या लाभ होगा" का उत्तर है, मैं ने परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में रखने के कुछ लाभ सूचीबद्ध किए हैं। क्योंकि उसका वचन जीवित और शक्तिशाली है, यह हमारे रोजाना के जीवन में एक बड़े ही उपयोगी तरीके से कार्य करता है।

- **यह हमें पाप से दूर रखता है**

"मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ।" (भजन 119:11)

एक जवान स्त्री ने मुझे बताया कि किस प्रकार बचपन में याद की हुई दस आज्ञाओं ने उसे एक घोर पाप से बचा लिया जो उसके विवाह का सर्वनाश कर सकता था। जब वह एक बड़े शहर में हवाई जहाज बदलने के लिए इन्तजार कर रही थी, तो वह अपने पास बैठे एक आकर्षक पुरुष के साथ बातचीत में तल्लीन हो गई। दो घंटों तक काफी पीते हुए बातचीत का भरपूर आनन्द लिया। जब उसकी उड़ान की सूचना दी गई, तो वह जाने को उठी। उसने इसका हाथ पकड़ा, और आँखों में आँखें डालकर, कहा, "मत जाओ। यहाँ मेरे साथ रहो।" एक क्षण के लिए तो कदम रुक से गए। "परन्तु तत्काल", उसने कहा, "एक आज्ञा जो मैं ने बचपन में सीखी थी मेरे मन में चमकी, 'तू व्यभिचार न करना'।" मुस्कुराते हुए, हाथ मिलाकर, उसने उस से विदा ली।

- **यह मन की बड़ी शान्ति देता है**

"जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।" (यशायाह 26:3)

संसार शान्ति की खोज में लगा हुआ लगता है, व्यक्तिगत शान्ति और अन्तरराष्ट्रीय शान्ति। परमेश्वर उन्हें बड़ी शान्ति देने की प्रतिज्ञा करता है जिनके मन उस पर केन्द्रित हैं।

- **यह हमारे डर को वश में करता और हमें बल देता है**

"मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ, मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।" (यशायाह 41:10)

- **यह चिन्ता से आजादी देता है**

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" (फिलि. 4:6-7)

- **यह हमारे मन को शुद्ध करता है**

"तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है, शुद्ध हो।" (यूहन्ना 15:3)
मैं ने एक बार एक गोदी के कर्मचारी के बारे में पढ़ा जो मसीही बन गया था। गोदी में काम करते हुए वह हर दिन गालियाँ और अश्लील भाषा सुना करता था। रात को जब वह काम से घर लौटता, तो हाथ-मूँ धोने के बाद सबसे पहला काम जो वह करता था, वो था बैठ कर अपनी बाइबल पढ़ना। उसने बताया, परमेश्वर के वचन को अपने मन में डालने से मन साफ हो जाता था।

- **बहुत आवश्यकता के समय यह सदा उपलब्ध होती है**

"उसने आप ही कहा है, "मैं तुझे कभी न छोडूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।" इसलिए हम निडर होकर कहते हैं, "प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।" (इब्रानियों 13:5-6)

- **यह मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध है** (**भजन** 32:8)
- **यह परीक्षा के समय सहायता के लिए उपलब्ध है** (1 **कुरिं.** 10:13)
- **यह 'बड़ी-बड़ी और कठिन बातों" के लिए प्रोत्साहन लाता है** (**यिर्मयाह** 33:3)
- **यह हमें हमारे दुख में शान्ति देता है** (**भजन** 23)
- **जब हम निराश होते हैं, यह हमें ढाढ़स देता है** (**गला.** 6:9)
- **यह हमारे प्राण के खालीपन को भरता है** (**भजन** 107:8-9)

परन्तु आप शायद कहेंगे "मैं तो याद कर ही नहीं सकता हूँ" या "मैं तो बहुत बूढ़ा हूँ"।
मैं नहीं कहूँगा कि यह आसान है; किसी भी योग्य काम के समान इसमें भी समय, प्रयास और वचनबद्धता लगेगी। परन्तु कुछ तरीके हैं जिनसे सहायता मिलती है।
आयत को जोर से बोलकर दोहराओ ताकि आपकी इसकी आवाज और लय से पहचान हो जाए। जिन लोगों ने "वचन याद करो" प्रणाली बनाई थी, उनके तीन नियम हैं: दोहराओ, दोहराओ, दोहराओ! जब हम खामोशी से पढ़ते हैं, तब हम अपनी आँखें और अपना मन इस्तेमाल करते हैं। परन्तु जब हम उन्हें जोर से बोलकर दोहराते हैं, तब हम अपनी दूसरी शक्तियों को भी इस्तेमाल करते हैं: हमारे होंठ, हमारी जीभ, हमारे स्वर-रज्जु और आँखें।
एक अंश या एक अध्याय याद करने में, हमेशा एकही अनुवाद और एकही संस्करण इस्तेमाल करना चाहिए। हम तस्वीरों में सोचते हैं इसलिए जैसा यह पन्ने पर दिखता है वैसा इसे अपने मन में स्पष्ट रूप से देखो।
क्योंकि हम इतने आशीषित हैं कि परमेश्वर का वचन आज मुक्त भाव से उपलब्ध है, हम अय्यूब के साथ कह सकते हैं, "मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।" (अय्यूब 23:12), और आनन्द के साथ यिर्मयाह की घोषणा दोहराते हैं, "जब तेरे वचन मेरे पास पहुँचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया, और तेरे वचन मेरे मन के हर्ष और आनन्द का कारण हुए; क्योंकि, हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मैं तेरा कहलाता हूँ।" (यिर्मयाह 15:16)।

बाइबल और परिवार

1. **परिवार कैसे आरंभ हुआ**

उत्पत्ति 1:27-30 एक साधारण वक्तव्य देती है कि परमेश्वर ने पृथ्वी पर सृष्टि के क्रम का अगुआ होने के लिए मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया। विवरण आगे कहता है कि परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी करके बनाया और उत्पत्ति 2:18-20 इसके कारण को विस्तार से बताता है। इन दो परिच्छेदों पर आधारित नीचे कुछ टिप्पणियाँ की गई हैं जो हमें समझने में सहायता करेंगी कि परिवार कैसे आरंभ हुआ।

क) आदम पर, अदन की वाचा में जो परमेश्वर ने उसके साथ बाँधी थी, सारी सृष्टि के प्रधान के रूप में शर्तें और जिम्मेवारियाँ डाली गई थीं। उनका इस प्रकार सार प्रस्तुत किया जा सकता है:

1) पृथ्वी पर बस जाना (उत्प. 1:28)
2) पृथ्वी की उपज को वश में करना और पशु राज्य पर अधिकार करना (उत्प. 1:28)
3) विशेषकर अदन की वाटिका की रक्षा करना और उसके फल का आनन्द लेना (उत्प. 1:29; 2:15)
4) भले या बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल जो अदन में था नहीं खाना; आज्ञोल्लंघन की सजा मृत्यु थी (उत्प. 2:16-17)

अदन की यह वाचा तब समाप्त हो गई जब आदम और उसकी पत्नी ने वर्जित फल खाया जिससे वे आत्मिक (उत्प. 3:23-24) और शारीरिक (उत्प. 5:5) मृत्यु मरे। और एक अगली वाचा जिसे आदम की वाचा कहते हैं, बाँधी गई (उत्प. 3:14-21)।

ख) स्त्री की आवश्यकता (उत्प. 2:18-20)

परमेश्वर की योजना में स्त्रियाँ अति अनिवार्य हैं। ध्यान दें कि यह परमेश्वर था जिसने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं...." (आय. 18) और एक सहायक बनाने का निश्चय किया जो उससे मेल खाए और हर मानसिक, आत्मिक, भावात्मिक, सामाजिक और शारीरिक आवश्यकता के लिए सम्मानसूचक हो। ध्यान दो कि किस प्रकार परमेश्वर ने, जब सब पक्षियों और पशुओं को आदम के पास लाया कि वह उन्हें पहचाने और नाम दे, उसे सहायक की उसकी आवश्यकता को दिखाने के लिए एक स्थिति-निर्धारण कार्यक्रम का आयोजन किया, परन्तु ऐसा कोई "सहायक" न मिला जो उससे मेल खाता (उत्प. 2:19-20)।

ग) स्त्री का पुरुष के लिए प्रबंध (उत्प. 2:21-24)

परमेश्वर ने आदम को नींद में डाल दिया और उसकी एक पसली निकाल ली। उसने आदम का वो लिया जो उसके उद्देश्य के लिए पर्याप्त था। आदम ने अपने "सहायक" को अपने तुल्य पहचान कर कहा, "...मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस" (आय. 22-23)। इसका परिणाम अब विवाह का विश्वव्यापी नियम है, अर्थात्.....

...... विवाह की जिम्मेवारी पुरुष के कंधों पर होती है
...... उसे अपने माता-पिता को छोड़ना है (आय. 24)
...... विवाह को बनाए रखने की जिम्मेवारी पुरुष पर होती है; वह अपनी पत्नी से जुड़ा है (आय. 24); अपनी पत्नी से चिपका रहेगा (इफि. 5:31)
...... विवाह संयोग अविच्छेद्य है; एक तन होंगे (आय. 24)

नोटः आदम और हव्वा दोनों ने स्वतन्त्र इच्छा-शक्ति अभी भी बनाई रखी थी और इसीलिए आज्ञोल्लंघन का विकल्प उनके पास था।

जीवन के आचरण के नियम के रूप में परमेश्वर का वचन हमारे अनुकरण के लिए रखा गया है, विवशता में स्वीकार करने के लिए नहीं, परन्तु यदि आज्ञापालन किया जाता है तो परमेश्वर ने आशीष देने की ही प्रतिज्ञा की है (निर्गमन 19:5-6)।

घ) पहले पुरुष और स्त्री की स्थिति (आय. 25)

दोनों नंगे थे पर लजाते नहीं थे। पति और पत्नी के सम्बंध के इस संदर्भ में नग्नता के होने मे कोई लज्जा नहीं है। यह सिखाता है कि......

...... सेक्स परमेश्वर की योजना थी और इसलिए पाप नहीं था।
...... सेक्स "पतन" से पहले हुआ और यदि पतन नहीं हुआ होता फिर भी चलता रहता था।

...... मानव जाति के प्रजनन की योजना थी, परन्तु सेक्स का यह एक मात्र कारण नहीं है। बाइबल दो और कारण बताती है - पति और पत्नी के बीच प्रेम बढ़ाना (इब्रा. 13:4), और व्यभिचार रोकना (1 कुरिं. 7:2)।

2. <u>एक मसीही घर के लिए अनिवार्य बातें</u>

इस्राएल की नई पीढ़ी ने प्रतिज्ञा के प्रदेश में प्रवेश करने से पहले व्यवस्था का पुनरवलोकन सुना (व्यवस्था. 6:1-3)। उपदेश ने सीधे घर को प्रभावित किया और राष्ट्र का प्रमुख विषय बना......

क) परमेश्वर का प्रकाशन होना अवश्य है (व्यवस्था. 6:4) - उसका शाश्वतत्व, परमेश्वरत्व में उसका अनेकत्व, परमेश्वरत्व में उसकी एकता।

ख) परमेश्वर के प्रकाशन की ओर प्रतिक्रिया (व्यवस्था. 6:5) - प्रेम की अस्तित्व, हृदय, प्राण, इच्छा-शक्ति और मन में सम्पूर्ण वचनबद्धता। शाश्वत परमेश्वर की ओर जिसने अपने आप को प्रकट किया है यह एक मात्र उपयुक्त प्रतिउत्तर है।

ग) जिम्मेवारी होनी अवश्य है (आय. 6-9) ......

...... परमेश्वर की सच्चाई मन में बनी रहे (आय. 6), यानी, हृदय की वास्तविकता, अनुरूपता या धर्मक्रिया नहीं।

...... परमेश्वर की सच्चाई घर में बनी रहे (आय. 7), यानी, औपचारिक रूप से उपदेश द्वारा और अनौपचारिक रूप से विचार-विमर्श और उदाहरण द्वारा सिखाना।

...... परमेश्वर की सच्चाई अपने व्यक्तिगत आचरण और आदतों में बनी रहे, व्यक्तिगत जीवन में और सार्वजनिक जीवन में (आय. 8-9)

घर को "ईश्वरीय पाठशाला" के रूप में मानना है जहाँ पिता मसीह, प्रधानाध्यापक के अधीन शिक्षक है।

3. <u>पत्नी की भूमिका (1 पतरस 3:1–6)</u>

परिवार में पत्नी की एक मात्र जिम्मेवारी "अपने पति के अधीन" होने की है - सामान्यतः मानव जाति के नहीं। इसका तात्पर्य किसी प्रकार की स्वाभाविक हीनता नहीं है क्योंकि विवाह के द्वारा पति और पत्नी दोनों एक बन गए हैं। इसका अर्थ है कि दो बुद्धियाँ, भावनाएँ और इच्छा-शक्तियाँ एक व्यक्तित्व बन गए हैं, परन्तु विवाह संयोग को अपने आप को तोड़ने और नष्ट करने से रोकने के लिए, एक को अगुआई और दूसरे को अधीनता का उत्तरदायी ठहराया गया है। यीशु मसीह ने पिता की ओर वही अधीनता दिखलाई थी हालाँकि सामर्थ्य में वह पिता के समान था (1 कुरिं. 11:3; यूहन्ना 14:10-11)।

पत्नी की अपने पति की ओर अधीनता उसका "श्रृंगार" है जो उसे सचमुच सुन्दर बनाता है। भीतरी सुन्दरता परमेश्वर के लिए बहुत कीमती है (1 पतरस 3:3-4)। पुराने नियम की स्त्रियों ने जो मसीहा का माध्यम बनने की आशा रखती थीं अपने पतियों के अधीन रहने के द्वारा अपने आपको सुन्दर बनाया था (आय. 5) - सारा का उदाहरण दिया गया है (आय. 6)। उसी प्रकार पत्नियाँ अपने पतियों के अधीन रहकर मसीह की देह के सदस्यों के रूप में उसकी सुन्दरता प्रकट करती हैं (आय. 1-2)। 1 पतरस 2:23-25... और 1 पतरस 3:1 पर भी ध्यान दो।

परमेश्वर अधीनता को एक माध्यम के रूप में पति को अपने साथ उचित सम्बंध में लाने के लिए इस्तेमाल करने की प्रतिज्ञा करता है, चाहे पति उद्धार पाया है या नहीं (1 कुरिं. 7:10-16); 1 पतरस 3:1-2)।

4. <u>पति की भूमिका (कुलु. 3:19)</u>

..... पतियों को अपनी पत्नियों से वैसे ही प्रेम करना है जैसे मसीह कलीसिया से प्रेम करता है (इफि. 5:25)।

..... पति को अपनी पत्नी को आदर और देखभाल दिखाकर उसके "साथ जीवन निर्वाह" करना है (1 पतरस 3:7)

यह प्रेम मुख्यतः लौंगिक या भावात्मिक नहीं है (हालाँकि दोनों विचार शामिल हैं) परन्तु ऐसा प्रेम जो पति/पत्नी से किसी प्रतिक्रिया (या इसकी कमी) के बिना बना रहता है। यह अगापे प्रेम कहा जाता है - बिना शर्त और बलि-संबंधि फिर भी प्रोत्साहक। यह वैसा प्रेम है जैसा परमेश्वर का संसार के लिए है (यूहन्ना 3:16 देखो) और आत्मा का फल है (गला. 5:22; 1 कुरिं. 13:4-8)।

एक पति अपनी पत्नी से <u>उचित रीति से तब ही प्रेम कर सकता है जब वह पवित्र आत्मा के नियन्त्रण में एक मसीही है।</u>

पति की परिवार में दो जिम्मेवारियाँ हैं - बुद्धिमानी से पत्नी के साथ जीवन निर्वाह करे और उसकी पत्नी के रूप में जो आदर उसका है उसे दे। "जीवन निर्वाह करने" का अर्थ है कि पति पत्नी को अपने जीवन के हर पहलू में शामिल करता है। किसी प्रकार के "निजी कोने या कमरे" नहीं हो सकते हैं। इन दोहरी माँगों का एक आत्मिक उद्देश्य है - "जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ" (1 पतरस 3:7)। जो पति अपनी पत्नी को अपने जीवन के हर पहलू में आकर्षित करने में असफल रहता है, उसके साथ उस प्रकार सम्पर्क नहीं रख सकता जैसे परमेश्वर चाहता है और इसीलिए अनेक मामलों में परमेश्वर के साथ भी सम्पर्क नहीं रख सकता है। यह निश्चित करने के लिए कि परमेश्वर के साथ सम्पर्क का माध्यम सम्पूर्ण रूप से खुला है, पति को निश्चित करना होगा कि उसका पत्नी के साथ सम्पर्क का माध्यम खुला है। केवल इस तरीके से एक व्यक्ति अपनी पत्नी से जैसा परमेश्वर चाहता है वैसा प्रेम कर सकता है और परमेश्वर द्वारा दी गई अपनी प्रधानता को उचित रूप से काम में ला सकता है।

5. <u>बच्चों की भूमिका</u> (नीतिवचन 1:8)

पुराना और नया नियम दोनों सहमत हैं कि बच्चों की परिवार में केवल एक जिम्मेवारी है - उनके माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करना।

परमेश्वर ने परिवारिक मामलों में दो बार हस्तक्षेप किया है और बच्चों से संबंधित विशेष निर्देश दिए हैं ....

...... मूसा को ...... अपने माता और पिता का आदर करना (निर्गमन 20:12)

...... पौलुस को ...... प्रभु में अपने माता-पिता का आज्ञाकारी बनो (इफि. 6:1-3)

बच्चों के लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि वे अपने माता-पिता की आज्ञाओं का पालन करें और उनका आदर करें। "प्रभु में" अभिव्यक्ति इस जिम्मेवारी को मसीही माता-पिता तक ही सीमित नहीं करती है। कुलुस्सियों 3:20 स्पष्ट रूप से दिखाता है कि बच्चों को उनके माता-पिता का "सब बातों में" आज्ञापालन करना है। "प्रभु में" शब्दों का अर्थ है कि यह प्रभु का निदेश है। "क्योंकि यह उचित है" शब्द दिखाते हैं कि यह धर्मी या भक्तिपूर्ण कार्य है; मसीह माता-पिता के आज्ञापालन का सर्वोच्च्य उदाहरण है (फिलि. 2:6-8)।

इस उपदेश पर चलने वाले बच्चों के लिए प्रतिज्ञा है कि वे सुखी होंगे और पृथ्वी पर एक लम्बा जीवन जीएँगे, और उनका भला होग। ये दो चीजें हैं जिनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। अकसर इनकी दूसरे दृष्टिकोण से खोज की जाती है, जैसे कि, प्रसिद्धि, धन-सम्पत्ति, इत्यादि, परन्तु परमेश्वर का वचन बताता है कि ये चीजें माता-पिता के आज्ञाकारी होकर ही प्राप्त की जा सकती हैं। जिन बच्चों ने परिवार में परमेश्वर के प्रतिनिधियों के रूप में अपने माता-पिता का आज्ञापालन करना नहीं सीखा है, परमेश्वर का आज्ञापालन करना नहीं सीखेंगे। अनेक लोगों को जब इस सच्चाई का अपने जीवन में देर से पता चलता है, ईश्वरीय क्रम को हासिल करने के प्रयास में बहुत संघर्ष में से गुजरते हैं।

6. <u>माता-पिता की भूमिका</u> (इफि. 6:4)

अनुशासन एक पूर्ण परिवारिक जीवन का प्रमुख विषय है। हालाँकि बहुत सी चाजें हैं जो जीवन में संतोष लाती है, परन्तु परमेश्वर का वचन बताता है कि सबसे ऊपर अनुशासन है। परिवार में बच्चों के अनुशासन का नमूना तय करने की जिम्मेवारी पिता की होती है। माता द्वारा कोई भी अनुशासन पिता के अधिकार के विस्तार के रूप में सफलतापूर्णक पूरा किया जा सकता है। पति और पिता को, पत्नी और माता की अधीनता के साथ, इस क्षेत्र में अगुआई लेनी चाहिए।

पिता की अगुआई में दो मूल चीजें शामिल हैं ....

...... उसे बच्चों को चिढ़ नहीं दिलानी है, यानि, अधिक-अनुशासन या आतंक नहीं फैलाना है जिससे बच्चे घोर अपमान में प्रतिक्रिया करते हैं।

...... उसे उनका प्रभु की शिक्षा और चेतावनी में पालन-पोषण करना चाहिए।

<u>इसमें तीन बातें शामिल हैं:</u>

क) यह तब तक चलता रहता है जब तक बच्चा आश्रित है। पिता को बच्चे की आवश्यकताओं को पूरा करना है ताकि वह वैसा बन जाए जो परमेश्वर चाहता है वह बने।

ख) यह प्रेम का परिश्रम है। "पालन-पोषण" का अक्षरक्षः अर्थ है कोमलता से पोषित करना। बच्चे कोमल स्नेही देखभाल के पात्र होने चाहिए।

ग)	यह दोहरा काम जिसमें प्रभु में पालना-पोसना, यानि, प्रशिक्षण देना - सबकुछ जो एक बच्चे को उसके विकास के लिए आवश्यक है ... शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तौर पर और चेतावनी (सुधार का अनुशासन) होती है।

पिता परमेश्वर का नियुक्त किया गया घर का अधिकारी है जिसे बच्चों को जब वे जैसा परमेश्वर चाहता है आज्ञापालन नहीं करते अनुशासित करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, बच्चों के अनुशासन की कमी अकसर पिता के जीवन में अनुशासन की कमी प्रतिबिम्बित करता है। एक बच्चे का आज्ञोल्लंघन बरदाश्त नहीं करना चाहिए।

नोटः	निर्गमन 21:15 ..... जो अपने पिता या माता को मारे-पीटे वह निश्चय मार डाला जाए।
व्यवस्था. 21:18-21 ..... यदि किसी के हठिला और दंगैत बेटा हो ...... तब सारे इस्राएली सुनकर भय खाएँगे।
नीतिवचन 13:24; 19:18; 22:15; 23:13-14; 29:15-17 भी देखो।

7. **बच्चों को पालने का नुसखा** (नीतिवचन 22:6)

यह वचन दो संघटक प्रकट करता है - एक आज्ञा और एक प्रतिज्ञा का।
आज्ञा के तीन भाग हैं:

क)	प्रशिक्षण का विचार ..... "शिक्षा देना"। यह शरीरिक सजा सूचित नहीं करता है बल्कि ......
...... समर्पण दिखाता है जहाँ माता-पिता अनुभव करते हैं कि बच्चे वास्तव में परमेश्वर के हैं। वे मात्र परमेश्वर के दान के भण्डारी हैं। (भजन 127:3-5)
...... शिक्षा माता-पिता से जानकारी के रूप में। बच्चों को अपने माता-पिता से परमेश्वर के बारे में जानना चाहिए। (व्यवस्था. 6:7)

ख)	शिक्षा का पानेवाला एक "बच्चा" या आश्रित है। जब तक बच्चा अपने माता-पिता पर निर्भर है तब तक वह आयु के अनपेक्ष शिक्षा का पानेवाला है।

ग)	शिक्षा की विषय-वस्तु .... "जिसमें उसे चलना चाहिए"। इसका तात्पर्य है कि विकास के हर चरण पर माता-पिता या अभिभावक को बच्चे को परमेश्वर के लिए वह करने को जिसे करने के लिए परमेश्वर ने उसे अच्छी तरह से सज्जित किया है, समर्पित करें, शिक्षा दें और प्रेरित करें।

यहोशू ने कहा, "...... मैं तो अपने घराने समेत यहोवा ही की सेवा नित करूँगा" (यहोशू 24:15)।
यदि इस आज्ञा का पालन किया जाए - तो प्रतिज्ञा पर दावा किया जा सकता है।

प्रतिज्ञा में भी अनुभूति का समय शामिल है ..... "बुढ़ापे में", यानि, माता-पिता से स्वतन्त्र। प्रतिज्ञा में अनुभूति की निश्चितता शामिल है ..... "उससे न हटेगा"। यदि आज्ञा का पालन किया गया है तो प्रतिज्ञा निश्चय पूरी होगी। बच्चों को पालने का काम एक दिन का नहीं है। इसमें माता-पिता की ओर से ध्यानपूर्वक पूर्वानुमान और सचेतन आज्ञापालन की आवश्यकता होती है।

फुटनोटः जो परिवार परमेश्वर की इच्छा के बाहर जी रहे हैं उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए कि वे ...एक एक कदम करके उसकी इच्छा में आ जाएँ। परमेश्वर आज्ञोल्लंघन और अधर्म को आशीष नहीं दे सकता है। "अनुग्रह का दिन" एक ईश्वरीय आशीष है जब परिवारों को धार्मिकता और पूर्ति पाने के लिए समय देना चाहिए .... न कि पाप में बने रहना है क्योंकि जैसे पुराने नियम के दिनों में था, आज परमेश्वर से तुरन्त न्याय नहीं होता है। (रोमियों 6:1)

लैंगिक पापों के फन्दों से बचना

हर सलाहकार ने लैंगिक पापों के परिणामों को देखा है। लैंगिक पाप अनेक बार भावात्मिक उलझनों में ले जाते हैं, जैसे कि आत्मनिन्दा, आत्म-सम्मान की हानि, दोष, बेचैनी, हीनता, उलझन और डर। लैंगिक पाप गहरे भावात्मक घाव बना देता है जो एक व्यक्ति को जीवन भर के लिए विक्षत कर देते हैं। लैंगिक पापों का दोष व्यक्ति को जीवन भर तंग करता रहता है। आजकल की तथाकथित "लैंगिक स्वतन्त्रता" कोई भी स्वतन्त्रता नहीं लाती है, परन्तु अनेक लोगों को भावात्मिक और मानसिक तौर पर अनेक आवेशों के गुलाम बना देती है जो विशुद्ध लैंगिक पूर्ति और सुख की परमेश्वर की सुन्दर योजना को विकृत करती है। इस पाप ने राजा सुलेमान जैसे अनेक महान लोगों को नष्ट किया है।
1 कुरिन्थियों 6:18 "व्यभिचार से बचे रहो। जितने अन्य पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करनेवाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है।"
नीतिवचन 6:32-33 "परन्तु जो परस्त्रीगमन करता है वह निरा निर्बुद्धि है; जो अपने प्राणों को नष्ट करना चाहता है, वही ऐसा करता है। उसको घायल और अपमानित होना पड़ेगा, और उसकी नामधराई कभी न मिटेगी।"

मनुष्य ने नहीं, परमेश्वर ने सेक्स बनाया

परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए विवाह (यानी, विवाह में लैंगिक सम्बंध) बनाया। इसीलिए इसे धन्यवाद के साथ ग्रहण करना चाहिए (1 तीमु. 4:3-5)। मसीही दम्पतियों की अविश्वासियों से अधिक उनके लैंगिक सम्बंधों का आनन्द लेने की सम्भावना है। यह इसलिए है क्योंकि मसीहियों ने उनके जीवनों में परमेश्वर के प्रेम को अनुभव किया है, और इसलिए वे सच्चाई से एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं। उनके पास सर्वोच्च आदर्श भी है जिसके आधार पर वे अपना विवाह सम्बंध बना सकते हैं, अर्थात् मसीह और उसकी कलीसिया (1 यूहन्ना 4:10-12; इफि. 5:22-23; रोमियों 5:5); वगैरा)। यह दिलचस्प बात है कि सलाहकार और विस्तृत आँकड़े दोनों प्रमाणित करते हैं कि मसीही दम्पति अविश्वासियों से अधिक उनके लैंगिक सम्बंध का आनन्द लेते हैं। परमेश्वर ने लैंगिक विवाह के सम्बंध में आवर्तक आधार पर जीवन का सबसे उत्तेजक अनुभव प्रदान किया है, और यह अनुभव जैसे जैसे विवाह के वर्ष आगे बढ़ते हैं और भरपूर होता जाता है। परन्तु परमेश्वर ने आदेश दिया है कि मनुष्य परमेश्वर की विवाह की वाचा की ठहराई हुई सीमा के अन्दर ही लैंगिक सम्बंध को व्यक्त करे। इसका दूसरा एक मात्र विकल्प संयम है। यह संयम है जो अधिक आत्म-सम्मान और मजबूत चरित्र बनाता है। सकी कमी अनेक बार घटिया आत्म-सम्मान और हीनता लाता है, जो बदले में विवाह सम्बंध में समस्याएँ खड़ी करता है। (1 कुरिं. 7:9)

विभिन्न लैंगिक पाप:

क) **व्यभिचार** - की परिभाषा है "एक विवाहित व्यक्ति और उसका पति या उसकी पत्नी से अलग किसी व्यक्ति के साथ लैंगिक संभोग"। बाइबल इस पाप की पूरी शक्ति से निन्दा करती है क्योंकि यह विवाह की वाचा की पवित्रता का उल्लंघन करता है। सारी बाइबल में, परमेश्वर, उसके वचन और विवाह की ओर विश्वासयोग्यता की माँग सुनिश्चित रूप से बताई गई है। मानसिक सन्तुलन, चरित्र और भावात्मक सन्तुलन विश्वासयोग्यता पर निर्भर हैं। क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है, वह चाहता है कि मनुष्य विश्वासयोग्य हो। विश्वासयोग्यता किसी भी व्यक्ति में ताकत और चरित्र का चिन्ह है, जबकि अविश्वासयोग्यता किसी भी क्षेत्र में कमजोरी और पाप का चिन्ह है। हालाँकि मलाकी 2:13-16 मूल रूप से तलाक से निपटता है, यह विवाह के वाचा को तोड़ने की गम्भीरता को भी प्रकट करता है। व्यभिचार को लैंगिक पाप के रूप में बड़ी स्पष्टता से दस आज्ञाओं में बताया गया है (निर्गमन 20:14; लैव्यव्यवस्था 18:20; व्यवस्थाविवरण 22:22; नीतिवचन 6:29; रोमियों 13:9; 1 कुरिन्थियों 6:9; इब्रानियों 13:4)।

ख) **कुमारीगमन** - की परिभाषा है " विरोधी लिंग के अविवाहित व्यक्तियों में लैंगिक संभोग"। इसका नए नियम में 47 बार उल्लेख किया गया है और लैंगिक पूर्ति के परमेश्वर के ठहराए नमूने से अपसरण के कारण पूरे जोर से निन्दा की गई है। विस्तृत भाव में कुमारीगमन ऐसे पापों को भी जैसे कि कौटुम्बिक व्यभिचार, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, द्विलिंगी, पशुगमन, वगैरा सम्मिलित करता है। (1 कुरिन्थियों 6:9,13,18; गलातियों 5:19; इफिसियों 5:3; 1 थिस्स. 4:3)।

ग) **समलिंगकामुकता** - की परिभाषा है "समान लिंग के सदस्यों के बीच लैंगिक संभोग"। समलिंगकामुकता को एक सामान्य विकल्प और स्वीकृत जीवन शैली के रूप में वैध बनाने के वर्तमान उद्यमशील प्रयासों के बावजूद, बाइबल समलिंगकामुकता की लैंगिक कामविकृति और लैंगिक पूर्ति के परमेश्वर के नियुक्त नमूने के खुले उल्लंघन के रूप में भर्त्सना में अटल रहती है। (लैव्य. 18:22; रोमियों 1:26-27; 1 कुरिं. 6:9; 1 तीमु. 1:10-11)।

घ) **अश्लील साहित्य** - की परिभाषा है "सामग्री जैसे कि पुस्तकें, चित्र, फिल्म, वीडियो और वेब-साइट्य जो लैंगिक उत्तेजना उत्तेजित करने के लिए कामविषयक चालचलन चित्रित करते हैं" (1 पतरस 2:11)। अश्लील साहित्य में शामिल होना एक लैंगिक पाप है, क्योंकि यह भक्तिपूर्ण लैंगिक पूर्ति दिए बिना, कामुक स्वैरकल्पनाओं के द्वारा मन को दूषित करता है। यह अकसर व्यक्ति को परीक्षा से अभिभूत करता है और अनेक बार लौंगिक पापों जैसे कि हस्तमैथुन, कौटुम्बिक व्यभिचार, वेश्यावृति, बलात्कार, बच्चों के साथ छेड़छाड़, वगैरा में ले जाता है। बाइबल आँखों द्वारा लैंगिक कामुकता को व्यभिचार के स्तर पर रखती है! (मत्ती 5:28)

च) **हस्तमैथुन** - इस विषय के संबंध में मसीही सलाहकारों के बीच परस्पर-विरोधी विचार बने हुए हैं। कुछ लोग यदि यह लैंगिक तनाव निकालता और उसके द्वारा लैंगिक दुर्व्यवहार रोकता है तो इसे एक स्वीकृत साधन मानते हैं, जबकि दूसरे इसे एक लैंगिक पाप मानते हैं। जबकि बाइबल इस मामले पर चुप है, तो हमें समझ के लिए विस्तृत बाइबल के नियमों का सहारा लेना चाहिए।

1. 1 कुरिन्थियों 6:12 "सब वस्तुएँ मेरे लिए उचित हैं, परन्तु मैं किसी बात के अधीन न हूँगा।"
   नोटः ऐसी चाजों को भी जो उचित हैं एक मसीही पर ऐसा प्रभाव नहीं होने देना चाहिए कि वह उनका दास बना जाए। जिस किसी ने भी जवानों और व्यस्कों को सलाह दी है जो नियमित हस्तमैथुन करते हैं और जिनके लिए यह एक आदत बन चुका है, जानते हैं कि यह एक व्यक्ति पर एक मजबूत पकड़ बनाए रखता है।

2. मत्ती 5:28 "जो कोई भी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।"
   नोटः परमेश्वर मन के विचार और हृदय की सहमति को व्यभिचार मानता है। जो हस्तमैथुन करते हैं लैंगिक स्वैरकल्पनाओं में भी शामिल हुए बिना नहीं रह सकते हैं।

3. 1 कुरिं. 7:9 "परन्तु यदि वे संयम न कर सकें, तो विवाह करें; क्योंकि विवाह करना कामातुर रहने से भला है।"
   नोटः परमेश्वर विकल्प देता हैः संयम या विवाह। कोई तीसरा विकल्प नहीं है। पौलुस यह नहीं लिखता है कि लैंगिक कामना के लिए हस्तमैथुन एक उचित राहत है, क्योंकि वह जानता है कि हस्तमैथुन 'कामुकता' को रोक नहीं सकता है, परन्तु आग में घी ही डालता है! इसे कामुकता के विरुद्ध एक विकल्प के रूप में नहीं रखा जा सकता है!

4. 1 कुरिं. 7:3-4 "पति अपनी पत्नी का हक पूरा करे; और वैसे ही पत्नी भी अपने पति का। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं पर उसके पति का अधिकार है; वैसे ही पति को भी अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी का है।"
   नोटः एक बात बहुत स्पष्ट है; परमेश्वर ने एक व्यक्ति को लैंगिक क्षमता उसके लिए नहीं परन्तु उसके वैध साथी के लिए दी है। सेक्स में भी, जैसे यह किसी भी स्थान में सच है, लेने से देना धन्य है (लूका 6:38; प्रेरितों 20:35)। सेक्स का लक्ष्य अपने आप को बनाना इसीलिए अपनी लैंगिकता का अवैद्य उपयोग होगा। परमेश्वर ने सेक्स को अपने वैध विवाहित साथी को प्रेम के वरदान के रूप में देने के लिए बनाया है।
   ऊपर दिए बाइबल के सिद्धान्तों से सुस्पष्ट है कि हस्तमैथु पाप है, और इससे इसी प्रकार निपटना चाहिए।

छ) **दूसरे लौंगिक पाप**, जैसे कि भिन्नलिंग-वस्त्रधारण (विरोधी लिंग के समान कपड़े पहनना और व्यवहार करना), परपीड़ितकामुकता (दूसरों या अपने आप को पीड़ा देकर लैंगिक सुख पाना), कामांगप्रदर्शन (दूसरों को उत्तेजित करने के लिए कपड़े उतारना), दृश्यरतिकता (दूसरों को कपड़े उतानते या दूसरों को लैंगिक काम में लगे हुए देखने के लिए

झाँकना), वगैरा का जिक्र किया जा सकता है। क्योंकि जिक्र किए हुए लैंगिक पाप अधिक सामान्य हैं, इसिलिए हम अपने आप को इन्हीं तक सीमिक रखेंगे।

विवाह में समस्याएँ

कम दम्पति ही जो सलाह के लिए आते हैं क्योंकि उनको लैंगिकता संबंधि समस्याएँ हैं, उनकी समस्याएँ "यान्त्रिक" या "आंगिक" होती हैं। अधिकाँश लोग जिनको लैंगिक तौर पर संबंध बनाने में समस्या होती है, उनकी समस्याएँ डर, क्रोध, नाराजगी, चिन्ता, दोष, ईर्ष्या, शक और अकसर केवल थकावट के कारण होती हैं। अधिकाँश सलाहकारों के अनुभव में, क्रोध और नाराजगी से पैदा हुई समस्याएँ सूची में सबसे ऊपर हैं! इसलिए सबसे पहले जाँच-पड़ताल इस क्षेत्र में होनी चाहिए!

यह भी मुमकिन है कि लैंगिक सम्बंध विकसित नहीं हो पाता है, या विवाह से पहले या दौरान किए लैंगिक पापों के दोष के कारण बिगड़ जाता है। यदि ऐसा हो तो, इसे परमेश्वर के सामने निपटा जाना चाहिए, और इसे एक दूसरे के सामने स्वीकार करना चाहिए। एक दूसरे को क्षमा किया जाना चाहिए ताकि एक दूसरे की ओर एक स्पष्ट विवेक रखा जा सके। कभी-कभी प्रारंभ में सच दुख पहुँचा सकता है, परन्तु छुपाए रखने और झूठ से अधिक दुख पहुँचता है! कुछ लोगों ने विवाह से पहले लैंगिक सम्बंध बनाए थे, उन्होंने यह सोचा था कि यह ठीक है क्योंकि वैसे भी वे विवाह करने वाले हैं। फिर भी अकसर विवाह के बाद समस्याएँ पैदा होती हैं। विवाह से पहले उनके लैंगिक सम्बंध ने विवाह में उसी दूषण और दासता को लाया जो वैसे भी आते यदि वे दूसरों के साथ लौंगिक सम्बंध में होते। ऐसा लैंगिक सम्बंध अभी भी कुमारीगमन का पाप है - अविवाहित लोगों में सेक्स की क्रिया। सिद्धान्त बदला नहीं है, परमेश्वर के क्रम से किसी प्रकार का भी अपसरण दोष लाता है। इसलिए इसे असली पश्चाताप में परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए, जो परमेश्वर और एक दूसरे के साथ पुनःस्थापना का एक मात्र तरीका है।

लैंगिक पापों में भुलाए हुए तथ्य

कुछ सोचते हैं कि परमेश्वर लैंगिक अनुभव (कामोत्ताप) के विरुद्ध है। परन्तु यह सच नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को यह अनुभव पाने की क्षमता के साथ बनाया था। हालाँकि परमेश्वर विवाह-वाचा के बाहर सेक्स के विरुद्ध है, वह सेक्स के कार्य के विरुद्ध नहीं है, परन्तु वह विशेषकर लैंगिक पाप से सम्बद्ध बड़े बड़े गलत कामों तक पहुँचना चाहता है। अधिकाँश लोग जिन्होंने लैंगिक पाप किए हैं, इन पापों की कामुकता और अशुद्धता को स्वीकार करने के आगे नहीं जाते हैं। परन्तु परमेश्वर उससे कहीं अधिक गहराई में पहुँचना चाहता है - लैंगिक पापों के द्वारा दूसरों के साथ जो गलत किया गया है; झूठ, बेईमानी, पाखण्ड, छल-कपट और धोखा जो सदा ऐसी बुरी घटनाओं के साथ शामिल होते हैं, और अपने शरीर के साथ किए दुर्व्यव्हार, परन्तु सबसे बढ़कर, एक प्रेमी परमेश्वर के विरुद्ध किया गया पाप। यह ऐसे तथ्य हैं जिनके बारे में, जब कोई लैंगिक पाप करता है, बात नहीं की जाती है। अपराधी अधूरे पश्चाताप और चिरकालिक दोष के साथ रह जाता है। अनेक लोगों ने पश्चाताप को उस स्तर तक अनुभव नहीं किया है जहाँ तक परमेश्वर चाहता है! यह सलाहकार की बहुत बड़ी जिम्मेवारी है कि वह अपराधी को ऐसे पश्चाताप में ले जाए!

व्यभिचार में भुलाए हुए कारक

बाइबल का नियम "तू व्यभिचार न करना" मूल रूप से परिवार की रक्षा के लिए था, जो परमेश्वर की समाज की मूल इकाई है। व्यभिचार परिवारिक जीवन को नष्ट करता है। पति के पक्ष में यह अविश्वासयोग्यता है, जो उसके अपने नैतिक अधिकार को कमजोर करता है। एक नैतिक रूप से शुद्ध पति अपने परमेश्वर द्वारा दिए अधिकार में आश्वस्त है और उसे इस्तेमाल करता है। पत्नी के पक्ष में यह भी अविश्वासयोग्यता है जो घर में एक पराई वफादारी लाती है। परन्तु व्यभिचार न केवल परिवार के विरुद्ध पाप है, बल्कि यह अपने पड़ोसी से प्रेम करने के नियम को तोड़ना भी है। उसके पड़ोसी का विवाह फिर कभी भी वैसा नहीं रहेगा, एक बार उसने उसका सबसे कीमती सुख चुरा लिया है! परन्तु, दुख की बात है कि व्यभिचार इसके साथ-साथ और भी कई गम्भीर अधर्म लाता है। 2 शमूएल 11 और 12, राजा दाऊद का बतशेबा के साथ पाप, और परिणामस्वरूप उसके पति ऊरिय्याह का पूर्व व्यवस्थित कत्ल का दुखद विवरण बताता है। अधिकाँश लोग जब वे इस घटना की बात करते हैं, तो दाऊद का बतशेबा के साथ असली पाप के बारे में ही बात करते हैं, परन्तु जब परमेश्वर ने नबी के द्वारा दाऊद का सामना किया, तो सबसे पहले उसने असली व्यभिचार के बारे में बात करने से पहले दूसरे मामलों की बात की। दाऊद ने झूठ बोला, छुपाया, धोखा दिया और अन्त में एक निर्दोष व्यक्ति के कत्ल की व्यवस्था की! इन सब गलत कामों तक परमेश्वर सबसे पहले पहुँचना चाहता था।

राजा दाऊद अपने एक सिपाही के सबसे घनिष्ठ सुख को नष्ट करने का दोषी था। अगरचे पाप फिर कभी दोहराया न जाता, और दाऊद उसके पति के कत्ल की व्यवस्था न करता, फिर भी पूरा निश्चित है कि बतशेबा अपने पति की ओर वैसा ही कभी भी महसूस नहीं कर पाती थी। उसका पाप अवश्य दूसरे पापों के लिए मार्ग खोल देता था। परमेश्वर दाऊद को दोष सिद्ध करा रहा था - केवल उसकी कामुकता का ही नहीं, बल्कि दूसरे व्यक्ति का सबसे घनिष्ठ सुख चुराकर जो बड़ा दुर्व्यवहार उसने उसके के साथ किया था। चुराया हुआ सामान लौटाया जा सकता है, परन्तु व्यभिचार असुधार्य है!

यदि व्यभिचार तलाक लाता है, तो बच्चों के साथ भी बड़ा दुर्व्यवहार होता है, और दादा-दादियों को नहीं भूल सकते जो उनके बच्चों के सुखी घर से रहित हो जाते हैं, वगैरा। अपराधी के लिए उस घोर दुर्व्यवहार को भूल जाना जो दूसरा सह रहा है कितना आसान है, क्योंकि वह खुद अपने नए प्यार का आनन्द ले रहा है। जब दूसरों की भावनाओं पर ध्यान जाता है तो इसे प्रेम नहीं कह सकते! परमेश्वर दूसरों के साथ किए दुर्व्यवहारों को नहीं भूलता, और वह उन तक पहुँचना चाहता है!

ये कारक अकसर भुलाए और अनदेखे किए जाते हैं, और परमेश्वर और नाराज लोगों के सामने स्वीकार नहीं किए जाते हैं। इससे अपराधी कुछ अंश तक क्षमा पाता है (यदि ऐसा मुमकिन है तो, याकूब 2:10), कुछ अंश तक पुनःस्थापित होता है, और अकसर इस सब के बाद अपराधी का मसीही जीवन सन्दिग्ध बन जाता है।

दूसरे लैंगिक पापों में भुलाए हुए कारक

क्योंकि कुमारीगमन विवाह-वाचा का उल्लंघन नहीं करता, इसलिए अनेक इसे हलका पाप मानते हैं, और इस कारण इससे वास्तव में पश्चाताप नहीं किया जाता। पाप हमेशा दूषण की प्रक्रिया को आरंभ कर देता है। सबसे पहले अपने और दूसरे के विवेक को किया गया गलत है। और कुमारीगमन अकसर अधिक कुमारीगमन में और / या दूसरे लैंगिक पापों में ले जाता है। एक व्यक्ति में सेक्स कर्मशक्ति एक सुलगती आगा के समान है, और इसे भड़काना जैसे आग पर तेल डालना है। कुमारीगमन एक अविवाहित लड़की पर विवाह के बाहर बच्चे को जन्म देने का क्रूर अन्याय थोपता है। बच्चा लड़की के माता-पिता जो दर्द और लज्जा सहन करेंगे, वगैरा उसके बारे में कौन सोचता है? या कुमारीगमन गर्भपात के पाप में ले जाता है जो कत्ल के समान है! ये ऐसी चीजें हैं जिनसे अकसर पश्चाताप नहीं किया जाता है!

हस्तमैथुन के बारे में, यह केवल एक मात्र गम्भीर पाप ही नहीं है जो अपने विवेक और शरीर के विरुद्ध किया जाता है - शरीर, जिसे परमेश्वर ने अपना मन्दिर होने के लिए ठहराया, बल्कि दूसरों के साथ किए गए अन्याय भी हैं। झूठ बोलना, छुपाना, धोखा देना, वगैरा। और किसी दूसरे को इसी मार्ग पर ले जाने की सम्भावना जो उस व्यक्ति को उसके भावी सुखी घर, वगैरा से वंचित कर सकता है।

और काफी कुछ कहा जा सकता है, परन्तु सिद्धान्त स्पष्ट है। परमेश्वर चाहता है कि अपराधी न केवल अपनी कामुकता से निपटे बल्कि उन भयंकर अन्यायों से भी जो अकसर इसके साथ पाए जाते हैं। परमेश्वर द्वारा पवित्र किया हुआ सच्चा प्रेम उस दुख को नहीं लाता है जो कामुकता हमेशा लाती है।

परमेश्वर और दूसरों तक लौटने का मार्ग

अनेक नए नियम के विश्वासी मसीही बनने से पहले लैंगिक पापों में जी रहे थे, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया और उन्हें एक बिलकुल नया जीवन दिया (1 कुरिं. 6:9-11; 2 कुरिं. 5:17)। परमेश्वर की क्षमा पाने के लिए नीचे दिए कदम लेना अवश्य है।

1. **पाप के लिए भक्तिपूर्ण शोक के साथ पश्चाताप**

   पश्चाताप सबसे पहले परमेश्वर की ओर है। लैंगिक पाप स्वीकार करते समय, व्यक्ति अपने विरुद्ध परमेश्वर का पक्ष लेता है। अपराधी को केवल असली कामुकता से ही नहीं, बल्कि सारे संबंधी पापों से भी निपटना चाहिए। अपराधी का जीवन पूरी तरह यीशु की प्रभुता तले आना चाहिए, नहीं तो पश्चाताप और क्षमा अस्थाई हो सकते हैं। न-निपटे हुए पाप द्वारा शैतान के आक्रमण के लिए द्वार खुला रह जाएगा। पश्चाताप के साथ-साथ इस पाप से सम्पूर्ण छुटकारा और परित्याग होना चाहिए। (भजन 51:4; यूहन्ना 8:11; 2 कुरिं. 7:10-11; इफि. 4:27; याकूब 2:10, वगैरा)

2. **जहाँ आवश्यकता हो, दूसरों से क्षमा माँगनी चाहिए**

यदि दूसरों को चोट पहुँची है, और क्षमा माँगना मुमकिन हो, तो इसे करना चाहिए। ऐसा न करने से व्यक्ति पाप में फँसा रह सकता है। (लूका 17:4; याकूब 4:17, वगैरा)

3. **व्यक्ति के शरीर का परमेश्वर को समपर्ण होना चाहिए**

विश्वासी का शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है। लैंगिक परीक्षा और पाप में दोबारा नहीं गिरने के लिए, व्यक्ति का शरीर परमेश्वर को समर्पित किया जाना चाहिए। (रोमियों 6:19; 12:1-2; 1 कुरिं. 6:13)

4. **लौंगिक परीक्षा से भागो**

कुछ लोग भागने को कमजोरी का चिन्ह मानते हैं। परमेश्वर के अनुसार यह समझदारी है और यह उसकी अपनी सलाह है। उन जगहों और परिस्थितियों से दूर रहो जो संकट में ले जा सकती हैं। यूसुफ भागा और परिणामस्वरूप कई वर्ष जेल में काटने पड़े। यह फिर भी उत्तम हल था और जिसका परमेश्वर ने सम्मान किया। (उत्पत्ति 39:7-12; 1 कुरिं. 6:18; 2 तीमु. 2:22)

5. **यदि अपराधी एक मसीही है, तो पुनःस्थापन के लिए समय की आवश्यकता है**

पुराने नियम में अनेक लैंगिक पापों के लिए मृत्यु का दण्ड होता था, जो परमेश्वर के सम्मुख उनकी गम्भीरता प्रकट करता है। वैधानिक न्याय का अधिकार कलीसिया को नहीं दिया गया है, परन्तु यदि कलीसिया लैंगिक पापों को हलकी बात मानती है तो वह परमेश्वर के सम्मुख जिसने इन अपराधों से बड़ी गम्भीरता से लिया, दोषी है। (1 कुरिं. 5; 2 कुरिं. 2:1-11; 1 तीमु. 5:22)

6. **हम जो बोते हैं, वही काटते हैं**

हमारे पापों के परिणाम होते हैं जो चलते रहते हैं, हालाँकि उनसे पश्चाताप किया गया है और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त की गई है। उदाहरणार्थ, एक लड़की, जो कुमारीगमन के पाप के कारण गर्भवती हुई, पश्चाताप करने पर परमेश्वर द्वारा क्षमा कर दी जाएगी, परन्तु बच्चा तो फिर भी पैदा होगा। परमेश्वर उस परिणाम को हटाता है। इन परिणामों को दाऊद के समान, साहस के साथ सँभालना चाहिए। जो शरीर के लिए बोया गया है व्यक्ति उसे ही काटेगा, परन्तु उस काटने का अन्त होता है। पश्चाताप की घड़ी से आगे, व्यक्ति को जानबूझकर आत्मा के लिए बोना चाहिए, ताकि उचित समय पर आत्मा का फल काटना आरंभ करे, जो पुनःस्थापन के समय का समापन हो सकता है। (गला. 6:7-8)

अन्त में

सेक्स जो परमेश्वर का मनुष्यों के लिए सबसे सुन्दर दान है, और जो सुख का सबसे बड़ा स्रोत है, उचित रूप से उपयोग में न लाए जाने के कारण, पाप के साथ मनुष्य का सबसे बड़ा रणक्षेत्र बन गया है। केवल यीशु मसीह में ही पुराने लैंगिक पापों के दोष से सम्पूर्ण क्षमा और स्वतन्त्रता पाई जा सकती है।

उन लोगों से निपटने में जो लैंगिक पापों में गिरे हैं, सलाहकारों को चाहिए कि वे दया से और कृपा से निपटें, लौंगिक पापों को अनदेखा न करें, और न ही अधिक कठोरता से निन्दा करें। जिस प्रकार प्रभु व्यभिचार में पकड़ी स्त्री से निपटा था, सलाहकार का सबसे उत्तम उदाहरण हो सकता है। (यूहन्ना 8:1-12; गलातियों 6:1)

एकता – कार्यों द्वारा प्रेम

एक कलीसिया के विभाजन से कुछ भी अधिक दर्दनाक नहीं हो सकता है। एक मण्डली जो शंका, चुगलखोरी और दलबन्दी द्वारा फाड़ दी जाती है बहुत ही क्षतिपूर्ण बात है। अधिकाँश मसीही कम से कम ऐसे एक विभाजन की याद लिए फिरते हैं; एक स्मृति जो कई वर्षों के बाद भी ताजा रहती है। मुझे एक कलीसिया की बात याद है जो पास्टर के कई ऐल्डरों की पत्नियों के साथ व्यभिचारी संबंध के बाद बँट गई थी। दो ऐल्डरों ने आत्महत्या कर ली थी, और पूरी कलीसिया भर में कलह फैली हुई थी। अखबारों ने कहानी को छापना शुरू किया, और महिनों तक मसीह का नाम कीचड़ में उछाला गया। गैर-मसीहियों पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने दोबारा, कहीं भी कलीसिया में न जाने की प्रतिज्ञा की। एक दूसरी कलीसिया में जिसका मेरे साथ सामना हुआ, बाइबल के सिद्धान्त विभाजन के कारण बने थे। मामला इतना छोटा था कि मुझे याद भी नहीं है कि क्या था। परन्तु, मुझे अभी भी कड़वाहट की स्पष्ट स्मृति है जो पैदा हुई थी। सम्भव है आपने यह कहावत सुनी है, "यदि आपके पास एक विश्वासी है तो आपके पास एक मसीही है, यदि आपके पास दो विश्वासी हैं तो आपके पास एक कलीसिया है, और यदि आपके पास तीन विश्वासी हैं तो आपके पास दो कलीसियाएँ हैं।" सम्भव है कि यह सच्चाई के इतना करीब है कि हास्यजनक नहीं लगता।

हमारे सारे सम्बंधों में एकता

यदि आप कभी भी ऐसे विभाजन में सम्मिलित नहीं हुए हैं, तो आप शायद सोच रहे होंगे, "एकता का मेरे साथ क्या सम्बंध है ?" <u>प्रेम और एकता वो बुनियाद बनाते हैं जिस पर परमेश्वर चाहता है हम हर परिस्थिति में सम्बंध बनाएँ</u>, और जब कभी कलीसिया में विच्छेद होता है उसका नाम दाँव पर होता है। आप और मैं उसकी कलीसिया हैं। यीशु ने कहा, "जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठा होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" (मत्ती 18:20)। हम जब कलीसिया के वातावरण से दूर घर में परिवार के साथ होते हैं, या मसीही मित्रों और परिचितों के साथ होते हैं, हम तब भी कलीसिया हैं। क्या हमारे विभिन्न सम्बंध प्रेम और एकता की छाप होते हैं, या झगड़े और विभाजन पैदा करते हैं ? क्या हम अपने बच्चों से प्रेम करते और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं,या उनके साथ झगड़े में रहते हैं ? क्या हम काम पर दूसरे मसीहियों के कुशल के बारे में सच्चाई से परवाह करते हैं, या हम अपने बारे में ही परवाह करते हैं - किसी मामले में अपना दोषनिवारण, अपना सुख और पूर्ति ?

जिस किसी सम्बंध में हम मसीही सम्मिलित होते हैं, प्रेम और एकता ही उसका केन्द्र होने चाहिए। बाइबल हमें कहती है कि हमें सब मनुष्यों से प्रेम करना और अपने साथी विश्वासियों के साथ एकता में रहना है। पति के रूप में मैं अपनी पत्नी से प्रेम करता हूँ, और उसके साथ एकता में रहने की सक्रिय रूप में कोशिश करता हूँ। हम अपने घर में कलीसिया हैं, और मसीह ने हमारे मध्य बसने का वादा किया है। एकता ऐसी चीज नहीं है जो जब दो लोग विवाह करते हैं अपने आप नहीं आ जाती है, इसके लिए प्रयास करना पड़ता है। मेरी पत्नी और मैं हमारे विवाह के हर क्षेत्र में एकता लाने की जिम्मेवारी में साझेदार हैं। जब हमारा विवाह हुआ था मुझे लगा यह आसान होगा। आखिरकार, हम एक दूसरे को अच्छी तरह जानते थे। मैं कितना गलत था! मुझे तुरन्त पता चल गया कि हम दोनों ने जो दूसरा व्यक्ति वास्तव में था उसके आदर्श रूपान्तर से विवाह किया था। आश्चर्य नहीं, हमारे विवाह के पहले दो वर्ष, जब हम एक दूसरे के साथ जो हम वास्तव में थे के आधार पर, और किसी आदर्श विचार पर नहीं, समन्वय करना और सम्बंध बनाना सीख रहे थे, कभी-कभी कोलाहलपूर्ण हुआ करते थे। समस्या का एक भाग हमारा घमण्ड था। हम स्वीकार नहीं करना चाहते थे कि हम ने ऐसे किसी से विवाह किया था जो सिद्ध नहीं था (हालाँकि यह दूसरों को प्रकट होगा)।

मसीहियों के रूप में भी, हम अकसर उसी प्रकार साथी विश्वासियों को भी आदर्श रूप में देखते हैं, उनको आसन पर बैठाते हैं, और जब वे हमारी उम्मीद पर खरे नहीं उतरते, हम नाराज और कटु बन जाते हैं। हमें ऐसी जगह पर आना है, जहाँ हम प्रेम के रवैये में, एक दूसरे को, उनकी कमियों सहित स्वीकार करते हुए, गले लगा सकें। यदि हम एक दूसरे को इस प्रकार स्वीकार करने से इनकार करें, तो यह हमें कलीसिया के पोलीसवाले बना सकता है: न्याय करनेवाला और आलोचक। अपने विवाह में, मुझे सीखना पड़ा कि मैं पवित्र आत्मा के रूप में कार्य नहीं कर सकता था, और मैं अपनी पत्नी को जब और जहाँ मैं आवश्यक समझूँ दोषसिद्धी नहीं करा सकता था। यह परमेश्वर का काम है। परमेश्वर ने मुझे अपनी पत्नी से प्रेम करने और उसके चरित्र का सजीव उदाहरण बनने का उत्तरदायित्व दिया है (इफि. 5:25)। मुझे उसका न्यायी बनने को नहीं बुलाया है। यदि उसके जीवन में कमजोरियाँ हैं, तो मुझे उसके लिए प्रार्थना करनी है और परमेश्वर को उसके हृदय में दोषसिद्धी लाने देना है - और ऐसा ही उसे भी मेरे लिए करना है। दूसरे मसीहियों के साथ अपने सम्बंध में, हम अकसर इस नियम को भूल जाते हैं। हम उनके जीवन में जिनसे हम सहमत नहीं होते, या जिनके जीवन में कुछ प्रत्यक्ष कमी है जो हमें लगता है सुधारने की आवश्यकता है, दोषसिद्धी लाने की कोशिश करते रहते हैं। परन्तु सहायता करने के बजाय, हम असंगति लाते हैं।

यह अनिवार्य है कि प्रेम हमारे सम्बंधों में मुख्य स्थान ले। जहाँ भेद हैं, वहाँ हम अपने भाइयों की ओर प्रेम का हाथ बढ़ाएँ और पवित्र आत्मा को अपने जीवनों में दोषसिद्धी का काम करने दें। आखिरकार वही तो है जो इस काम को उचित रूप से कर सकता है, क्योंकि वह हमारे हृदय के विचारों और अभिप्रायों को जानता है।

पिता होने के नाते, मुझे अपने बच्चों के साथ एकता में जीने का प्रयास करना है। केवल इसलिए कि वे मेरे बच्चे हैं और मेरे घर में रह रहे हैं, मुझे अनुमति नहीं देता कि प्रेम और एकता के नियमों को छोड़ दूँ। मैं उन पर क्रोध में फूट नहीं पड़ सकता और उनकी भावनाओं और विचारों का अनादर नहीं सकता हूँ, या ऐसा कुछ जिससे वे अपने आप को मुझ से कम महत्त्व के या लाभकर समझें। वे मुझ से एक भिन्न पीढ़ी के हो सकते हैं, परन्तु मसीह में वे मेरे भाई और बहन हैं। एक दिन हम मसीह की उपस्थिति में एक साथ खड़े होंगे। मुझ से उनके साथ साथी विश्वासी के रूप में एकता में जीने की अपेक्षा की जाती है। यह हमेशा आसान नहीं होता, परन्तु मुझे उन्हें मेरी अपेक्षाओं से रिहा कर देना चाहिए और जो वे हैं उन्हें वैसा बनने देना चाहिए, यह नियम हर सम्बंध के लिए उचित है।

प्रेम का यह विचार और एकता के साथ इसका सम्बंध एक मसीही के जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करता है। हम बाइबल से जानते हैं कि यीशु हमारे लिए प्रार्थना करता है (इब्रानियों 7:25), परन्तु केवल एक ही विवरण है जहाँ वह हम, कलीसिया के लिए क्या प्रार्थना करता है दिया गया है, "मैं केवल इन्हीं के लिए विनती नहीं करता, परन्तु उनके लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों .... कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएँ, और संसार जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा वैसा ही उनसे प्रेम रख।" (यूहन्ना 17:20-21, 23)। मसीह की देह के किसी भी भाग में फूट और विभाजन एक ऐसा कलंक है जिसे गैर-मसीही सुसमाचार को गम्भीरता से न लेने के कारण के रूप में उत्सुकता से ले लेंगे। हर बार जब हम एक कलीसिया के झगड़े में भाग लेते, फूट डालने में काम करते, एक दूसरे की ओर प्रेमरहित होते, या किसी भी प्रकार से कार्य करते या रवैये दिखाते जो विभाजन या शंका लाता है, तो हम ऐसा झंडा खड़ा करते हैं जो रिश्तेदारों, मित्रों, और व्यवसायी साथियों को मसीह में विश्वास करने से से दूर रखता है। इस प्रकार की चीजों में सम्मिलित होने से उनमें बना हुआ शक प्रमाणित हो जाता है कि मसीहियत पाखण्डियों का धर्म है।

तलाक – फूट का अन्तिम रूप

कुछ पश्चिमी देशों में विवाह कर रहा तीन में एक दम्पति तलाक लेता है, जबकि दूसरों में यह और भी खराब है जहाँ दो में एक तलाक लेता है। कितने दुखद आँकड़े हैं! मलाकी 2:16 में परमेश्वर तलाक के बारे में अपनी घृणा प्रकट करता है। तलाक है, दो लोगों की एकता को तोड़ना जिन्होंने एक दूसरे के साथ वाचा बाँधी है। वह इस फूट के परिणाम से कितना शोकित होता है। तलाक तालाब में एक पत्थर फेंकने के समान है - लहरें बड़ी होती जाती हैं। केवल पति और पत्नी ही दुख नहीं भोगते, परन्तु बच्चे भी। मनोवैज्ञानिक हमें बताते हैं कि बहुत सा आश्वासन दिलाने के बावजूद भी, कई बच्चे अपने साथ दोष लिए फिरते हैं कि किसी प्रकार वे उनके माता-पिता के विवाह के टूटने के जिम्मेवार हैं। समाज भी दुख भोगता है। दूसरे आँकड़ों ने बताया है कि सब स्वाभाविक हिंसक अपराधों में से अधिकाँश - बलात्कार, कत्ल, आक्रमण, वगैरा - उन लोगों ने किए थे जो अकेले माता/पिता के घरों में पले थे। कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर तलाक से घृणा करता है। हालाँकि तलाक की लहरें पूरे समाज में महसूस की जाती हैं, मेरा विश्वास है कि इसका विपरीत भी सच है। मसीही परिवार, कलीसियाएँ और संस्थाएँ जो एकता में रहती हैं, उनका समाज पर एक सकारात्मक, स्थिर करनेवाला प्रभाव पड़ता है। इस बात से हम सबको एक दूसरे से अधिक गहराई से प्रेम करने और अधिक सक्रियता से एकता खोजने की चुनौती मिलनी चाहिए।

मेरा विश्वास है कि मसीह की देह में फूट अपने भाई से आत्मिक तलाक के समान है। हमने एक दूसरे से प्रेम करने और स्वीकार करने की वचनबद्धता को तोड़ दिया है - परमेश्वर अपेक्षा करता है कि हम इस वचनबद्धता के साथ जीवन जीएँ। इस वचनबद्धता को तोड़ने के कारण हम चोट, कटुता, शक, अपवर्तन और कई चीजों के शिकार हो जाते हैं जो हमारे आत्मिक जीवन को अशक्त कर देता है और मसीह की देह में तबाही लाता है। हम में से अनेक अपनी व्यक्तिगत निराशाओं के कारण विश्वास नहीं करते कि बाइबल की एकता मुमकिन है। परिणामस्वरूप, परमेश्वर के वचन का हमारा प्रत्यक्षज्ञान धुँधला पड़ जाता है, जिससे हम अपनी चोटों और कुण्ठाओं पर ध्यान लगाए रहते हैं। परन्तु परमेश्वर हमारे दर्दनाक अनुभवों से बड़ा है। हमें अविश्वास को अपने हृदयों पर राज्य नहीं करने देना है। अविश्वास हमारे जीवन की कालकोठरी है जहाँ शक और डर के नेगेटिव बनते हैं। इन शब्दों को पढ़ते हुए, सम्भव है कुछ दर्दभरी यादें ताजा हो गई हों। यदि ऐसा है तो आगे मत पढ़ते जाएँ, बल्कि रुक कर उनके बारे में परमेश्वर से

बात कीजिए। प्रभु के सामने उन्हें स्वीकार कीजिए, उसकी चंगाई की माँग कीजिए, और फिर जिन्होंने चोट पहुँचाई है उन्हें क्षमा कर दीजिए। जब आप ऐसा कुछ समय तक करते रहेंगे, तो परमेश्वर आपके हृदय में आशा और प्रेम उण्डेल देगा।

यीशु ने उस के लिए प्रार्थना की जो सम्भव था

बाइबल की एकता प्राप्त करना सरल नहीं है। मैं सबसे पहले स्वीकार करता हूँ कि दूसरों से प्रेम करना और एकता बनाना कोई सरल काम नहीं है। परन्तु, एकता मुमकिन है। क्या यीशु उस चीज के लिए प्रार्थना करने का कष्ट करेगा जो मुमकिन न हो? क्या वह इतना निर्दयी होगा कि हमारी आशाएँ बढ़ाकर और हमें उम्मीद देकर कि हम, उसकी कलीसिया गहरे प्रेम, संगति और भरोसे में जी सकते हैं, और फिर हमें निराशा और भ्रम में डाल दे? राजनीतिक, सामाजिक और युग के अन्तरों के बावजूद, और हमारे सांस्कृतिक और जातीय बाधाओं के पीछे छुपे रहने के बावजूद यीशु एकता के लिए प्रार्थना करता है। वह एकता के लिए प्रार्थना करता है जो सम्प्रदायों से और कुछ मामलों में हमारी मोटी दिवारों जैसी गैर-सम्प्रदायों से बढ़कर होगी। सम्बंधों में झगड़े, स्वाधीनता, अपने हकों की माँग करना, कलीसिया के वाद-विवादों में अगुआई करना या भाग लेना, कलीसिया के बँटवारे में भाग लेना सब पाप हैं जो यीशु द्वारा यूहन्ना 17 में की गई प्रार्थना के सीधे विरोध में हैं।

अनेक लोग यदि कलीसिया का विभाजन होता है तो चिन्ता करते हैं कि सही कौन है। मामला यह नहीं है कि कौन सही है, परन्तु परमेश्वर के वचन का आज्ञाकारी कौन है। जो मामले हमें विभाजित करते हैं महत्त्व के हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर की प्रथमता की सूची में कुछ है जो अधिक महत्त्व का है और वो है एकता। सम्भव है आपको विभाजन के कारण एक कलीसिया छोड़नी पड़े जो आपके वश के बाहर हो। विभाजन कभी-कभार एक नाराज व्यक्ति की ओर से हठ का परिणाम होता है; यदि हृदय से पश्चाताप नहीं होता है, तो कलीसिया टूट सकती है जिस पर आपका कोई नियन्त्रण न हो। आपको एक परिस्थिति से दूर होने पर विवश होना पड़ सकता है क्योंकि यह इतनी खराब है। जब कभी ऐसी परिस्थिति पैदा होती है तो हमें निश्चित होना चाहिए कि हमारे अभिप्राय शुद्ध हैं और हम दूसरों की गलतियों को धार्मिक क्रोध के नाम में अपना गुस्सा और नाराजगी निकालने के लिए बहाने के रूप में इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं।

एक दूसरे से प्रेम रखो!

एकता तब ही मुमकिन है जब हम एक दूसरे से प्रेम रखते हैं। यीशु की एकता के लिए प्रार्थना में तात्पर्य यह है कि यदि हम उसे प्रसन्न करना चाहते हैं तो प्रेम बिलकुल अनिवार्य है। यूहन्ना 17:23 में, यीशु प्रार्थना करते हैं कि हम एक हों ताकि संसार जाने कि पिता ने हम से वैसा ही प्रेम रखा है जैसा उसने पुत्र से प्रेम रखा है। पिता आपसे और मुझ से उतना ही प्रेम रखता है जितना वह पुत्र से रखता है! कैसा अदभुत प्रेम है! एक दूसरे के लिए हमारा प्रेम लोगों को पिता का प्रेम देखने और अनुभव करने दे सकता है। कुछ लोग अचरज करते हैं कि क्यों इतने सारे एकाकी, दुखी लोग मसीहियों की ओर आकर्षित होते हैं। हमे कभी भी शर्म नहीं महसूस करनी चाहिए कि एकाकी और अनाकर्षक लोग हमारे आस-पास होना चाहते हैं; वे पिता के प्रेम की ओर जो वे हम में देखते हैं आकर्षित होते हैं।

जिसका जिक्र यूहन्ना 17 में है, उसे यूहन्ना 15 में सूचित किया गया है। वहाँ यीशु हमें एक दूसरे से प्रेम रखने के लिए कहता है। कुछ लोग दूसरों से प्रेम रखने के उनके कर्तव्य को जैसा यूहन्ना 17 में कहा है अस्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि यह एक प्रार्थना के रूप में लिखा गया है। परन्तु दो अध्याय पहले, यीशु कहता है कि मसीही के लिए कोई दूसरा विकल्प नहीं है। यह एक आज्ञा है। हमें एक दूसरे से प्रेम रखना है। चाहे हम बहाने बनाएं या नहीं, यीशु ने बहुत स्पष्ट किया है कि वह कैसे चाहता है हम एक दूसरे के साथ सम्बंध में रहें।

एकता न केवल मुमकिन है, यह बिलकुल अनिवार्य है। यदि हम विश्वास करते हैं कि जो यीशु हमारे लिए प्रार्थना करता है मुमकिन है, और वह हमारे सम्पूर्ण, हृदय के आज्ञापालन से कुछ भी कम स्वीकार नहीं करेगा, तब तो हम फँस गए हैं। और अधिक बहाने या यैक्तिकीकरण नहीं चलेंगे। यदि हम यीशु के पीछे चलना चाहते हैं, तो हमें ऐसा उसकी शर्तों पर, न कि अपनी शर्तों पर करना है।

प्रेम की प्रकृति

प्रेम की प्रकृति के बारे में बहुत सी उलझने हैं। क्या यह कोई गूदेदार भावना है जो हम पर आ जाती है, हमें दिन में तारे दिखाती है जैसा कई फिल्मों में दिखाया जाता है? यूहन्ना 15 का करीब से अध्ययन करने से प्रेम शब्द की अधिक समझ मिलती है।

यूहन्ना 15 के 13 से 17 आयतों में, यीशु प्रेम की सही प्रकृती प्रकट करता है।

- यह बलिदान है
  हमें दूसरों की खातिर हम जो चाहते हैं उसके लिए मरना है। कभी-कभी मुझे लगता है कि दूसरों के लिए जीने के बजाय उनके लिए मरना वास्तव में आसान है। परन्तु यीशु चाहता है कि हम अपने अधिकारों, पसन्द और इच्छाओं के लिए मर जाएँ और दूसरों के लिए जीएँ।
- यह जो सही है करना चुनना है
  यीशु कहता है, "जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानों तो तुम मेरे मित्र हो।" प्रेम भावनाओं से कहीं अधिक है। यह जो सही है उसे करना और सोचना चुनना है, तब भी जब करने को इच्छा नहीं होती।
- यह अपने विचारों और भावनाओं को स्वेच्छा से बताने का खुलापन है
  यीशु ने अपने चेलों को कहा कि वे उसके सेवक नहीं बल्कि मित्र हैं, क्योंकि उसने उन्हें सबकुछ बता दिया था।
- यह वचनबद्धता है
  यीशु ने चेलों को कहा कि उसने उन्हें चुना है इसलिए नहीं कि उन्होंने उसे चुना था, परन्तु इसलिए कि वह चाहता था वे उसके मित्र और साथी मजदूर बनें।
- यह भरोसा है
  यीशु ने चेलों पर भरोसा किया और उन्हें उसका और पिता का प्रतिनिधि होने के लिए भेजा।

यह जीवन में एक ऊँचे उद्देश्य का आज्ञापालन है; प्रभु और दूसरों के लिए जीने का।

हमें एक दूसरे से प्रेम रखने की आज्ञा दी गई है, परन्तु हमें क्या करना है हमें कोई बताए, यह विचार हमारे स्वाभाविक स्वभाव के विरुद्ध होता है। मनुष्य का पापी स्वभाव जिसे बाइबल "शरीर" कहती है, दूसरों के लिए पहले जीने के विचार से बचने के हर अवसर के लिए लड़ता है। हम लोगों से प्रेम नहीं रखने के हर अवसर की खोज में रहते हैं, ऐसे लोग जो हमारी नज़र में अनाकर्षक हैं।

जब तक हम इस सच्चाई को स्वीकार नहीं करते कि प्रभु यीशु हमारे बिनाशर्त आज्ञापालन की माँग करता है, तब तक हम उसका आज्ञापालन नहीं करने के सब प्रकार के यैक्तिकीकरण लाते रहेंगे। जब तक हम अपने सम्पूर्ण हृदय से विश्वास नहीं करते कि हमें उसका आज्ञापालन करना है, तब तक हम नहीं करेंगे ? और तब भी केवल उसकी सहायता से ही।

हमें अपने हृदय उसके सामने झुकाने चाहिए और स्वीकार करना चाहिए कि हम अपने अन्तरात्मा में कितने स्वार्थी हैं। जब हम देखते हैं कि दूसरों से प्रेम रखना जैसा यीशु ने यूहन्ना 17 में प्रार्थना की और यूहन्ना 15 में आज्ञा दी अनोखा है, तब पवित्र आत्मा हम में कार्य करना आरंभ कर सकता है और इसे करने की हमें योग्यता दे सकता है। परमेश्वर के साथ इस प्रकार की ईमानदारी हमें अपने हृदयों में उस प्रेम को पाने दे सकता है जो वह चाहता हैं हम दूसरों से रखें।

प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण

क्या आप ने यूहन्ना 17 में ध्यान दिया कि यीशु ने प्रार्थना की कि हम एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखें जैसा उसका और पिता का एक दूसरे से प्रेम है ? वे एक दूसरे से कैसा प्रेम रखते हैं ? पिता और पुत्र के बीच प्रेम को समझने से हमें सच्चे प्रेम के बारे में और समझने में सहायता मिलेगी।

जब यीशु पृथ्वी पर आया तो उसने अपने सारे स्वर्गीय विशेषाधिकार और हक त्याग दिए थे (फिलि. 2:6-8)। वह पिता की इच्छा के अधीन हो गया (मत्ती 26:36-46)। वह पिता के साथ खुला था, और अपनी भावनाओं को ईमानदारी से और बिना किसी व्यवहार-कौशल के बताता था (मत्ती 26:39)। उसने सबकुछ जो किया उसमें पिता का आदर किया (यूहन्ना 8:28-29)। पिता पुत्र से प्रेम रखता था, और सब के सामने अपने प्रिय पुत्र के रूप में उसका आदर करता था (मरकुस 1:11)। उसने पुत्र पर सारे युग की सबसे बड़ी जिम्मेवारी के लिए भरोसा किया : मनुष्यजाति का उद्धार (यूहन्ना 3:16)। उसने सबकुछ उसके साथ बाँटा (यूहन्ना 17:6-26)।

वही प्रेम, भरोसा और आदर का सम्बंध हमें भी पेश किया गया है। यीशु ने प्रार्थना की कि हम एक दूसरे से वैसा ही प्रेम रखें जैसा पिता और पुत्र का एक दूसरे के लिए है। प्रश्न यह है, "यह वास्तविकता में कैसे कार्य करता है ?" यीशु ने कहा यह मुमकिन है, परन्तु क्या हम कुछ कदम उठा सकते हैं जिससे हम अपने रोजाना के जीवन में एक दूसरे से प्रेम रख सकने में सहायता पाएँ ?

सम्बंधों के लिए नियम
अनेक लोग उनके आसपास के लोगों के सिद्ध बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जबकि दूसरे एक सिद्ध कलीसिया को खोजते हैं। परन्तु एक पाप में गिरे हुए संसार में सिद्धता की अपेक्षा करना हमें निराशा और सरदर्द के मार्ग पर ही खड़ा करेगा। एक पाप में गिरे हुए संसार में एकता का तात्पर्य बुराई और पाप की सम्पूर्ण अनुपस्थिति नहीं है, और न ही पूर्ण सिद्धान्तीय शुद्धता है। एकता का अर्थ है कि हमारा दूसरों की ओर जब वे पाप करें या जब वे गलत हों तो मसीह समान स्वभाव हो, क्योंकि हम ने खुद भी अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में अपना विश्वास रखा है।

इफिसियों के अध्याय 4 और 5 में, पौलुस उन नियमों और रवैयों के बारे में बताता है जो उस एकता की रक्षा करने के लिए हमारे पास होने चाहिए जो हमें मसीह की क्रूस पर मृत्यु के द्वारा प्राप्त हुई है। अध्याय 4 में वह हमें कहता है कि "मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का प्रयत्न करो .... जब तक कि हम सब के सब विश्वास और परमेश्वर के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाएँ, और एक सिद्ध मनुषय न बन जाएँ, और मसीह के पूरे डील-डौल तक न बढ़ जाएँ।" पौलुस आत्मा की एकता (एक दूसरे की ओर कमजोरी या पाप के बावजूद हृदय और मन का सही रवैया) की तुलना विश्वास की एकता (पूर्ण परिपक्वता और सिद्धान्तीय सिद्धता) से करता है। वह कलीसिया को चुनौती देता है कि वह आत्मा की एकता बनाए रखने में उत्सुक हो जब तक कि हम विश्वास की एकता प्राप्त न कर लें।

इसका इसका परिणाम तीन चीजें है। पहला, आत्मा की एकता हमारी प्रथमता होनी चाहिए जब तक परमेश्वर अपनी कलीसिया को विश्वास की एकता में नहीं ले आता। दूसरा, हमें आत्मा की एकता बनाए रखने के लिए उत्सुक होना चाहिए। और तीसरा, हमें दूसरों से प्रेम रखने के आधार के रूप में विश्वास की एकता (आत्मिक परिपक्वता और सिद्धान्तीय शुद्धता) पर जोर नहीं देना है। ऐसा करना शरीर का काम होगा, और वास्तव में, पाप है।

क्या हम उन्हें क्षमा करने के उत्सुक हैं हमें चोट पहुँचाते हैं, उन्हें स्वीकार करने के जो हम से भिन्न हैं, उन्हें चाहने के जो हम से असहमत हैं, उनसे प्रेम रखने के जो हम पर आक्रमण करते हैं, उनके अधीन होने के जो हमारे ऊपर हैं, उनका भरोसा करने के जो हमारी अगुआई करते हैं, उनके पास जाने के जो हमें चोट पहुँचाते हैं, और उनसे सहनशील होने के जो हम से सहमत नहीं होते? यदि नहीं, तो हमें मन फिराना है। हमें परमेश्वर से अपने हृदय की एक गहरे प्रकाशन की माँग करने की आवश्यकता है, उस पाप की जो हमें प्रेम और एकता की वह श्रेणी पाने से रोकता है। हम किसी भावना की बात नहीं करे हैं बल्कि एक मूल रवैये की। एकता हृदय के रवैये से आरम्भ होता है जो हमारे जीवनों के टूटेपन का फल है। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम दूसरे लोगों के हृदयों और जीवनों के न्यायी बनें। वह चाहता है कि हम अपना न्याय करें। जब हम वह टूटापन खो देते हैं और कठोर और आलोचक बन जाते हैं, तब हम एकता की अपनी उत्सुकता खो देते हैं।

सम्बंध बनाने के उपयोगी नियम
हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए कि दूसरे लोग क्यों गलत करते या पाप करते हैं। हमें सोचना चाहिए कि हम उनकी ओर प्रतिक्रिया कैसे करेंगे। क्या हम उन्हें संगति में पुनःस्थापित करने से पहले अविवेकी शर्तों की माँग करेंगे, या क्या हम शीघ्र और आनन्दित क्षमा की प्रतिक्रिया दिखाएँगे?

नीचे दी गई पड़ताल सूची इस क्षेत्र में हमारे अभिप्रायों को जाँचने में सहायता करेगी। इस सूची को प्रार्थनापूर्वक पढ़ो और पवित्र आत्मा से कहो कि जब आप पढ़ रहे हैं आपसे बात करे।

(1) पौलुस इफिसियों 4:2 में बताता है कि हमें दीनता, नम्रता, धीरज और सहनशीलता का रवैया बनाए रखना चाहिए। हमारे रोजाना के जीवनों में इस प्रकार का रवैया हमें सबसे बड़ी शक्ति देता है।
   - दीनता का अर्थ है कि ऊपरी स्तर पर सम्बंध बनाने के बजाय, हम जो हैं और हम ने जो किया है उसके आधार पर जाने जाएं, उसके इच्छुक हैं। इसका अर्थ है कि जब हम ने लोगों के विरुद्ध पाप किया या उन्हें चोट पहुँचाई है तो उसे ठीक करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है हम करने के लिए तैयार हैं।
   - नम्रता का अर्थ है कि हम अपने तरीके से काम करने या खुद को आगे करने पर जोर नहीं देंगे।
   - धीरज का अर्थ है कि जब लोग गलत भी होते हैं, तब भी हम प्रेम से उनका इन्तजार करते हैं।
   - सहनीलता का अर्थ है जब लोग कमजोर होते हैं हम उनकी सहायता करते हैं।

(2) हमें प्रेम में बने रहकर सच बोलना है (इफि. 4:15, 25, 26, 29-31)। पौलुस जीभ के बारे में काफी कुछ कहता है और हमारी बोलचाल के बारे में कई चीजें बताता है जिन पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

क्या आप अपनी मित्रता बनाए रखना चाहते हैं ? क्या आप चाहते हैं कि आपके सम्बंध मसीह को महिमा लाएँ ? इसलिए:

- सच बोलो। हमें सीधा, निष्कपट और ईमानदार होना है।
- प्रेम में बने रहकर सच बोलो। हमें क्रोध, कटुता या निर्दयी तरीके से नहीं बोलना है, परन्तु परमेश्वर के समय में, उसकी प्रतिक्षा करनी है कि जिनसे हम बात करने वाले हैं उनके हृदय वह तैयार करेगा। इसका अर्थ भी है कि हम जो कहते हैं उसके बारे में चयनात्मक होना है; एक बुद्धिमान व्यक्ति सबकुछ जो वह जानता है कह नहीं देता है।
- वही बोलो जो उन्नति करता है। दूसरे शब्दों में, उन्ही बातों को बोलो जो सकारात्मक और सहायक हैं। "मैं तो केवल सच्चा बन रहा था" कह कर खुद को मुक्त कर देना काफी नहीं है। आप किसी के साथ गलत समय पर बेरहमी से सच्चे बन कर उन्हें सम्पूर्ण रूप से उजाड़ सकते हो। मामला ईमानदारी से बढ़कर है; बाइबल कहती है कि हमें वही बातें कहनी चाहिए जो एक व्यक्ति की सहायता करेंगी। बुद्धि बिना सच्चाई पाप हो सकता है।
- आलोचक आत्मा से छुटकारा पाओ। 'सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध, और कलह और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाएँ" कह कर पौलुस इफिसियों को प्रोत्साहन देता है (इफि. 4:31)। इन सब चीजों की जड़ एक आलोचक आत्मा है, जो एकता के सबसे बड़े शत्रुओं में से एक है। क्या आप किसी को प्रोत्साहित करने के बदले उनकी आलोचना करना आसान पाते हैं ? लोगों की गलतियाँ और पाप दूसरों को बताना, बाइबल इसे पाप कहती है, क्योंकि यह शंका फैलाता है और विभाजन को प्रोत्साहन देता है। यह जहर है जो सारे शरीर को शीघ्र दूषित कर देता है।

  झूठी निन्दा, यदि रोकी न जाए तो फूट पैदा करती है। यदि कोई बात सही है, और यदि इसका संबंध नैतिक समझौते से या गम्भीर सिद्धान्तीय गलती से नहीं है, तो यह आवश्यक नहीं कि उसे लोगों के बताया जाए। परमेश्वर हमें, हम जो कहते हैं, हमारी एक दूसरे की ओर वफादारी, और मेल-मिलाप, क्षमा और एकता बढ़ाने के लिए उत्तरदायी ठहराता है। यह कोई "परिपक्व" मसीहियों के लिए वैकल्पिक विशेष नहीं है। हम सबको इसे करने की आज्ञा दी गई है।

(3) पौलुस विश्वासियों को उपदेश देता है कि वे जो पाप करते हैं उन्हें क्षमा करें और जो पाप से मन नहीं फिराते उन्हें अनुशासित करें (इफि. 4:32; 5:1, 5-7)। क्षमा और कलीसिया के अनुशासन बिना किसी प्रकार की एकता नहीं हो सकती है। फूट कोई ऐसी समस्या नहीं है जो और अधिक दीनता या क्षमा द्वारा हल नहीं की जा सकती है। जब किसी भाई की ओर से जिसने पाप किया है कोई दीनता नहीं दिखती, तब कोमल परन्तु दृढ़ अनुशासन होना चाहिए। चाहे लोग मन फिराएँ या नहीं, हमें उन्हे क्षमा करना है। परन्तु जब वे मन फिराने में असफल होते हैं, चाहे हम ने उन्हें क्षमा कर दिया है, कलीसिया के अगुओं को उनके जीवनों में प्रेम द्वारा अनुशासन लाना चाहिए।

(4) हमें स्वीकार करना है कि हम एक दूसरे के हैं। हर कोई जो यीशु का है हमारे परिवार का सदस्य और उसके अनुग्रह का संगी-वारिस है। जैसे एक सामान्य परिवार में, कुछ लोगों की दूसरों से अच्छी पटती है और एक दूसरे के साथ काफी कुछ सामान्य होता है, वैसा ही परमेश्वर के परिवार में भी है। हमारे सांसारिक परिवारों में केवल इसलिए कि कोई हम से भिन्न हैं, हम इन्कार नहीं करते कि वह हमारा भाई या बहन है। न ही हमें ऐसा कलीसिया में करना चाहिए, क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य हैं (इफि. 4:25)।

कलीसिया केवल एक है। परन्तु हमारे व्यवहारों से पता चलता है कि हम गम्भीरता से विश्वास करते हैं कि जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे परमेश्वर हमें विभिन्न भागों में बाँट देगा ताकि हम अपने छोटे छोटे समूहों या सम्प्रदायों में सिमट जाएँ। इससे भी बुरा है, कुछ लोग सोचते हैं कि केवल उनका समूह ही वहाँ ऊपर होगा। परन्तु जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे तब हम सब एक होंगे, तो क्यों नहीं अग्रिम तैयारी करने लगें और इसी समय दूसरे समूहों और सम्प्रदायों के मसीहियों को जानना आरम्भ करें ? आओ हम अपने सम्प्रदाय-वाद के डरों को परे करें, क्योंकि हम सब एक दूसरे के हैं।

(5) अन्त में, पौलुस हमें उपदेश देता है कि हम आत्मा से भर जाएँ, प्रभु की आराधना करें, एक दूसरे को प्रोत्साहन दें, और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहें। (इफि. 5:17-20)

कृतज्ञता। प्रोत्साहन। धन्यवाद। ऐसे गुण आकस्मिक नहीं प्राप्त किए जाते। उन्हें जानबूझकर बढ़ाया जाता है जब तक वे हमारे रोजाना के सोच-विचारों और कार्यों का भाग नहीं बन जाते। हमें परमेश्वर की उपस्थिति में, उससे पूछने के लिए कि हम अपने आसपास के लोगों को कैसे प्रोत्साहित करें, समय व्यतीत करना चाहिए। हमें उस से सबकुछ जो उसने किया है और हमारे लिए उपलब्ध कराया है, के बारे में नया प्रकाशन पाना चाहिए; तब हमारे हृदय धन्यवाद से भरे रहेंगे।

अन्त में जब हम एकता के एक निवासस्थान पर आते हैं, तो यह कितनी आशीष की बात होती है! यह सबकुछ सार्थक बनाता है।

"देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!
यह तो उस उत्तम तेल के समान है,
जो हारून के सिर पर डाला गया था, और उसकी दाढ़ी पर बहकर,
उसके वस्त्र की छोर तक पहुँच गया।
यह हेर्मोन की उस ओस के समान है, जो सिय्योन के पहाड़ों पर गिरती है!
यहोवा ने तो वहीं सदा के जीवन की आशीष ठहराई है।" (भजन 133)

यह कुल 16 पुस्तकों के सेट की पुस्तक क्र. 4 है।

मिनिस्ट्री ऐंड लीडरशिप ट्रेनिंग कोर्स के साथ अध्ययन के लिए, जो एक "वन-टाइम-ओनली" - M.L.T.C. - मिनिस्ट्रीज़ का प्रोजेक्ट है।

(केवल व्यक्तिगत वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - एक "वन-टाइम-ओनली" प्रोजेक्ट का भाग)

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106, वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : **mltc_ministries@yahoo.com**